भटके हुए लोग

अंतर्भारतीय पुस्तकमाला

भटके हुए लोग

हरचरन चावला

अनुवाद

खुर्शीद आलम

एकः सूते सकलम्

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

आवरण : अर्पणा कौर की पेंटिंग पर आधारित।

ISBN 81-237-3920-6

पहला संस्करण : 2002 *(शक 1924)*

Original Title : Bhatke Huye Log *(Urdu)*
Translation : Bhatke Huye Log *(Hindi)*

रु. 60.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

उन लोगों के नाम

जो भटकती मानवता पर उदास और दुखी रहते हैं

उन्हीं की बात

जो फिर भी अपने हैं, वे मुझे जगह-जगह मिले। चेहरे बदल-बदल कर मिले। तुम कहानीकार हो, हमारा जीवन भी यहां साक्षात कहानी है। वहां हमने औरत की पिंडली देखी और अपनी जिंदगी भर की तपस्या भंग कर ली। यहां औरत खुलकर सामने आती है तो सोचो, हमारी क्या हालत होती होगी ! हम नहीं कहते कि तुम हमारी कहानियों से लोगों को मानसिक यातना दो। तुम कहानीकार के रूप में यह करना भी नहीं चाहोगे, क्योंकि तुम दर्पण हो, जैसा देखते हो दिखा देते हो। मगर क्या हम तुम्हारे दर्पण में प्रतिबिंबित नहीं हो सकते ? हम जो मिट्टी की संतान हैं, मगर जिन्हें वर्षो अपनी मिट्टी के दर्शन नसीब नहीं होते। क्या तुम्हें, हममें कोई कहानी नजर नहीं आती?

कहीं एक जगह इंतजार हुसैन ने लिखा है, "मैंने औरत को जितना देखा है उतना ही लिखा है।" मैं भी यही कहता हूं। पात्रों, औरतों, परिस्थितियों और इस नए वातावरण को मैंने जितना देखा है, मैंने उतना ही लिखा है। अब इस जितने-जितने में जितना अंतर है, वह दूसरी जगहों और दूसरी प्रकार की नजरों के कारण है।

मुझे इस समय दिल्ली में अपने घर में मेज पर पड़े दर्पण और उसे आकर देखने वाली चिड़िया की याद आ रही है। वह हर रोज दर्पण के सामने आकर बैठती थी, अपने प्रतिबिंब पर चोंचें मारती थी और मेरे पास पहुंच जाने पर भी अपने इश्क से बाज नहीं आती थी। मगर एक दिन जब वह दर्पण के पीछे पहुंच गई और दृश्य दूसरा देखा तो उस पर वास्तविकता प्रगट हो गई और वह प्रतिबिंबित इश्क से आजाद हो गई। जाने कब हम लोग भी झूठी शान-शौकत, मरीचिका और साए से आजाद होंगे, और वापस अपनी मिट्टी के बुलावे पर कान धर सकेंगे ! मगर एक मुश्किल भी है कि इंसान पास की वास्तविकता को हाथ लगाकर, परख और बरत कर देखना चाहता है और जब वह छाया सिद्ध होती है तो दिल यूं टूटता है कि उसे जोड़ना मुश्किल हो जाता है। फिर पलायन में शरण लेना पड़ता है। मरीचिका में कम से कम आस तो छुपी होती है।

ओस्लो (नार्वे)

—हरचरन चावला

भूमिका

मियांवाली (अब पाकिस्तान) में 9 जून 1926 को जन्मे हरचरण चावला का सुदीर्घ और सुप्रतिष्ठित साहित्यिक जीवन आधी सदी से अधिक का है। सन् 1948 में उनकी पहली कहानी प्रकाशित हुई और आज तक अनेक उपन्यासों सहित उनकी 26 कृतियां छप चुकी हैं, इनमें कहानी संग्रह, अनुवाद, अपने संस्मरण और यात्रा-वृतांत हैं। इनके लेखन का न केवल विभिन्न भारतीय भाषाओं में व्यापक अनुवाद हुआ, बल्कि अनेक यूरोपीय भाषाओं में भी इनकी कृतियां अनूदित हो चुकी हैं। इन्होंने स्वयं नार्वेजियन कथा साहित्य का हिन्दी एवं उर्दू में तथा भारतीय कथा साहित्य का नार्वेजियन भाषा में काफी अनुवाद किया है। इन्होंने अपनी स्वर्गीया पत्नी पूर्णिमा चावला द्वारा अनूदित हिन्दी कविताओं का भी संपादन एवं प्रकाशन किया है।

हरचरण चावला अनेक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किए जा चुके हैं, जिनमें उल्लेखनीय है—उ.प्र. उर्दू अकादमी पुरस्कार, पश्चिमी बंगाल उर्दू अकादमी पुरस्कार, भाषा विभाग पंजाब का राजेन्द्र सिंह बेदी पुरस्कार और इन सब के अलावा 'एंग्विश ऑव ए हॉर्स' कहानी के लिए जलातेन क्लास (बलग़ारिया) शार्ट स्टोरी कम्पटीशन का प्रथम पुरस्कार। नार्वेजियन राइटर्स यूनियन, नार्वेजियन राइटर्स सेंटर, पेन क्लब (सभी ओस्लो स्थित) और पंजाबी राइटर्स कोआपरेटिव सोसायटी, नयी दिल्ली के ये सदस्य रहे हैं। इन्होंने नार्वे, स्वीडन और मारीशस में अनेक साहित्यिक सम्मेलनों और संगोष्ठियों में भी भाग लिया है।

दरअसल हरचरण चावला का सफर तो उसी दिन से शुरू हो गया था, जब ये पाकिस्तान से इधर आए थे। बाद में इन्होंने भारतीय रेलवे में सहायक स्टेशन मास्टर का पद स्वीकार किया और रिवाड़ी स्टेशन पर तैनात हुए। इसके बाद पीछे मुड़कर देखने का क्षण नहीं मिला। सहायक स्टेशन मास्टर के रूप में अपनी नौकरी के कुछ वर्षों में इन्हें एक समृद्ध और वैविध्यपूर्ण भू-दृश्य को देखने का अवसर मिला, इसमें इन्होंने तरह-तरह के स्त्री-पुरुषों, पशु-पक्षियों और प्रकृति के विविध रूपों से साक्षात्कार किया। शारीरिक और मानसिक दोनों तौर पर ये उनसे गहरे जुड़े। ऐसा प्रतीत होता है कि ये जिस इलाके से गुजरे वह शुष्क और शायद बंजर भी था, लेकिन जहां तक मानवीय संबंधों और मानवीय स्वभाव और व्यवहार का

सवाल था, वास्तव में वह समृद्ध ही नहीं उदार भी था। हरचरण चावला को भी स्नेह, प्यार के साथ-साथ टूटते संबंधों की पीड़ा और उसके फलस्वरूप जन्मा भावनात्मक मोहभंग भी मिला।

विभाजन के समय ये पाकिस्तान से जब निकले, तब ये परिस्थितियों के मारे थे, जिन पर इनका कोई वश नहीं था, एक भागे हुए शरणार्थी थे। छठे दशक के अंत-अंत में हरचरण चावला को लगा कि अब आगे रास्ता बंद है। ये आखिरी छोर तक पहुंच चुके थे, इनकी सृजनात्मकता को जैसे पंख लग गए थे। इन्होंने देशों, महाद्वीपों और भौगोलिक अवरोधों के पार पंख पसारे उड़ने का फैसला किया। इन उड़ानों ने मानवीय अनुभव और सांस्कृतिक रूपों की शानदार विविधता से इनका संपर्क कराया। इनके भीतर मौजूद हेनरी जेम्स को आर्थिक, राजनीतिक और तकनीकी वैश्विक परिवर्तनों से गुजरते मानवीय स्वभाव को गहराई से जानने का अवसर मिला। वस्तुतः इनका समूचा लेखन मनुष्य की सोच, अज्ञात के लिए उसकी काल्पनिक उड़ान और नई जमीन तोड़ने की ललक के प्रति गहन जागरूकता से ही जन्मा है। उसमें संवाद के क्षण हैं और यहां-वहां संभवतः तृप्ति भी है। तथापि कुल मिलाकर यह सफर विरोधी माहौल के बीच ही हुआ है। अस्तित्व की सचाई स्वयं अस्तित्व है।

उर्दू गद्य में चाहे कहानियां हों या उपन्यास, आज़ादी के पहले और बाद में भी, कुछ ऐसी विशिष्टताएं हैं जो सहज पहचानी जा सकती हैं। उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में जो उर्दू कहानी लेखक साहित्यिक परिदृश्य पर उभरे, बीसवीं शती के तीसरे चौथे दशक में उनके साहित्य ने अर्थवान पूर्णता पाई। इनमें से कुछ के साहित्य की कथा-वस्तु सामाजिक सुधार अथवा गौरवमय अतीत की पुनर्स्थापना के इर्द-गिर्द घूमती रही। नज़ीर अहमद का दृष्टिकोण जहां सुधारवादी है वहां अब्दुल हलीम शरर मुस्लिम अतीत और मुस्लिम आदर्शों की बात करते हैं। इसी तरह राशिदुल ख़ैरी का मुख्य सरोकार मुस्लिम नारी और उसकी समस्याओं से है। रतन नाथ सरशार और मिर्ज़ा हादी हुसैन रुसवा जैसे कुछ अन्य लोग हैं, जो मुस्लिम दृष्टिकोण वाले कथा साहित्य से परे जाते हैं। सरशार हास्य-व्यंग्य के साथ अपने समय के अवध की पुनर्रचना करते हैं। उनके खोजी और आज़ाद जैसे चरित्रों में एक विदूषक तत्व है। इसी तरह रुसवा उमराव जान अदा में रुसवा के पतोन्मुख अवध की भोगासक्ति, जवांमर्दी आदि को साकार करते हैं। आग़ा शाइर मनोवैज्ञानिक ताने-बाने का उपन्यास रचते हैं। दूसरी ओर मिर्ज़ा मोहम्मद सईद अपने उपन्यास में व्यक्ति एवं समाज व्यवस्था के संघर्ष को सामने लाते हैं और इस प्रक्रिया में पश्चिमी सभ्यता के कुछ उज्जवल पक्षों की खोज करते हैं।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद भारत में औद्योगीकरण, बाहरी दुनिया से संपर्क, सन् 1917 की रूसी क्रांति और उसके फलस्वरूप जनजागरूकता, कुछ ऐसे कारक हैं जिन्होंने एक नई संवेदनशीलता और यथार्थवाद के प्रति गति को तीव्रता देने के

लिए अनुकूल वातावरण की रचना की।

बीसवीं शती के उर्दू उपन्यासों में प्रेमचन्द महानायक की तरह थे। उनके कथा-लेखन में एक जबर्दस्त व्यापकता थी, साथ ही उनमें एक व्यापक अपील भी थी। वे सुधारवादी थे, दलितों के पैरोकार, गांधीवादी, विवेकानंद के प्रशंसक तथा प्राथमिक मार्क्सवादी, उदार मानवतावादी थे—एक ही व्यक्तित्व में सब समाहित था। अपने दीर्घ साहित्यिक जीवन में उन्होंने अपने लेखन में, विशेषकर उपन्यासों में, जैसे चौगान-ए-हस्ती, मैदान-ए-अमल और गोदान में, अपने कलात्मकता और शिल्प नैपुण्य का परिचय दिया था। उनका निधन एक महान साहित्यकार का चिर-वियोग था। यद्यपि डॉ. युसुफ़ हुसैन ने सही कहा—सन् 1926 से 1936 तक का समय एक क्षीण समय था तथापि सुदर्शन, क़ाज़ी अब्दुल ग़फ़्फ़ार, मजनूं गोरखपुरी, नियाज़ फ़तहपुरी और कुछ अन्य लोग उस समय भी साहित्य रचना में सक्रिय थे। उनका साहित्यिक योगदान भी कम नहीं, तथापि इन सबमें 'लैला के ख़तूत और मजनूं की डायरी' जैसी कृतियों के रूमानी एवं शैली प्रधान लेखक क़ाज़ी अब्दुल ग़फ़्फ़ार अलग नज़र आते हैं। उनकी विशेषता है वर्णनात्मकता, जो डायरी एवं पत्रों के रचना विधान में अच्छी तरह प्रगट हुई है। वे अपने लेखन में अपने समय के पुरुष (और स्त्री की भी) की झलक देते हैं, ऐसे पुरुष की जो अपनी मानसिक शांति और सुरक्षात्मक सामाजिक ताक़तों का सहारा भी खो चुका है।

सन् 1917 की रूसी क्रांति के बाद संसार के लेखकों में मार्क्सवाद और समाजवादी आदर्शों के प्रति एक सहानुभूति का उदय हुआ। उर्दू भी इसका अपवाद नहीं रही। 'अंगारे' का प्रकाशन, प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन का गठन और बाद में उसके प्रसारित घोषणा पत्र ने क्रांतिकारी विचारों के उदय एवं विकास के लिए अनुकूल वातावरण की सृष्टि की। विभाजन के पूर्व एवं बाद के वर्ष प्रोग्रेसिव राइटर्स मूवमेंट के शिखर के वर्ष के थे। क्रांतिकारी विचारों के साथ-साथ पश्चिमी साहित्य में किए जा रहे प्रयोगों के नए विचारों और उसके मिश्रित प्रस्फुटनों ने भी प्रेमचन्द के परवर्ती काल के भारतीय लेखकों को, जिनमें उर्दू लेखक भी शामिल थे, प्रभावित करना शुरू किया। सज्जाद ज़हीद ने अपनी उपन्यासिका 'लंदन की एक रात' में ऐसे विचारों एवं चेतना के प्रयोग-धर्म प्रवाह—दोनों का समावेश किया।

अज़ीज़ अहमद, हयातुल्लाह अंसारी, कृष्ण चंदर, ख्वाजा अहमद अब्बास, इसमत चुग़ताई, राजेन्द्र सिंह बेदी, मुमताज़ मुफ़्ती और बलवंत सिंह जैसे लेखक स्वाधीनता पूर्व के वर्षों में सामने आए और वे विभाजन के बाद भी अनेक वर्षों तक लिखते रहे। उनकी कथा-वस्तु में जनता की घोर दरिद्रता अज़ीज़ अहमद, कृष्ण चंदर शहरी और ग्रामीण परिवेश में स्त्री-पुरुष काम संबंधों की यथार्थ अभिव्यक्ति (अज़ीज़ अहमद, इसमत चुग़ताई, मुमताज़ मुफ़्ती, राजेन्द्र सिंह बेदी, बलवंत सिंह) और भारत की आज़ादी की लड़ाई की गाथा की रचना (हयातुल्लाह अंसारी, ख्वाजा अहमद अब्बास)

का समावेश है। इस काल के लेखन में यथार्थ, रूमानियत, क्रांतिकारिता, उद्घोषणा और उदारतावाद का कहीं स्वतंत्र रूप से चित्रण हुआ है तो कहीं ये सब आपस में घुल-मिल गए हैं।

स्वाधीनता के उदय और उपमहाद्वीप के विभाजन ने भारत और पाकिस्तान दोनों के लिए ऐसी पेचीदगी, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्याएं पैदा कीं, जो समय के साथ-साथ गंभीर रूप अख़्तियार करती गईं। स्वाधीनता के बाद के उर्दू साहित्य का एक हिस्सा विभाजन, सांप्रदायिक दंगों और अपनी जमीन से उखाड़ फेंके गए पाकिस्तान से भारत और भारत से पाकिस्तान जाने वाले लोगों और एक अपरिचित भूमि पर अपनी जड़ें जमाने के उनके प्रयत्नों के इर्द-गिर्द घूमता है। कृष्ण चंदर, सआदत हसन मन्टो (कहानियों में), कुर्रतुल ऐन हैदर, शौकत सिद्दीक़ी, ख़दीजा मसरूर, इन्तज़ार हुसैन, अब्दुल्लाह हुसैन, इन सभी ने अपने कथा-उपन्यास लेखन में भारत और पाकिस्तान के ऐसे लोगों की पीड़ा में सहभागिता की है। इनमें से कुछ ने यथार्थपरकता के साथ तो कुछ ने पौराणिक गाथाओं, रूपकों, उपमाओं, बोधकथाओं, लोक-कथाओं और अन्य कलात्मक तरीकों से इस यातना को चित्रित किया है—जैसे कुर्रतुल ऐन हैदर, इंतज़ार हुसैन आदि।

हाल के वर्षों में संकटों के कारण आप्रवासन और नई भूमि खोजने के लिए आप्रवासन ने इस अस्थिर मानव की आज़ादी की समस्याओं को नए आयाम प्रदान किए हैं। तेजी से बढ़ते शहरीकरण, निहायत गरीबी, आर्थिक असमानता, रोजगार का अभाव, सामाजिक तथा सांप्रदायिक तनाव ने एक बहुत बड़ी आबादी को भौतिक, सामाजिक सुरक्षा और अर्थवान रोजगार की तलाश में भटकने के लिए विवश किया। शहरी केंद्रों, विशेषकर महानगरों की ओर प्रयाण ने जरूरत से ज्यादा आबादी बढ़ जाने की समस्याओं और उनसे जुड़ी तकलीफों को जन्म दिया। जिन्होंने विदेशी धरती पर जाने का साहस दिखाया, उन्होंने स्वयं को पहचान के एक सनातन संकट, मूल्यों के संघर्ष, अलग-थलग हो जाने की भावना और अपने जन्म-स्थल की अतीत स्मृति तथा वर्तमान निवास के गैर-दोस्ताना माहौल की पीड़ा में डूबा पाया। ऐसे वातावरण में अस्तित्व की तलाश भी उर्दू गल्प का हिस्सा रही है। कुर्रतुल ऐन हैदर, इंतज़ार हुसैन, सुरेन्द्र प्रकाश आदि कुछ उर्दू कहानीकारों और उपन्यासकारों ने अपनी कुछ खास कहानियों में या विभिन्न तत्वों से गढ़े गए बहुमुखी वर्णनों की अंतर्निहित धारा के रूप में ऐसी खोजें की हैं।

पिछले अनेक वर्षों में उर्दू भाषा का कथा-शिल्प भी मुख्य उर्दू गल्प के सहज वर्णनों से हटकर बेहद रूपात्मक या पराभौतिक तक हो गया है। सुरेन्द्र प्रकाश, अनवर सज्जाद और बलराज मेनरा के लेखन में यह देखा जा सकता है। पांचवें, छठवें, यहां तक कि सातवें दशक के प्रारंभ की कुछ उर्दू कहानियों ने अच्छी पठनीयता का औपचारिक पक्ष ही नहीं त्याग दिया वरन् तथाकथित अमूर्त के लिए यथार्थ

एवं ठोस से भी छुट्टी पा ली। फिर भी सातवें दशक के उत्तरार्द्ध में उर्दू कहानी अपनी तमाम प्रेरणा और अर्थवान उपलब्धि के साथ फिर से सच्ची कहानी की ओर लौटी।

हरचरण चावला का उपन्यास 'भटके हुए लोग' अपने ही पात्रों के 'एडवंचर्स' के इर्द-गिर्द घूमता है—सरन, जिसका जन्म ऐसे स्थान में हुआ जो अब पाकिस्तान कहा जाता है और जो उपमहाद्वीप के विभाजन के परिणामस्वरूप भारत आ जाता है। दूसरा आसिम जो लखनऊ में जन्मा और उक्त परिस्थितियों के कारण पाकिस्तान पहुंच गया। दोनों स्वयं को ऐसी भावनात्मक स्थिति में पाते हैं जो उनकी अपनी गढ़ी हुई नहीं है। दोनों अपने-अपने घर छोड़कर नई जमीन की तलाश में विदेशी भूमि पर जाने का साहस करते हैं। उषा के साथ अपनी दुखद स्थितियों के कारण सरन भागा भागा फिर रहा है और उसी तरह आसिम भी अपनी नापसंद की लड़की से अपनी प्रस्तावित शादी से भागा हुआ है। संयोग से फ्रैंकफर्ट में दोनों से मुलाकात हो जाती है और वे तत्काल दोस्त बन जाते हैं। वे यूरोप के विभिन्न देशों में भटकते हैं। (जर्मनी, इंग्लैंड, नीदरलैंड), कभी एक साथ, कभी-कभी अकेले ही। छोटी-मोटी चीजें बेचते, छोटे-मोटे काम करते तथा शराब और लड़कियों के साथ मौज-मस्ती में समय काटते। जब किस्मत अच्छी होती है तो आनन-फानन में काफी कमा लेते हैं। और जब बुरे दिन होते हैं, काट-कसर कर बजट बनाते हैं। उनके पलायन शायद कभी-कभी उन्हें शारीरिक और मानसिक संतोष के क्षण प्रदान करते हों, फिर भी आमतौर पर वे एक रोजमर्रा की जिंदगी के कैदी होते हैं। वे अपनी मौजूदा नियति से समझौता कर लेना चाहते हैं, लेकिन अतीत की एक अंतहीन स्मृति और ऐसे प्यार की चाहत जो कभी उनका था या उनका हो सकता था, उन्हें कहीं गहरे अंतस्तल में जूझते रहने के लिए बाध्य करता रहता है। भटकन के इस दौर में वे भारत लौटने का फैसला करते हैं। वे ऐसा करते भी हैं। वे देश के कुछ हिस्सों में सफर करते हैं, भिन्न-भिन्न जगहों पर जाते हैं, मुक्त वायु में सांस लेते हैं और शानदार भू-दृश्य को दिल में संजोए चलते हैं। सरन उषा को अभी भी असंपृक्त और संवाद-शून्य पाता है, लेकिन आसिम कई कठिनाइयों के बावजूद अपनी प्रेमिका नईमा को खोज लेता है, अंततः सरन और उषा तथा आसीम और नईमा यूरोप जाने का फैसला करते हैं। एक बार फिर वे अपनी लंबी यात्रा पर निकलते हैं।

'भटके हुए लोग' की रचना का आधार बहुत कुछ हरचरण चावला की अपनी जिंदगी से है, तथापि वर्णन के कौशल, चरित्र चित्रण और अभिव्यक्ति की सहजता तथा अपनी संपूर्णता में इस उपन्यास ने अपनी अलग पहचान बनाई है। चावला के पात्र छोटे-छोटे लोग हैं—दुकानदार, फेरी लगाने वाले, सरकारी नौकर, सड़क पर चलते लोग तथा और भी अन्य कई—पर ये सारे एक गर्मजोशी और सहानुभूति

की भावना से लबरेज हैं। घर से निष्कासित लोग दुर्भाग्यों के बंधक हैं। अपने देश में वे गरीबी से ग्रस्त हैं। एक मृगजल की तलाश ने उन्हें विदेशी धरती पर खदेड़ दिया है। एक सनातन दुविधा में फंसे ये लोग न अपने पुराने घरों को लौट सकते हैं और न विदेशी माहौल में स्वयं को रचा-बसा पाते हैं।

आजाद भारत के बाद के उर्दू गल्प के संदर्भ में (याकि इससे पहले के काल के भी उर्दू गल्प के संदर्भ में) हरचरण चावल के लेखन में समानताएं भी हैं और कुछ प्रस्थान बिंदु भी। शिल्प विधान, अभिव्यक्ति की वर्णनात्मक सहजता के मामले में वह उर्दू उपन्यास की मुख्य धारा के बेहतर रूप का प्रतिनिधित्व करता है। उपन्यास के पात्रों, उनके कार्य-व्यापारों और उसका सहज घटना प्रवाह ही कृति की कथा-वस्तु की सहजता को सामने लाता है। उनमें किसी हस्तक्षेपकारी सूत्रधार या अति उत्साही लेखक द्वारा कोई जोड़-तोड़ नहीं की गई है। हालांकि हरचरण चावला ने अपनी पुरस्कृत कहानी 'एंग्विश ऑव ए हॉर्स' को एक रूपक के इर्द-गिर्द गढ़ा है, अपने उपन्यास में इन्होंने किसी भी दार्शनिकता, पराभौतिकता, या अमूर्तता के तत्वों का सहारा लेने का कोई प्रयत्न नहीं किया है। भटके हुए लोग में इन्होंने विभाजन को पृष्ठभूमि के बतौर रखा है लेकिन जब हेनरी जेम्स या कुर्रतुल ऐन हैदर की तरह ये अपने स्त्री-पुरुषों को भौगोलिक अवरोधों के पार ले जाते हैं तो उनके मामलों में अपनी गहरी अंतर्दृष्टि का परिचय देते हैं। ये प्रकृति के तत्वों में या शानदार भू-दृश्य में किसी सर्वात्मवादात्मक संदेश को पढ़ने की कोशिश नहीं करते, फिर ये उनके साथ एक जबर्दस्त लगाव अनुभव करते हैं। 'भटके हुए लोग' आकर्षण और सौंदर्य का मानवीय दस्तावेज़ है। वह उर्दू के साथ-साथ समकालीन भारतीय उपन्यास के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान है।

—बलराज कोमल

सुना है, कुछ परिंदे मौसमों के साथ हिजरत करते रहते हैं
परिंदे कूच करते हैं
पुरानी बस्तियों से अजनबी देसों की राहों पर
सफर आगाज करते हैं
नई परवाज करते हैं
वही हालात हैं मौसम ने फिर अंदाज बदला है
किसी की चाहतों ने नगमगी का साज बदला है
वफा का रंग धुंधलाया, पड़ी है बर्फ जज्बों पर
जफा के सर्द झोंकों ने किया है दिल को अब छलनी
ये होनी तो नहीं टलनी
चलो, फिर कूच कर जाएं
वो जिनके वास्ते जिंदा थे उनके ही इशारे पर
कहीं पर देश की बेमेहर दुनियाओं में मर जाएं।

—अज़हर जावेद

वक्त के दरिया में उठती थी अभी पहली ही लहर
चंद इंसानों ने ली इक वादि-ए-पनहां की राह
मिल गई उनको वहां
आगोश राहत में पनाह ??

—नूं. मीम. राशिद

1

फ्रैंकफर्ट (जर्मनी) में सरन की पहली शरणस्थली हाइम नंबर चार बनी थी। एक दिन पहले वह यहां ईराकी एयरवेज की उड़ान से पहुंचा था और नहीं जानता था कि कहां जाए, क्या करे या रात कहां गुजारे। पहली रात जैसे-तैसे उसने और मुसाफिरों के साथ रेलवे स्टेशन की एक बेंच पर कैंटीन से खा-पीकर गुजार ली थी। अपना थोड़ा सा सामान स्टेशन पर ही लगे लॉक बाक्सेज में से एक में रखकर दूसरे दिन वह फ्रैंकफर्ट के बाजारों में घूमने लगा था। पूरब से आने वाले को यूरोप की इस महानगरी के पास लुभाने और दिखाने को बहुत कुछ था। एक-एक शो-विंडो के पास रुकते, नई-नई चीजों को देखते उसे शहर में ही शाम हो गई। खाने के नाम पर उसने एक जगह से आलू के चिप्स खाकर और कोका कोला की एक बोतल पीकर पेट का नरक भर लिया था। एक जगह एक जूतों की दुकान के बाहर एक टोकरी में बहुत से जूतों का ढेर रखा था। उसे एक-दो जोड़े बहुत पसंद आए। हाथ बढ़ाकर एक जूता उठाया तो दूसरा गायब। दूसरा ढूंढते-ढूंढते उसे काफी देर हो गई, मगर जूता न मिल सका। फिर अचानक उसे अपने आप पर हंसी आ गई। असल में दुकानदार ने टोकरी में एक-एक ही पैर रखा था यानी आप जोड़ा खरीदना चाहें तो दूसरे पैर का प्राप्त करने के लिए दुकान के अंदर जाकर दुकानदार से मांगें। उसने पहला जूता रखकर एक और जूता उठाना चाहा तो देखा बगल से एक और हाथ भी वही जूता उठाने को बढ़ रहा है। उसने मुड़कर कहा, "यस प्लीज।"

अरे, यह तो शीशा था जो टोकरी के साथ दीवार पर लगा हुआ था और उसने अपने आपको ही कोई दूसरा व्यक्ति समझकर 'यस प्लीज' कहा था। वह अपनी नादानी पर मुस्कराने लगा, मगर उसे फिर एक हाथ जूता उठाता नजर आया। उसने मुड़कर देखा, वह प्रतिबिंब नहीं, सचमुच का उस जैसा एक इंसान था।

"कैसा रहेगा?" आने वाले ने एक जूता उसे दिखाते हुए कहा।

"मारने के लिए या पहनने के लिए?" सरन ने कहा।

वह आदमी खिलखिलाकर हंस पड़ा तो सरन को वह लड़का सा लगने लगा। जब आदमी हंसता है तो अपनी उम्र से कई साल नीचे पहुंच जाता है। वह बोला, "मेरा नाम जॉनी है।"

"महानुभाव, मुझे सरन कहते हैं।"

"मैं तुमसे चार-पांच साल ही बड़ा होऊंगा। इतने कम फर्क से मैं महानुभाव कैसे हो गया?"

"आपको पसंद नहीं तो न सही," सरन बोला, "मुझे कौन सा फर्क पड़ने जा रहा है !"

"कहां से हो? खैर, छोड़ो, जहां से भी हो। अंदर चलो, मुझे यह जोड़ा खरीदवा दो," एक जूता उठाते हुए वह बोला। कुछ मामलों में कुछ लोग कितने असहाय होते हैं।

जूता खरीदकर जब वे बाहर निकले तो जॉनी ने पूछा, "बीयर पिओगे?"

"हां, यह गुनाह भी कर लूंगा," सरन ने जवाब दिया।

"मतलब?"

"मतलब साफ है, बीयर की दस बोतलें भी पेट की भूख नहीं मिटा सकेंगी।"

"तो यूं कहो, भूखे हो। खैर, रहते कहां हो?" जॉनी ने पूछा।

सरन खिसियानी हंसी हंस पड़ा। जॉनी बोला, "समझ गया, नए आए हो। खैर चलो, पहले बीयर पीते हैं, फिर पेट-पूजा का भी बंदोबस्त हो जाएगा।"

स्टेशन से सरन का समान उठाकर जॉनी पहले उसे एक अधेड़ औरत मजदंगी के स्टाल पर ले गया। बाहर ही खड़े होकर उन्होंने दो-दो बोतलें अंदर उंड़ेलीं और उससे पंजाबी भाषा में गंदे मजाक किए और पास ही हाइम नंबर चार में पहुंच गए। यह एक प्रकार का होस्टल था जिसे एक जर्मन चलाता था। एक-एक कमरे में ऊपर-नीचे चार-चार, छह-छह बेड लगे हुए थे जो वह ऐसे ही बेघर व बेदर लोगों को हफ्तावार किराए पर देता था। जॉनी ने उसे भी एक बेड किराए पर दिलवा दिया। कमरों के बाहर एक कोने में गैस हीटर लगे हुए थे, जिन पर उस जैसे और किराएदार अपनी चाय बनाते या खाना पकाते थे।

दो ही दिन बाद सरन ने सब्जी मंडी में जॉनी की सहायता से काम प्राप्त कर लिया। सुबह चार बजे से दस बजे तक वह टमाटरों और कभी-कभी दूसरी सब्जियों को एक-एक और दो-दो किलो के पैक में मशीन से बंद करता जाता। बस, इसी काम के बदले उसे उचित मजदूरी मिल जाती। दिन भर वह चारपाई तोड़ता, कभी अपने अकेलेपन पर उदास, कभी इस नई और अनदेखी दुनिया के नजारों पर खुश, कभी खिड़की में खड़े होकर नीचे बहती माइन नदी में आते-जाते जहाजों को देखा करता और शाम किसी पास के रेस्तरां में बीयर पीते गुजार देता। जिंदगी जैसे-तैसे गुजर रही थी कि दिसंबर के मध्य में उसे काम से जवाब मिल गया। तब तक उसके पास लगभग दो हजार मार्क जमा हो चुके थे।

जॉनी ने सब्जी मंडी के ट्रकों पर सब्जी ढोने का काम छोड़कर एक भारतीय सेठ पतूड़ी मल के साथ ड्राइवर के रूप में काम करना शुरू कर दिया था। जॉनी

ने जब उसे सेठ से मिलाया तो सेठ और सेठानी पहली नजर में उस पर मोहित हो गए, मगर सरन ने उनके यहां काम करने के बजाए जॉनी के साथ लिफ्ट लेकर बेल्जियम जाना अधिक पसंद किया। सेठ के जॉनी की तरफ आंख के इशारे को सरन ने देख तो लिया, मगर शायद समझा नहीं या जानबूझकर अनजान बना रहा। जॉनी सेठ का माल पहुंचाने ब्रसल्स जा रहा था। सरन भी साथ चलने को तैयार हो गया।

बेल्जियम पहुंचते ही जॉनी तो अपने काम में उलझ गया और सरन ने अकेले-अकेले ही ब्रुसल्स शहर के कुछ इलाके देख डाले, मगर उसे कुछ अधूरा सा महसूस होता रहा। देखने को बहुत कुछ, मगर हाय यह अकेलापन ! भरे शहर का यह वनवास जाने कब खत्म होगा ? एक दुकान पर उसे एक छोटा सा कैमरा और उसका नाम 'यासिका' बहुत पसंद आया। शायद वह उसकी 'यास' को 'आस' में बदल सके। उसने कैमरा खरीद लिया, मगर फिर अचानक ही उसके कदम उसे एक एयर एजेंसी के कार्यालय में ले गए। कुछ ही देर बाद उसके हाथों में लंदन का सस्ता हवाई टिकट आ चुका था, जिसने कुछ समय के लिए उसका दिल फिर खुशियों से भर दिया।

ब्रुसल्स के हवाई अड्डे से साबिना का जहाज जब उड़ा तो वातावरण काले बादलों से सांवला हो गया था। बादलों के चेहरे जैसे अपने ही गिरेबानों में झुके उदास हो गए थे। उनकी निचली छतें उनकी अपनी परछाइयों से सुर्मई होकर उदास-उदास लगती थीं। जहाज ऊपर उठ रहा था, मगर आसिम का दिल अंदर ही अंदर कहीं डूबा जाता था। यह उड़ान उसे फिर वहीं लिए जाती थी, जहां से वह एक अर्से से भागा फिरता था। लंदन में सिल्विया आंखें फाड़े, पंजे तेज किए उसे फाड़ खाने को तैयार बैठी थी। उसकी छुट्टियां खत्म हो रही थीं और उसे ड्यूटी पर पहुंचना था। पूरे दो महीने गायब रहने के बाद वह अपने घर लौट रहा था, मगर यह कैसा घर था जिससे उसे डर लगता था, जिसकी चारदीवारी में घुसते ही उसे भय महसूस होता था—उदास घर! उसने इस नाम की पट्टिका कई बार अपने घर के बाहर लगाई थी। अंग्रेजों को उदास का अर्थ क्या मालूम, मगर सिल्विया हर बार यह पट्टिका उतार कर छिपा देती थी।

जहाज बादलों से निकलकर उनके ऊपर आ गया था। सूरज ने अपने पूरे तेज से उनमें आग लगा रखी थी। वे बादल जो पहले काले और उदास लग रहे थे अब फूलों की तरह धूप में धुलकर निखर आए थे। एक नन्हीं सी बच्ची सुंदर फूलदार फ्रॉक पहने जोर-जोर से हंसती जहाज में अपनी मां के आगे-आगे भाग रही थी। उसे देखकर सारे यात्री खुशी से मुस्करा रहे थे। आसिम के साथ वाला यात्री जिसके बाल सुनहरी झलक मारते थे, खिड़की से उड़ते हुए बादलों के खटाखट फोटो ले रहा था। जहाज ने जब

मोड़ काटा तो वही बादल सफेद-सफेद रूई के गालों का समुद्र बन गए जिस पर प्लेन एक बहुत बड़े समुद्री जहाज की तरह तैर रहा था। आसिम खिड़की के पास वाली सीट पर बैठा था। उसके साथी यात्री ने बड़ी विनम्रता से कहा, "क्या आप जरा इधर हो जाएंगे, ताकि मैं इन बादलों को कैमरे की आंख में सुरक्षित कर लूं।"

'ऐसी विनम्र हिंदुस्तानी भाषा'—आसिम ने सोचा। वह तो उसे कोई अंग्रेज ही समझ रहा था। सुर्ख व सफेद रंग और सुनहरी झलक लिए हुए बाल।

"आप...?"

"बाद में..." यात्री ने आसिम को वहीं रोक दिया। जब वह बादलों के चार-पांच फोटो ले चुका तो बोला, "फरमाइए..."

"आप कहां से हैं?" आसिम ने पूछा।

"हिंदुस्तान," यात्री ने छोटा सा उत्तर दिया। इसी बीच आसिम ने पास पड़े हैंड-बैग के पते वाले कोने पर उसका नाम पढ़ लिया—

राम सरन
ए.एस.एम. रेवाड़ी जंक्शन

उत्तर सरन ने चाहे बहुत छोटा दिया था, मगर फिर भी वह आसिम को बहुत अच्छा लगा। सुंदर और आकर्षक व्यक्तित्व। कई लोगों के चेहरे ही ईश्वर ऐसे बनाए हुए होते हैं कि मुस्कराहट और सौम्यता उन पर चिपकी हुई हो। 'रोते क्यों हो, रूप ही ऐसा है,' के बिल्कुल विपरीत। ऐसे लोग रोएं भी तो कोई विश्वास नहीं करता कि वे रो रहे हैं, बल्कि उल्टा ऐसा लगता है कि जैसे रोने का हास्य अभिनय करके हंसा रहे हों। इस आदमी का व्यक्तित्व इतना भरपूर है कि जी चाहता है इससे बात की जाए। यह इच्छा तो आसिम के दिल में उसे देखते ही जाग उठी थी। पता देखकर तो वह दीवाना हो गया। रेवाड़ी—वह सूखा और रेतीला क्षेत्र जिसकी ठंडी रेतों में उसने कितने सुंदर सपने बुने थे। खुद उसने भी कभी रेलवे में इसी स्टेशन पर काम किया था। तब वहां एक अंग्रेज स्टेशन-मास्टर था, मिस्टर बार्न्ज। काश! उसने वहां काम न किया होता तो आज लंदन जैसे सुंदर शहर में उसकी जिंदगी यूं वीरान और परेशान न होती। इसी छोटे से शहर के रेतों ने अपने अंदर एक सुंदर सपना घोलकर उसके सिर में उतारा था और इसी शहर की गाड़ियों ने उसे अपने सपनों के संसार से परे फेंक दिया था। यह कैसी नाव थी, जिसमें कोई उसे बेहोश करके और बेहोश छोड़कर दूसरे किनारे उतर गया था।

उसके मस्तिष्क का प्रोजेक्टर फिर उसकी जिंदगी की फिल्म उसके सामने परदे पर दिखाने लगा। फिल्म, जिसमें अब मात्र उदासी ही उदासी थी। उसने जोर से सर को झटक दिया और सरन की तरफ देखा। वह अब भी बाहर के दृश्यों में खोया हुआ था। आसिम ने अपनी डायरी पर अपने बॉलपेन का हरा सिक्का

निकालकर एक वृत्त बनाया और नीचे उस पर छोटी-छोटी घुंघरियां बना दीं। वह कुछ देर प्रतीक्षा करता रहा और जैसे ही सरन ने अंदर देखा, उसने डायरी का वह पृष्ठ उसके सामने रख दिया।

"ओह !" सरन के मुंह से निकला, "यह तो..."

"मिस्टर बार्न्ज के हस्ताक्षर हैं," आसिम ने कहा, "मैं भी रेवाड़ी जंक्शन पर कुछ समय काम कर चुका हूं। वे ऐसे ही हरी स्याही से हस्ताक्षर करते, जैसे किसी सुंदरी के कान का बाला हो, है न ?"

"बिल्कुल, तभी तो मैं हैरान रह गया। खैर, आपने परिचय का अच्छा ढंग निकाला है। अभी तो आप मात्र इतना जान लीजिए कि मैं राम सरन हूं, रेवाड़ी जंक्शन पर छोटे से छोटा स्टेशन-मास्टर, मगर अब तो भगोड़ा हूं।"

"मैं भी इसी नाव का सवार हूं," आसिम ने कहा।

"हमारी अपनी-अपनी कहानी है, मगर बाहर ऋतु सुहानी है। यात्रा छोटी है और लंदन नजदीक। सुनो, आवाज क्या आ रही है, आसमां से..." सरन ने मुंह पर उंगली रखकर उसे फिर चुप करा दिया और खिड़की से बाहर देखने लगा। आसिम को यह व्यक्ति विचित्र लगने के बावजूद प्यारा लगने लगा। इससे मिलकर यात्रा अच्छी कटेगी, उसने सोचा। 'मगर यात्रा तो पूरी हो गई', उसके सामने, ऊपर स्पीकर पर लहराती हुई आवाज ने जैसे कहा। आसिम ने मन को बहलाया, 'जीवन-यात्रा, वह तो अभी नंगी तलवार की तरह सिर पर लटक रही है। उसका मुकाबला तो करना होगा और अगर ऐसा साथी मिल जाए तो फिर विजय तो निश्चित है।'

"अभी कुछ देर बाद हम लंदन के हीथ्रो हवाई अड्डे पर उतर रहे हैं। आप पेटियां बांध लीजिए।"

यात्री अपनी-अपनी पेटियां बांधने लगे। आसिम ने अपनी पेटी बांधते हुए सरन की तरफ देखा।

वह पेटी नहीं बांध रहा था। आसिम ने सदाचारवश पेटी उठाकर उसकी गोद में रखी दी। वह मुस्कराया, "इसके बिना इंसान लुढ़कता बहुत अच्छी तरह है। मैं बंधकर नहीं मरना चाहता। अगर चूहे की मौत ही मरना है तो मैं बिल्ली से खेल-कूद करने के बाद मरना पसंद करूंगा।"

जब जहाज लंदन के हवाई अड्डे पर उतरा, शाम का धुंधलका छा रहा था। यहां-वहां बंद रास्तों और बिजली की रोशनी ने रात की चादर धीरे-धीरे सिरों पर डालनी शुरू कर दी थी। आसिम ब्रिटिश पासपोर्ट वालों के गेट की हरी बत्ती की ओर बढ़ा। सरन भी उधर ही लपका, मगर अंग्रेजों की दो सौ वर्षीय अनुभवी आंखों ने हिंदुस्तानी कदमों को दूर से ही पहचान मिला।

"प्लीज, कम दिस साइड।"

दूसरी ओर उसका मुआयना हुआ। ऊपर, नीचे और मध्य तक उसका निरीक्षण किया गया, जैसे वह आई.सी.एस. सर्विस का उम्मीदवार हो और उसके अस्तित्व में अंग्रेजी बीज तलाश किए जा रहे हों। उसे अपने आप पर गर्व हुआ कि वह जल्द ही उन्हें उनकी तलाश में निराश कर देगा। तीन अंग्रेज उसका नख-शिख ऐसे जांच रहे थे जैसे वह कोई बहुत बड़ा फिल्मी हीरो है जिसे कुछ देर बाद कैमरे के सामने जाना है और वे उसका मेकअप आदि करके उसे तैयार कर रहे हैं। कुछ और भी उम्मीदवार दूसरे निरीक्षकों की जांच से गुजर रहे थे। उसे उनकी बातों से आभास हुआ कि वे युगांडा के शरणार्थी थे जो इंग्लैंड में प्रवेश चाहते थे।

''आपके पास कुछ पैसे हैं?'' एक अधिकारी ने पूछा। सरन ने पर्स उसके आगे डाल दिया और वापसी का टिकट भी। इन सारी बातों का उसे पहले से ही ज्ञान था।

अधिकारी ने मार्क, डालर, पौंड और गिल्डर्स की अलग-अलग ढेरियां मेज पर लगा दीं। उन्हें गिन कर लिखा और सरन को दिखाकर कहा, ''यह तो अपर्याप्त राशि है। इससे आप लंदन में सप्ताह भर किसी अच्छे होटल में ठहर तो सकते हैं, मगर आप इंडिया वापस कैसे जाएंगे ? आपका वापसी का टिकट तो ब्रुसल्स तक का है या आगे जूरिक तक ? अच्छा, आपका कोई परिचित या दोस्त है यहां ?''

'मुझे ब्रुसल्स, जूरिक या फ्रैंकफर्ट वापस जाना है, इंडिया नहीं। सप्ताह भर लंदन में आराम से गुजर जाए तो अच्छी बात है। मैं भगोड़ा हूं, मगर इनफिल्ट्रेटर नहीं हूं। लंदन मेरे रास्ते में पड़ गया है तो सोचा, इसे भी देख लूं वर्ना लंदन मेरा गंतव्य नहीं, क्योंकि इससे मुझे अपने बाप-दादा की गुलामी का दौर याद आता है।''

अधिकारी शिष्ट एवं शांत स्वभाव का व्यक्ति था। बड़ी विनम्रता से उन्होंने पुनः पूछा, ''यहां आपका कोई दोस्त या परिचित है?''

''हां है, आप जमानतदार की जगह मेरा नाम लिख लीजिए,'' आसिम ने पीछे आकर अपना ब्रिटिश पासपोर्ट सामने रखते हुए कहा।

''देखिए मेहरबान, आप मेरे दोस्त नहीं और न ही पूरी तरह मेरे परिचित हैं,'' सरन ने स्पष्ट किया, ''और मिनटों के परिचय को मैं इतना महत्व नहीं दे सकता कि किसी पर जिम्मेदारी का इतना बड़ा छप्पर लाद दूं।'' फिर उसने अधिकारी से कहा, ''आप मुझे वापस भेज दीजिए। ब्रुसल्स के लिए अगली उड़ान कब है?''

''शाम सात दस पर।''

"तो जल्दी कीजिए, मुझे वापस जाना है।" फिर आसिम की ओर मुंह करके सरन बोला, "अगर आप अपना पता दे सकें तो आपको फ्रेंकफर्ट बुला लूंगा। फ्रेंकफर्ट अच्छी जगह है, देखने योग्य शहर है।"

आसिम ने कार्ड पकड़ाते हुए उर्दू में कहा, "आपने अंग्रेजी बोलकर उस अंग्रेज को हमारी छोटी मुलाकात और परिचय का संज्ञान करा दिया, वर्ना मैं आपको एंट्री दिलवाने में जरूर सफल हो जाता।"

"नहीं, अभी तो यही ठीक है। एक बार आप वहां आ जाएं, फिर मैं भी लंदन आऊंगा, वादा रहा," सरन बोला।

"आना तो नहीं चाहिए, मगर आऊंगा," आसिम ने कहा।

अधिकारी ने घड़ी देखी, पौने सात बज रहे थे, बोला, "महोदय, अगर आपको जहाज पकड़ना है तो फिर अभी चलिए।"

पासपोर्ट पर मुहर लगवाकर वह सरन का बैग थामे खड़ा था। सरन ने आसिम से हाथ मिलाया और जल्दी-जल्दी भीड़ को चीरता जहाज की तरफ बढ़ने लगा।

रात के अंधेरों को चीरता जहाज जब डेढ़ घंटे बाद ब्रुसल्स उतरा तो सरन अपने आप को ताजा महसूस कर रहा था। लंदन से ब्रुसल्स वापस आकर उसे लगा—गए, आए, भला यह भी कोई भटकन हुई ! पीछे कुछ न हो, कोई न हो तो भटक जाने, धक्के खाने और परेशानियां उठाने में एक विशेष आनंद आता है। खैर, अब जॉनी के साथ उसके स्टेशन वैगन में वापस फ्रेंकफर्ट की यात्रा को आनंदायक बनाना होगा। आते हुए वह जॉनी के साथ बहुत बोर हुआ था। ड्राइविंग करते हुए उल्टे हाथ की पहली उंगली हर समय उसके नथुने में घुसी रहती थी और आंखें हर समय पीछे वैगन में भरे रंग-बिरंगे चमकीले शीशों से जड़े लाख के हाथियों पर बार-बार उठती रही थीं। कस्टम पर सैकड़ों हाथियों में से न जाने क्यों चुनकर और ढूंढ कर चार हाथी उसने ड्यूटी अधिकारी को रिश्वत के रूप में दिए थे, यद्यपि टोल टैक्स के सारे कागजात फ्रेंकफर्ट से तैयार किए हुए उसके पास थे। तब सरन चौंका, घबराया और सोचा कि जाने सेठ पतूड़ी मल ने उन हाथियों में क्या हीरे-जवाहरात भर रखे थे कि विशेष निशान वाले हाथी जॉनी को तलाश करने पड़े। सरन तो बहुत सीधा आदमी था, मगर जॉनी की बार-बार पीछे घूमती नजरों ने उसके दिल में संदेह की गांठ डाल दी थी। अगर संयोगवश कुछ हो गया तो? जॉनी खुद मात्र ड्राइवर बनकर और उसे सेठ या मालिक बनाकर सब कुछ उसके सिर थोप देगा। पहले दुखों ने उसके दिल में जिंदगी से घृणा भर दी थी। वह मरना चाहता था, मगर जिंदगी से खेल कर। वहां जिंदगी उसके साथ खेलती रही थी, अब वह जिंदगी को गेंद की तरह आगे-आगे ठोकरें लगाता लुढ़काए फिरता था।

वह सारी रात उसने एअरपोर्ट के लाउंज के आरामदेह सोफे पर बिता दी। ऑटोमार्ट से अगड़म-बगड़म निकाल कर पेट भर लिया और सुबह वह मेट्रो ट्रेन से शहर पहुंच गया। एस.ए. इंटरप्राइजेज के कबाड़खाने के आगे ही उसे टेढ़ा-मेढ़ा सरदार घंघोर सिंह मिल गया, ''ऊंट रे ऊंट...!''

''सरन जी, आप आ गए ! जॉनी एक घंटे बाद जा रहा है। दुकान पर माल लोड कर रहा है। चलिए, मैं उधर ही जा रहा हूं। इधर कुछ सामान लेने आया था,'' घंघोर सिंह स्टियरिंग पर बैठे हुए बोले जा रहा था।

''सरदार जी, आप गाड़ी कैसे चलाएंगे? छोटी टांग, टेढ़ी आंख और मुड़े हुए हाथ के साथ। ना भई ना, मुझे तो डर लगता है। चार दिन और न जी लूं, क्या विचार है आपका?''

सरन की अनभिज्ञता में उसके ही हाथों सरदार ने भारत से एक गुड़िया मंगवाई थी जिसके पेट से न जाने क्या निकला था कि दो दिन में ही सरदार पर धन की वर्षा घनघोर घटाओं की तरह बरस गई। लंदन जाने से पहले सरन ने खुद सरदार के कमरे में उस गुड़िया का पोस्टमार्टम किया हुआ शरीर कूड़े के डब्बे में देखा था। तब सरदार बहुत घबराया था मगर सरन सारा मामला पचा गया था, जैसे उसने कुछ देखा ही नहीं। तब उसे पता चला था कि वह किस तीर का निशाना बनाया गया था। दिल्ली में जिस व्यक्ति ने उसे टिकट सस्ते दामों पर दिलवाया था, बदले में सरन का यह एहसान लिया था कि गुड़िया सरदार जी तक पहुंचा दी जाए। टेलीफोन पर सेठ पतूड़ी मल से सरदार की तू-तू-मैं-मैं भी सरन ने सुन ली थी जो इसी गुड़िया के बारे में थी। शायद सरन के दिल की भड़ास अब सरदार से मजाक के रूप में निकली थी और वह सरन की सारी धृष्टता मां के दूध की तरह पी गया था।

''मेरा छोटा भाई मेरा बाप भी है,'' औरंगजेब ने सरन को हंसते हुए बताया, ''देखिए ना, मेरा नाम औरगंजेब है और उसका शाहजहां। कंपनी का नाम एस ए. इंटर प्राइजेज, और हम बादशाहों के राज में कोई भूखा रहे या किसी का अधिकार मारा जाए, यह हम बर्दाश्त नहीं कर सकते। अच्छा, पहले आप बताइए, आप खाएंगे क्या ?''

''कुछ भी, जो मेरी गर्दन को इतना मजबूत कर सके कि फंदे की काट आसानी से बर्दाश्त कर ले,'' सरन अभी तक मजाक के मूड में था।

''वाह, आप तो बड़े रोचक आदमी लगते हैं,'' औरगंजेब ने स्नेह भरा हाथ सरन के कंधे पर रखते हुए कहा, ''बहरहाल, आप खा-पी लीजिए, फिर, वैसे आप जॉनी के साथ फ्रैंकफर्ट जा रहे हैं ना। अरे हां सरदार जी, एक बोतल रख देना जॉनीवाकर की इनके साथ।''

''ठीक है, ठीक है,'' सरन ने मुस्कराते हुए कहा, ''छुरी के नीचे रखने से पहले बकरे को अच्छी तरह खिला-पिला लेने के पक्ष में मैं भी हूं।''

"अरे क्या बात करते हैं आप, सरन साहब ! हम तो आपको अपना दोस्त समझते हैं। वैसे आप आदमी बड़े विनोदी हैं।"

सरन आगे ड्राईवर की साथ वाली सीट पर बैठ चुका था। उसने कार में लगे टेपरेकार्डर का स्विच ऑन कर दिया, कोई गा रहा था :

फिर मेरे कत्ल का सामान किया जाता है।

जॉनी, औरंगजेब और सरदार में खुसर-फुसर जारी थी। वे जॉनी को कुछ समझा रहे थे। कभी-कभी उनकी नजरें सरन की ओर भी उठ जाती थीं, जो अपनी ही दुनिया में मस्त खोया-खोया बैठा था। सरदार की टेढ़ी आंख और मुड़े हुए हाथ के इशारे वैसे भी उसकी समझ से बाहर थे।

2

लोग योगा सीखते हैं। कराटे और जुडो की कला सीखते हैं। दुश्मन का मुकाबला करने के लिए पहलवानी और कुश्तियां करके अपना शरीर बनाते हैं, तब कहीं इन लाइनों में पड़ते हैं। सरन ने तो सीधे गाड़ियां ही इधर से उधर भेजी थीं। लोगों को रोजगार के लिए घरों से दूर ले जाने वाली और कमाकर अपनों और प्रियजनों से मिलाने वाली। बस, इसके अतिरिक्त उसे दुनिया के किसी हेर-फेर का ज्ञान नहीं था। हां, एक बार एक स्टेशन पर किसी गुनी की सेवा के बदले और बार-बार के अभ्यास से एक गुण उसके हाथ लग गया था। आवश्यकता के समय बचाव की खातिर, न तलवार मारो न तमंचा, हाथ मिलाते हुए मात्र हाथ दबा दो। सरन के हाथ में अगर किसी का हाथ एक मिनट भी रह जाता और वह चाहता तो कई दिनों के लिए उसका हाथ नकारा करके रख देता। किसी हाथ को डेढ़-दो महीना बेकार कर देने के लिए उसके हाथ की तीन मिनट की पकड़ ही काफी थी। किसी खाई में गिरने से पहले दो-तीन मिनट हाथ मिलाने के बहाने सही, वह अवश्य दुश्मन का हाथ थामने में सफल हो जाएगा, इसका सरन को पूर्ण विश्वास था और इसी के सहारे वह बड़ी मस्ती से जिंदगी से खिलवाड़ कर लेता था। यदि किसी कारणवश शत्रु सरन का हाथ न थामे तो उसका कंधा कौन-सा सरन की पकड़ से दूर रह सकता था ? वह दूसरे के कंधे के साथ भी हाथ जैसा व्यवहार कर सकता था।

शाम को जब सारा माल सेठ पतूड़ी मल के सूखे-सड़े बंगले में सही-सलामत, और ठीक-ठाक भूमिगत सैलर में रखवा दिया गया तो खुशी से उसके पांव धरती से एक-एक फुट ऊपर पड़ रहे थे। वह बार-बार मेज को ठंगोरे से बजाता और जॉनी से सारी यात्रा की रिपोर्ट लेता जाता था। बार-बार उसका हाथ जॉनी के कंधे पर

थपकी देता और उसके मुंह से निकलता—

"वाह शेर, शाबास पुत्तर!"

एक घंटे बाद सेठ जॉनी और सरन को अपनी मर्सडीज में लिए पैराडाइज हॉफ की तरफ दौड़ रहा था। बीयर के कई गिलास पीने और पिलाने के बाद सेठ ने जर्मन खानों का भरपूर आर्डर दिया, जिनका नाम भी सरन को न आता था। कुछ देर बाद जब सेठ तरंग में आकर बहकने लगा तो बोला, "जॉनी और सरन, मेरी एक बात पल्ले बांध लो। इस लाइन में पड़ना है तो घर गंदा, नाम न समझ में आने वाला और पत्नी सुंदर रखो।"

सरन और जॉनी के सामने इस समय एक सवाल था और मात्र एक ही जवाब, "क्या ऐसा खाना फिर मिलेगा ?" और जवाब था, "जबड़ों का तेज प्रयोग, ऊंट की तरह तीन दिन का खाना अंदर समेट लो। जाने फिर रेगिस्तान में कहां तक भूखे-प्यासे यात्रा करना पड़े।"

"देखो वालस्टॉड की सुंदर कॉलोनी में जहां और लोगों के घरों से रंग-बिरंगे फूल झांकते हैं, मेरे घर के दरवाजे पर घास भी सूख और सड़ चुकी है। प्रिय जनो, लाल गुदड़ी में अधिक सुरक्षित रहते हैं।"

सेठ ने अंगूठे से मेज बजाई, "और सुनो, एक बात और भी काम की सुन लो। नाम तुम्हारा जितना टेढ़ा-मेढ़ा और न समझ में आने वाला होगा उतना ही तुम्हारे लिए शुभ सिद्ध होगा। किसी सेठ का नाम तुमने अशोककुमार, चन्द्रशेखर या सुभाषचंद्र नहीं सुना होगा। धनीमल कनीमल, टेंडालाल, थानाराम-चौकीराम, दूर क्यों जाते हो मुझे हो मुझे ही देख लो, पतूड़ी मल, बाप का नाम सिन्दूरी मल और दादा का नाम गंधोरी मल। इससे आगे मुझे याद नहीं, मगर परदादा भी अगर मोतियों में खेला होगा तो हजूरी मल ही रहा होगा।"

कुछ देर सेठ हिचकियां लेता रहा, फिर जारी हो गया, "पत्नी सुंदर रखने का उपाय आधुनिक है। तुम्हारी जगह कोई और बिजनेसमैन मेरे साथ होता तो नियमानुसार उसकी या मेरी पत्नी भी यहां होती। कई बार पत्नियों के पुल से जवाहरात की दुनिया में बड़ी आसानी से पहुंचा जा सकता है।"

रात एक बजे जब जॉनी और सरन ने सेठ को उसके घर छोड़ा तो वह बहुत अधिक हिचक रहा था। उसे बिस्तर पर डालकर जब वे मुड़ने लगे तो उसने संकेत से सरन को पास बुलाया और जब सरन उसके चेहरे पर झुका तो सेठ ने बड़े जोर से थप्पड़ उसके चेहरे पर मारने की एक्टिंग की, मगर हाथ उसके गाल के पास लाकर बड़े प्यार से धीरे से छू दिया और कहा :

"तुम कल मेरे दफ्तर जरूर आना। तुमसे एक जरूरी बात करनी है।"

"जरूर जरूर।" सरन ने कहा और परे हटा, मगर सेठ ने फिर उसकी गर्दन में बांह डालकर अपने ऊपर झुका लिया, "जरूर आना, जरूर आना।"

सेठ के मुंह से थूक का फव्वारा सरन के गालों से टकराया, वह तड़पकर उठा और जाने के लिए मुड़ा। थूक से लिपटा हुआ एक वाक्य उसके पीछे-पीछे भागता आया, "एक सुंदर भविष्य तुम्हारे द्वार पर खड़ा है।"

रास्ते में सेठ के गुब्बारे से अचानक हवा निकल जाने जैसी फुसफुसी हंसी उसके कानों से टकरा रही थी और वह सोच रहा था कि कल वह सेठ से मिले या नहीं। हाइम नं. चार के दरवाजे पर ड्रॉप करने से पहले जॉनी ने सरन से कहा, "सेठ तुमसे बहुत खुश है। कल उसे जरूर मिलना। वह तुम्हें बहुत अच्छे वेतन पर अपने यहां नौकर रख लेगा।" फिर वह हाथ मिलाते हुए बोला, "अच्छा चलूं, मैं तो सेठ की कार में, या उसके दफ्तर के बाहर बरामदे में पड़ी बेंच पर रात बिता लेता हूं। यह हाइम नं. चार का जर्मन मालिक तो लुटेरा है। शायद यहूदी होगा।"

दूसरे दिन सरन सेठ के दफ्तर पी.एल. बुरो जी.एम.बी.एच. जाने के बजाय दैनिक समाचारपत्र 'नाख तॉस गाबे' के दफ्तर में खड़ा था। वहां से कई भारतीय, पाकिस्तानी, तुर्की, यूगोस्लाव और जाने कहां-कहां के लड़के अखबारों की वर्दी का नीला कोट, जिसकी छाती पर लाल व सफेद रंग से अखबार के नाम का बैज लगा हुआ था, नीला थैला और पचास-साठ या ज्यादा अखबार ले रहे थे। काम उनका यह था कि अखबार विशेष स्थान पर खड़े होकर बेचो, लगभग पंद्रह-बीस मार्क तक की कमाई तुम्हारी, उससे ऊपर की आमदनी शाम को अखबार के दफ्तर में बिना बिक्री किए हुए अखबार के साथ जमा करा दो। कई-कई जगहें तो ऐसी भी थीं जहां पचास तो क्या दस-बारह अखबार से ज्यादा निकल ही नहीं पाते थे। उस दशा में दूसरे दिन दफ्तर, निर्धारित राशि अपने पास से पूरी कर देता था अर्थात चार घंटे काम की कम से कम आमदनी निश्चित थी। जब सब अखबार ले चुके तो सरन आगे बढ़ा, "शेफ, बिटे आरबाइड(चीफ के लिए मेहरबानी काम)।"

"निक्स आरबाइड, कॅम मार्गन—(काम नहीं है, कल सुबह आओ)," चीफ ने खिड़की बंद करते हुए कहा।

किसी ने पीछे से सरन के कंधे पर हाथ रखा। उसने मुड़कर देखा। एक लंबा-तड़ंगा लड़का था, संभवतः भारतीय या पाकिस्तानी, "मेरा नाम गुलाम हैदर है, पिंडी का रहने वाला हूं। आप कहां से हैं?"

"दिल्ली से, मेरा नाम राम सरन है।"

"नए आए हो, रहते कहां हो?" उसका लहजा हमदर्दी भरा था।

"हाइम नं. चार में।"

"अरे, काम है नहीं और हाइम में रहते हो ! वहां तो तुम्हें जर्मन सेठ लूटकर खा जाएगा। अच्छा, एक काम करो। मैं तुम्हें जगह दिखाता हूं, जहां मैं अखबार बेचता हूं। यहीं पास ही साइल पर है। टिसट और ओमेगा वाच कंपनी की बड़ी घड़ी के ठीक नीचे। चलो, चलकर देख ही लो। फिर शाम छह बजे मिलना। तुम्हें

अपना कमरा दिखा दूंगा। आराम से रहते जाओ, जब तक काम नहीं मिलता।"

'नाख तॉस गाबे' का सांध्य संस्करण शाम साढ़े सात बजे निकलता था, इसलिए गुलाम हैदर के पास लगभग एक घंटा समय था। वह उसे अपने कमरे पर ले गया जो बीच शहर में सैंडविग 59 की बिल्डिंग में चौथे तल पर स्थित था। छोटा सा कमरा, खिड़की पर झालरदार लाल पर्दे, फर्श पर कीमती गलीचा, मेज पर ब्लैक एंड व्हाइट टी.वी., रूम हीटर, सोफा-कम बेड, दो आरामकुर्सियां, एक कपड़ों की अलमारी, बीच में गोल मेज और एक कोने में फ्रिज। साथ ही छोटा सा किचन, दूसरी ओर बाहर के दरवाजे के पास ही बॉथ और टॉयलट। यह छोटा सा आवास एक आदमी के लिए ठीक था, मगर दो आदमियों के लिए निश्चित ही अनुपयुक्त था, क्योंकि यह आवास था, हाइम नहीं। कितना बड़ा दिल है इस व्यक्ति का, सरन ने सोचा जो इतनी सी जगह में उसे भी अपने साथ रहने की आज्ञा दे रहा है।

"आप आराम से यहां रहें, खाना आदि पकाएं। मात्र अस्सी मार्क मासिक किराया है, वह आपको देना होगा। मुझे तो सी. एंड ए. स्टोर्स के पास ही एक छोटा सा फ्लैट मिल गया है," गुलाम हैदर ने कहा।

अरे, अस्सी मार्क मासिक भी कोई किराया है भला ! हाइम नं. चार में एक कमरे में छह आदमी रखकर भी जर्मन सेठ उससे डबल लेता था। उस हिसाब से तो यह बहुत सस्ती जगह है और साफ कितनी है। कृतज्ञ भाव से सरन की आवाज बंद हो गई, वह कुछ भी न बोल सका। गुलाम हैदर ने उसके कंधे पर हाथ रखा और कहा, "कल अखबार के दफ्तर जरूर पहुंचना, शेफ ने कहा है तो काम जरूर देगा ?

दूसरे दिन सरन को अखबार का थैला, नीला कोट और पचास अखबार मिल गए। शेफ ने अपनी कार में उसे उसकी नई जगह पर पहुंचा दिया। सरन को दो बजे से शाम छह बजे तक वहां खड़े होना था। पहले दिन जब वह दो घंटे एक जगह खड़ा हुआ तो दर्द टांगों से शुरू होकर शरीर के हर भाग में यूं रेंगता फिरता था जैसे कोई बड़ा दरिया समुद्र में गिरने से पहले छोटी-छोटी नदियों में बंट जाता है। बाकी दो घंटे तो उसने तड़प-तड़प कर गुजारे। रेलवे नौकरी के सोलह-सत्रह साल उसने कुर्सी पर बिताए थे। कुर्सी भी ऐसी चिपकू सी, जैसे पीछे उसकी बैक पर चूड़ीदार पेंच लगा हो जो उसकी पीठ में पेंच खाकर उसे वहीं कसे रखता हो। बहुत हुआ तो अपनी सौ-दो सौ गज की रियासत में इधर-उधर चक्कर लगा लिए या दफ्तर से पीछे क्वार्टर में घुस गए। साढ़े पांच बजे तक उसके कुल आठ अखबार बिक सके थे और उसकी टांगों ने उसका बोझ ढोने से इंकार कर दिया था। पास ही खड़ा एक जर्मन विज्ञापन बांट रहा था। सरन ने अपना मानार्थ मिला हुआ अखबार उसे दे दिया। पांच मिनट बाद वह सरन को अखबार की सुर्खी बताने आ

गया, मगर वह अंग्रेजी नहीं जानता था और सरन जर्मन भाषा से अनभिज्ञ था। इसलिए सरन सिर हिलाकर या-या कहता रहा। अखबार के एहसान के बदले वह बीयर की दो बोतलें ले आया। एक उसने सरन को पकड़ा दी और दूसरी अपने मुंह से लगा ली। बीयर सरन की थकावट चूसने लगी। इतने में एक अखबार-विक्रेता लड़का उधर से गुजरा। दो मिनट सरन के पास रुका, फिर उसके हाथ से बोतल लेकर बोतल के मुंह को हथेली से पोंछा और बड़े-बड़े दो घूंट लेकर बोतल का मुंह फिर पोंछ कर उसे सरन को लौटा दिया और बोला :

"इश अली, इश तुर्कई। इश फ्रोसटोर दू इंडिया। वस नामे दू। साह तुंग निक्स गुट आडट।" (मैं अली हूं, तुर्की का। मैं समझता हूं, तुम भारतीय हो। तुम्हारा अखबार अच्छा नहीं बिक रहा।)

सरन को जर्मन बिल्कुल नहीं आती थी, मगर इन लोगों के कहने का ढंग ऐसा था कि संकेत से हर बात समझा लेते थे। मगर अली ने जब देखा कि सरन जर्मन बिल्कुल नहीं जानता तो अंग्रेजी में बोला कि वह उसके क्षेत्र के लोकालों (बीयर और खाने के छोटे-मोटे रेस्तरा) में अखबार बेच सकता है। साढ़े चार या अधिक से अधिक साढ़े पांच बजे तक उसके सारे अखबार बिक जाते हैं। इसलिए सवा पांच के बाद सरन उसके लोकालों में अपने अखबार निकाल सकता है। सरन ने अभी तक जर्मन भाषा का एक ही शब्द सीखा था, 'डांके श्योन' (सुंदर, धन्यवाद), बहुत-बहुत धन्यवाद कहना हुआ तो 'फ्लेरे डंक' कह दिया। उसने अली को धन्यवाद कहा और बोतल को फिर उसके हाथ में थमा दिया। अली ने बोतल के मुंह को हाथ की हथेली से पोंछा और पीता गया। थोड़ी सी बीयर बचाकर और मुंह पोंछ कर उसने बोतल सरन को वापस दे दी। अखबार तो सरन के मात्र बारह ही बिके थे, मगर वह इतना टूट चुका था कि लोकालों में जाकर अखबार बेचने की हिम्मत उसमें नहीं थी। शेष अखबारों के साथ शाम को वह अखबार के दफ्तर में पहुंच गया। बिना बिके हुए अखबार वापस करके उसने रसीद प्राप्त कर ली जो उसने दूसरे दिन अखबार लेने से पहले दूसरे लोगों की तरह खिड़की पर शेफ को दे दी। उसने कुल तीन मार्क और साठ फेनी अखबारों की बिक्री से कमाए थे। लगभग बारह मार्क देकर शेफ ने उसकी मजदूरी पूरी कर दी और जर्मन भाषा में कुछ कहता भी गया। खिड़की से हटकर सरन ने गुलाम हैदर से पूछा कि शेफ क्या कह रहा था। गुलाम हैदर ने कहा, "कह रहा था, बिक्री बढ़ाओ वर्ना यह जगह बंद करनी पड़ेगी। पांच-छह मार्क पास से देने पड़ें तो यह लोग जगह बंद नहीं करते, मगर दस-बारह मार्क तो बहुत ज्यादा है।"

सरन ने अखबार लोकालों में भी देने शुरू कर दिए। बारह-पंद्रह अपनी जगह पर बेचने के बाद पंद्रह-बीस वह लोकालों में निकालने लगा। वह एक अखबार प्रतिदिन उस जर्मन को देता रहा और जर्मन हर रोज उसे सुर्खी पढ़कर सुना जाता।

शाम को दस-पंद्रह शेष अखबार पहुंचाने वह जब अखबार के दफ्तर जाता तो शाम का अखबार लेने वाले उसे वहां बैठे मिलते, जिनमें अधिक संख्या पाकिस्तानियों की थी और दो भारतीय छोकरे लुधियाना के थे। पाकिस्तानियों को भारत और हिंदू धर्म के बारे में जितना ज्ञान था उतना स्वयं सरन को नहीं होगा और यही उनकी बातों का विषय रहता था या सरन को देखकर वे इसी विषय पर बातचीत शुरू कर देते थे, क्योंकि प्रायः उनका सारा ज्ञान नकारात्मक था। सरन हैरान होता कि अपने यहां तो जनसाधारण का ज्ञान पाकिस्तान के बारे में बहुत कम था, शायद दिल्ली से दूर के प्रांतों को उस देश का नाम उतना ही मालूम हो जितना श्रीलंका, बर्मा, चीन या अफगानिस्तान का। न समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में पाकिस्तान के बारे में कोई विशेष खबर छपती थी और न ही कोई अच्छा या बुरा प्रचार नजर आता था। कभी कोई एक-आध खबर इधर-उधर छप गई, शायद लोग दे-दिलाकर अब इस सारे क्रम को भूल और भुला चुके थे। सरन ने स्वयं देखा था, सन् 1965 के युद्ध में जो लड़के ग्यारह, बारह या तेरह साल की उम्र के थे, गलियों में साहिर लुधियानवी की नज्म गाते फिरते थे :

जंग तो खुद ही एक मसअला है
जंग क्या मसअलों का हल देगी ?
आग और खून आज बखशेगी
भूख और एहतियाज कल देगी।
इसलिए ऐ शरीफ इंसानो !
जंग टलती रहे तो बेहतर है।
आप और हम सभी के आंगन में
शमा जलती रहे तो बेहतर है।

तब बड़ों में एक जोश तो था, मगर बिल्कुल ऐसे जैसे बाढ़ के आगे सब मिलकर बांध बांध रहे हों। जब युद्ध के सोलह दिन समाप्त हुए थे, तब फिर सब लोग पहले की तरह निश्चित और शांत हो गए थे। एक दिन पाकिस्तानियों में से एक ने अपना खत पढ़कर सबको सुनाया, जिसमें सरहद पर झड़पों की बात थी और आने वाले युद्ध का भय था। उसे भारत से कभी-कभी दोस्तों के पत्र आते रहते थे। एक पत्र दो दिन पहले मिला था। किसी में भी ऐसी किसी बात का संकेत नहीं था। सरन अपने ही विचारों में खोया हुआ था कि लड़का चिल्लाया :

"अबके दिखा देंगे कि किससे पाला पड़ा है इन लोगों का।"

सरन को बड़ा अजीब लगा। उसका मुंह अवसाद से भर गया और उसके चेहरे का रंग पीला पड़ने लगा। वह इन सारे झगड़ों से दूर रहना चाहता था। अत्याचार उसके साथ भी हुआ था, मगर वह उसे भूल-भुला चुका था। क्या इतने साल बाद भी वह दूसरों के पांव की ठोकरें खाता फुटबाल बना रहेगा ? लुधियाना

के दोनों छोकरे भी ऐसी किसी आने वाली वास्तविकता से बेखबर थे। भारत के सर पर युद्ध के बादल जरूर मंडरा रहे थे, मगर युद्ध का बुखार नहीं था।

अली अंदर आया तो सरन से कहा, "हाय।"

सरन ने रोनी सी आवाज में जवाब दिया, "हाय।"

अली उसकी आवाज की उदासी को भांप गया, पूछा, "के आ बात हाय ?"

उसने टूटी-फूटी उर्दू अपने साथ काम करने वाले भारतीय और पाकिस्तानी लोगों से सीखी थी। कई बार उसे इन अनपढ़ लोगों के मामले जर्मन शेफ को समझाने के लिए इनसे बात करनी पड़ती थी जो पचास-साठ अंग्रेजी के शब्दों को उर्दू में गड-मड करके अपना अर्थ पूर्ण करते थे।

सरन अंग्रेजी में बोला, "मुझे तो कुछ पता नहीं। फिर उन लोगों की ओर संकेत करके बोला, "अच्छा हो, आप इनसे पूछें।"

अली की आंखें कह रही थीं, रोती शक्ल तो तुम्हारी नजर आ रही है और पूछूं उनसे, मगर उसने उनमें से एक लड़के से कहा, "के आ बात हाय?"

लड़का अंग्रेजी जानता था, बोला, "भारत पाकिस्तान से युद्ध करने जा रहा है।"

अली उन दस-बारह पाकिस्तानियों को और अकेले सरन को देखकर बड़े जोर से हंसा। बोला, "लगता है, जैसे मुर्गियों के दरबे में बिल्ला घुस आया हो।"

लड़के ने अपनी ओर से अली की कमजोर नस पकड़ ली, "यह हिंदू है।"

अली एकदम गंभीर हो गया, बोला, "तो क्या हुआ, हिंदू तो गांधी भी था।"

"गांधी ने क्या किया था, तुम्हें पता है?" उनमें से एक बोला।

"हां, पता है," अली बोला, "जब पाकिस्तान से दो राष्ट्र सिद्धांत के नाम पर एक-एक हिंदू को निकाला जा रहा था, गांधी ने करोड़ों मुसलमानों को भारत में अपने घरों में बैठे रहने दिया था। उनको भी जिनके हाथ डाइरेक्ट ऐक्शन के नाम पर कितनों के खून से रंगे हुए थे और जो कल तक 'लेके रहेंगे पाकिस्तान' भारत की गली-गली में चिल्लाते फिरा करते थे। जानते हो, यह काम गांधी से पहले किसने किया था?" अली ने पूछा।

जब सब अज्ञानता का भारी लबादा ओढ़े अली के सामने खामोश खड़े रहे तो अली बोला, "हजरत मुहम्मद साहब ने। जब उन्होंने मक्का में प्रवेश किया तो आदेश दिया था, किसी भी दुश्मन से बदला मत लो। किसी को भी उसके घर से मत निकालो। उनमें वे घर भी थे, जो जीत कर आने वाले लोगों के अपने छोड़े हुए घर थे, मगर रसूल की शिक्षा थी कि उनको हाथ न लगाया जाए। हजरत मुहम्मद ने उन लोगों को भी माफ कर दिया जिन्होंने कुछ ही समय पूर्व इस्लाम को मिटाने की कोशिशें की थीं, जिन्होंने रसूले-पाक का नाम लेने वालों को तपती रेतों पर लिटाया और उनके सीनों पर गर्म पत्थर रखे थे और रसूले मुबारक के रास्ते पर कांटे बिछाए थे। उन लोगों को सजा मिलती तो कोई न कहता कि उन

पर अत्याचार हुआ है। हजरत ने उन सबको आजाद कर दिया था। यहां तक कि अबूसुफियान की पत्नी हंदा को भी माफी मिल गई थी। उस पत्थर-दिल औरत ने 'ओहद' के युद्ध में रसूले-खुदा के चचा अमीर हमजा का कलेजा चबाया था। हुजूर ने अमीर हमजा के कातिल तक को भी माफ कर दिया था।''

''आप गांधी और रसूल की तुलना नहीं कर सकते,'' लड़का आवेश में बोला।

अली शांत स्वभाव से कहता गया, ''मैं उनका मुकाबला नहीं कर रहा हूं। मैं कह रहा हूं, हजरत के बाद सैकड़ों साल के इतिहास में एक अच्छी बात की अनुसरण की घटना केवल इसी जगह दिखाई देती है।''

लड़का शायद इस सचाई को रद्द करने के योग्य नहीं था या यह सचाई उसे सचाई लगती ही नहीं थी। वह सरन को सुनाकर बड़े जोश से बोला, ''अब के तो ईंट से ईंट बजा देंगे।''

इतने में अखबार की खिड़की खुल गई थी। अली बोला, ''अभी तुम अखबार लो और बेचो,'' फिर वह सरन की ओर मुड़ा, ''क्या तुमने शाम का अखबार भी शुरू कर दिया है?''

''नहीं, शेष अखबार और पैसे देने आता हूं,'' सरन बोला।

''अरे, इसकी क्या जरूरत है ?'' अली बोला, ''तुम अपने अखबार और पैसे दूसरे दिन भी खिड़की पर अखबार लेने से पहले लौटा सकते हो। चलो, मैं शेफ से कह देता हूं।''

अली सरन को लेकर खिड़की पर पहुंचा तो इससे पहले कि वह शेफ से कुछ कहे, शेफ ने शाम के काम का भी प्रस्ताव सरन के सामने रख दिया, मगर सरन ने शाम का अखबार लेना पसंद न किया और अखबार भी दूसरे दिन लौटाने लगा। इस तरह यह कड़वा विषय उसके लिए कुछ अवधि के लिए बंद हो गया।

3

कोई बीस दिन बाद जब जर्मन ने अखबार की नई सुर्खी/उसे सुनाई तो वह उसे तत्काल समझ गया, हालांकि उसने कहा था, ''इंडिया पाकिस्तान बुम-बुम।'' उसने उंगली से रिवाल्वर चलाने का संकेत भी किया था। सरन को इस खबर ने उदास ही किया। उसे युद्ध से हमेशा घृणा रही थी, चाहे वह दुनिया के किसी भी हिस्से में हो। युद्ध तो खुद ही एक समस्या है।

मालिक-मकान जो कि ग्राउंड फ्लोर पर रहता था की लड़की प्रायः उसके पास शाम को आने लगी थी। उसके जवान सौंदर्य के चांद और खुशबू से सरन का छोटा

कमरा लबालब भर जाता था और सरन की उदासी उन बेबस मच्छरों और मक्खियों की तरह जिनके पीछे फ्लिट छिड़का जा रहा हो, दरवाजे और खिड़की के दराजों से जान बचाकर बाहर भाग जाती थी और अंदर रह जाती थी दोनों की हंसी, मजाक और चहचहाहट। पहले दिन जब वह आई थी, उसने कहा, ''मिस्टर !''

''सरन।''

''मिस्टर सरन, मैं तुम्हारे इंडियन खानों की खुशबू पर इतनी मोहित हूं कि खुद को रोक नहीं सकी। मैं तुमसे इंडियन पिज्जा पकाना सीखना चाहती हूं।'' वह चपातियों को पिज्जा कहती थी।

सरन ने अपनी सब्जी में मिर्चें डालना कम कर दी थीं और उन्हें तड़कना या भूनना तो बिल्कुल ही बंद कर दिया था। चपातियां पकाते-पकाते वह बिल्कुल अनजाने अपने केशों का जाल सरन के कंधों पर बिखरा देती। जब सरन उस जाल में फंसा तो उसे बहुत देर बाद पता चला कि यह उस लड़की का एक निर्धारित कार्यक्रम था। शायद हर इश्क के पीछे आयोजन होता है। पहली नजर का यह तीर कहां लगता है, कब लगता है, इसका तो पता ही नहीं चलता।

युद्ध की खबर के कोई सप्ताह भर बाद गुलाम हैदर उसके पास आया। उसके साथ एक और लड़का भी था। वह बोला, ''मिस्टर सरन, आप कल हाइम चले जाएं। कल से यह लड़का यहां रहेगा।''

सरन अभी सोच ही रहा था कि पेट्रा आ गई। गुलाम हैदर ने उसे रास्ते में घेरकर बताना शुरू किया कि कल से यह लड़का यहां रहेगा, क्योंकि यह मुझे मेरे सारे सामान के लिए पांच सौ मार्क दे रहा है। उसने आज तक सरन से पांच सौ मार्क देने के बारे में कहा ही नहीं था, वर्ना सरन खुद भी यह राशि कहीं न कहीं से बंदोबस्त करके सहर्ष भुगतान कर देता।

पेट्रा बोली, ''नहीं, यह इंडियन यहीं रहेगा।''

''मगर यह पांच सौ मार्क नहीं दे सकता।'' गुलाम हैदर ने आधार प्रस्तुत किया।

सरन बोलने ही लगा था कि पेट्रा ने उसके हाथ पर हाथ रख कर उसे खामोश कर दिया। वह खट-खट करती नीचे गई और घर से पैसे ले आई। उसने सौ-सौ के पांच नोट गुलाम हैदर के हाथ में थमा दिए।

''मगर मैं छह सौ मांग रहा हूं, क्यों जहीर?'' गुलाम हैदर ने लड़के की तरफ आंख दबाकर कहा। लड़के ने हां में सर हिला दिया। पेट्रा फिर टप-टप करते नीचे गई और एक नोट और लाकर उसे पकड़ा दिया और हाथ झटक कर बोली, ''डांके श्योन।''

वह जाने लगे तो सरन बोला, ''गुलाम हैदर रुको, चाय रखी है।''

''नो चाय। आई से, डांके श्योन।'' पेट्रा ने जोर से कहा। वे दोनों ढीले-ढीले

क़दमों से सीढ़ियां उतर गए। लकड़ी की सीढ़ियां जो हर आने-जाने वाले के क़दमों के नीचे जोर से बजती थीं, उन दोनों के जाने से ऐसे खामोश रहीं जैसे उन्होंने पांव में रूई के गाले बांध रखे हों।

कुछ दिन बाद एक व्यक्ति ने बड़े दुखी मन से सरन को उसकी अखबार बेचने की जगह सरेंडर की सूचना दी। सूचना देने वाले को जब सरन के चेहरे पर कोई भी भाव नजर न आया तो उसने दुख भरे शब्दों में सूचना को फिर दुहराया। सरन धीरे से बोला, "आई एम इंडियन।"

"बिल्कुल पाकिस्तानी लगते हो, मजाक मत करो," उस व्यक्ति का चेहरा वेदना से भर गया।

सरन ने शांत और दृढ़ लहजे में कहा, "मैं शत-प्रतिशत भारतीय हूं।"

"फिर तो तुम बहुत खुश होगे," उसने व्यंग्य किया।

"नहीं। मैं न ही खुश हूं और न ही उदास, क्योंकि अभी मैं नहीं जानता कि मैंने क्या खोया है, क्या पाया है।"

वह व्यक्ति होठों ही होठों में कुछ बड़बड़ाता और मुड़-मुड़ कर पीछे देखता आगे बढ़ गया।

सरन को दूसरे अखबार 'फ्रैंकफर्टर रुडंशा' में शाम का काम मिल गया। क्षेत्र सेक्शन हाउस के लोकाल्स का था। लगभग सौ-सवा सौ लोकाल एक मील की परिधि में फैले हुए थे, उसे उनमें अखबार बेचना होता था। दिन के अखबार का वातावरण उसे रास नहीं आया था। इसलिए उसने 'नाख तॉस गाबे' का अखबार छोड़ दिया।

अब दिन भर खाली रहने के कारण वह घर पर ही पड़ा रहता। दो बजे के लगभग युनिवर्सिटी से आने के बाद पेट्रा सीधी उसके पास आ जाती। वे शाम के छह बजे तक इकट्ठे रहते। एक दिन सरन ने उसके पैसे देने चाहे। नाराज भी हुआ, मगर वह पैसे लेने पर राजी न हुई, बल्कि उल्टा रूठ गई। एक दिन उसके पहले अखबार का साथी वह लुधियानवी लड़का उसे बाजार में मिला। उसके हाथ में एक सुंदर फूलदार कागज में पैक किया हुआ पार्सल था। मुस्कराकर बोला, "अपनी गर्ल फ्रेंड के लिए उपहार ले जा रहा हूं।"

सरन को लगा, क्यों न वह भी इतने पैसों का उपहार पेट्रा को दे। इस उद्देश्य से वह सेठ पतूड़ी मल के स्टोर पर पहुंच गया। पति-पत्नी उसे देख कर प्रसन्न हुए। सरन ने जब अपना मुद्दा बताया कि वह कुछ भारतीय परिधान देखना चाहता है तो सेठानी ने बड़े तीखे अंदाज से मुस्कराकर उसकी ओर देखा और ब्लाउज, मिनी, मिडी, मैक्सी और जाने क्या-क्या कुछ बताती और दिखाती रही। कुछ कपड़े पानीपत के खेसों से बने हुए थे। कुछ पर नकली सलमा-सितारे का काम था, कुछ पर कढ़ाई की गई थी, कुछ पर छोटे-छोटे शीशे लगे हुए थे। कुछ आभूषण थे जो भारत में

मलंग और मस्त मौला किस्म के फकीरों के शरीर पर देखे जाते हैं। उसने सेठानी की राय से कुछ विचित्र प्रकार के परिधान चुने। बिल बनवाया तो लगभग सवा पांच सौ मार्क का बना। सेठानी बोली, "कीमत तो जरूर ज्यादा है। मैं तो एक बात कहूंगी कि बाजार में ये वस्तुएं हजार-बारह सौ से कम की क्या होंगी !"

"लौंडिया खुश हो जाएगी," सेठ जो पास आकर खड़ा हो गया था, चहक कर बोला, "प्रिये, हम ऐसा क्यों न करें," उसने पत्नी से कहा, "सरन साहब कॉफ हॉफ के बड़े स्टोर, वही जो गोएटे प्लाज के दाहिनी ओर है, के करीब दिन में दो-तीन घंटे हमारी चीजों का स्टाल लगा लिया करें। पैसा हमारा, चीजें हमारी, और कमाई में तीस प्रतिशत मुफ्त में इनका।"

"मैं तो एक बात कहूंगी, सरन साहब का भाग्य जाग उठेगा। यह तो बहुत अच्छी बात है।"

सेठानी ने यूं हामी भरी जैसे सारे जर्मनी में वही अकेली सरन की सच्ची शुभचिंतक हो। "यह तो वह बात हुई कि न हींग लगे न फिटकरी और रंग चोखा होइ।"

सेठ ने सरन के बिल में तीस प्रतिशत की और छूट कर दी, क्योंकि वह उनका स्टॉल लगाने के लिए मान गया था।

उपहार पाने के बाद पेट्रा स्वयं को कृतज्ञ महसूस करने लगी थी। युनिवर्सिटी से आने के बाद वह सीधी सरन के स्टाल पर आ जाती और जर्मन भाषा बोल कर ग्राहकों को निपटाने लगती, क्योंकि भाषा की अज्ञानता के कारण सरन को गूंगों की तरह संकेत से काम चलाना पड़ता था। स्टाल पर भारतीय परिधान एवं आभूषणों के साथ बहुत सी अगरबत्तियां भी रखी रहती थीं। वह एक अगरबत्ती जलाकर रख देती तो उसकी सुगंध दूर-दूर से लोगों को स्टाल की ओर खींच लाती। एक दिन वह सरन के लिए केले, सेब, संतरे, टॉफियां और दो बीयर की बोतलों का थैला लाकर रखते हुए बोली, "सरन, सुबह क्या खाकर आते हो?"

"हल्का सा नाश्ता।"

"बस, फिर तो तुम बहुत भूखे रहते होगे। मेरे साथ आओ।"

स्टाल किसी साथ वाले स्टाल-मालिक की देख-रेख में छोड़कर वह उसे 'भूमिगत' में ले गई और एक ऑटोमाट के सामने खड़ा करके बोली, "ठीक है, तुम्हें कॉफ हॉफ या हरटी तक जाने का समय नहीं, मगर यहां ऑटोमाट तो पास है। यहां से वांछनीय वस्तुएं निकाल लिया करो, भूखे न रहा करो।"

ऑटोमाट क्या था, दीवार में लगी हुई एक बहुत बड़ी अलमारी थी जिसमें विभिन्न खानों में विभिन्न वस्तुएं जैसे दूध, दही, लस्सी के गत्ताबंद डिब्बे, बीयर, बिस्कुट, टॉफियां, मूंगफली, काजू के पैकेट और दूसरी कई वस्तुएं भरी थीं। सारे खानों पर नंबर लिखे हुए थे। कोने में एक फोन लगा हुआ था। अपनी वांछनीय

वस्तु का नंबर और कीमत पढ़ो, ऊपर एक छोटे से छेद में वस्तु की कीमत के सिक्के डालो और फोन पर वांछनीय वस्तु का नंबर घुमा दो। तुरंत फोन के पीछे से एक टोकरी चलती हुई वस्तु के खाने के सामने रुक जाती। खाने में चीजें लाइन में पड़ी होतीं। उनमें से पहले नंबर पर अर्थात सबसे आगे रखी वस्तु एक हल्के से झटके से आगे बढ़ती और टोकरी में गिर जाती और उसके पीछे वाली वस्तु आगे आकर नंबर एक पर बैठ जाती, नए ग्राहक की प्रतीक्षा में। टोकरी वस्तु लिए वापस अपनी जगह पर आती और फोन के पीछे थोड़ा सा नीचे झुक जाती, जहां एक छोटी सी खिड़की खुलती और ग्राहक अंदर हाथ डालकर टोकरी में से वस्तु उठा लेता। फोन के पास ही एक चौकोर छोटा सा बोर्ड था। सिक्के डालते ही बोर्ड पर लिखा हुआ आ जाता कि आपने कितनी राशि डाली है। आपकी वस्तु टोकरी में गिरते ही बोर्ड आपकी शेष राशि दिखाने लग जाता जो एक बटन दबाने पर नीचे एक खाने में आ पड़ती और बोर्ड पर शून्य दिखने लगता।

सरन तीसरे-चौथे दिन सारी कमाई सेठ के क्लर्क के पास जमा करवा देता था। अपना तीस प्रतिशत भी वहीं छोड़ आता। शाम छह बजे अखबार लेकर आठ बजे तक समाप्त करके वह पेट्रा के साथ किसी डिस्कोथेक क्लब में जा बैठता। दोनों नाचते, रात देर गए लौटते तो वे सारा रास्ता इस तरह जुड़े हुए होते जैसे वे दो नहीं, एक हों। अंधेरी सड़क पर कोई भी उन्हें देख लेता तो समझता जैसे एक ही व्यक्ति आ रहा हो। कभी-कभी सैंडवे पर चढ़ने के बजाय वे चिड़ियाघर की ओर गलती या मस्ती में निकल जाते। चिड़ियाघर की सफेद बिल्डिंग देखकर उन्हें अपनी गलती का एहसास होता। सरन तो फ्रैंकफर्ट में नया था, मगर पेट्रा वहीं पली-बढ़ी थी। शायद वह रास्ते को लंबा करने के लिए एक स्वार्थी सी मस्ती अपने ऊपर ओढ़ लेती थी, क्योंकि सरन के कमरे तक जाने का रास्ता उसके घर के सामने से होकर जाता था, जहां उसकी बड़ी बहन की नजरों की सूइयां सारे रास्ते पर बिछी महसूस होती थीं। सरन को उसकी बड़ी बहन की घृणा या प्रतिस्पर्धा का आभास शुरू में ही हो गया था। वह चाहता था कि पेट्रा के रास्ते से हट जाए, मगर वह जब उसके सामने आती तो उसके सारे इरादे डावांडोल हो जाते थे।

सेठ पतूडी मल के पास सरन के कोई पांच हजार मार्क जमा हो चुके थे, मगर वह कभी अपना हिसाब मांगने उसके पास नहीं गया था। एक दिन सेठ बोला, "सरन साहब, हमारे पास आपके कोई साढ़े चार हजार मार्क जमा हो चुके हैं, जबकि हमारा माल आपके पास लगभग दो हजार का होगा," फिर वह अपनी पत्नी से बोला, "प्रिये, क्यों न हम सरन को चार हजार के बदले बीस हजार का माल बल्कि इससे भी अधिक दे दें ताकि बड़े पैमाने पर काम कर सकें ?"

"क्या मतलब?" सरन चौंका, जैसे मक्खी जाल में फंसने से पहले पंख फड़फड़ाती है।

''अरे भई, मतलब साफ है, तुम्हारे लिए मैं कुछ करना चाहता हूं,'' फिर उसने पत्नी की ओर मुंह करके कहा, ''भली लोग, तुम ही इसे समझाओ!''

''सरन साहब !'' वह बहुत मीठी मुस्कान के साथ कुर्सी घुमाकर उसकी ओर मुड़ी।

''शूमाखर स्ट्रासे पर हमने एक दुकान ली है। मैं तो एक बात कहूंगी, आप उस दुकान के मैनेजर, मालिक और सब कुछ, कर्ता-धर्ता होंगे। हम जल्द ही उसमें फोन भी लगवा देंगे। माल हमारा, रहना, वेतन और कमीशन तुम्हारा। मैं तो एक बात...''

सरन के सात पीढ़ियों में कोई बिजनेसमैन नहीं था और व्यापार के हेर-फेर का उसे रत्तीभर भी ज्ञान नहीं था। उसने फिर पंख झटके, ''मुझे सोचने दो, कल बताऊंगा।''

''आस्क योर गर्ल फ्रेंड,'' सेठ ने मजाक किया मगर सरन के चेहरे पर कोई प्रभाव न पाकर बोला, ''बाय दे वे...''

सेठानी ने मुस्कराकर कहा, ''मैं तो एक बात कहूंगी...''

सरन ने पेट्रा को सारी बात बताई तो उसने कहा, ''वेतन और कमीशन तो पूछा होता, निवास तो देखा होता।''

दूसरे दिन सेठ ने पांच सौ मार्क मासिक वेतन, कुल बिक्री पर पांच प्रतिशत कमीशन और दुकान के पीछे कमरा टॉयलट के साथ, फ्रिज सोफा, मेज, कुर्सी और गलीचा सहित देना स्वीकार किया। सरन ने चाबी लेकर कमरा पेट्रा को दिखाया तो वह तुरंत तैयार हो गई। बोली ''ठीक है, वेतन कम है मगर कमीशन भी तो है,'' उसने आंख दबाकर कहा, ''कमरे का सुख भी।'' सरन झिझका तो वह समझाते हुए बोली, ''आगे सर्दियां आ रही हैं। बाहर स्टाल लगाना बहुत कठिन होगा।''

सुबह नौ बजे से शाम छह बजे तक बीच में केवल आधे घंटे की छुट्टी के अतिरिक्त साढ़े आठ घंटे सरन बंधा हुआ दुकान पर उपस्थित रहता। ढाई-तीन बजे के लगभग पेट्रा आ जाती। दिन भर सरन से नाम मात्र को ही सेल हो पाती थी, क्योंकि वह जर्मन भाषा नहीं बोल सकता था। हां, पेट्रा के आने के बाद जरूर कुछ न कुछ बिक जाता था। सरन कभी-कभी काम छोड़ने पर अड़ जाता तो पेट्रा उसे समझाती कि काम अभी नया है, धीरे-धीरे चल पड़ेगा तो बहुत अच्छी बिक्री होने लगेगी। कपड़े चूंकि अधिकतर औरतों के ही थे, इसलिए दुकान पर अधिकतर लड़कियां ही आती थीं। सरन दिल बहलाने के लिए निभाए जा रहा था। भारत से आने के बाद उसे सब कुछ फीका-फीका लगता था। एक नादान बच्चे की तरह वह नई-नई चीजों की तरफ लपकता जरूर था, मगर जल्द ही उसका मन भर जाता था और वह दूसरे खिलौनों की तरफ हाथ बढ़ाने लगता था।

शाम छह बजे जब वह दुकान बंद करके अखबार लेने जाता तो पेट्रा भी घर चली जाती। रात नौ साढ़े नौ बजे वह सेक्शन हाउस में उसे आ मिलती और फिर वे किसी क्लब, रेस्तरां या डिस्कोथेक में बैठ जाते। उसके आ जाने के बाद अगर अखबार कुछ रह भी जाते तो सरन उन्हें छोड़ देता था।

उस दिन सरन के आधे अखबार तो साढ़े सात बजे ही समाप्त हो गए थे। अब उसके पास मात्र पच्चीस अखबार शेष थे। पंद्रह ट्राली में छोड़कर दस बाजू पर धरे वह 'सात तुंग' रेस्तरां में घुसा तो वह लड़की तीन लड़कियों और एक लड़के के साथ पांचवीं मेज पर बैठी थी। सरन के अंदर प्रवेश करते ही उसने सरन की तरफ देखना शुरू किया। वह जहां-जहां अंदर अखबार दिखाता फिरा, लड़की की नजरें उसके साथ-साथ घूमती रहीं। आखिर लड़की ने खुद ही संकेत से उसे अपने पास बुलाया और अखबार मांगा। सरन ने अखबार बढ़ा दिया। अखबार थाम कर उसने पांच मार्क का सिक्का सरन को थमा कर कहा, "डांके श्योन", और उसका हाथ दबा दिया। सरन समझ गया कि वह शेष पैसे टिप दे रही है। अखबार वालों को लोग टिप बड़ी खुशी और सम्मान से देते थे, क्योंकि अखबार बेचने का काम अधिकतर छात्रों के पास होने के कारण उसे बड़ा पवित्र काम समझा जाता था। सरन ने सिक्का जेब में रख लिया और आगे बढ़ने लगा। लड़की ने कहा, "बीयर पीओगे?"

"नहीं, धन्यवाद! मुझे यह अखबार बेचने हैं।" लड़की बहुत सुंदर थी। सरन का दिल चाहता था, क्षण भर के लिए उसके साथ बैठ जाए, मगर उसे पेट्रा की चिंता थी। लड़की ने सारे अखबार उसके बाजू से उतार कर सामने मेज पर रख दिए और पूछा, "कितने होंगे? मेरा तात्पर्य है, कितने दाम होंगे ?"

"तीन मार्क!" सरन ने कीमत बता दी।

लड़की ने पांच का सिक्का उसकी तरफ बढ़ाकर सारे अखबार दूसरी ओर खाली कुर्सी पर रख दिए, "हमने खरीद लिए। लो, अब बीयर पीयो।"

अब सरन क्या कहता ? विवश होकर उसे गिलास थामना पड़ा और वह चुस्की-चुस्की पीने लगा। लड़की और पास से उसे देखने लगी। वह बहुत निडर और निर्भीक सुंदरी थी। सरन उसके सामने औरतों की तरह शरमा रहा था और वह उत्साहित होती जाती थी। उसने सरन के बालों में उंगलियां फेरनी शुरू कर दीं। फिर उसकी एक उंगली सरन के बालों से फिसलकर उसके माथे, नाक और नन्हीं-नन्हीं मूंछों की लकीर से गुजरती हुई होठों को क्रास करती ठोड़ी पर आ रुकी। उसने अपनी सहेलियों को जर्मन भाषा में कुछ कहा, फिर सरन से पूछा, "कहां रहते हो ?"

सरन ने दुकान का कार्ड जेब से निकाल कर उसे पकड़ा दिया। कुछ देर बाद सरन को बाहर ट्राली में पड़े अखबारों और पेट्रा का ध्यान आया। उसने बाकी बीयर

जल्दी-जल्दी अंदर उंड़ेली, मगर उसकी आखिरी घूंट भरने से पहले लड़की ने एक और बीयर का गिलास मंगवाकर उसके सामने रख दिया। जैसे-तैसे सरन ने उसे भी खत्म किया, मगर लड़की के आर्डर पर सरन के न-न करते तीसरा फिर उसके सामने रख दिया गया। लड़की की आंखें उसे अमृत समझकर पी जाने का आमंत्रण दे रही थीं। वह झिझका तो लड़की ने गिलास से एक घूंट लेकर, पुच की आवाज निकाली और हवाई चुंबन उसकी तरफ उछाल दिया। विवशतः उसे तीसरा गिलास भी पीना पड़ा। बीयर के लिए धन्यवाद कहके वह उठा और शिष्टाचारवश पूछ लिया, ''क्या आप कल मेरी दुकान पर आ सकेंगी? राधे-कृष्णा नाम है, शूमाखर स्ट्रासे पर...''

सरन को दुकान का यह नाम कभी पसंद न आया था। उसने लाला पतूड़ी मल से कहा भी था, ''इतना सुंदर नाम और एक दुकान का? सेठ जी मुझे तो कुछ जंचता नहीं। क्या हम भगवान को बेच रहे हैं यहां?''

''हां, भगवान को तो बेच ही रहे हैं,'' सेठ ने कहा था, ''व्यापार के मामले में मैं किसी धर्म-वर्म पर विश्वास नहीं करता। मेरा धर्म बिकाऊ माल सप्लाई करना है। मेरा बस चले तो गायें भी बेचकर खा जाऊं। कानपुर में मेरा चमड़े का बहुत बड़ा व्यापार था। लोग तो इंसानों का चमड़ा भी उतारकर बेच खाते हैं। मैं तो जानवरों का चमड़ा बेचता था।''

तब सरन को सेठ की यह बात बड़ी विचित्र लगी थी। इससे पहले कि वह कोई जवाब देता सेठ ने उसके चेहरे के अवसाद को भांप लिया था और कहा था, ''देखो, यह नाम बड़ा आकर्षक है। आज आधा यूरोप 'राधे कृष्णा, हरे रामा' गाता फिरता है। क्या हम अपने भगवान को धूप-दीप करने के लिए अगरबत्तियां नहीं बेचते ?'' तब सरन चुप हो गया था। क्या कहता, सुनता कौन ?

वह अपने विचारों से चौंका। लड़की कह रही थी, ''आज रात ही हम हंबर्ग चले जाएंगे।'' उसने अपनी दोस्तों की तरफ देखा और सरन से कहा, ''तुमसे मिलने की चाह दिल में रहेगी।''

सरन ने अखबार बेचना छोड़कर 'पैराडाइज हाफ' का चक्कर लगाया। फिर ट्रॉली खड़ी करके बाहर एक बेंच पर बैठ गया। जाने पेट्रा अभी तक क्यों नहीं आई थी ? पंद्रह मिनट की प्रतीक्षा के बाद उसने सोचा कि वह शेष अखबार भी निकाल दे। उसने फिर पिछली गली का चक्कर लगाया, करीब पांच अखबार और बिक गए। अब कोई चिंता की बात नहीं थी, मगर फिर भी उसके कदम उसे 'सात तुंग' के दरवाजे पर ले गए। कुछ ही देर बाद वह लड़की और उसके दोस्त बाहर आए। सरन ने कदम आगे बढ़ाए। मगर लड़की लपककर उसके पास पहुंच गई। अपने कंधे पर उसका हाथ महसूस करके वह रुक गया। मुड़ा तो लड़की उसकी बांहों में झूल गई। फिर सीधी होकर भरी गली में उसके गले में बांहें डाले उससे सटकर

खड़ी हो गई। वह तेज-तेज सांसों के बीच सरन को चूमती और बांहों में भींचती जाती थी। उसके दोस्त दूर गली के कोने में जाकर उसकी राह देखने लगे थे। वे बीच राह लिपटे खड़े थे। लोग आ-जा रहे थे। सरन का चेहरा लाल हो रहा था और उसे लग रहा था जैसे उसके हाथों की परिधि में अंगारा फंसा हुआ है। वह उसे छोड़ नहीं सकता था, क्योंकि वह उसकी बांहों और सीने दोनों की चमड़ी को क्रास करके और अदंरूनी तहों तक को जलाकर उनसे चिपक चुका है। बचपन में एक बार उसने अंगारा हाथ पर उठा लिया था तो वह उसकी नर्म व नाजुक हथेली से चिपक गया था जो उसके रोने-चिल्लाने पर उसकी मां ही उसके हाथ से छुड़ा सकी थी। सरन को भी लड़की पहली ही नजर में भा गई थी। अब जबकि वह खुद ही इतनी आगे बढ़ आई थी तो वह क्या करता ? वह तो सीधा-सादा आदमी था, भोला-नादान, मगर सुंदरता का पुजारी।

बहुत देर बाद जब वह गई तो सरन के कदमों में डगमगाहट और सिर में एक विशेष प्रकार की मस्ती और नशा था। उस दिन वह 'पैराडाइज हाफ' के सैलर के कोलाहलपूर्ण डिस्कोथेक में भी मानसिक रूप से अनुपस्थित रहा। पेट्रा के साथ फ्लोर पर नाचते हुए भी वह बार-बार कहीं खो जाता था और उसके कदम उल्टे-सीधे पड़ने लगते थे। तेज-तर्रार व कुशाग्र बुद्धि पेट्रा के लिए बात की तह पा जाना कोई मुश्किल काम न था। जब उसने बीयर के दो बड़े गिलास सामने लाकर रखे और सरन ने छोटे का आग्रह किया तो वह रुक नहीं सकी, झल्लाकर बोली, "क्या ज्यादा पी गए हो ?"

"हां, तीन गिलास पहले पी चुका हूं।" सरन को अखबार बेचते डुए प्रायः लोगों के साथ पीना पड़ जाता था। कई लोग इतने प्रेम और मुहब्बत से पास बिठाते और मजबूर करते कि वह बेबस हो जाता था। यह उस राष्ट्र का आतिथ्य और विशेष रूप से छात्रों के लिए हार्दिक प्रेम भी प्रगट करता था।

"हां, बीच सड़क में तुम्हें उसका एहसान उतारते और आलिंगनबद्ध होते देख चुकी हूं।" औरत रबड़ की भी हो तो मर्द को दूसरी औरत की बांहों में देखना बर्दाश्त नहीं कर सकती। सरन पेट्रा के साथ बैठे होने के बावजूद अभी तक उसकी यादों में गुम था। वह कहां तक बर्दाश्त करती ?

उस रात पेट्रा जल्दी उठ गई। बुटीक पर पिछले कमरे में भी उसके साथ अंदर नहीं गई। बस बाहर से ही 'ऑव बिटे सेन' (गुडबाय) कहा। हाथ लहराया, यह जा, वह जा। सरन ने सोचा, आज वह नाराज है, बात ही कुछ ऐसी हो गई है। वह क्या कर सकता है ? लड़की निस्संदेह अतिसुंदर थी, मगर उसने तो उसे बहुत तिरस्कृत किया था। वह खुद ही उससे चिपक गई तो वह क्या करता, उसने कभी देवता बनने की कोशिश नहीं की। शैतान भी नहीं बनना चाहता था, मगर वह एक साधारण इंसान ही तो था जिसमें हजारों कमजोरियां होती हैं, सैकड़ों

बेबसी—खैर कोई बात नहीं, पेट्रा बुटीक पर तो आएगी। वह दुकान बंद करके पिछले कमरे में उसके साथ घुस जाएगा और उसे इतना प्यार करेगा कि चुंबनों की बौछार में उसके दिल की सारी शंकाएं धुल जाएंगी। कहेगा—पेट्रा, वह तो आई-गई चीज थी—आई और हाथ के मैल की तरह चली गई।

4

दूसरे दिन सरन ने सचमुच दो बजे दुकान बंद कर दी थी। पिछले कमरे में वह उसके साथ दो घंटे बंद रही। सरन सहर्ष लुटता रहा। कुछ चेहरे होते ही ऐसे हैं कि हजारों वादे, सैकड़ों कसमें और बीसियों राजपाट एक क्षण में लुटा देने में तनिक हिचकिचाहट नहीं होती। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि उन्हें देखकर पिघल जाते हैं, सरन तो एक साधारण मनुष्य था। बेचारा मामूली इंसान, खिलौना। सरन ने उसकी पसंद के ड्रेस भी उपहार-स्वरूप उसे दिए। कोई दो सौ मार्क का बिल था, मगर फिर भी वह खुश था। उसे इतने में वह स्वर्ग बहुत सस्ता महसूस हो रहा था। उसे लग रहा था जैसे उसने उसे लूट लिया है। वह शायद रात की गाड़ी से नहीं जा सकी थी या शायद जानकर रुक गई थी। बहरहाल, दूसरे दिन वह बुटीक पर कोई डेढ़ बजे आई थी। फिर वे चाय के लिए अदंर के कमरे में चले गए थे। फिर अपने आप दरवाजे बंद हो गए, अंदर कैद हो गए, जैसे फिल्मी दरवाजे अपने आप बंद होकर प्रेमियों के रक्षक बन जाते हैं।

कोई तीन बजे के लगभग सरन को बाहर खटका सा लगा था। मगर चांद की नई दुनिया जो हाथों में थी, उसे बहुत अधिक सुंदर और मादक लगी थी। पौने चार बजे वह गई तो पंद्रह मिनट बाद पेट्रा ने प्रवेश किया और क्षमा-याचना करती हुई बोली, "माफ करना, आज देर हो गई।"

"कोई बात नहीं," सरन ने कहा, मगर डर की एक रेखा उसके चेहरे पर खिंच गई। कहीं वह अभिनय तो नहीं कर रही है !

आधे घंटे बाद किसी काम से वह अदंर के कमरे में पहुंची तो लंबे-चौड़े दीवान पर डवल बेड चादर गडमड हो रही थी जैसे उस पर कुश्ती लड़ी गई हो। सरन डरा हुआ-सा भरा कुछ देर बाद उसके पीछे पहुंचा तो वह खड़ी बिस्तर को देख रही थी। "अरे, उठने के बाद चादर तो ठीक कर दिया करो," उसने बिस्तर की चादर ठीक करते हुए कहा।

पेट्रा का व्यवहार बदल रहा था। वह दुकान पर भी सप्ताह में तीन-चार दिन आने लगी थी। शाम को भी वह सेक्शन हाउसन में सरन के साथ कम ही ठहरती

थी और रात को रुकना तो बिल्कुल ही छोड़ दिया था। सरन ने एक-दो बार उसे रोकना चाहा, मगर वह किसी न किसी बहाने टाल गई।

त्रिमां। हां, उसने यही नाम बताया था, संभवतः पूरा नाम सेटत्रिमां था। वह जापानी सौंदर्य का अनुपम नमूना थी। गोरी, नन्हीं-मुन्नी, काले बालों वाली, पांव में नन्हें-मुन्ने जूते थे। नंगी गोरी-गोरी पिंडलियां और जांघें, ऊपर एक मध्यम लंबाई का फ्राक पहने थी। कंधे पर सफेद किट बैग और सर पर पी कैप, न जाने कहां-कहां की यात्रा करके पहुंची थी। थकावट के बावजूद उसके चेहरे पर फूलों जैसी ताजगी और सौंदर्य था। अंग इतने छोटे-छोटे, सुंदर और कोमल थे कि नजर हटाना मुश्किल था। वह जंगली बर्फानी रीछ के सफेद चमड़े वाले मोढ़े पर बैठी तो कोई देवी लग रही थी। उसने कई चीजें देखी थीं, रेशमी स्कार्फ, चिकन के लखनवी कुर्ते, एथेंस से आए सफेद चमकदार जमीन पर सुंदर चटख रंग-बिरंगे फूलों से कढ़े ब्लाउज, क्रेप के भारतीय ब्लाउज, सादे और कढ़ाई वाले, हैंड बाटिक कुर्ते, काटन की मिनी और मैक्सियां, अगरबत्तियां, सेबों के बीजों से बने नेकलेस, मुंद्रियां, छल्ले, भारत के हर प्रांत के परिधान में सजी-संवरी गुड़ियाएं, इटली और तुर्की के पर्ल रिंग्स, चार, आठ, बारह और सोलह पीस की। वह इतनी चीजें देखना नहीं चाहती थी, सरन ही उसे दिखाने पर तुला हुआ था। वास्तव में वह ट्रायल के लिए जब लकड़ी के जालीदार पर्दे के पीछे कपड़े बदलती तो सरन जाली के फूलदार छेदों से उसे देख-देख कर पागल हुआ जाता था। कपड़े पहनकर वह बाहर आती, कमरे के दरवाजे पर लगे बड़े शीशे में खुद को घुमा-फिरा कर चारों तरफ से देखती तो सरन के होश उड़ जाते थे। हर ड्रेस उस पर यूं फबती थी जैसे सब कुछ उसी के लिए बनाया गया हो। जैसे किसी महाराजा की बेटी के दहेज के लिए सैकड़ों दर्जी हजारों पहनावे सिल डालते हैं, विभिन्न डिजाइन के, मगर एक ही नाप के। कोई ड्रेस उस पर बहुत तंग होती तो सरन को लगता जैसे यूरोप के सारे बड़े-बड़े शहरों में तंग कपड़े पहनने का रिवाज आ गया है और हर तरफ सुंदरियां, तंग कपड़ों में कसी-कसाई अपने आकर्षक अंगों का प्रदर्शन करती फिरती हैं। किसी खुली ड्रेस में उसे देखकर लगता जैसे किसी खुले ड्रेस के बहुत बड़े व्यापारी ने किसी बहुत बड़ी फिल्मी हिरोइन को अपनी चीज को फैशन में लाने के लिए लाखों रुपए के साथ पहली ड्रेस में प्रस्तुत किया है, जिसे वह किसी आने वाली फिल्म में पहनकर अभिनय करने जा रही है। वह शीशे में देखने बाद सरन की ओर प्रशंसनीय निगाहों से देखती और सरन कह देता, "वाह, यह ड्रेस तो आप पर यूं खिल उठी है जैसे अब तक इसी शरीर की प्रतीक्षा में पड़ी रही हो।"

सरन व्यापार के क ख ग से बिल्कुल अनभिज्ञ था। दुकान पर यदा-कदा ही ग्राहक आता था। जो भूले-भटके आ जाता तो सरन आयं-बायं-शायं कर-करके

उसे भगा देता था। यह उसकी शरारत नहीं, मजबूरी थी। वह एक उखड़ा हुआ इंसान था, वह क्या करता ? मगर त्रिमां को वह इस तरह अटेंड कर रहा था जैसे वह दुनिया का सर्वश्रेष्ठ सेल्समैन हो। शायद उसके अंदर का सौंदर्य-पुजारी मर्द पूरब और पश्चिम के संगम पर खड़ी जापानी हसीना को हर रूप, हर रंग में देखकर अपनी प्यास बुझाना चाहता था। अगर सरन कपड़ों की उस दुकान पर तैनात न होता तो वह कैसे अपनी दिलचाही हसीना को देख सकता था और अगर कहीं रास्ता चलते देख भी लेता तो इतने सुंदर कपड़ों में सजा-सजाकर कैसे देखता ?

यह ठीक है कि त्रिमां के कपड़े बदलते हुए, नंगे और विभिन्न परिधानों में देख-देखकर सरन के शरीर में कोई चीज एंड़ी से चोटी तक बल खा रही थी, मगर जब वह चाय बनाने अंदर गया तो खुद ही उसके पीछे अंदर आई थी। यह भी ठीक है कि कपड़ों को उसके शरीर पर बिठाते और बल व तनियां बंद करते कई बार उसके हाथ त्रिमां के शरीर से छुए थे और उसके अंदर एक ज्वालामुखी भड़की थी, किंतु उस समय कॉटन की लाल मिनी में जिसके गले, बाजुओं और कलाइयों पर मनकों का काम था, वह बहुत आकर्षक लग रही थी, लाल अंगारे जैसी। और यह भी बिल्कुल सच है कि वह अंगारा खुद ही उसके हाथों पर आ पड़ा था। न सिर्फ आया था, बल्कि चिपक गया था। वास्तव में उस कमरे की दहलीज इतनी ऊंची नहीं थी कि कोई उससे ठोकर खा सकता, मगर उसने ठोकर भी खाई थी और सरन की बांहों में गिरी भी थी। सरन ने उसे थामकर दीवान पर बिठाया था। उसने चाय पी थी, बिस्कुट और केक खाए थे और पूछा था, "क्या मैं यहां दो क्षण आराम कर लूं?"

उसकी आंखें बंद हुई जा रही थीं या शायद सरन को ऐसा लगा था, क्योंकि जापानी आंखें तो हंसते और बातें करते हुए भी कई बार बंद हो-हो जाती हैं। उन्हें प्रकृति ने बनाया ही ऐसा है जैसे हर समय आधी बंद रहती हों। या मदमस्त। हां, सरन ने यह जरूर किया था कि बाहर का दरवाजा बंद कर दिया था।

उसने वही बीड़ के काम का कुर्ता, चार पर्ल रिंग्स, दो स्कार्फ, एक गुड़िया और एक मैक्सी पसंद की थी। ढाई सौ मार्क का बिल था। बिल देखकर उसने कहा था, "मैं केवल यह मैक्सी और दो रिंग ही खरीद सकूंगी।"

"ओ.के., बाकी मेरी ओर से उपहार हैं," सरन ने तुरंत कहा

"नहीं, नहीं, यह बहुत ज्यादा है," वह बोली।

"यह तो कुछ भी नहीं," सरन ने आह सी भर कर कहा।

"नहीं, आप मेरा किट बैग रख लीजिए। इसमें मेरा कैमरा, छोटा सा पाकेट साइज टेपरिकार्डर, कपड़े और कुछ दूसरी चीजें हैं। कल मैं बाकी पैसे देकर यह सब चीजें ले जाऊंगी।"

"देखिए, आप बहुत ज्यादती कर रही हैं," सरन ने प्रतिरोध किया।

"नहीं तो आप फिर दूसरी चीजें वापस रख लीजिए।"

"नहीं, यह भी नहीं हो सकता।"

"अच्छा, आप किट बैग रहने दीजिए। मैं माइन की दूसरी तरफ यूथ हॉस्टल में रहती थी। आज अलाटमेंट कैंसिल हो गया। रात कहीं दूसरी जगह बंदोबस्त हो जाएगा तो कल इसे उठा ले जाऊंगी।"

पौने चार बजे पेट्रा आई तो कोई पांच ग्राहक खड़े थे। उसने जल्दी-जल्दी सबको भुगताना शुरू किया, मगर पांच बजते-बजते पंद्रह और आ गए। पेट्रा बड़ी फुर्ती से सबको चीजें दिखा रही थी। पांच बजे जब भीड़ कम हुई तो कोई तीन हजार से ऊपर की बिक्री हो चुकी थी। थकी हुई पेट्रा फ्रिज से रसभरियों का जूस लेने अंदर पहुंची तो ठिठक कर खड़ी की खड़ी रह गई। दीवान की गहरी नीली चादर पर सफेद पाउडर से एक औरत का शरीर रंगोली की तरह छिपा हुआ था जिसे किसी शरारती बच्चे ने जगह-जगह से तोड़ दिया हो। सरन को अपनी दूसरी गलती का आभास हुआ, मगर अब बहुत देर हो चुकी थी।

रात कोई एक बजे का समय होगा जब सरन नींद से चौंका। बाहर पिछले दरवाजे पर खट-खट हो रही थी। कोई साला शराबी होगा, सरन ने सोचा और करवट बदल कर सो गया। दो मिनट बाद फिर खट-खट हुई। यह बड़ी सावधानीपूर्वक की गई खट-खट थी। एक बार पहले भी किसी ने बहुत देर रात को दरवाजा खटखटाया था। तब सरन ने दरवाजा तुरंत खोल दिया था तो एक शराबी अंदर घुस आया था। सर्दी के कारण सरन को उसे शरण देनी पड़ी थी, मगर वह सारी रात खुरखुराता रहा था और सरन को उसने क्षणभर भी सोने नहीं दिया था। जाते-जाते वह फर्श भी गंदा कर गया था और रो-धोकर सरन से दस मार्क भी ऐंठ ले गया था। दस्तक जब तीसरी बार हुई और बड़ी देर तक होती रही तो सरन ने पूछा, "कौन है?"

"मैं हूं त्रिमां," बाहर से नारी-स्वर आया।

सरन ने दरवाजा खोल दिया। वह अंदर आ गई, बोली, "व्यवस्था न हो सकी। मैं होस्टल की ओर जा रही थी कि तीन शराबी गुंडे मेरे पीछे पड़ गए। बड़ी मुश्किल से उन्हें चकमा देकर तुम्हारी अंधेरी गली में घुस आई।"

सरन उसे अंदर बिठाकर किसी बहाने बाहर निकला। अगर बाहर सड़क पर शराबी होते तो जरूर नजर आते। इतनी जल्दी उनका गायब हो जाना असंभव था वह अपने भाग्य पर मुस्कराया और चुपचाप अंदर घुस गया।

त्रिमां सुबह उठकर केक, बिस्कुट या टोस्ट आदि चाय या कॉफी के साथ खुद खाकर और सरन को खिलाकर बर्तन आदि धो, कमरा साफ कर चली जाती और रात कभी ग्यारह-साढ़े ग्यारह या अधिक से अधिक सवा बारह तक वापस आ

जाती। एक सप्ताह बाद उसने अपना किट बैग संभाला। कैमरा निकालकर दीवान पर सरन के सामने रख दिया और कहा, "यह मेरी ओर से उपहार है।"

सरन 'न-न' करता रहा, मगर उसने कैमरे को हाथ तक न लगाया। विवश होकर सरन को कैमरा रखना पड़ा।

एक लड़की सेक्शन हाउसन के लोकालों में फूल बेचती थी। फूलों की टोकरी उसकी बांहों में लटकी रहती थी। सुंदर रंग-बिरंगे फूलों के साथ वह स्वयं भी एक फूल लगती थी। सरन को वह जब भी कहीं मिलती, सरन एक अखबार जरूर उसकी ओर बढ़ा देता। वह अपने फूल आगे बढ़ाकर जर्मन भाषा में कुछ कहती। सरन की समझ में तो न आता कि उसने क्या कहा है, मगर उसे आभास यही हुआ था कि वह कहती है, मैं फूल बेचूं या अखबार पढ़ूं ? सरन के पास कुछ अखबार फालतू रहते थे, जिन्हें वह अपनी पसंद के लोगों को मुफ्त दे दिया करता था। उसके हर बार मना करने के बाद भी सरन अखबार उसे जरूर देता। वह सोचता, कभी तो वह उसकी तुच्छ भेंट स्वीकार करेगी। सरन ने एक बार उसे अपनी दुकान का एड्रेस कार्ड भी दिया था और कहा था कि उसे अगर कभी भारतीय परिधानों की इच्छा हो तो वह उसे सस्ते दामों में दे देगा। 'सस्ता' का जर्मन शब्द 'बीली' उसे अच्छी तरह याद था। कुछ और शब्द भी उसे याद हो गए थे, जिन्हें वह आवश्यकतानुसार प्रयोग करके गुजारा कर लेता था। जैसे बहुत अच्छे, बहुत बढ़िया कहना हो तो 'बुंडे पा' कह दो, आदि।

कार्ड तो उसने सरन से ले लिया था। उसे इधर-उधर घुमाकर देखने के बाद 'डांके श्योन' भी कहा था, मगर वह दुकान पर आई नहीं थी।

सरन के अखबार कुछ दिन से बहुत जल्दी खत्म होने लगे थे। दरअसल पहले-पहल जब वह जर्मनी आया था तब अमेरिकन डालर साढ़े-तीन जर्मन मार्क के बराबर था, मगर दिन-प्रतिदिन उसका भाव गिरता गया। जब वह डालर के गिरने की खबर लेकर अखबार बेचने पहुंचता तो लोग अखबार पर टूट पड़ते। उसे टिप भी देते कि वह उनके लिए शुभ समाचार लाया है। उसने कुछ ही दिनों में डालर ढाई मार्क से नीचे पहुंचा दिया था, तब भी वह फूल वाली उसका अखबार स्वीकार नहीं करती थी। सरन दोपहर वाला अखबार ही शाम को बेचता था। वैसे तो वह अखबार बासी हो चुका होता था, मगर एक सौ पचास रेस्तराओं, लोकालों के क्षेत्र सेक्शन हाउसन में चालीस-पचास अखबार निकालना कठिन न था। शाम का दूसरा अखबार सात-आठ बजे आउट होता था। जी.एम. बट उसे लेकर आठ-साढ़े आठ बजे से पहले सेक्शन हाउसन नहीं पहुंच सकता था। जब सरन और वह, सेक्शन हाउसन में साथ-साथ अखबार बेच रहे होते तो बट के ताजा अखबार जल्दी निकल जाते और सरन को काफी दौड़-धूप करनी पड़ती, मगर जब उसका अखबार लेट हो जाता तो लोग सरन का अखबार ही ले लेते। इस तरह जब बट अखबार लेकर

आता तो हर लोकाल और रेस्तरां में लोगों के हाथों में सरन का अखबार देखकर उसका पारा चढ़ जाता, मगर वह विवश था। मालिकान खुद ही तो सरन के हाथ दोपहर का अखबार उसी क्षेत्र में बिकवाते थे।

उस दिन सरन बहुत खुश था। आते ही उसका अखबार हाथोंहाथ बिक गया था। उसने एक अखबार फूल वाली के लिए बचा कर रखा हुआ था। वह उसे 'ग्लोब ट्राटर' के बाहर मिल गई। उसने अखबार बढ़ाया, सुर्खी को देखते ही उसने अखबार थाम लिया और बढ़कर एक लंबा चुंबन सरन के गाल पर जड़ दिया। जेब से पांच मार्क का सिक्का निकाल कर सरन को पकड़ाया और दोबारा उसकी गर्दन में बांह डालकर उसके गालों पर अपने गर्म-गर्म होंठ रख दिए। सरन उसके व्यवहार पर खुश से ज्यादा हैरान हो रहा था। चाहता था, उससे पूछे कि आज के अखबार में ऐसी क्या बात है जिसने सभी को दीवाना कर दिया है, मगर उसने खुद ही सरन को बता दिया, "निक्स वार इन वियतनाम।" सरन समझ गया कि वियतनाम में युद्ध बंद होने की बात है।

वियतनाम में युद्ध बंद हुआ था या नहीं, मगर सेक्शन हाउसन में बस स्टॉप पर युद्ध छिड़ गया था। यह बिल्कुल एक तरफा युद्ध था। हुआ यूं था कि सरन अखबार बेचकर ट्राली लिए बाहर आ रहा था, जहां इटालियन पिज्जा का स्टाल था। वह पिज्जा खाना चाहता था कि उसे सड़क पर बट मिल गया, "सरन, तूने आज सब अखबार बेच दिए !" उसने शिकायत करते हुए कहा।

"हां, कुछ खबर ही ऐसी थी कि सारे अखबार निकल गए", सरन ने कहा।

"तो मैं अब अपने अखबार कहां बेचूं? जहां जाता हूं तुम्हारा अखबार मौजूद मिलता है।"

"तुम कुछ देर रुक जाओ, थोड़ी देर बाद तुम्हारे अखबार भी निकलने लगेंगे।"

"तुम अपनी शिक्षा रहने दो, और भाग जाओ !" बट अचानक आवेश में आ गया।

"और तुम जरा जबान संभालकर बात करना सीखो।"

"बात करना सिखाऊं तुम्हें ?" उसने कहा और सरन के संभलने से पहले एक मुक्का उसकी कनपटी पर जड़ दिया। सरन ने एक जोरदार ठोकर उसे जमाई और वह जमीन चाटने लगा। उठा तो सरन ने बड़े ठंडे स्वभाव से हाथ आगे बढ़ाकर कहा, "गुस्सा छोड़ो और आओ, दोस्त बन जाएं, गलती मेरी भी है।"

गलती सरन की कोई भी नहीं थी। वह मात्र बट से हाथ मिलाना चाहता था, मगर वह रुका, नहीं दौड़कर एक लोकाल में घुस गया। सरन बाहर खड़ा कुछ देर उसका इंतजार करता रहा, मगर वह अंदर ही कहीं गायब हो गया, शायद उसे सरन के हाथ का कर्तब मालूम था।

सरन का मूड खराब हो चुका था। पिज्जा खाने का प्रोग्राम स्थगित करके वह अखबार के दफ्तर चला गया। छोटा शेफ अंदर मौजूद था। सरन की तरफ हैरानी से देखते हुए उसने सरन के कोट की ओर इशारा किया जिस पर खून के धब्बे पड़े हुए थे। सरन को दर्द तो महसूस हुआ था, मगर खून का पता नहीं चला था, शायद बट की अंगूठी के कोने ने उसे घायल कर दिया था और शायद इसी खून को देखकर ही बट भागा था।

सरन ने सारी कहानी शेफ को बता दी।

वह गुस्से से बोला, "कल बट को काम नहीं दिया जाएगा।"

दूसरे दिन सरन को अखबार लेने छह बजे जाना था, मगर बट ढाई बजे का अखबार भी लेता था। ढाई बजे बट अपने सारे साथियों के साथ शेफ से मिला और शिकायत की कि कल सरन ने उसके देश और धर्म को गालियां दीं और उससे झगड़ा किया।

शाम को सरन जब अखबार लेने पहुंचा तो उसे अखबार नहीं दिया गया, मगर छोटे शेफ के वास्तविकता बताने पर बट को भी निकाल दिया गया। एक सप्ताह दोनों को काम नहीं दिया गया। सरन तो मस्त रहा, ऐसे काम की ऐसी-तैसी। जहां अत्याचारी और पीड़ित को एक ही लाठी से हांका जाए ! सरन के पास दुकान का काम तो था ही। उसने शाम के काम की बिल्कुल परवाह नहीं की, मगर बट की हालत काम के बिना खराब हो गई। आमदनी रुक जाने से उसका मुंह जरा सा निकल आया। वह कई बार सरन से मिला और प्रार्थना की कि आओ समझौता कर लें, मगर सरन ने जब भी उसकी तरफ हाथ बढ़ाया उसने नमस्ते के लिए हाथ जोड़ दिए। विवश होकर और प्रतिशोध की भावना ने भी उसकी प्रार्थना को टाल लिया।

कुछ दिन बाद जब पेट्रा ने सरन को मकान छोड़ने को कहा और उसे साइल और केसर स्ट्रासे पर बट के साथ घूमते भी सरन ने देख लिया तो वह तुरंत सारा मामला समझ गया और वह सहर्ष दुकान वाले कमरे में चला गया।

पेट्रा के न आने से दुकान की बिक्री बहुत कम हो गई। सेठ पतूड़ी मल पहले भी दुकान की बिक्री से संतुष्ट नहीं था। अब तो उसे घाटा पड़ने लगा, मगर वह सरन के काम और ईमानदारी से बहुत खुश था। व्यापार से अज्ञानता के बावजूद सरन ने अपने ही ढंग का रजिस्टर बनाया था, जिसमें उसने पांच कॉलम खोले थे। हर महीने की पहली को क्या और कितना माल मौजूद था, बीच महीने क्या-क्या माल आया, कल क्या और कितना माल दुकान पर पहुंचा। पहली से अंतिम तारीख तक क्या और कितना बिका। महीने के आखिरी दिन क्या और कितना शेष रहा। इतना सीधा हिसाब था कि सरन की अनुपस्थिति में भी कोई आए, रजिस्टर खोले, माल गिने और चेक कर ले। एक-दो बार माल की सप्लाई के साथ जो सूची वस्तुओं के साथ भेजी गई वह उपलब्ध माल से कम थी, अर्थात माल अधिक था और

लिखा कम था, मगर सरन ने लाल स्याही से रिमार्क लिख दिया—लिखा इतना है, मगर मिला इतना है अर्थात सूची से इतना अधिक मिला है। लिस्ट की कापी जो स्टोर पर वापस जाती थी, उस पर भी सरन ने यही रिमार्क लिख दिया—हो सकता है यह सेठ के दफ्तर से गलती हुई हो, मगर उसने कहा कि वह तो सरन की ईमानदारी की परीक्षा ले रहा था।

अखबार के साथ-साथ पेट्रा के चले जाने के बाद सरन की शामें वीरान और उजाड़ हो कर रह गई थीं। वह कभी-कभी किसी शाम सेक्शन हाउसन के किसी लोकाल में जा बैठता। बीयर या एपल वाइन पीता रहता, मगर उदासियों के बादल धीरे-धीरे उसके दिल की वादियों पर उतरते आते और बीयर व वाइन उसे पानी की तरह फीकी और बेअसर लगने लगती। इन्हीं दिनों सरन को उदास कर देने वाली एक और बात हुई। सेठ ने दुकान बंद कर देने का निश्चय किया। उसने सरन से साफ-साफ कह दिया कि पंद्रह-बीस दिन के अंदर-वह दुकान को बंद कर देने का इरादा रखता है। स्पष्ट है, सरन को आवास का कोई और बंदोबस्त करना था—इतनी जल्दी और अचानक वह कहां जाए ? हाइम में जगह मिल सकती है, मगर अपनी जगह की आजादी के सुख के बाद एक बोर्डिंग हाउस की तरह की जगह में रहना, उसके लिए अब बहुत मुश्किल था।

सेठ बोला, "सेल तो है नहीं, इसलिए दुकान तो मैं कल ही बंद कर दूं। मगर अभी मेरे लोग खाली नहीं हैं। आजकल बीजबाइन में बाजार लग रहे हैं। सारी गाड़ियां और लोग उधर व्यस्त हैं। मुझे तुम्हारा भी ध्यान है, मगर उम्मीद है तुम तब तक जरूर कोई न कोई बंदोबस्त कर लोगे।"

सरन ने सेठ को धन्यवाद होते हुए कहा, "मैं खुद सोच रहा था, अब आपको नुकसान में दुकान नहीं चलानी चाहिए।"

सुबह की डाक से सरन को एक पत्र मिला था, टिकटें उस पर इंग्लैंड की थीं, मगर सेठ के आ जाने से वह लिफाफा नहीं खोल सका था। अब जो लिफाफा खोला तो देखा लिखावट उर्दू में थी—

प्यारे दोस्त

अस्सलामअलैकुम ! मैं वही मायूस इंसान हूं जिससे आपकी मुलाकात ब्रुसल्स से लंदन जाते हुए जहाज में हुई थी। लोग सुंदर लड़कियों पर मोहित होते हैं, मैं तुम पर मोहित हो गया हूं। मैं दरअसल अपने लोगों से बहुत कतराता हूं, मगर आपको पहले ही पत्र में 'तुम' संबोधित करने पर माफी चाहता हूं। तुम मुझे उन सबसे अलग लगे हो। कलंदर, निश्छल, लाडबाली और मस्त। एक बादल या हवा के झोंके की तरह आवारा। मैं आजकल बहुत उदास हूं। सिल्विया आजकल मेरे बहुत पास आ चुकी है। इतनी पास कि जैसे वह मेरे शरीर का कोई हिस्सा हो। हर सुबह यहीं, हर शाम यहीं। मैं जितना कुरूप हूं, वह उतनी ही सुंदर है।

फिर वह मेरी दीवानी क्यों हुई जाती है ? ऊपर वाला ही बेहतर जानता है। वह मॉडर्न आर्ट की रसिया है और मैं शायद उसे खुदा की टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं से बना ऐसा ही कोई नमूना लगता हूं।

वह यहां अस्पताल में डॉक्टर है और मैं रोगी। रोग मेरा यह है कि मैं उसे सब कुछ देकर भी वह नहीं दे सकता या देना नहीं चाहता जिसकी वह इच्छुक है। वह मेरे बच्चे की मां बनना चाहती है, मगर मेरा दिल कहीं और है। मैं अपने पहले प्यार में किसी को भागीदार नहीं बना सकता। एक जरा सी इस बात ने हमें इतने पास लाकर भी दूर रखा हुआ है। सोचो तो मुझ पर कितना अत्याचार है कि नदी के किनारे बैठूं और पानी पीऊं और एक परछाई के पीछे भागता फिरूं। यह अत्याचार मैं अपने आप पर खुद कर रहा हूं। मैं सोच रहा हूं, मैं कहीं भाग जाऊं वर्ना मैं जरूर किसी दिन लुढ़क जाऊंगा, फिर सब कुछ उसका होगा। मैं, हालात, मेरा बच्चा और कानून ! पलायन की राह देखता हूं तो वह सीधी जर्मनी के शहर फ्रैंकफर्ट में तुम्हारे घर पर खत्म होती है। सोचना यह है कि आगे तुम भी मुझे वेलकम करते हो या नहीं ? अगर लंदन मेरे साथ चलना तुम्हारा एक लंगड़ा बहाना नहीं था तो मुझे उम्मीद है तुम मुझे जरूर जवाब दोगे, जल्दी, बल्कि वापसी डाक से, जाने यह कैसी दोस्ती है जो अभी लगी ही नहीं और मैंने दामन फैला दिया है, चाहो तो भर दो, चाहो तो झटक दो।

प्रतीक्षा में
आसिम

सरन के पास बहुत ही सुंदर और फूलदार रंगीन लिफाफे और पैड था। उसने सिर्फ एक पंक्ति लिखकर भेज दी—

> "अगर बर्दाश्त की शक्ति तुम्हारे अंदर बहुत ज्यादा है तो फिर आ जाओ।"

रंगीन फूलों वाला आकर्षक लिफाफा और पत्र अपने अंदर स्वयं ही एक बुलावा था। तीसरे दिन आसिम सरन का दरवाजा खटखटा रहा था।

5

शुमासर स्ट्रोसे से साइल की ओर चलो, चौक पर पहुंचते ही उस पार दाहिनी ओर सी. एंड ए. का बहुत बड़ा स्टोर नजर आएगा। उससे सटे दूसरी ओर बाईं तरफ

कॉफ हाले, बाईं तरफ ही आगे साइल पर नार्टन, हर्टी बड़ा डाकखाना, कॉफ हाफ की तरफ गोएते प्लाजा की ओर बढ़ते चलो। नार्टन के बड़े डिपार्टमेंटल स्टोर को पार करते ही ओमेगा और टिसट घड़ियों की बहुत बड़ी दुकान है, उसके साथ आइसक्रीम शॉप के पास से निकल कर पिछली छोटी सी गली जो साइल के समानांतर चलती है, उस पर तीन-चार दुकानें भारतीय वस्तुओं की हैं जिन्हें जर्मन लोग चलाते हैं। उस जर्मन लड़के का नाम विष्णु है, उसे यह नाम पसंद भी बहुत है। यह नाम उसे उस भारतीय लड़की ने दिया है जो अब उसकी पत्नी है। वह लड़की बहुत सुंदर है, दक्षिण भारत की श्रेष्ठ कलाकृति। जरा-जरा सांवला रंग और सुंदर चेहरा। दो साल से गोरी चमड़ी देखते-देखते सरन की आंखें चुंधिया गई थीं। यह रंग उसे बहुत संतोष प्रदान करने वाला और आंखों को शीतल करने वाला था। सरन ने उसे सी.एंड ए. से निकलते देखा था। वह वास्तव में आसिम को साइल पर छोड़ने आया था। आसिम शहर और बाजार घूमना चाहता था। सरन ने उसे राय दी थी कि साइल और केसर स्ट्रासे वह कुछ देर के लिए देख ले तब तक सरन भी दुकान के काम से निवृत्त हो जाएगा, फिर शाम का प्रोग्राम तय किया जाएगा। सरन तो उसे सिर्फ साइल तक छोड़ने आया था, दुकान न समय से पहले और न असमय बंद करने का चलन था और न ढंग और न ही उचित। सरन इस मामले में बहुत सावधान था, फिर भी कभी-कभी कुछ बातें उसे गुमराह कर देती थीं। सरन अपने खाने की छुट्टी के पांच मिनट मात्र के लिए राह बिताने की खातिर आसिम के साथ आया था, मगर वह लड़की जाने कोई जादूगरनी थी या परी कि सी. एंड ए. से उसे अपने साथ उड़ा ले गई। सरन कच्चे धागे से बंधा जब गलती से उसके पीछे-पीछे उस दुकान में पहुंचा तो उसे पता चला कि वह उस जर्मन लड़के की पत्नी थी।

"मैं आपकी क्या सेवा करूं?" लड़के ने कहा। सरन एक जर्मन के मुंह से हिन्दी वाक्य सुनकर चौंका, मगर उसकी नजरें अदंरूनी कमरे की ओर टिकी रहीं, जिसमें वह गुम हो गई थी।

"शी इज माइ वाइफ, शी इज इंडियन," उसने खुद ही बताया, "नाम है भानुमती। सुंदर है न !" उसने पूछा।

"बहुत सुंदर !" सरन सहसा बोल पड़ा।

"मैंने इसे वेलोर के एक छोटे से मंदिर में देखा था," वह अंग्रेजी में बताने लगा, "तो मैं भी दीवाना हो गया था। खिंचा-खिंचा उसके पीछे उसके घर तक पहुंच गया था। भारत में इश्क नहीं होता, सीधे शादी होती है। मुझे शादी की ऑफर की गई, मगर मैं तो मोहित हुआ था। मैंने तुरंत स्वीकार कर लिया। मुझे हिंदू बनने को कहा गया। मैं झट-पट राजी हो गया। मुझे वहीं रहने पर विवश किया गया, मैंने हथियार डाल दिए। तीन साल मैं वहां रहा, फिर इसी के आग्रह पर हम सैर

को निकले। वहां सादगी और प्राकृतिक सौंदर्य था। मैं खुश था। इसने यहां की चमक-दमक, चहल-पहल और यहां का सुख-सुविधा-संपन्न जीवन देखा तो यह इस पर मर मिटी। यह खुश तो मैं खुश और मैं खुश इसलिए कि खुश रहने के बहाने मौजूद थे। अब आपके सामने यह छोटा सा स्टोर है। भारतीय आभूषण शुमाखर स्ट्रासे कपड़े और थोड़ा बहुत-बहुत अच्छा गुजारा हो जाता है। बोलिए, आपको क्या चाहिए?"

"ब्लैक ब्यूटी—ओह, माफ कीजिए," सरन संभला, "आपके पास राउसे स्टेशन होंगे?"

"ओह ब्रदर, से इंसेंस, अगरबत्तियां।"

"बिल्कुल, बिल्कुल," सरन का मस्तिष्क अभी तक अनुपस्थित था।

उसने सरन को कई प्रकार के धूप और अगरबत्तियां दिखाई। मोगरा, चंदन, गुलाब, न जाने क्या-क्या नाम थे—शिवाजी, शिव जी, रणछोडजी, राधाकृष्ण, हरे राम हरे कृष्णा, जय माता दी। सरन ने मोगरा और चंदन के दो पैकेट खरीद लिए।

"आपके पास चमेली होगा ?" सरन ने पूछा।

"नहीं, कई दिन से नहीं आया।"

"मेरे पास है, आपको चाहिए ?"

"दिखा दीजिए, क्या आप भी यही कारोबार करते हैं ?"

"हां, एक भारतीय के पास हूं। पी.एम. ब्रुसोम का नाम सुना है आपने?"

"मुझे खेद है, यह नाम मैं पहली बार सुन रहा हूं," विष्णु ने क्षमा-याचना करते हुए कहा।

सरन ने उसी दिन उसे अपनी अगरबत्तियां दिखा दीं। पैकिंग सुंदर थी। आकार बड़ा और सुगंध भीनी। भानुमती को वे बहुत पसंद आईं। उचित और सहयोग भरे सौदेबाजी से उसे एक हजार दर्जन का आर्डर मिल गया। सेठ खुश कि उसका सारा माल एक ही बार में उठ गया और सरन को बैठे-बिठाए पांच हजार मार्क का फायदा हो गया।

शाम छह बजे बुटीक बंद करके जब वह और आसिम अंदर बैठे तो सरन बहुत खुश था। वह बीयर पर बीयर पी रहा था और चहक रहा था। दो दिन पहले वह कितना उदास था। आसिम के आते ही लगभग पांच माह की अग्रिम कमाई अगरबत्तियों की बिक्री से उसे हो गई थी।

फ्रैंकफर्ट उसे फिर तंग महसूस होने लगा था। वह वहां से निकलना चाहता था। जीवन भर भाग्य उसके साथ विचित्र खेल खेलता रहा था—जिसे उसने चाहा वह उसे कभी प्राप्त नहीं हुआ और जिसकी उसने कभी इच्छा नहीं की वह आप ही उसकी झोली में आ गिरा।

भानुमती फ्रैंकफर्ट में थी, मगर वह अब कहीं भी नहीं थी। दिल से, हाथों

से, स्पर्श से और नजरों से भी दूर। वह किस बहाने रोज वहां जाए और उसे देखे। स्वादिष्ट खाने को देखकर भूख सताए तो कहां तक संतोष करे ?

"आसिम, आज क्या-क्या देखा?"

"साइल और केसर स्ट्रासे के सारे स्टोर्स।"

"कुछ पसंद आया?"

"बहुत कुछ और कुछ भी नहीं।"

"वाह !"

"मैं आधुनिक कहानी नहीं कह रहा हूं। तुम लंदन आते तो खुद देखते कि वहां क्या कुछ नहीं है। दुनिया भर की हर चीज और फिर सस्ती। सच, कुछ लोगों ने तो यह सिद्धांत बना रखा है कि कमाओ कहीं और खर्चो इंग्लैंड में।"

"अरे भाई, मैं देखने की बात कर रहा हूं। यहां जर्मन भाषा के महान कवि गोयटे का घर है, वह देखो, जू देखो। माइन नदी में जहाज पर सैर करो। अच्छा, यह सब मैं तुम्हें कल दिखाऊंगा। अब उठो, तुम्हें फ्रैंकफर्ट का एक चक्कर लगवा लाऊं।"

"तुम्हारे पास गाड़ी है क्या ?"

"तुम उठो तो गाड़ी भी आ जाएगी।"

वे बाहर निकले तो शाम के साए सूरज की विदा होती किरणों से आंख-मिचौली खेल रहे थे। सरन ने एक टैक्सी रोकी, "हेनीगर बीयर ट्रस।"

माइन नदी के पुल से गुजरती सेक्शन हाउसन के लोकालों और रेस्तराओं से निकलती, लोश रेस्तरां को पीछे छोड़ती, रेलवे लाइन के नीचे से गुजर कर एक छोटी सी ऊंचाई पार करके टैक्सी महान टोरम के साए के नीचे जा रुकी। सरन ने टिकट खरीदे, लिफ्ट से दोनों 384 फुट ऊपर पहुंचे। फिर दोनों रेस्तरां की सीढ़ियां चढ़कर उसकी 394 फुट ऊंची छत पर पहुंच गए। ऊपर खुला आकाश और नीचे, बहुत नीचे रंग-बिरंगा शहर गतिमान था। कौन किधर जा रहा था, किसकी क्या मंजिल थी, कौन जाने ? वे काफी देर वहां खड़े रहे। वहां लगी दूरबीन से दूर-दूर के दृश्यों को देखा। नीचे शहर का वातावरण कितना तंग, तीव्र गति और घुटा-घुटा था। और यहां इतनी ऊंचाई से देखते हुए वही शहर कितना सुंदर लग रहा था। रंग-बिरंगी रोशनियां सांप की तरह बल खाती मगर सुस्त गति नन्हीं-नन्हीं गाड़ियां, रेंगते हुए ट्रैफिक का असीमित क्रम, खिलौने जैसे आते-जाते मर्द-औरतें और बच्चे और माइन नदी की पिघल कर बहती हुई चांदी।

बीच में टोरम का बुर्ज था, जो उनसे अभी भी कुछ फुट और ऊंचा सर उठाए खड़ा था। इंसान के हाथों बना, इंसान की महानता का अलमबरदार। सरन बच्चों की तरह दस-दस केनी के सिक्के डाल-डालकर दूरबीन से कई बार पहले देखे दृश्यों को बार-बार देख रहा था और खुश हो रहा था। वह आसिम के सिर को दूरबीन

के पास लाता और उसे भी शहर के दृश्य देखने को कहता। फिर वह सारे जंगले के साथ बुर्ज के आसपास घूमा। बुर्ज पर बहुत से लोगों ने अपने नाम लिख रखे थे, उनमें कुछ प्यार करने वाले जोड़ों के नाम भी होंगे। सरन ने बॉलपेन आसिम की तरफ बढ़ाया और कहा, "तुम भी अपना नाम यहां लिख दो।" आसिम का चेहरा बुझ गया।

"नहीं, मेरा प्रेम इतना महान नहीं।"

"रोना छोड़ो दोस्त, तुम्हारे साथ और कोई नहीं रो सकेगा," सरन ने हंस कर कहा।

"तुम ठीक कहते हो," आसिम ने कलम सरन के हाथ से ले लिया, "नईमा!" और उसके नीचे लिख दिया, "कायर!"

"नईमा तो एक लड़की है और यह कायर...ख़ैर छोड़ो, अच्छा नाम है," सरन खिलखिला कर हंस पड़ा।

"मगर मैंने आगे नाम तो लिखा ही नहीं," आसिम बोला।

"आवश्यकता भी नहीं," सरन ने कहा, "ऐसे लोगों के बारे में कौन जानना चाहेगा ? किताबें, उपन्यास और इतिहास के पृष्ठ इन लोगों के वर्णन से पवित्र हैं—जो बढ़कर आगे थाम ले, मीना उसी का है।"

"तुम हंसते हो, मेरा मजाक उड़ाते हो तो मुझे और भी अच्छे लगते हो। तुम्हारी यही बात मुझे तुम्हारे पास ला रही है। मैं खुद पर हंसना चाहता हूं, मगर यह तो बड़ा विचित्र लगेगा, एक पागलपन सा। कोई दूसरा हंसे तो कोई बात हुई। यह कर्तव्य तुम निभा रहे हो, मुझे ठीक लगता है," आसिम ने बड़े हल्के-फुल्के ढंग से कहा।

"अच्छी ड्यूटी दी है मुझे," सरन ने कहा। दोनों खिलखिलाकर हंस पड़े। आसिम से कलम लेकर सरन ने लिखा, "जिसे सरन ने चाहा और पूजा—मोना।"

जिन्होंने सरन को पसंद किया—नजमा, दया, कमला, दिलजीत कौर, रानी, डॉक्टर गुप्ता, सरला, विद्या, रमा और...

जिन्होंने सरन का रेप किया—त्रिमां, आने, इंगरिद, लिली, केयरिन, अनजनि, अंसू, नूरजहां, भानी और.....

और...और...

आसिम की तरफ देखकर वह मुस्कराया, फिर हाथ बढ़ाकर सारे नाम मिटाने की कोशिश करने लगा, "माफ करना दोस्त, मुझे इतनी जल्दी अनौपचारिक नहीं होना चाहिए, मगर इससे एक फायदा भी होता है कि मैं गलत उम्मीदें रखने वाले लोगों की दोस्ती से जल्द छुटकारा पा लेता हूं।"

"अरे सरन भाई, यही तो गुण है तुम में जिस पर मैं मोहित हुआ हूं," आसिम ने उसका हाथ थामकर कहा।

शाम के सायों की उदासी अपने चेहरे से छिपाने के लिए सरन सीढ़ियों की ओर बढ़ गया। दोनों उतरकर गोल रेस्तरां में एक खिड़की के पास आ बैठे। उसने दो बड़े गिलास बीयर का ऑर्डर दिया, खाने के लिए कटलेट्स, वेफर और चिप्स। खाते-पीते और खिड़की के आदमकद शीशों से बाहर भागते हुए ट्रैफिक और अपने आस-पास घूमते हुए शहर को देखते रहे। बिना आभास हुए रेस्तरां का फर्श जब आधे घंटे में सारी परिधि में घूम गया तो वे बिल भुगतान करके नीचे आ गए।

नीचे शहर की सड़कों पर भागते, बल खाते, कीड़े-मकोड़ों का वे भी एक हिस्सा बन कर अपनी शरणस्थली शुमाखर स्ट्रासे पर आ गए। एक-एक बोतल उन्होंने फिर गिलासों में उंड़ेली और धीरे-धीरे सिप करते इधर-उधर की हांकने लगे। सरन फिर खुलने लगा। उसे देखते हुए आसिम भी अनौपचारिक होने की कोशिश करने लगा मगर फिर भी किसी-किसी बात पर वह कट जाता या शरमा जाता। सरन बोला, "यार, तुम पिछले जन्म में जरूर लड़की रहे होगे। बिल्कुल छोकरियों की तरह शरमाते हो।" फिर उसने जोर की एक धप्प आसिम की जांघ पर मारी और कहा :

हमसे खुल जाओ बवक्ते मयपरस्ती एक दिन
वर्ना हम छेड़ेंगे रखकर उजुए मस्ती एक दिन।

आसिम बोला, "तुम पंजाबड़े कभी उर्दू ठीक से नहीं बोल सकोगे। उजुए मस्ती, उफ् खुदाया ! शे'र का गला काट के रख दिया। उज़्रे-मस्ती को उजुए-मस्ती बना दिया।"

"तुम यू.पी. के भय्यों का उज़्र होगा। हमारा तो उजु ही होता है," सरन ने कहा।

"अब बताओ, यह छोकरी की खोली बदलोगे कि रख दूं उजुए मस्ती !"

"बदलूंगा भाई, बदलूंगा, खुदा के लिए इस बला को मुझसे दूर रखो," आसिम बोला और हंसने लगा।

फिर दोनों ने बाटम्स अप का नारा लगाया और गटागट गिलास खाली कर दिए। एक-एक बोतल और खोली गई। जब थोड़ा-थोड़ा नशा चढ़ने लगा तो दोनों अंदर बाथरूम में घुस गए और एक-दूसरे के कपड़े उतारने लगे। नंगे होकर वे एक-दूसरे के गले मिले। सरन ने कहा, "अब ठीक है। एक नहानघर है और हम दोनों नंगे हैं।"

शावर खोलकर दोनों खूब मल-मल कर नहाए। साबुनदानी से सरन ने साबुन उठाना चाहा तो वह फिसलकर दूर जा गिरा। उसने आसिम से कहा, "जरा साबुन उठाना।"

आसिम ने साफ इंकार कर दिया। बोला, "एक हमाम में दो पठान नहा रहे थे। साबुन नीचे गिर गया। कौन उठाता? ना भई ना, मुझे तो डर लगता है।"

दोनों हंसते हुए नंगे ही कमरे में आ गए और एक-दूसरे के सामने बैठकर बची हुई बीयर पीने लगे। बीयर खत्म करके खाना पकाने का प्रोग्राम बना। सरन बोला, "आटा गूंथ दो और प्याज काट दो तो रोटियां और हांडी मैं बना दूंगा। बस, यही पहले दो काम मुझे मुश्किल लगते हैं।"

आसिम आटा गूंथने लगा तो सरन खुद ही प्याज काटने बैठ गया और उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। आसिम बोला, "साले रोना ही है तो हीर गाकर तो रो।"

अपना शोल्डर बैग हैंगर से उतार कर एक पत्र उसने उसके पाकेट से निकाला और सरन के आगे फैला दिया। उसने छुरी सरन के हाथ से लेकर प्याजों की प्लेट अपनी तरफ सरका ली। सरन ने पत्र पढ़ा:

मोहतरमा राबिया राहगीर साहिबा

मुझे खूबसूरत शेर जमा करने का जुनून है। यहां भारतीय और पाकिस्तानी लोग या छात्र फिल्मी गानों को रिकार्ड करते रहते हैं या विचित्र प्रकार के चित्र और न्यूड्स से अपने घरों और कमरों की दीवारों को भरते रहते हैं, मगर मैं उन्हें खूबसूरत शेर, उक्तियों और वाक्यों से सजाता रहता हूं :

वह अजनबी था, गैर था, किसने कहा न था
दिल को मगर यकीन किसी पर टिका न था
कुछ इस कदर थी गर्मीए बाजारे आरजू
दिल जो खरीदता था उसे देखता न था

जब मैंने आपके ये और कुछ शेर मासिक 'दिल पजीर' में पढ़े, तब आपका नाम और पता भी साथ ही डायरी के पन्ने पर लिख गया। मैंने सोचा कि ऐसे खूबसूरत अशआर की तारीफ न करना एक गुनाह से कम नहीं, मगर वक्त भागता गया। अशआर आपके मुझे वादाखिलाफी (अपने आपसे) पर शर्मिंदा करते रहे। फिर मैंने दिल को समझाया-अरे जालिम, तूने किससे वादा किया है, अपने आप से ही ना, साफ मुकर जा ? कौन पूछने जा रहा है ?

अब मैंने उर्दू का टाइपराइटर खरीदा है तो दिल ने कहा—अब बहाना नहीं चलने दूंगा सुस्ती का। सीधी तरह इधर आ और लिख खत उन लोगों को जिन्होंने अपने खून से लिखे शेर से तेरे कमरे और तेरे दिल को सजा रखा है। और चूंकि यह दिल मेरा नहीं, अमानत खुदा की है, इसलिए उसके रौब से दबा आपको कुछ लाइनें लिख रहा हूं, टाइप से नहीं, कलम से। वह इसलिए कि टाइप मशीन है और मशीनों के दिल नहीं होता और मुझे आपसे बात दिल की करनी है। कहना मुझे ये है कि आप पत्रिका में छपी फोटो में बहुत अच्छी लगी हैं और आप लिखती भी बहुत अच्छा हैं :

अल्लाह करे जोरे कलम और ज्यादा।

आप मुझे जवाब जरूर दें ताकि आपकी रचनाओं की रोशनी में आपको

देखने के साथ आपके विचारों की रोशनी में भी आपको पास से देख सकूं। अपने बारे में इतना ही कहना काफी समझता हूं, कि मैं अच्छे अदब का आशिक हूं और अच्छे लेखकों का प्रशंसक। चूंकि और कोई गुण है नहीं इस मिट्टी के शरीर में, इसलिए अपने बारे में और कुछ बताने में असमर्थ हूं। खुदा करे आप खैरियत से हों। मेरे योग्य कोई सेवा?

आपका ही
आसिम रिजवी

''साले, पत्र तो फन्ने खां सा लिखते हो, लौंडिया आशिक हो जाएगी,'' सरन ने पत्र पढ़कर कहा।

''अरे, वह तो हो भी चुकी। उसके भी कुछ पत्र पढ़ोगे?'' आसिम ने बैग अपनी तरफ खींचते हुए कहा।

''शर्त यह है कि रोना-पीटना उनमें न हो,'' सरन ने कहा, ''भारतीय प्रेमी-प्रेमिका, प्रेम का कीड़ा दिमाग में पैदा होते ही रोना-धोना शुरू कर देते हैं।''

''पहले सभी हंसते हैं। रोना-धोना तो बाद में शुरू होता है, जब हर ऐरा-गैरा नत्थू खैरा इधर-उधर से निकल आता है और उनके अस्तित्व पर अपना अधिकार जताना शुरू कर देता है।''

''तो मुझे वह हंसने वाला हिस्सा पढ़वा दो।''

''साले, सभी खुशियों के हिस्सेदार हैं,'' आसिम ने बैग टटोलते हुए कहा। पत्रों का एक पुलिंदा उसने बाहर निकाला। हर पत्र पर उसने क्रम संख्या लिख रखी थी। लगभग 45 पत्र थे, रंगीन एवं सुंदर। पत्रों की सुंदरता से प्रभावित होकर सरन बोला, ''ये प्रेमी साले कुनैन खिलाते हैं, मगर चीनी में लपेटकर। पहले हंस के लगाएंगे पारियां, फिर रोके दिखा देंगे, खैर लाओ। देखें, तुमने क्या गुल खिलाए हैं।''

''तुम पढ़ो तो, गुल मैंने खिलाए हैं या उसने,'' आसिम ने मुस्कराकर कहा।

''अरे तुम तो मुस्कराते हो, तुम्हारे पत्र तो जरूर पढ़ने पड़ेंगे। रोने की नौबत नहीं आई क्या ?'' सरन ने मजाक में कहा।

''आगे-आगे देखना होता है क्या,'' आसिम ने कहा, ''मगर मैं रोऊंगा अकेले ही, तुम चिंता न करो,'' उसने एक पत्र बढ़ाया।

''मुझे मालूम है। ढेर सारे पत्र लिए फिरते हो मुझे दिखाने के लिए और कहते हो। खैर लाओ, देखूं तो,'' सरन ने पत्र लेने के लिए हाथ बढ़ाया।

जनाब आसिम रिजवी साहब ! आदाब

खुदा करे आप सकुशल हों। आपका पत्र बहुत ज्यादा खुशियां लाया है। लिखना तो कोई आप से सीखे। मुझे अच्छा पत्र लिखना नहीं आता, बिखरे विचारों

को एकत्र करना बहुत ही मुश्किल लगता है। जो खास बात कोई याद आ गई, कागज पर सुरक्षित कर लिया। आपकी तारीफ से अपने आपको क्या समझूं ? आपने बहुत ज्यादा तारीफ कर दी है। यह मेरा पहला प्रयत्न था। भविष्य में क्या लिखूं, कविताएं लिखूंगी या कहानियां, परिस्थितियां और घटनाएं इंसान को पता नहीं किस मोड़ पर ले जाएं। जिंदगी अभी तो बहुत व्यस्त बीत रही है। परिचय संक्षेप में अपना यूं है कि उत्तर प्रदेश की रहने वाली हूं, एम.ए. अंग्रेजी में कर चुकी हूं। आजकल दिल्ली में रह रही हूं और एक फर्म में काम कर रही हूं, उचित वेतन है, फोटो में आपने रूप तो देख लिया। बस इसी सफेद चमड़ी का दिया खा रही हूं। आप गलत न समझिएगा। कंपनी के रिसेप्शन डेस्क पर मेरी आवाज और रूप के जादू के कारण बहुत ही उचित वेतन के साथ मेरा कब्जा है। मगर चिंता की कोई बात नहीं, मेरे साथ के लोग और मालिक, सभी बहुत अच्छे हैं। मैं अपनी इन चीजों की खुद ही मालिक हूं, जिसे चाहूंगी दूंगी, वैसे अभी तक यह खाना खाली है। मानें चाहे न मानें अभी तक मेरा जीवन एक कोरा कागज है।

आपने तो खूनेजिगर का ख्याल कर लिया। सब कहां ऐसे होते हैं ! आप उर्दू बहुत अच्छी लिखते हैं। आपके पत्र आते रहे तो शायद मुझे भी अच्छा लिखना आ जाएगा, मगर आपका परिचय अधूरा लगा।

मैं आपको वादाखिलाफ नहीं समझती, आपने वादा किया ही कब था ? यह तो आपका निश्चय था, वादा तो तब होता जब आप कह देते और पूरा न करते ? मगर मुझे कैसे पता चलता, अगर आपका पत्र न आता। मैं पत्र लिखने में बहुत सुस्त हूं, मगर आपके साथ कभी देरी नहीं होगी, वादा रहा।

अपना एक फोटो भेज सकें तो अजनबीपन खत्म हो जाएगा और आधी मुलाकात भी हो जाएगी। अच्छा अब खत्म करती हूं। जवाब जरूर दीजिएगा। खुदा हाफिज।

राबिया राहगीर

"आशिक भई राहगीर, लगा पहली नजर का तीर," सरन ने गाना शुरू कर दिया, "लगता है, यह मामला तो बहुत आगे बढ़ गया है।"

आसिम ने एक खत बढ़ाते हुए कहा, "इसे पढ़ो, स्पष्ट हो जाएगा।"

"जाल तान रहे हो मेरे आस-पास," सरन ने मजाक करते हुए कहा, "मगर मेरे पंख बड़े मजबूत हैं, खैर लाओ।"

मोहतरमा राहगीर साहिबा, सलाम !

आपका कृपा पत्र मिला। मैं सकुशल हूं, इसलिए कि मुझे कुछ लोग ठीक रखने पर तुले हुए हैं, दुआएं दे-देकर, उनमें आपको भी सम्मिलित कर लिया है। देखिए, आपके पत्र की पहली पंक्ति ही यूं शुरू होती है, 'खुदा करे आप सकुशल हों।'

वैसे मुझे खैरियत से कोई चिढ़ नहीं। मुझे जुनूं पर गर्व है, न गौरव। सच तो यह है कि यहां किसी प्रकार का जुनूं है ही नहीं। जिंदगी यहां बहुत व्यस्त है। मगर वैसी नहीं जिस पर गर्व किया जा सके, क्योंकि करना कुछ चाहता हूं, हो कुछ रहा है। कुछ लिखना चाहता हूं, कोई किताब और लिख रहा हूं अंग्रेजों के हिसाब- किताब। वैसे भी मेज पर बैठने और लिखने-लिखाने का इरादा बांधता हूं तो शरीर में विचित्र प्रकार की सरसराहटें शुरू हो जाती हैं। बाहर मौसम सुहाना लगता है, बच्चे प्यारे लगते हैं। फूलों की मुस्कान अपनी ओर खींचने लगती है। हर टच्चू-पच्चू लड़की परी महसूस होती है। स्नानघर में खुलकर नहाने को जी चाहता है। नहीं चाहता तो कलम पकड़ने को दिल। कहता है, जहां कहो ले चलता हूं, मगर लिखने की मेज से उठो। बताओ, ऐसा दोस्त सा दुश्मन कौन होगा ? दुश्मन भी ऐसा कि अपनी ही धमनियों के पास। साला मारे आस्तीन।

आपके अशआर की तारीफ मात्र अपने इस दुश्मन से पीछा छुड़ाने का रास्ता है, बस!

आपको मेरी उर्दू अच्छी लगी, आपकी मर्जी है, वर्ना मैं तो कह चुका हूं कि मुझे तो अपनी मिट्टी में रेत के सिवा कुछ न मिला। ओह, आपने फिर मुझे परिचय के दरवाजे पर ला खड़ा किया। न भागते बनता है, न छिपने का चारा है। खैर, एक वादा कीजिए, फोटो नहीं मांगिएगा। देखिए ना, कोई आपकी तरफ देखे और ऐसा लगे जैसे दूर पेड़ पर बैठी चिड़िया को देख रहा हो। चाल उसकी नाबराबर पहियों वाले, सब्जी ढोने वाले रेढे जैसी हो। बाकी नख-शिख यूं जैसे खुदा से नाराज होकर इंसान बनाने वाली मशीन से अपूर्ण उतर कर भाग आया हो ! बताइए, ऐसे मूढ़ की फोटो लेकर आप क्या करेंगी ! बस, इस रेखाचित्र पर ही गुजारा कर लीजिए। वैसे मैंने यहां के बड़े-बड़े अनुभवी फोटोग्राफरों को रिश्वतें दे-देकर और हर प्रकार के लेंस प्रयोग करवा के देख लिया है। अच्छे-अच्छे कैमरों के मुंह फिर गए मगर यह लाला रूख किसी ढंग से उनकी पकड़ मैं न आ सका। इस पर भी रेत के ढेके के फोटो पर आपका आग्रह हो तो खुदा आप पर रहम करे। मैं कोई न कोई नमूना भेज ही दूंगा।

परिचय के नाम पर बस इतना जान लीजिए कि दिल्ली के पास हेमूं बक्काल के शहर रेवाड़ी जंक्शन पर मैं लोगों को टिकटें देता-देता खुद एक गलत टिकट लेकर भटक गया। यही भटकन मुझे पाकिस्तान के शहर कराची ले गई और वहां से लंदन पहुंचा दिया। यहां युनिवर्सिटी में साहित्य पढ़ता हूं। फिल्म फोटोग्राफी सीखता हूं और शाम को थोड़ा सा काम कर लेता हूं जिससे इतने पैसे प्राप्त हो जाते हैं कि ऊपर वाले को धन्यवाद कह कर दो वक्त अच्छा खाना खा सकूं और स्वस्थ रह सकूं। इधर लोग मुझे फिर फांसने की तैयारियां कर रहे हैं। नाम, उन्होंने अपने, मेरे, भाई-बहन और माएं रख छोड़ा है, मगर हाथों में उनके छुरियां हैं। मैं जिम्मेदारियों की झाड़ियों में अपने

सींगों को नहीं फंसाना चाहता। आप मेरी टांगों की मजबूती के लिए दुआ कीजिए ताकि इसी तरह उनसे दूर भागता रहूं।

आपने कहा था, जवाब जरूर देना। देखिए, कैसा जवाब दिया है, जैसा निराश रोगी को डॉक्टर लोग जवाब दे दिया करते है। समझीं आप, अच्छा विदा।

आपका
आसिम रिजवी

''इसके बाद क्या हुआ?'' सरन ने पत्र रखते हुए पूछा।

''इसका मतलब है, तुम्हारे दिल में पत्रों के लिए रुचि पैदा हो रही है,'' आसिम ने उसकी बात पकड़ते हुए कहा।

''तुम कहना क्या चाहते हो?''

''यानी मैं तुम्हें बोर नहीं कर रहा हूं।''

''फिलहाल यही समझो।''

''ठीक है, तो फिलहाल मुझे इस शहर से कहीं बाहर ले जाने का इंतजाम करो।''

''वह तो मैं करूंगा ही। अब तुम आए हो तो तुम्हें अंदर बंद तो नहीं रख सकता।''

''किधर का इरादा है?''

''तुम बोलो, क्या सोचकर आए हो?''

''ओलंपिक खेलों में मैं म्यूनिख नहीं पहुंच सका था। चाहता हूं, अब शहर और ओलंपिक गांव देख लूं।''

''शहर तो मैं जा चुका हूं और गांव भी, मगर देखा कुछ नहीं। वह वास्तव में एक बिजनेस टूर था और बिजनेसमैन तुम जानो, कुछ नहीं देखा करते। बस, माया के चक्कर में रहते हैं।''

''तो लाला दमड़ीमल, हमारे साथ चलिए, हम आपको दिखाएंगे कि दुनिया क्या है,'' आसिम बोला।

''दुनिया तो आसिम साहब, आप मुझे क्या दिखाएंगे ! हालात मुझ पर जैसी दुनिया लादते रहे हैं, उससे बाहर निकलकर मुझे और कोई दुनिया देखने की छुट्टी ही कहां मिली है ? मगर खैर, चलो तो तुम्हारे साथ एक चक्कर और लगा लूंगा,'' सरन ने उदास स्वर में रहा।

आसिम ने सरन की उदासी को महसूस किया तो कहा, ''लगता है, तुम्हारे पीछे भी कोई बहुत बड़ी कहानी है।''

''नहीं, मेरे पीछे कोई कहानी नहीं है,'' सरन ने झुंझलाकर कहा, ''मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूं, मगर एक शर्त पर कि तुम मेरी पिछली जिदंगी के बारे

में कुछ नहीं पूछोगे। तुम्हें दोस्त बनाया, जख्म कुरेदने का अधिकार नहीं दिया।''

आ अन्दलीब मिल के करें आहो जारियां
तू हाय गुल पुकार, मैं चिल्लाऊं हाय दिल।

आसिम गुनगुनाने लगा, फिर बोला, ''कह दो दिल की बात, बोझ हल्का हो जाएगा।''

''तुम चुप रहोगे या दरवाजा दिखा दूं ?'' सरन ने कठोर शब्दों में कहा।

''मैं चुप रहूंगा, क्योंकि मैं दरवाजा नहीं देखना चाहता,'' आसिम ने मुस्कराकर कहा।

''तेरी इन्हीं बातों पर तो मर मिटा हूं।''

''अच्छा, कल रात को गाड़ी से चलते हैं। सुबह चाबी सेठ को दे दूंगा,'' सरन राजी होते हुए बोला, ''आज रात तुम्हें एक और जगह ले चलूंगा।''

6

शाम साढ़े छह बजे वह दोनों सिंकास्टन में जा बैठे। यह एक भूमिगत क्लब था, टेढ़ा-मेढ़ा, कोई खाना इधर तो कोई उधर। दीवार स्याह काली थी; तिरछी और सिरों पर झुकी-झुकी। सड़क पर माइन की ओर खुलने वाले दो झरोखों से हवा आती-जाती थी। बीयर, कोन्याक और व्हिस्की अंदर मिलती थी और प्लेट फार्म पर तेज संगीत के प्रोग्राम चलते थे। इतना तेज कि बजाने वालों के शरीर पसीने में डूब-डूब जाते और उन्हें घेरे और सुनते हुए लड़के-लड़कियों के शरीर ताल पर नागिनों की तरह झूमने और बल खाने लगते। कई उठकर फ्लोर पर नाचने पहुंच जाते। वे लोग तेज मरोड़ें खाता हुआ नाच नाचते। कई लड़कियां बाल खोलकर सिर नीचे किए बालों को लहराती, झूमती हुई ऐसी लगतीं जैसे कोई बांस पर नारियल बांधे इधर-उधर झुला रहा हो। ऐसे नाच को वह कोई नाम दे सके तो दें सकें, मगर सरन के लिए उसे कोई नाम देना बहुत मुश्किल था। नाच में एक लय होती है, एक संतुलन, मगर यह कैसा नाच था कि कोई इधर तोड़े ले रहा है तो कोई उधर। जैसे कोई सूखी लकड़ी को झिंझोड़-झिंझोड़ कर तोड़ देना चाहता हो। कुछ भी हो, उसमें एक जोश, आवेग व गर्मी जरूर थी। लहराते, बल खाते शरीर जैसे भी हों, अगर देखनेवाले का स्वभाव रंगीन और दिल की धौंकनी ताजा-ताजा गर्म खून पंप करने योग्य हो तो वह हर रंग-रूप और छवि के साथ अच्छे लगते हैं। और फिर अंदर शराब की आग भी उंड़ेली जा चुकी हो तो फिर आग और तेल का मिलाप बन ही जाता है। वे बहुत देर तक पीते और झूमते रहे। रात ग्यारह

बजे वे एक-एक पैग और लेकर उठना चाहते थे। सरन पैग लाने काउंटर की ओर जा रहा था कि उसे एक लड़की ने अपनी तरफ खींच लिया और फ्लोर पर ले गई। सरन कुछ देर उसके साथ उल्टे-सीधे कदम नाचता रहा। थोड़ी देर बाद बोला, "नशा उतर रहा है, दो पैग ला रहा हूं।"

लड़की ने उसे छोड़ दिया तो वह काउंटर की तरफ बढ़ गया। दो पैग भरवा कर वह आसिम के पास आ बैठा।

थोड़ी देर बाद लड़की भी उनकी मेज पर आ गई। "उठो, मेरे साथ नाचो," वह झूमती हुई बोली।

"नहीं, पहले जरा चुस्की लूंगा," सरन ने कहा और मुस्कराकर आसिम की तरफ आंख मार दी।

आसिम ने नाचने के लिए उसकी कमर में हाथ डालकर उठाना चाहा, मगर लड़की ने उसका हाथ झटक दिया और सरन का पैग उठाकर पीने लगी। सरन आसिम को उससे बातों का मौका देने के लिए अपने लिए, एक और पैग लाने के बहाने मेज से उठ गया। आसिम ने लड़की से बात करने की कोशिश की, मगर वह एक नाराज बिल्ली की तरह खुरखुरा कर रह गई। वह कुछ देर सरन के वापस आने का इंतजार करती रही। सरन बार के स्टूलों में से एक पर बैठकर अपना पैग हौले-हौले सिप करने लगा। उसने कनखियों से देखा। लड़की अभी तक बार-बार उसी की तरफ देख रही थी और आसिम को परों पर पानी तक नहीं डालने दे रही थी। सरन ने पंद्रह-बीस मिनट उधर कोई ध्यान नहीं दिया। परिस्थितियों की समीक्षा करने के लिए अचानक जब सरन की नजर उधर पड़ी तो लड़की उंगली के इशारे से उसे अपनी तरफ बुलाने लगी। सरन ने न देखने का अभिनय किया और फिर अपनी शराब पीने लगा। अभी उसने दो घूंट ही भरे होंगे कि उसे अपनी पीठ पर किसी के हाथ का हल्का सा बोझ महसूस हुआ। उसने मुड़कर देखा, वही लड़की थी, "कम डियर!"

सरन के उठने से पहले वह उसकी कमर में हाथ डाल चुकी थी और अपनी तरफ खींच रही थी। विवशतः वह उठकर उसके साथ मेज पर आ बैठा। आसिम का चेहरा रंग बदल रहा था। सरन ने जल्दी बची-खुची शराब खत्म की और उठ खड़ा हुआ। वह आसिम को साथ लिए सीढ़ियों की तरफ बढ़ा। पहले तो वह समझी, वे टॉयलेट की तरफ जा रहे हैं। मगर उन्हें सीढ़ियां चढ़ते देखकर वह भी लपक कर उनके पास आ गई और सीढ़ियां चढ़ने लगी।

बाहर आकर उसने फिर सरन की कमर में हाथ डाल दिया और माइन के किनारे वह ऊपर वाली सड़क पर चलने लगे। बाहर की खुली ठंडी हवा ने उन्हें और पास कर दिया। आसिम उनसे कुछ कदम पीछे चल रहा था। पुल पर पहुंचकर दाईं तरफ वे पिज्जा माग्रौनी के स्टाल पर रुक गए। सरन ने सोचा, अब वह उसे

छोड़कर पुल की तरफ चली जाएगी। नदी के उस पार यूथ होस्टल, सेक्शन हाउसन या कहीं इधर या फिर उधर शहर की तरफ, मगर उसने सरन के गले में हाथ डाले-डाले ही दो पिज्जा और दो बीयर का आर्डर दे दिया।

सरन ने स्टॉल वाले से कहा, "थ्री।"

लड़की बोली, "ओके, थ्री।"

स्टाल वाला दो और ग्राहकों का आर्डर लेकर पिज्जा के पेड़े फैला-फैला कर और गोल-गोल चपातियों की तरह बना-बनाकर हवा में घुमाता हुआ ऊपर फेंकने और फिर झपटने लगा। उन्हें अपने सामने चौड़े फट्टे पर फैला-फैलाकर वह उन पर पनीर की तहें जमाता गया। फिर टमाटरों का लेप, ऊपर काले-काले बेर जैसे कटे हुए मार्ग्रेनी या मांस के गोल-गोल रुपए जैसे टुकड़े रखता गया। फिर कई प्रकार के मसाले उन पर छिड़कने के बाद उन्हें बिजली के ओवन में पकने के लिए रखने लगा। निवृत्त होने के बाद उसने नए आर्डर नोट किए। ग्राहकों के साथ हंसी-मजाक किया। अपने सहायक के नितंबों पर हास्य से एक हल्की सी लात जमाई। रेकार्ड प्लेयर पर नया रेकार्ड बदला और लहरा-लहरा कर गाने लगा :

घिन भजनों भा, घिन भजनों भा।

पांच-दस मिनट बाद उसने ओवन खोला तो पिज्जे पक कर तैयार हो गए थे। तीनों पिज्जों को छुरे से चार-चार टुकड़ों में काट-काट कर सुंदर फूलदार गत्ते की प्लेटों में पेपर नैपकिन के साथ दुकानदार ने उनके सामने रख दिया और साथ बीयर की बोतलें भी खोलकर उनके आगे रैक पर रख दीं और वे खड़े-खड़े खाने लगे।

चौक के द्वीप में पहुंच कर सरन ने लड़की से कहा, "तुम उधर होस्टल जाओगी ना ?" उसने माइन पार उंगली उठा दी।

"नहीं, तुम्हारे साथ जाऊंगी। होस्टल तो अब बंद हो चुका। अब वहां मुझे कौन घुसने देगा ?" वह उनके साथ चलने लगी।

"आने दो," आसिम ने कहा, "अब बेचारी कहां जाएगी?"

कमरे पर पहुंचकर सरन बोला, "देखो मिस...जो भी तुम्हारा नाम है। हमारे पास यही बड़ा दीवान है। दो आदमी तो इस पर कबड्डी भी खेल सकते हैं, मगर तीसरे की इस पर गुजांइश नहीं है।"

"कबड्डी के बीच एक लाइन होती है," वह हंसकर बोली।

"मगर यह एक भारतीय खेल है," आसिम बोला।

"मेरे पास दुनिया भर के खेलों की एक किताब है, उसमें इसके बारे में पढ़ा था," वह बोली।

"ओह, ओके। मगर उस लाइन को दोनों तरफ के खिलाड़ी पार कर सकते हैं," आसिम ने कहा।

''मगर हारने वाला मैदान से बाहर बिठा दिया जाता है, इसका भी ध्यान है ?'' वह बोली।

रात को वह दीवान पर सरन की ओर मुंह और आसिम की तरफ पीठ करके सो गई। अपने और आसिम के बीच थोड़ी जगह रहने दी। काफी देर बाद जब सरन ने धीरे से कहा, 'आसिम!' तो वह कड़कदार आवाज में बोली, 'नो आसिम, अंडरस्टैंड!'

उसने मुंह मोड़कर और घुटने सिकोड़कर आसिम की पसली में मारे, वह नीचे जा पड़ा। उसके उठने से पहले लड़की ने एक सिरहाना उसके ऊपर फेंक दिया और उसे देने के लिए नीचे से चादर भी खींचने लगी।

''ठहरो, दूसरा कंबल और चादर मेरे पास है,'' सरन ने उसे रोक दिया।

उसने दीवान के एक तरफ बने बक्से का ढक्कन उठाया और एक कंबल, चादर, सिरहाना और दरी निकाल कर आसिम की तरफ बढ़ा दिया, बोला, ''माफ करना भाई, मजबूरी है, लौंडिया रजामंद नहीं।''

''कमीने, तूने ही कोई टोना किया है सुसरी पर,'' आसिम ने दरी फर्श पर बिछाते हुए कहा, ''आना तू लंदन!''

''क्या कर लेगा तू वहां ?'' सरन ने तुनककर कहा, ''वहां की सब मेमों को चेस्टिटी बेल्ट चढ़ा देगा क्या?'' और वह जोर-जोर से हंसने लगा।

चेस्टिटी बेल्ट का नाम सुनकर वह चौंकी और इसे चुनौती समझकर आहिस्ता-आहिस्ता अपने सारे कपड़े उतारकर मेज की तरफ उछालती गई। आसिम ने नजरें झुका लीं तो सरन ने कहा, ''देख ले चोरी-छिपे।''

आसिम ने मुंह फेरते हुए कहा, ''दफा कर साली को !''

''खैर, तुम्हारी मर्जी। चाहो तो सवेरे एक कोशिश फिर कर लेना,'' सरन ने राय दी।

आसिम ने चोर नजरों से लड़की की तरफ देखा तो सहसा उसके मुंह से निकल गया, ''वंडरफुल !''

लड़की तनिक कसमसाई और मुंह सरन की ओर करके लेट गई। आसिम ने मामला बेढब देखा तो और उदास हो गया। थोड़ी देर बाद सरन ने हाथ बढ़ाकर बेड स्विच से लाइट ऑफ कर दी और कंबल ऊपर लेकर सो गया।

सुबह सरन देर से उठा। लड़की गायब थी। बाथरूम से शावर की आवाज आ रही थी। लेटे-लेटे ही सरन ने कहा, ''आसिम, जरा चाय का पानी रख दे।''

कोई जवाब न पाकर उसने मुड़कर देखा। आसिम भी अपने बिस्तर में नहीं था। सरन अभी सोच ही रहा था कि वह सुबह-सुबह कहां चला गया कि बाथरूम का दरवाजा खुला और आसिम एकदम नंगा कमरे में उसके सामने आ खड़ा हुआ।

''कमालगढ़ विजय हुआ?'' सरन ने पूछा।

"नहीं, साली को भैंस की तरह मल-मल कर नहलाया है, मगर कमीनी ने पुट्ठे पर हाथ ही नहीं धरने दिया। उफ्, मेरा तो बुरा हाल हो गया।"

थोड़ी देर बाद लड़की बाहर आई। उसके हाथ में छोटा सा तौलिया था। वह ऊपर का शरीर पोंछती तो निचला हिस्सा नंगा हो जाता, नीचे का शरीर पोंछती तो ऊपर के कबूतर फड़फड़ाने लगते। दो पल रुकने के बाद आसिम फिर गड़ाप से स्नानघर में डुबकी लगा गया।

"आह, ओह, मैं तो मर गया।"

कपड़े पहनकर लड़की ने चाय बनाई। अलमारी में से प्लास्टिक के डिब्बे से बिस्कुट, नमकीन, मूंगफली, आलू चिप्स निकालकर प्लेट में भरे और मेज पर सरन के सामने रख दिए। जब तक सरन जल्दी-जल्दी कुल्ली करके आता, उसने चाय दो प्यालों में उंड़ेल ली थी। वे चाय पीने लगे। कुछ देर बार आसिम निकला तो लड़की ने एक गर्म-गर्म प्याला उसकी तरफ बढ़ाते हुए कहा, "आर यू कूल नाऊ?"

लड़की चली गई तो वे फिर सो गए। रात भर लड़की ने सरन को सोने नहीं दिया था और लड़की ने ही रात भर आसिम को जगाए रखा था। उन्हें खूब नींद आई। लगभग डेढ़ बजे उनकी नींद टूटी। सरन बोला, "खाना खिलाओगे?"

"साले मेहमान हूं, कुछ तो शर्म करो," आसिम ने कहा।

"आते ही सारा घर तेरे हवाले कर दिया है, और क्या चाहते हो?" फिर बेबसी प्रगट करते हुए बोला, "मेरा तो कूड़ा हो गया रात को। हरामजादी बड़ी तेज कटार थी, बुरी तरह काट गई।"

"अरे, तुम्हारा तो झटका हुआ है। मुझे तो साली ने हौले-हौले हलाल किया है," आसिम ने शिकायत भरे लहजे में कहा।

"अब रोना छोड़ो, और चूल्हा-चौका संभालो," सरन ने कहा।

"अच्छा गुरुदेव, तुम तब तक ये दो पत्र ही पढ़ डालो," आसिम ने बैग में से पुलिंदा निकालकर दो पत्र छांटते हुए कहा।

"उफ् तौबा !" सरन कसमसाया। फिर आसिम की पीड़ित नजरों से नजरें मिलने पर बोला, "अच्छा लाओ, मगर खाना एकदम फस क्लास बनाना।"

"साले, रिश्वतखोर !" आसिम ने हीटर का बटन ऑन करते हुए कहा।

मान्यवर, नमस्कार !

कल आपका कार्ड मिला। पिकॉडली सचमुच लंदन का बहुत सुंदर बाजार है, मगर मेरे लिए कार्ड अपनी समस्त सुंदरता दूसरी तरफ लिए हुए है, वहीं जहां आपकी लिखावट है। अच्छा, पहले यह बताइए, अब आपकी तबीयत कैसी है ? आपने खुद ही अपनी तबीयत के बारे में क्यों नहीं लिखा ? आसी, क्यों तड़पाते हैं मुझे ? वापसी डाक से खबर दीजिए कि आपकी आंख का ऑपरेशन कैसा रहा।

देखिए, दिल छोटा न कीजिए। मैं खुदा से आपकी सेहत और आंख की रोशनी के लिए दुआ करती रहती हूं।

आसी, आपने यह क्यों लिखा है कि अब मैं किसी के योग्य नहीं।

गालिब शिक्स्ता हूं, मेरे बिना कौन से काम बंद हुए जा रहे हैं !

छिः ! आप कैसी बातें करते हैं ? जाने क्या कारण होगा आप की इस कमी की भावना का। आपकी एक आंख जाती रही, अगर दोनों न होतीं (मेरे मुंह में मिट्टी) तो मैं अपनी दोनों आंखें आपको सौंपकर सारा जीवन आपके सहारे आपके कदमों में बिता देती। मेरे अस्तित्व से आपका जीवन संवर जाए तो मेरे जीवन का उद्देश्य प्राप्त हो जाएगा। अगर किसी ने आपको तड़पाया है तो उसका बदला मुझसे क्यों ले रहे हैं ? मेरे प्यार, मुहब्बत, मेहनत, सेवा और लगन का इम्तिहान आप मुझसे लें। अगर मैं आपकी नजरों में स्वीकार करने योग्य नहीं हूं तो खुदा के वास्ते मुझसे अलग होने के लंगड़े बहाने तो न बनाएं।

आप जब भी ठीक हो जाएं और सफर करने के योग्य हो जाएं, सीधे यहां चले आएं। मैं वादा करती हूं, मैं आपको एक नई जिंदगी दूंगी। आसी, जिंदगी अपनी समस्त सुंदरताओं के साथ आपके द्वार पर खड़ी है, दरवाजे बंद करके सोते न रहें। उसका स्वागत करें।

काश ! ऐसे समय मैं आपके पास होती।

आपकी
राबिया

पत्र पढ़कर सरन बोला, "तुम्हारे पहले पत्र का उसने जबाब दिया होगा। बस तुरंत तुमने जाल फैला दिया। चिड़िया प्यासी होगी, बस आ गई बेचारी जाल में।"

"नहीं, मैंने कहा है ना कि सिर्फ उसके शेरों की तारीफ की थी। तुम्हें पत्र पढ़ते हुए मौत आती है। इसलिए दो पत्र छांट कर दिए थे, ताकि तुम खुद ही समझ लो कि मामला क्या है।"

"तुम्हारी आंखें तो दोनों ठीक हैं, ऑपरेशन कब हुआ था।"

"कौन सा ऑपरेशन, कैसा ऑपरेशन ? मियां, मैं तो उसे भगा रहा था," आसिम बोला।

"तुम लंदन में कब से रह रहे हो?"

"अरे, उसके साथ बात दूसरी थी। मैं उसकी कला से प्रेम करने लगा था, बस।"

"ओके, कला से। यह प्रेम कहां तक चला ?"

"तुम्हें हंसने, मुस्कराने और खेलने-कूदने की आदत है प्यारे, इसलिए मेरे

घाव न कुरेदो। मेरे साथ कौन रो सकेगा ?"

"कम से कम मैं तो नहीं," सरन बोला।

आसिम ने चिट्ठी उसके सामने से उठा ली, बोला, "रहने दो, तुम तो पत्थर हो।" उदासी उसके सारे चेहरे पर किसी बदली की तरह उतर आई।

"मैं तो पत्थर हूं, मगर तुम तो कला के पारखी हो !" सरन ने उसे उदास देखकर कहा, "आर्टिस्ट होते तो इस पत्थर में किसी बोल उठने वाले बुत की रूप-रेखा देख लेते। खैर लाओ," सरन ने पत्र उसके हाथ से ले लिया, "औरतों की तरह रूठ क्यों जाते हो, जल्दी-जल्दी !"

आसिम ने लाल धागों की जाली को छुरी से काटा और प्याज निकाल कर काटने लगा।

मेरे आसी!

जाने क्यों आज मेरा मन बहुत बेचैन और परेशान है, आपकी तबीयत कैसी है? रह-रहकर आपका पुर मलाल और उदास चेहरा आंखों के सामने घूम रहा है, जल्दी लिखिए, आप कैसे हैं?

आपने लिखा था कि आंख के दो ऑपरेशन हो चुके हैं। बताइए, क्या नतीजा निकला है? खुदा मेरे दिल से निकलने वाली दुआ सुन ले और आपको जल्द से जल्द तंदुरुस्त कर दे। काश, आज मैं आपके पास होती ! आपका जब भी दिल घबराए आसी, तो मुझे अपने पास महसूस कीजिए। मैं हर कदम पर आपके साथ हूं। बस आप पूरी सावधानी से इलाज कराइए, इस यकीन के साथ कि आपको एक बेसहारा लड़की का सहारा बनना है।

आसी, खुदा के लिए आइंदा यह सवाल न कीजिएगा कि मैं शादी क्यों नहीं करती? बल्कि यह पूछिए कि 'राबिया, तुम मर क्यों नहीं जाती ! इतनी मुसीबतें उठाने के बाद भी जिंदा हो, बड़ी कठोर जान वाली हो तुम। तुम्हारा आसिम यहां दर्द व पीड़ा की जिंदगी गुजार रहा है और तुम वहां उससे दूर रहकर भी जिंदा हो !' आपकी मर्जी, दोनों में से मुझे कोई सी एक चीज उपहार दे सकते हैं।

अब आप कैसे हैं? अच्छा, सच-सच कहिए, आप मेरा लंदन आना पसंद करेंगे? मजबूरियां और कठिनाइयां तो हैं, मगर मैं फिर भी पासपोर्ट के लिए कोशिश करूंगी। मेरा आपके यहां ठहरना आपको बुरा तो नहीं लगेगा? जांनिसार अखतर का एक शेर सुनिए—

वक्त का पहिया हमीं से घूमेगा
बस और कूवते बाजू पे एतबार करें।

आपकी अपनी
राबिया

"कूवते बाजू का अर्थ मालूम है तुम्हें?" सरन ने पत्र समाप्त करके अचानक सवाल किया, "नहीं मालूम होंगे, वर्ना रोते नहीं।"

आसिम बोला, "हमारे वालिद साहब के एक दोस्त, यार मुहम्मद खां बड़े रौब वाले, धड़ल्लेदार और दबंग किस्म के व्यक्ति थे। आधा शहर उनसे कांपता था। किसी को अपनी मर्जी के अनुसार चलाना उनके बाएं हाथ का खेल था। उन्होंने जिंदगी में जो चाहा प्राप्त किया, न मिला तो छीन लिया। जो उनके रास्ते में आया उसे ठोकर से एक तरफ उछाल दिया या हाथ-पांव ही तुड़वा दिए।"

"कहानियां भी लिखते हो?" सरन ने व्यंग्य किया।

"नहीं, तुम्हें कूवते बाजू के अर्थ बता रहा हूं," सरन कुछ कहने ही जा रहा था कि आसिम ने उसे रोक दिया और कहा, "आगे सुनो। मगर जब खुद उनका लड़का उनके सामने आया तो उनकी सारी कूवते बाजू जवाब दे गई। ठोकर किसे मारते, हाथ-पांव किसके तोड़ते ?"

"तुम्हारी कूवते बाजू कहां फेल हुई?" सरन ने सवाल किया।

"अपनों के आगे," आसिम बोला, "अच्छा, कहानी सुनोगे?"

"सुननी पड़ेगी, तुम खाना जो खिला रहे हो," सरन ने मुस्कराकर कहा, "मगर क्या ऐसा नहीं हो सकता कि तुम मुझे कोई और पत्र ही पढ़वा दो और खुद पकाने में व्यस्त रहो। भई, नमक-मिर्च बराबर न हो तो मुझे मजा नहीं आएगा।"

आसिम ने बैग सरन की तरफ बढ़ा दिया, "पत्र नंबर 26 और 29 निकाल लो।"

सरन को आसिम के पत्रों पर नंबर लिखकर उन्हें नबंरवार रखने पर हंसी आ गई। उसने पत्र नंबर 26 सामने रख लिया।

प्रिय आसिम, प्यार

तुमने कई दिनों से पत्र नहीं लिखा, अम्मी जान तुम्हारे लिए बहुत उदास हैं। तुम हम सबसे दूर चले गए, मगर पत्रों के द्वारा कुछ तो नजदीक हो सकते हो। अपने कुशल का समाचार जल्द-जल्द भेजते रहा करो और साल में ज्यादा नहीं तो दो चक्कर तो लगा जाया करो, क्योंकि अब हम दोनों ही अम्मी जान की पूंजी और सहारा हैं। कई लोग अम्मी जान को डराते हैं कि तुम वहां किसी गोरी मेम के चक्कर में पड़ गए हो। पत्रों में सुस्ती का यही कारण हो सकता है। मगर आसी, सच जानो, न तो मुझे, न अम्मी जान को और न ही तुम्हारी भाभी को, यह यकीन आता कि तुम ऐसी कोई हरकत कर सकते हो। याद रखो, अम्मी जान का फरमान है कि तुम्हें शादी यहां करनी है, सिर्फ यहां, और कहीं नहीं। अम्मी जान कह रही हैं कि सलमा मौसी ने अपनी लड़की का रिश्ता तुमसे करने की विनती की है। पिछले साल तुम आए थे तो तुम उनकी लड़की मुसर्रत को नहीं

देख सके थे। तब वह 'मरी' गई हुई थी, अपने कालेज की कुछ लड़कियों के साथ। मैंने उसे देखा है। लड़की ने खूव पंख व बाल निकाले हैं। इंग्लैंड में वह तुम्हारे साथ बहुत अच्छा निभा जाएगी। इतनी बड़ी एडवांस्ड कंट्री में रहने वाले का साथी अच्छा, समझदार और शिक्षित होना जरूरी है। लड़की तो वहां भी एक से बढ़कर एक सुंदर और शिक्षित होगी, मगर अम्मी जान कहती हैं कि उन्हें सूअर खाने वाली काफिरों की क्रिस्तान लड़कियां बिल्कुल पसंद नहीं। सच पूछो तो मुझे और तुम्हारी भाभी सुरैया को भी यह रिश्ता पसंद है। मुसर्रत उसकी चचेरी बहन है। उसने उसे बहुत पास से देखा है। कहती है, ऐसे हीरे तो चिराग लेकर ढूंढे से भी नहीं मिलते।

रिश्ता तो हमारी तरफ से लगभग पक्का ही हो चुका है। बस तुम्हें खबर देनी थी, ताकि तुम जल्दी से जल्दी आकर अपनी अमानत संभाल सको। अम्मी जान बहुत-बहुत प्यार लिखवा रही हैं।

भाभी की तरफ से सलाम व दुआ। बच्चे तुम्हें बहुत याद करते हैं। तुम्हारा जवाब आने पर हम तारीख तय करके मौसी को बता देंगे।

तुम्हारा भाई
अब्दुल जलील

"ओह, यह तो उपन्यास के पाठ बनते जा रहे हैं," बैग में से दूसरा पत्र ढूंढते हुए सरन बोला, "यह रहा नबंर 29।"

जनाब भाई साहब, आदाब !

आपके पहले पत्र में, मेरे कत्ल के जो इंतजाम किए जा रहे थे, उनका संकेत मिल गया था। अब आपका खैरियतनामा और मेरा कत्लनामा आखिर आ ही गया। भाई साहब, माफ करना, मैं जो कुछ कहने जा रहा हूं वह किसी तरह की गुस्ताखी नहीं बल्कि आपके लिए वर्तमान परिस्थितियों से आगाही है। मैं एक पत्र की फोटोकापी संलग्न कर रहा हूं। आप खुद ही अवलोकन कर लीजिए कि मेरे लिए आपकी खुशियों को पूरा करना खुद अपने हाथों आत्महत्या करने से कम नहीं होगा। वैसे, क्या सह सच नहीं कि यह सब कुछ आप मेरी खुशी के लिए कर रहे हैं और मुझे ही उससे खुशी न मिली तो क्या आपकी सारी मेहनत बर्बाद नहीं हो जाएगी?

सरन ने पत्र पढ़ना रोककर आसिम से पूछा, "किस पत्र की फोटोकापी? लाओ, वह भी दिखा दो वर्ना यह पत्र अधूरा महसूस होगा?"

"साथ ही तो नीचे लगा हुआ है," आसिम बोला।

सरन ने नीचे वाला पत्र ऊपर कर लिया। राबिया की किसी सहेली नाजिमा का पत्र था।

मोहतरम भाई आसिम साहब !

आप मुझे नहीं जानते, लेकिन मैं आपसे परोक्ष रूप से परिचित हूं। राबिया न सिर्फ मेरी बचपन की प्रिय सहेली है बल्कि मेरी छोटी बहन भी है। आज मैं उस छोटी बहन की जिंदगी आपसे भीख मांगती हूं। मैं अपनी राबिया की खुशियां मांगती हूं जो आपसे संबद्ध है। मैंने महसूस किया था कि वह कई दिन से उदास और निढाल है, उतरा हुआ चेहरा, सदा हंसते रहने वाली राबिया चुप-चुप। मेरे बार-बार पूछने के बावजूद वह मुझे टालती रही। आखिर जब जब्त के बांध टूट गए तो उसने आपका पत्र मेरे सामने रख दिया। मुझे बहुत सदमा पहुंचा कि आपने उसके प्यार व शिष्टाचार पर भरोसा न करके उसके कोमल हृदय को ठेस पहुंचाई।

कुछ दिन पहले आपने एक पत्र में लिखा था कि आप एक आंख से वंचित हैं और इस जानकारी के बाद भी आप मुझे पत्र लिखना पसंद करेंगी या मुझसे मिलकर परेशान होंगी ? जब उसने मुझे आपका वह पत्र दिखाया तो उसकी आंखें सूजी हुई थीं। शायद वह दिन-रात रोती रही थी। मैंने पूछा, इसलिए रोती हो कि जिसने तुम्हें चाहा और जिंदगी भर साथ देने का वादा किया वह ऐबदार है और तुम परेशान हो कि दुनिया तुम्हारी पसंद का मजाक उड़ाएगी ? मगर पगली, तुम्हारा अब भी क्या बिगड़ा है, इनकार कर दो। मेरा इतना कहना था कि वह बिफर गई। बोली, नाजिमा, तू मुझे गलत समझ रही है। मैं इसलिए नहीं रो रही कि मेरी मुहब्बत का रखवाला एक आंख से वंचित है या यह कि दुनिया मेरे चुनाव पर हंसेगी, बल्कि इसलिए कि आसिम ने मेरी मुहब्बत, वफा और खुलूस पर यकीन नहीं किया। काश, वह जानता कि मैंने मुहब्बत की है। मेरी शादी तो उसी दिन उससे हो गई थी जिस दिन मैंने उसे अपने शहरे-दिल का शहजादा मान लिया था। शादी के बाद अगर पति बीमार हो जाए तो क्या पूरब की लड़कियां उसे छोड़ दिया करती हैं या शादी से पहले जिंदगी भर बीमार, कमजोर या बूढ़ा न होने की मुहब्बत करने वाले कसमें खाते हैं या वादे करते हैं ? अगर नहीं तो अब मुझे आसिम की किसी कमी से क्यों घृणा होने लगी ? जब मैंने कहा, राबिया तुम भावना में बह रही हो, शादी के कुछ साल बाद जब नंगी सचाइयां सामने आएंगी तो तुम्हारी आंखें चकाचौंध बर्दाश्त नहीं कर सकेंगी। वह सिसकती-रोती सोफे पर जा गिरी। मैं उसे छोड़कर घर चली गई। सोचा, वक्त हर दर्द का बेहतरीन मरहम है। मैं उसे एक हफ्ते बाद मिली तो वह उसी तरह उदास और दुखी थी। सप्ताह भर वह दफ्तर भी न जा सकी। मां-बाप को दुखी रखा। मैंने

उसे टटोलते हुए कहा—राबिया, वह सात समुंदर पार तुमसे इतनी दूर है, तुम पत्र ही न लिखो, कौन सा वह यहां तुम्हारे पीछे भागा आ रहा है, आएगा भी किस मुंह से ? राबिया ने बड़ी मुश्किल से सिरहाने से अपना सर उठाया, फिर उसकी आंखें कहर बरसाने लगीं। नाजिमा, मैं तुम्हें अपनी सहेली समझती थी, हमदर्द और शुभचिंतक। दोस्त जख्मों पर नमक नहीं छिड़का करते, अच्छा मुझे बताओ, तुम खुदा से प्यार करती हो? क्या तूने उसे देखा है, वह गोरा है, काला है, लंबा है, छोटा है, आंखें रखता है या नहीं, नाक-कान हैं या उनसे वंचित है...फिर तुम उसे क्यों चाहती हो ? इसलिए कि उसकी एक पवित्र कल्पना हमारे ध्यान में है और यह विचार कि वह ही हर हाल में हमारा संरक्षक है। वह हमें दुख भी देता है और सुख भी, फिर भी हर हाल में हम उसे चाहते हैं, उसको मानते हैं। पति की हैसियत पत्नी के लिए खुदा की तरह होती है। वह हमारा मजाजी खुदा होता है, वह हमें मुहब्बत भी देता है, मान व सम्मान भी। उसका मजबूत सहारा पाकर ही औरत उसकी छत्रछाया में अपनी सारी उम्र उसकी सेवा और आज्ञा-पालन में अपने को धन्य महसूस करती है।

आसिम भाई, उसका नजरिया जानकर मुझे अपना बड़प्पन और शादीशुदा जिंदगी का सारा अनुभव कम महसूस हुआ। इतनी अच्छी आधुनिक शिक्षा के बावजूद वह कितनी महान और गौरवपूर्ण नजरिए और मासूमियत की मालिक है। आपका पत्र न पाकर वह बहुत उदास हो गई थी। मुझे खतरे की घंटी का एहसास हुआ। मैं उसे पिक्चर दिखाने ले गई, मगर वहां भी वह उदास और चुप-चुप रही। अब वह घंटी बड़े जोर से मेरे कानों के पास बजती महसूस हो रही है। मुझे डर है, कहीं वह आत्महत्या न कर ले। आजकल अकसर नींद की गोलियों का सहारा लेती रहती है। दो बार उससे गोलियों की शीशी छीन कर मैं बाहर फेंक चुकी हूं, मगर बाजार में उपलब्ध गोलियों को तो मैं नहीं फेंकवा सकती।

आसिम भाई, हर पति एक पढ़ी-लिखी, खानदानी, सुंदर, सच्चरित्र पत्नी चाहता है, मगर लाखों सुंदर लड़कियों में से उसे एक ही तो चुननी होती है। आपने राबिया को खुद पसंद किया है। अब आप भी उसे पसंद आ गए हैं और वह आपको अपने मन-मंदिर का देवता समझने लगी है, तो उसकी यह सजा क्यों कि उसे मरने पर मजबूर किया जाए ?

उम्मीद है, आप मुझे अपनी बहन समझकर मायूस न करेंगे। मैं खुदा के हुजूर में झोली फैलाकर अपनी सहेली और आपकी महबूबा राबिया की जिंदगी की भीख मांगती हूं।

आपकी बहन

नाजिमा

पत्र पढ़ने के बाद सरन की आंखों में आंसू तैर आए। आसिम ने देखा तो फीकी सी मुस्कराहट उसके होठों पर बिखर गई, "तुम क्यों मेरे अरमानों की कब्र उखेड़ने यहां आ गए हो ?" सरन ने कहा।

"तुम्हारे अरमानों की कब्र भी हो सकती है !" आसिम ने सरन की तरफ व्यंग्य भरी नजरों से देखते हुए कहा।

"क्यों, मेरे पहलू में दिल नहीं है?"

"है भई, है। कौन काफिर कहता है कि तुम बेदिल हो ? अभी रात ही मेरी नजरों के सामने तो तमाशा हुआ है," आसिम बोला।

"तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो, उड़ाते रहो। देवदास ने अपना दुख किसे बताया था ?" सरन ने गंभीरता से कहा।

"शराब को। तुम भी अपने आपको शराबे हुस्न में डुबो रहे हो।"

"यही समझ लो। अभी कुछ ही दिन पहले मुझे हाइडिलबर्ग के एक डॉक्टर का पत्र आया था। उसने लिखा कि एक लड़की मारी ने उसे मेरा पता दिया है, वह उसके अधीन इलाज करा रही है। वह जिस-जिस के पास रही है वह उन सबको पत्र लिख रहा है कि वे अपने पास के अस्पतालों में जाकर खुद को चेक करा लें, क्योंकि मारी को एक खतरनाक बीमारी है। उसने लिखा कि मेरे पास का अस्पताल साइन स्ट्रासे पर है और उसने अस्पताल के डॉक्टर इंचार्ज को मेरा पता लिख दिया है। वे खुद भी शायद मुझसे संपर्क करेंगे," सरन ने विस्तार से बताया।

"वाह भई वाह, क्या ढंग हैं इन लोगों के बीमारियों के रोक-थाम के, शाबाश ! उस लौंडिया को जिसने अपने सारे प्रेमियों के नाम व पते भी बता दिए," आसिम ने प्रशंसा करते हुए कहा, "तुमने चेकअप कराया या फिर गला हुआ आलू लिए फिरते हो ?"

सरन उसी तरह गंभीर रहा। थोड़ी देर बाद बोला, "हां मजबूरन कराना पड़ा। मैं तो नहीं जा रहा था, मरना है तो कोई सी भी मौत आ जाए। मगर अस्पताल से बार-बार बुलावे आने लगे। अंतिम पत्र में तो धमकी भी आ गई कि पुलिस द्वारा बुलाया जाएगा।"

"नतीजा क्या रहा?"

"अबकी बाल-बाल बच गया, मगर बकरे की मां कब तक खैर मनाएगी ?"

"तुम्हें मरने का क्यों शौक है?" आसिम बोला।

"फिर तुम मेरी कहानी भी सुनना चाहोगे," सरन ने फीकी हंसी से कहा, "ना बाबा, चूहा लंडूरा ही भला।"

आसिम बोला, "अच्छा बाबा, रहने दो, मेरा पत्र तो पढ़ो।" सरन पत्र पढ़ने

लगा। यह आसिम का अपने भाई के नाम पत्र था।

"अच्छा भैया, एक बात बताओ, आप फिल्में क्यों देखते हैं ? मैं जानता हूं, भाभी तो फिल्मों की दीवानी हैं। हमारे यहां फिल्मों में इश्क व मुहब्बत के अलावा और होता ही क्या है ? फिर आप ऐसी फिल्में देखकर और भाभी को दिखाकर इश्क के प्रचार को बढ़ावा क्यों देते हैं ? आप कह सकते हैं, फिल्में हमारा जीवन-चित्रण नहीं करतीं। माना भैया कि वहां इश्क एक मुलम्मे के रूप में दिखाया जाता है, इसलिए आओ फिल्मों की बात छोड़ देते हैं। मगर ये सारे साहित्यकार व कवि जो प्रेम व सद्व्यवहार की रागनियां दिन-रात गाते और लिखते रहते हैं, अगर वह सब कुछ बकबास है तो आप उन्हें पढ़ते क्यों हैं, उनकी रचनाओं पर बड़े-बड़े इनाम क्यों दिए जाते हैं ? भैया, मैं कहना ये चाहता हूं कि यह कहां का न्याय है कि आप ही पहले जगह-जगह प्रेम की ज्योति जलाएं और फिर खुद ही मुहब्बत के मतवालों को मार डालें, उनकी कब्रें खुदवाएं और फिर उन पर फूल चढ़ाते फिरें ! मुझे राबिया से इश्क है। आप उसके पत्रों से यह अनुमान न लगा लें कि वही मेरी दीवानी हुई फिरती है। नहीं भैया, यह आग दोनों तरफ बराबर लगी हुई है, बल्कि सच तो यह है कि इसकी पहल मेरी तरफ से हुई है। अगर आपको भाभी साहिबा और अम्मी जान को मेरी जान प्यारी है तो भविष्य में किसी और लड़की का मेरे सामने नाम न लेना। मैं आपको किसी आत्महत्या वगैरह की धमकी नहीं दे रहा हूं, मगर कोई बात मेरी मर्जी के खिलाफ हुई या मुझे राबिया से दूर रखा गया तो मैं जिंदा तो रहूंगा, मगर वह जिंदगी एक लाश की तरह होगी। मुझे यकीन है, आप मेरे अपने हैं और अपने अपनों को जिंदा तो कब्र में नहीं डाला करते।

पत्र लंबा हो गया है, मगर दिल की बात मैं आप तक पहुंचा चुका हूं। जल्द ही मैं राबिया के बारे में सब कुछ आपको लिखूंगा।"

सरन ने कहा, "तुम तो कहते थे, तुम राबिया के शेर पर आशिक थे, और अब ?"

"यह अब भी ठीक बात है कि मैं सिर्फ राबिया को अच्छी शायरा मानता हूं। मेरा दिल कहीं और अटका हुआ है," आसिम बोला।

"फिर उसके पत्र भाई साहब और अम्मी जान को क्यों भेजते फिरते हो ?"

"सिर्फ उनके फंदे से बचने के लिए उन्हें इस्तेमाल कर रहा हूं," आसिम ने कहा।

"नतीजा क्या निकला?" सरन ने पत्र रखते हुए पूछा।

"वही जो प्रायः निकला करता है।"

"यानी तुम कत्ल कर दिए गए," सरन ने मुस्कराकर कहा।

"कम से कम तुम तो नमक न छिड़को," आसिम ने विरोध किया, "अल्लाह ने बचा ही लिया।"

"तुम्हारा नमक खा रहा हूं, फिर मैं क्यों ऐसा करने लगा ?" सरन ने आभार प्रकट किया।

"तुम नमक ही चाटते रहोगे या जीवन में कुछ मिठास भी आने दोगे ?" आसिम ने शिकायत की।

"बोलो, क्या करूं?"

"खाना खाओ और चलो स्टेशन, टिकट खरीदें। आज शाम हमें जरूर निकल जाना है," आसिम बोला।

7

खाना खाकर दोनों उठे। बुटीक को ताला लगाया और सेठ पतूडी मल को चाबी देकर स्टेशन पहुंच गए। रात की गाड़ी की टिकटें लेकर वे वापस केसर स्ट्रासे आ गए। केसर स्ट्रासे पर ही डॉक्टर मुलर की नई सेक्स शॉप खुली थी। काफी देर उसमें घूमने और सेक्स की चीजें, पत्रिकाएं, पुस्तकें, दवाइयां, कपड़े और चित्र आदि देखते रहे। कुछ देर बाद वे बाहर निकलकर जर्मन वेश्याओं के मुहल्ले में शीशे के बड़े-बड़े शो केसों में नए-नए पोजों और मुद्राओं में लगी नंगी तस्वीरें देखते फिरे। उफ्, कितने उत्तेजक पोज थे ! गर्मी चढ़ी तो वे एक स्ट्रिपटीज क्लब के दरवाजे पर जा रुके। दरवाजे पर खड़े लंबे-चौड़े जर्मन छोकरे ने उन्हें अंदर हो रहे नंगे तमाशों के बारे में जब बताया तो वह खिंचे-खिंचे अंदर पहुंच गए। रेट कुछ विशेष ज्यादा नहीं था। बस एक बीयर, कोला या जूस का गिलास खरीदो और अंदर बैठ जाओ। वहां इतना जरूर था कि बाहर यही चीजें एक या डेढ़ मार्क में मिल जाती थीं, अंदर उनका रेट आठ या दस मार्क था। अंदर मेजें थीं, कुर्सियां थी और अर्धनग्न लड़कियां सेवा की प्रतीक्षा में। सामने स्टेज पर ड्रामे हो रहे थे। नंगी लड़कियां आतीं और अविश्वसनीय व अवर्णनीय हरकतें करतीं। पीछे उनके पर्दा था जिस पर साथ-साथ नीली फिल्म चलती रहती।

जब उन्हें एक गिलास बीयर पर बैठे लगभग पौना घंटा हो गया तो उन्होंने एक-एक गिलास और मंगवा लिया। वातावरण का प्रभाव था या जाने साकी ने शराब में कुछ मिला दिया था कि आसिम को लगा जैसे उसके शरीर के स्प्रिंग कसते जा रहे हैं और फिर पूरी शक्ति से खुल जाते हैं। आस-पास मेजों पर कुछ और

लोग भी बैठे थे। उनमें अधिकतर बूढ़े लोग थे जो कुछ करने-कराने की सीमाओं को पार कर चुके थे। मगर उनके पास पैसा था, ठरक थी और खर्च करने के लिए उम्र का छोटा समय था। कुछ बूढ़ी मेमें थीं जिनके शरीर पर बुर्दार खालों के कीमती कोट थे। एक-एक कोट दस-पंद्रह हजार से कम क्या होगा ? यही कोट बड़ी-बड़ी दुकानों के शो केसों में बड़ी ही सुंदर और जवान लड़कियों की मूर्तियों को पहनाए गए थे, मगर बाहर की दुनिया में वही कीमती कोट मात्र बूढ़ी औरतों के शरीर पर देखे जा सकते थे। इन यूरोपीय देशों में अवस्था की एक विशेष सीमा तक काम करने और सारी जिम्मेदारियों से अवकाश पाने के बाद इन औरतों और मर्दों के पास फुर्सत ही फुर्सत और पैसा ही पैसा था। टूरिस्ट बसें जो यूरोप के एक से दूसरे देश सैर कराने ले जाती हैं और जिनमें किराए के साथ गाइड और होटल भी उपलब्ध किए जाते हैं, इन्हीं बूढ़े लोगों से भरी होती हैं। बूढ़े मर्दों में कई अप्राकृतिक यौन संबंधों के रसिया थे और काफी पैसे भी इस काम के लिए पल्ले से खर्च करते थे। बूढ़ी औरतों के इश्क की कड़वी गोली अगर कोई नौजवान बर्दाश्त कर लेता था तो जीवन की सारी खुशियां, ऐयाशियां और दौलत उसकी सेविका बन जाया करती थीं। मगर यह काम बड़ा ही कठिन और हिम्मत का था। पूरबी औरत बूढ़ी होकर भी अपने पहनावे के कारण लंबी उम्र तक एक आकर्षण अपने अंदर रखती है, मगर पश्चिम की औरत अपने नंगे आवरण के कारण अपनी जवानी के दिनों में बहुत ही आकर्षक लगती है, किंतु पतझड़ के समय बेहद कुरूप और विकृत बन जाती है।

कहीं इक्का-दुक्का नौजवान चेहरे भी नजर आ जाते थे। शायद आसिम और सरन जैसे जवानी की सीमाओं से बाहर निकलते हुए कुछ लोग भी, जिन्हें आवश्यकतानुसार औरत उपलब्ध नहीं हो सकती थी और अंदर की आग मजबूरन उन्हें ऐसे क्लबों में घसीट लाती थी। अचानक आसिम ने एक भरपूर अंगड़ाई ली। दूसरे ही क्षण दो सुंदर लड़कियां उन दोनों के पास आ खड़ी हुईं। आसिम बहुत हैरान हुआ। क्या अंगड़ाई वहां ऐसा बटन दबा देती थी जो खटाक से लड़कियां सामने पेश कर देता था, प्लेट में रखकर मिर्च-मसाला लगी हुई। वे आसिम से जर्मन भाषा में कुछ कह रही थीं और आसिम मुंह खोले कभी उनकी तरफ और कभी सरन की तरफ सहायता मांगने वाली नजरों से देख रहा था। सरन ने हंसते हुए आसिम को बताया कि 'जब उसने अंगड़ाई ली थी तो पीछे खड़ी लड़की से शायद उसके हाथ छू गए। अर्ध-अंधेरे में वह समझी होगी कि उसे बुलाया जा रहा है। हम दोनों को इकट्ठे आए, बातें करते देखकर उसने संकेत से दूसरी लड़की को भी बुलाकर साथ ले दिया। हम दो, वे दो। अब वे पूछ रही हैं, अंदर चलना है?'

''यार, मेरी किसी तरह जान बचाओ,'' आसिम ने विनती की।

''मुश्किल है, अब जान बचा पाना बहुत मुश्किल है'' सरन ने चहककर

कहा, "यार, मेरी वाली लौंडिया, वही जो मेरी तरफ खड़ी है, है भी बहुत नमकीन। जालिम, क्या बांकपन है, क्या सरापा है, क्या झरनों से बाल हैं !" वह फिर चहककर गुनगुनाया :

सागर को मेरे हाथ से देना कि चला मैं।

और उसने आगे बढ़कर लड़की की कमर में बांह डाल दी।

'उधर,' लड़की ने हाथ से संकेत किया। सरन उठ खड़ा हुआ। दूसरी लड़की ने खुद ही आसिम को थाम लिया। एक केबिन में सरन अपनी दिलरुबा के साथ और आसिम अपनी अनचाही के साथ आमने-सामने बैठ गए। सरन काफी देर तक उसके बालों से खेलता रहा। फिर उसके गालों पर चुबंन देता-देता उसके होंठों को चूसने लगा। लड़की उसके होठों में कभी होठ और कभी-कभी जीभ पकड़ाती गई। कुछ देर बाद सरन के अंदर भट्ठी सी भड़क उठी तो उसके हाथ और आगे बढ़ने लगे। लड़की ने उसे रोक कर पूछा, 'ड्रिंक?'

"हां, कोई अच्छी सी व्हिस्की," सरन ने आसिम की तरफ देखा। वह भी अंगारे खा रहा था।

"और मेरे लिए—समपिंग स्पेशल," लड़की ने कहा।

"बोलो, बोलो," सरन ने पूछा।

"यह एक खास व्हिस्की है, चाहो तो तुम भी ट्राई कर सकते हो," लड़की बोली।

"ओ-के, चलेगी," सरन बोला।

लड़की ने दीवार पर लगे बटन को दबाया । कुछ देर बाद एक लड़की काली ड्रेस पर सफेद मिनी पाकेट एप्रन बांधे हाथ में काली पेंसिल लिए सामने आ खड़ी हुई।

"कोन्याक और दो व्हिस्की, समपिंग स्पेशल!" लड़की ने आर्डर दोहराया।

वह लड़की जाने लगी तो आसिम ने उसे रोक लिया, "मुझे तो तुम भा गई हो।"

"वस (क्या) ?" लड़की ने कुछ न समझते हुए कहा।

"कुछ नहीं, बीयर मिल सकेगी?" उसने ऐसे ही अंग्रेजी में पूछ लिया।

उसके पहलू में बैठी लड़की ने जवाब दिया, "बीयर सिर्फ तुम्हारे लिए आ सकती है। मुझे तो व्हिस्की ही पीनी होगी।"

"पीनी होगी, क्या मतलब? कोई मजबूरी है।" आसिम बोला।

बड़े ठंडे लहजे में लड़की ने बताया, "हां, मजबूरी है। शेफ का आर्डर है, कोई लड़की बीयर नहीं ले सकती।"

फिर उसने पेट नंगा करके दिखाते हुए और हाथ पेट से आगे करते हुए कहा, "बीयर पी-पी कर यह यहां तक आ जाएगा।"

"अब तुम चुप रहो, तेल देखो, तेल की धार देखो," सरन ने कहा, "हिंदू बनिया तो खतरनाक होता ही है, मगर मुसलमान बनिया बन जाए तो बहुत ही जहरीला हो जाता है।"

दोनों हंस पड़े। सरन ने लड़की की तरफ देखा और बोला, "उसका पेट देखो, कैसे तबले की तनियों की तरह कसा हुआ है। तुम्हारे जैसे तमाशबीन कुछ और आ गए तो यह बीयर पी-पी कर गर्भवती लगने लगेगी।"

वे काफी देर उन लड़कियों से खेलने और चार-चार पैग पीने के बाद जरा देर को रुके तो हल्का-हल्का नशा उनके सिरों की वादियों में किसी बकरी के आजाद बच्चे की तरह कुलांचें भरता फिरता था। कुछ देर और खेलने के बाद सरन ने कहा, "बिल।"

लड़की ने फिर बटन दबाया, वही सेविका उपस्थित हुई, "बिल।"

बिल बनाकर उसने उनके सामने मेज पर रख दिया। एक सौ पचासी मार्क थे। सरन ने सौ-सौ के दो नोट बढ़ाकर कहा, "ओ के।"

लड़की चली गई तो सरन वाली बोली, "चलें अंदर?"

सरन ने आसिम की तरफ प्रश्न भरी दृष्टि से देखा। वह बोला, "बाहर चलो।"

"क्यों?"

"अरे चलो ना, बहुत हो गया," आसिम ने कठोर शब्दों में कहा।

वे उठ खड़े हुए, बाहर आकर आसिम बोला, "क्यों, बहुत कमा लिया है?"

"क्या हुआ?"

"लुट क्यों रहे थे, खुशी-खुशी !" आसिम ने कहा।

"लुट रहा था या लूट रहा था !" सरन ने नशीली आवाज में कहा।

"मरोगे साले तुम, मगर मीठी मौत की खोज में हो," आसिम बोला।

"मेरे पास जो कुछ था और जिसका था बड़ी ईमानदारी से उसके लिए संभाल कर रखे रहा। अब वह न संभाले तो दूसरे लूटेंगे ही। कोई कहां तक रखवाली करे ?" सरन की आवाज में उदासी झलकने लगी।

वे वेश्याओं के इलाके से बाहर निकल आए। बाईं तरफ तुर्कियों के छोटे-छोटे रेस्तरां थे जिनमें बड़े-बड़े शोर वाले गानों के रिकार्ड लगे हुए थे और मछली बाजार जैसा लग रहा था। शाम पांच बजते ही आस-पास सारे रेस्तरां बीयर पीने वालों और संगीत के मतवालों से भर जाते थे। वे इधर-उधर विंडो शापिंग करते फिरे। घड़ियां, टेपरिकार्डर, ट्रांजिस्टर, रेडियो, कैमरे और दुनिया भर की चीजें शीशों के पीछे पड़ी थीं। हर चीज पर कीमत लिखी हुई थी। मोलभाव और सौदेबाजी का रगड़ा नहीं था। जो बाजारों में घूमते हैं, शो केशों में वस्तुओं की तुलना करते रहते हैं, उनके लिए अच्छी चीज सस्ते दामों पा लेना कोई मुश्किल काम नहीं। सरन और आसिम

को तो वक्त गुजारना था। गाड़ी रात साढ़े दस बजे जानी थी तब तक वे कहां जाएं ?

वे दाएं हाथ मुड़े, चलते गए। फिर काफी दूर जाकर फिर दाएं हाथ मुड़ गए, बिल्कुल अनिश्चित से। सामने केसर स्ट्रासे का ट्रैफिक तीव्रगति नदी की तरह बह रहा था। उसके आवेश का हिस्सा बनने से बचने के लिए वह मुड़ना ही चाहते थे कि उन्हें सामने वाली बिल्डिंग पर लंबोतरा-सा, ऊपर से नीचे की तरफ लिखा हुआ निऑन लाइट बोर्ड नजर आया–'सेक्सी ब्वाय'।

उनके कदम उधर बढ़ गए। पास पहुंचने पर उन्हें पता चला कि वह भी रेड लाइट एरिया था। सामने वेश्याएं एक-एक चड्ढी और छोटी सी अंगिया पहने लाल रोशनियों में नहाई खड़ी थीं। वे लंबी सी गली में अभी कुछ ही कदम गए होंगे कि उन्हें एक नौजवान जर्मन लड़के ने रास्ते में रोक लिया और जोर से बोला, "मेरी...गां मारो।"

वे उसकी उपेक्षा करके आगे बढ़ गए, मगर वह फिर दौड़कर उनके आगे गया और कमर झुकाकर व पीठ उनकी तरफ करके फिर जोर से बोला, "मेरी...गां मारो।"

वे एक जर्मन लड़के के पंजाबी भाषा में बात करने पर हैरान हो रहे थे कि वह सीधा होकर और हाथ जोड़कर बोला, "सत् श्री अकाल।"

फिर कहा, "सत श्री अकाल, वेरी गुड–दूसरी बात, निक्स गुड।"

फिर अंग्रेजी में कहने लगा, "इधर दो दोस्त आते थे, उनमें एक सरदार होता था और एक दूसरा। वे मुझे यही सिखाते थे, यू डोंट माइंड। उधर जाओ, ऊपर बहुत अच्छी-अच्छी छोकरियां हैं।"

वे आगे बढ़ गए। सफेद चूना पुती दीवारों पर स्केच बने हुए थे, काले रंग से और उनमें वही कुछ हो रहा था जो कुछ यहां होता था। दीवारों से लगी लड़कियां खड़ी थीं। उनकी आंखों या हाथों में कोई संकेत या इशारा नहीं था। सीधे-सपाट चेहरे और तराशे हुए शरीर, समझो तो पूरी तरह पाप के लिए आमंत्रण, न समझो तो मात्र मिट्टी की मूरत। बात करो तो उनके होठों से टेप की हुई आवाज बजने लगती, "फिफ्टी मार्क, फिफ्टीन मिनट।"

बात समाप्त करके वे किसी शो केस की गुड़िया की तरह सीधी या बल खाकर खड़ी हो जातीं मगर आंखें यूं पटपटाती रहतीं जैसे खड़ी गुड़िया की आंखें खुली या झपकती रहती हैं, किंतु लेटते ही उसके पपोटे बंद हो जाते हैं।

वे कुछ देर बारहदरी प्रकार के सेक्सी ब्वाय हाउस में इधर-उधर दीवारों और स्तंभों के साथ खड़ी लड़कियों को घूरते फिरे। उनमें से कई उन्हें अच्छी भी लगीं, मगर उनके मशीनी अंदाज से उकताकर वे अंदर ही बनी एक सेक्स शॉप के सामने जा खड़े हुए। देखने को तो वहां बहुत कुछ था–पत्रिकाएं, नग्न चित्र, कई

प्रकार की ट्यूबें, लंबा और तेज करने की दवाइयां, सेक्स जगाने वाली ड्रेसेज, रबड़ की यह, रबड़ की वह और रबड़ की औरत हवा भरो तो औरत तैयार। हवा निकालो और तह करके जेब में रख लो, मगर सबसे उपर जो आकर्षक वस्तु थी वह था एक बड़ा पोस्टर जिसमें एक लड़की छातियों को हाथों से छिपाए मुंह दूसरी तरफ किए खड़ी थी, नीचे उसने एक चड्ढी सी पहन रखी थी जिसको एक बालदार झबरे कुत्ते ने दांतों से पकड़ कर पीछे की तरफ खींच रखा था, जिससे लड़की का पिछला भाग नग्न होकर रह गया था।

लड़की का शरीर इतना चिकना मुलायम और सुडौल था जैसे किसी ने मक्खन के लोंदे को छुरी से काट-काट कर लड़की का रूप दिया हो। कागज की यह लड़की बड़ी उत्तेजक लगती थी। दोनों देर तक उसे देखते रहे। पास ही टायर्स टेबलेट ब्लाक इंस्ट्रूमेंट की तरह की मशीन लगी हुई थी, वे उधर बढ़ गए। सरन ने कभी उस इंस्ट्रूमेंट पर दोनों बटन दबा-दबाकर लाइन क्लियर लिए और दिए थे। वहां साइड में टोकन डालना पड़ता था। यहां भी मामला कुछ इसी तरह का था। सरन ने मशीन में एक मार्क का सिक्का डाला और आंख छेद पर लगाकर खड़ा हो गया। सामने नीली फिल्म चलने लगी। आसिम ने दूसरी फिल्म चलाई और फिल्म देखने लगा।

वहां से निकलने के बाद वे पैदल ही केसर स्ट्रासे पर शहर की तरफ चलते गए। चलते-चलते वे काफहाले के पास पहुंचे तो बूटों की दुकान में बड़े-बड़े शो केसों में भांति-भांति के बूट देखने लगे। फिर अचानक उनके कदम पिछली सड़क की तरफ मुड़ गए। दूसरी ही गली के किनारे पर एक छोटा सा क्लब था जिसमें आजाद शाम वाले लोग कैरम बोर्ड खेलते थे या बोर्ड ग्राउंड पर खेलों की यूनिफार्म पहने पुतलों को हाकी या फुटबाल खिला रहे थे। पास ही मशीनें लगी थीं, जिनमें सिक्का डालकर खेला जा सकता था। एक में चार बंदूकें, जिनके दस्ते व ट्रिगर बाहर को निकले हुए थे, फिट थीं। सिक्का डालते ही अंदर जंगल, पेड़-पौधे और झाड़-झंखाड़ खेलने वाले की तरफ इस तरह दौड़ने लगते थे जैसे वह बंदूक हाथ में लिए जीप पर सवार जंगल से गुजर रहा हो और इधर-उधर पशुपक्षी या दरिंदे इस तरह गुजरते जा रहे हैं जैसे जंगलों में जानवर बिखरे हुए होते हैं। बस बंदूक निशाने पर लगाओ, निशाना लग गया तो शेर, चीता, रीछ, भालू या कोई जानवर या पक्षी तड़पता हुआ आपके कदमों में आ गिरेगा जिसका आपने निशाना लिया होगा। अगर कोई जानवर आप पर हमला करने में कामयाब हो गया तो आप पटकनियां खाते हुए जीप से नीचे आ रहेंगे और सारा जंगल आपकी नजरों में घूम जाएगा।

दूसरी मशीन में सिक्का डालते ही आपकी जीप, कार या मोटर-साइकिल स्टार्ट हो जाएगी और आपके सामने एक लंबी सड़क आपके पहियों की तरफ दौड़ने लगेगी। बाहर निकले स्टेयरिंग को थामकर आपको उसे सड़क के हर मोड़

पर मुड़ना है, हर ट्रैफिक सिग्नल ध्यान से पार करना है। इधर-उधर से आते ट्रैफिक को रास्ता देना है। खुद को बचाकर उनमें से निकालकर ले जाना है। आपकी जरा सी लापरवाही भयंकर दुर्घटना कर सकती है। बड़ा रोचक खेल था। सरन यही खेलता रहा। कुछ देर बाद जब मशीन की आवाज बदलती और उसके बंद हो जाने का संकेत मिलता तो सरन एक सिक्का और डाल देता। वह देर तक मोटर चलाता रहा, दो एक्सिडेंट भी किए।

आसिम ने मशीन में सिक्के डाले। हैंडिल घुमाता और गुलाब के फूल, नारंगी और चौकोर खानों वाले स्केप का इंतजार करता रहा। नीचे नक्शा बना हुआ था। मशीन का पहिया बड़ी तेजी से घूमता हुआ कई चक्कर खाता और विंडो पर गुलाब, नारंगी या स्केप को लाकर रोक देता। नारंगी-नारंगी, स्केप-स्केप, फूल-फूल। स्केप फूल, स्केप—तीन खाने थे जिसमें तीन विभिन्न चीजों के प्रतिबिंब आकर रुकते थे। नक्शा बताता था कि तीनों अगर नारंगी आ जाएं तो पचास मार्क ईनाम होगा। तीनों स्केप तो एक सौ पचास मार्क, इसी तरह मिले-जुले दूसरे। कभी वह दो यह एक, यह एक वह एक। यह एक तो छोटे-छोटे ईनाम, कभी खाली। आसिम ने पंद्रह और दस मार्क के दो ईनाम जीते, मगर तब तक वह कोई पचास मार्क हार चुका था। शाम आठ बजे वे उठे और अखबार 'फ्रैंकफर्टर रोंड्शा' की कैंटीन में जा बैठे। वे देर तक बीयर पीते रहे, फिर खाना लेकर बैठ गए।

रात गाड़ी में उन्हें दो आरामदायक बर्थ मिल गए। देर तक गप-शप करने के बाद न जाने कब उन्हें नींद आ गई। सुबह जब आसिम की नींद टूटी तो पांच बज रहे थे। उसने धीरे से कहा, "सरन, जाग रहे हो?"

"हूं...ऊं ऊं !" सरन ने हुंकारा भरा और फिर मुंह दूसरी तरफ कर लिया।

बाहर हल्के-हल्के अंधेरे में सुबह का उजाला धीरे-धीरे घुलता जा रहा था। पेड़ जो रात को काले-काले देव नजर आते रहे थे अब उनके पहनावे का रंग बदलने लगा था। हां, उनकी गाड़ी की विपरीत दिशा के दौड़ने की गति में कोई कमी नहीं आई थी। कभी-कभी कोई स्टेशन या गांव खाली डिब्बों की तरह खड़-खड़ करता शड़ाप से पीछे निकल जाता था। आसिम ने सिगरेट सुलगाई और साइड बोर्ड पर लगी चमकती हुई ऐशट्रे खोल ली। छोटे-छोटे कश लगाता और सरन के जागने का इंतजार करता वह कई साल पीछे लौट गया।

उनका घर लखनऊ में था। वालिद साहब की जायदाद, मकान और थोड़ी सी जमीन थी, बहुत अच्छा गुजारा होता था। तब वह बारह-तेरह साल का रहा होगा, जब वह गर्मियों की छुट्टियों में अपने मामू जान के यहां दिल्ली गया था। न जाने क्यों तब उसे बड़े-बड़े शहर अच्छे नहीं लगते थे। छोटे-छोटे कस्बों और गांवों का एक अलग रूप होता है। हर गली, हर मोड़, हर मकान मिलता-जुलता और

कदम-कदम पहचाना हुआ होता, मगर शहरों का हाल दूसरा होता है। बड़े-बड़े शहरों में बड़ी-बड़ी इमारतों के नीचे छोटी-छोटी झोंपड़ियां होती हैं, जिनमें सिर झुका कर अंदर घुसना पड़ता है। गंदगी है तो इतनी कि निकलना मुश्किल हो जाता है, सफाई है तो इतनी ज्यादा कि सारा वातावरण चमकता महसूस होता है। दिल्ली के कनाट प्लेस और कश्मीरी गेट के बाहर के क्षेत्र को वह देखता तो उसके दिल की कली-कली खिल उठती थी, मगर जैसे ही वह मामू जान के घर चर्खेवालान में आता तो उसके दिमाग का चर्खा उल्टा चलना शुरू हो जाता, जहां हर तरफ दुर्गंध और गंदगी के ढेर उसका स्वागत करते। संबंधियों का व्यवहार भी उसे बेहद स्वार्थपूर्ण महसूस होता। दो महीने की छुट्टियों के मात्र सात दिन बड़ी मुश्किल से वह दिल्ली में बिता पता, फिर वह मौसी अम्मा के यहां रेवाड़ी भाग जाता। उसके मौसा रेवाड़ी जंक्शन पर चीफ बुकिंग क्लर्क थे। वह अपनी मौसेरी बहन, नईमा जो उससे दो-ढाई साल छोटी थी, के साथ दिन भर खेलता रहता या बड़े स्टाफ के बड़े-बड़े रेलवे बंगलों से आगे निकलकर वे दोनों खेतों में पहुंच जाते। हर तरफ जब रेत उड़ती तो उसे बहुत अच्छा लगता जैसे वह रेत के कण न हों, रंग-बिरंगे हीरे-मोतियों को कूट-पीटकर हवाओं में उड़ाया जा रहा हो। जब गर्म लू के थपेड़े आक के पौधों की आमियां चीरकर और उनसे रेशम के लच्छों जैसी माइयां निकालकर वातावरण में इधर-उधर बिखेर देते तो वे हंसते हुए उनके पीछे दौड़ते फिरते। माइयों के रेशमी लच्छे वे इकट्ठे करते और दिल्ली जाने वाली लाइन के साथ-साथ चलते शहर की तरफ पास से गुजरती सड़क से निकलकर एक पुरानी समाधि की छत पर पहुंच जाते, जहां सिमेंट की छतरियां ठंडी छांव और साफ-सुथरी प्लेट सी उनका स्वागत करती। भाइयों के लच्छों की रस्सियां बनाते और नीचे बहते लू के झक्कड़ों की हल्की-हल्की गर्मी और सर्दी के मिले-जुले एहसास के साथ हवा की मस्त लहरों में पास-पास लेट जाते।

कभी-कभी रेलवे स्टाफ की नजरें बचाकर वे हिसार और भटिंडा की तरफ जाने वाली ट्रेन के किसी डिब्बे में छिपकर बैठ जाते और पहले स्टेशन जाटूसाना उतर जाते। जाटूसाना स्टेशन पर उन्हीं की उम्र के बच्चे, लड़के-लड़कियां बेर या पीलू बेचते होते। वे उनसे बेरों या पीलू के दोने लेकर दो घंटे बाद हिसार से आने वाली गाड़ी की प्रतीक्षा करते, आसपास पेड़ों के नीचे बैठे गांव के अहीरों और जाटों के पास बैठकर खाते रहते और गाड़ी की राह देखते रहते। आस-पास के गांव से आने वाले लोग प्रायः ऊंटों पर आते थे। उनका अगर कोई बच्चा रोने लगता या जिद करता तो ऊंट वाला उन्हें ऊंट पर बिठाकर दूर का चक्कर लगवा लाता तो कई बार उन्हें भी मुफ्त सवारी का प्रस्ताव दिया जाता। इस तरह वे भी उनके साथ दूर-दूर ऊंट पर इधर-उधर घूम आते। गांव के किसानों के पास हरे-हरे चनों की घाड़ें होतीं जिन्हें वे लोग बड़ी उदारता से इनके हाथों में पकड़ा देते। हरे-हरे नर्म

चनों के दानों में इतना स्वाद होता कि बस बैठे खाते रहो और दिल न भरे। कभी-कभी चनों की सूखी घाड़ों को वह लोग सूखे सरकंडों और झाड़ियों में आग लगाकर भूनते, फिर आग को चौड़ा-चौड़ा बिखेर कर धीरे-धीरे बुझने के लिए छोड़ देते। जब आग बुझ जाती या मद्धिम पड़ जाती तो वे लोग उसमें से भुने तराड़े के दाने चुनते जाते और छील-छील कर खाते जाते। अधभुने दाने भी इतने स्वादिष्ट होते कि खाते-खाते दिल न भरता। तराड़ा लगाने के बाद वे लोग एक मौन निमंत्रण भरी नजरों से आस-पास बैठे लोगों की तरफ यूं देखते जैसे कहते हों—'आओ भई इधर आओ, आगे बढ़ो, यह हमारा तुच्छ उपहार सबके लिए है।' उसे वह उपहार बहुत ही सुंदर और स्वादिष्ट लगता। कुछ लोग तराड़े से दाने चुन-चुन कर पोटलियों में बांधते जाते, शहर-शहर रहने वाले अपने दोस्तों और संबंधियों के लिए। मगर इस पर भी कोई बिन बुलाए आकर कुछ दानों का सहभागी बन जाता तो उनके चेहरों पर तनिक भी मैल नजर न आता। तराड़ा खाते हुए बड़े लोगों के भी बच्चों की तरह हाथ-मुंह काले हो जाते तो वे एक दूसरे की तरफ देखकर मोनालिजाई मुस्कान मुस्करा देते जो बड़ी भरपूर होकर भी क्षण भर को नजर आती थी और आंखों को भली लगती थी। सद्‌व्यवहार और ईमानदार मुस्कराहट।

नईमा और उसके पास जब कभी-कभी पैसे न होते तो वे स्टेशन के साथ ही रेवाड़ी की तरफ जाने वाली लाइन के पास फैले जालों के जंगलों में उतर जाते, जहां गांव के बच्चे जालों पर बंदरों की तरह चढ़ते, इधर-उधर उचकते, पीलू चुनते, खेलते और गाते फिरते :

'पीलू पकियां, चुनन जाटियां।'

गांव के कुछ बच्चे अपना जेब-खर्च बनाने के लिए सरकंडों की बनाई छोटी-बड़ी कानों की लंबोतरी सी टोकरियां छोटी-छोटी सी लीरों से हाथों में लटकाए जालों के पेड़ों पर पतली-पतली शाखाओं पर फैल जाते और पीलू भरते जाते और गाड़ी आने पर प्लेटफार्म की दूसरी तरफ गाड़ी के पीछे यात्रियों को 'ठंडी मीठी पीलू ले लो' की आवाजें लगाकर बेच आते।

शुरू-शुरू में उसे और नईमा को देखकर वे बच्चे घबराए थे क्योंकि इनके शहरी और उनके देहाती पहनावे में स्पष्ट अंतर था, मगर धीरे-धीरे वे इनके दोस्त बन गए। जब ये पीलुओं की तलाश में जालों पर चढ़ने की कोशिश करते और न चढ़ पाते तो वह खुद पीलुओं से भरी कोई टहनी तोड़कर उन्हें ला देते और किसी ऐसे पीलू के पेड़ पर बिठा देते जो जमीन के पास झुकता हुआ ऊपर उठता था। ऐसे पेड़ जिन्हें वे बच्चे जाल कहते थे, उस जंगल में कई थे, जिन पर आराम से बैठा, खाया-पिया और सोया जा सकता था। धीरे-धीरे उन्हें भी जालों पर चढ़ना आ गया और वे खुद पीलू तोड़ने लगे। नईमा पहले-पहल जालों पर चढ़ने से डरती

थी, मगर फिर वह भी पेड़ों पर चढ़ने में माहिर हो गई। कई जाल तो इस तरह मोड़ खाकर ऊपर उठते थे कि उनकी डाल को मोड़ने से ऊंट का कूबड़ बन जाता था। बच्चे वहां बैठकर टांगों को झुलाते तो डाल ऐसे हिचकोले खाती जैसे ऊंट चल रहा हो। कुछ डालों पर बैठकर घोड़े की सवारी का आनंद आता था।

एक बार वह और नईमा जालों की मीठी-मीठी छांव और छन-छन कर बहती मदमस्त हवा में सो गए। बाहर दूर फैले खेतों में लू के झक्कड़ तपते हुए शीशे की सी चादरें इधर-उधर उड़ाते फिरते थे। मगर वही झक्कड़ जब जालों के झुंड में घुसते तो छन-छनाकर अपनी सारी गर्मी खो बैठते थे और ठंडी-मीठी हवाएं बन जाते थे जैसे तपती गर्म हवाओं की फौजों का प्रवेश जालों के झुंडों के किले में संभव न हो। उस दिन गांव के बच्चे अगर उन्हें नींद से न जगाते तो निश्चित ही वे रेवाड़ी जाने वाली ट्रेन में लौटने से रह जाते और घर पर उनकी खूब पिटाई होती। दोपहर को मौसी और मौसा अंदर सो जाते थे और ये दोनों बाहर खिसक जाते और घूमते-फिरते रहते थे। जब तक मौसी और मौसा जागते वे घर पहुंच कर पढ़ने बैठ जाते थे और उन्हें उनकी अनुपस्थिति का पता तक न चलता था, बल्कि वे लोग समझते कि दोनों बच्चे बड़े समझदार और आज्ञाकारी हैं।

फिर वह तीन साल तक रेवाड़ी न जा सका। आठवीं, नवीं और दसवीं में कहीं उसे बाहर निकलने न दिया गया। उसे कठिन परिश्रम करने और अच्छे अंकों से मैट्रिक करने का निर्देश था। गर्मियों की छुट्टियों में उस पर विशेष रूप से पढ़ने और परिश्रम करवाने के लिए कड़ी निगाह रखी जाती थी। सन् 1947 के मार्च में परीक्षा से निवृत्त होकर जब वह रेवाड़ी पहुंचा तो नईमा अब पहले की तरह बच्ची नहीं रही थी उसके साथ खेलने वाली, पेड़ों पर चढ़ने वाली बच्ची नहीं, बल्कि, भरपूर चौदह वर्षीय लड़की बन चुकी थी, कली जो खिलने की प्रतीक्षा में थी। कोई हवा का नशीला मस्त झोंका आए और उसके कानों में खिल जाने और दुनिया को नई दृष्टि से देखने का संदेश दे तो वह फूल बन जाए। आसिम को देखते ही उसे लगा जैसे उसकी आंखों में कोई बात है जो अपने आपको कह रही है। खुद आसिम को भी अपने आस-पास की दुनिया मुस्कराती महसूस हुई, फिर वही दुनिया उसके कानों में खिलखिलाने लगी थी। उसे लगा था जैसे हवाएं, लू के झक्कड़, आक की माइयां उसे छेड़ती फिरती हैं जैसे सारा वातावरण उसे गुदगुदा रहा है। जैसे जमाने का सर्द व गर्म सब अच्छा लगता है। सारी चीजों में एक मदमस्ती है। गाड़ियों की आवाजें, इंजनों की शंटिंग और सीटियां, सिग्नलों की लाल और हरी झपकती आंखें, जैसे उड़ती हुई रेत में असीमित सौंदर्य आ गया है जैसे वह सोने के कण बन गई है। पहले भी ये सब चीजें उसे अच्छी लगती थीं, मगर अब उनकी अच्छाई का स्वाद कुछ भिन्न हो गया है। वह तुलना तो नहीं कर सकता, मगर अब चीजों पर किसी और तरह का निखार है, जैसे पहले

सब कुछ कोंपलों की तरह था, अब खिला-खिला, निखरा, सुथरा है। वह सुंदर था, यह अति सुंदर है।

तीन साल पहले नईमा उसके साथ घूमती-फिरती थी। जहां वह जाता, वह भी जाती थी, बल्कि तब उसकी मार्गदर्शक तो वही होती थी, मगर अब वह अधिकतर अंदर रहने लगी थी, उसके सामने कम ही आती थी। मां के साथ हर समय काम में जुटी रहती थी। हां, कभी-कभी जब वह मां की नजरें बचाकर उसकी तरफ देखती तो उसकी नजरों में हजारों संदेश होते थे, उसकी निगाहों में हजारों बातें होती थीं। तब उसके होठों के बजाए उसकी आंखें मुस्कराना सीख गई थीं। वह जब खाना आदि उसे पकड़ाती उसके हाथ आसिम के हाथों से छूते ही कांप-कांप जाते थे जैसे आसिम के हाथ बिजली के नंगे तार हो गए थे।

सुबह दस बजे के लगभग उसका मौसा उसे अपने साथ बुकिंग आफिस ले जाता। अगर कोई बुकिंग क्लर्क अनुपस्थित होता तो वह खिड़की संभालकर ट्यूब से टिकटें बांटने लगता। रेवाड़ी-फाजिलका रेलवे के सब स्टेशन उसे जबानी याद हो गए थे। जाटूसाना, कोसली, झारली, डालमिया दादरी, मनहैरो, भिवानी, भिवानी खेड़ा, हांसी, हिसार, फिर कुछ छोटे-छोटे स्टेशन और फिर सिरसा। फिर कुछ स्टेशन और फिर भटिंडा। टिकटों के रेट भी उसे याद हो गए थे। आर. पी. सी. रेवाड़ी-फुलेरा कार्ड के स्टेशन भी, फुलेरा और आगे अजमेर तक उसे याद थे। रेवाड़ी-बांदीकुई और रेवाड़ी-दिल्ली सेक्शन के भी सारे स्टेशन। मगर उसे आर.एफ. आर. की बुकिंग करने में विशेष आनंद आता था। यही लाइन तो थी जो नईमा और उसके बचपन के साथ की गवाह थी, तो क्या उसके दिल में मुहब्बत की कोंपल फूट रही थी, मगर तब वे नादान थे। बीज सदैव नादान होते हैं। धरती के प्यार की कोख में पड़े वह बीज बन गए थे जिन्हें अपने भरपूर यौवन का पता चल गया था। उनकी नजरें, उनके ढंग, उनके कदम उनके रख-रखाव और उनकी निगाहें, उनके दिलों में मची खलबली की चुगली खाने लगी थी। शायद इसीलिए या उसकी मौसी के संकेत पर उसके मौसा उसे अपने साथ स्टेशन ले जाने लगे थे। दस बजे के लगभग उसके मौसा रुपए की अलमारी खोलकर पिछले दिन का सारा नगद बंद करते। नोटों की गड्डियां बनाकर सिलवाते और उसे गिनने को दे देते। फिर फार्म भर कर चपरासी और सुरक्षा-गार्ड के साथ नगदी लेकर अंग्रेजी स्टेशन मास्टर मिस्टर बार्न्ज के दफ्तर चले जाते। तब वह भी उनके साथ होता। मिस्टर बार्न्ज रुपया गिनकर और थैलों में बंद करवाकर सील करवाता और थैलियां सहायक स्टेशन मास्टर के पास गार्ड के साथ दिल्ली कैश आफिस भिजवाने के लिए रखवा देता। फिर वह उनकी रोजाना ट्रेन-कैशबुक पर 'सारा नगद वाउचरों के साथ प्राप्त किया और आगे नगद कार्यालय दिल्ली को भेज दिया', फार्म नंबर अमुक के अधीन और थैली नंबर इतने में लिखकर नीचे हरे रंग की स्याही से

हस्ताक्षर कर देते। उनके हस्ताक्षर किसी सुंदरी के कान के बाले जैसे लगते थे जिसमें नन्हीं-नन्हीं घुघरियां झूलती थीं।

रेवाड़ी जक्शंन पर शाम चार बजे से रात बारह-एक बजे तक गाड़ियों की खूब आवा-जाही रहती थी। इसी तरह सुबह चार बजे से साढ़े ग्यारह बजे तक बहुत चहल-पहल और रौनक रहती थी। हर तरफ 'गर्म-गर्म पूड़ी, आलू-छोले, चाय गर्म और रेवाड़ी की रेवड़ी' की आवाजें गूंजा करतीं। पानी में भिगोकर रखे और धोए हुए मिट्टी के कुल्हड़ों में चाय पीने का एक विशेष आनंद था। जब चाय वाले मिट्टी के कुल्हड़ों में चाय देते तो उसमें से एक विशेष प्रकार की सोंधी-सोंधी गंध मन- मस्तिष्क को महकाकर सफर की सारी थकान चूस लेती थी। रेवाड़ी की रेवड़ी और बर्फी सचमुच बहुत मशहूर थीं, मगर स्टेशन पर मात्र उसका नाम बिकता था। अच्छी बर्फी, रेवड़ी शहर में, दूर सब्जीमंडी के पास कुछ दुकानों में मिलती थीं। कोई-कोई नौजवान और शरारती रेड़ी वाला महिला-डिब्बे के पास जाकर आवाज लगाता, "माई पूड़ी लुच्ची, बहन पूड़ी लुच्ची।" पास से अगर सहायक स्टेशन मास्टर या गार्ड को जाते और अपनी चोरी पकड़ी जाते देख लेता तो होठों को पुचकाकर और मुंह के एक कोने से आवाज लगाता, "आलू छोले पूड़ी लुच्ची गर्म।"

रात का पिछला पहर और भरी दोपहर रेवाड़ी जंक्शन के सुनसान समय थे। उस समय में रेवाड़ी के बड़े यार्ड में शंटिंग इंजन पांचों तरफ, दिल्ली, हिसार, बांदी, कुई, फुलेरा और रतनगढ़ की ओर से आई मालगाड़ियों को छांटते दिखाई देते और उन्हीं दिशाओं की नई गाड़ियां तैयार करते रहते थे।

अभी वह रेवाड़ी में ही था कि पाकिस्तान मांगने वालों ने देश के कोने-कोने में बड़े जोर-शोर से नारे और आवाजें उठानी शुरू कर दी थीं। मुस्लिम लीग का कलकत्ता में करवाया गया डाइरेक्ट एक्शन डे और कुछ दिनों बाद मास्टर तारा सिंह की लाहौर असेंबली हॉल के बाहर तलवार निकालकर दी हुई धमकी अपना रंग दिखा रही थी। कलकत्ता तो वध-स्थल बनकर रह ही गया था, जिसमें दोनों तरफ से दिल खोलकर खून बहाया गया था। हिंदुस्तान के दूसरे बड़े शहरों में बहुत ही ज्यादा शोर- शराबा मचा था। पश्चिमी पंजाब के कुछ जिले तो और भी आगे बढ़ गए थे। रावलपिंडी के पास छोटे-मोटे बहुत से दंगे हुए थे जिनमें खून पानी की तरह बहता रहा था। रावलपिंडी, मुल्तान और मियांवाली में बड़े-बड़े फसाद हुए थे या होते-होते बच गए थे। 11 मार्च को मियांवाली शहर को कोई ग्यारह हजार पठानों ने आक्रमण के उद्देश्य से घेर लिया था, मगर मुसलमान डिप्टी कमिश्नर के समय रहते हस्तक्षेप और बुद्धिमानी से एक बहुत बड़ी मुसीबत टल गई थी। इन बातों का प्रभाव छोटे-छोटे कस्बों और गांवों में कम आबादी वाले धर्म के लोगों पर बहुत पड़ा था। कई लोगों को देश की स्वतंत्रता से पहले ही बेघर होना पड़

गया था और छोटे-छोटे कस्बों के लोग शहरों की तरफ कूच कर गए थे।

आसिम जब सन् 1948 के शुरू में रेवाड़ी पहुंचा तो उसके मौसा वहां नहीं थे। उसे पता चला कि वे लोग दिल्ली चले गए हैं। वह वहां से दिल्ली पहुंचा और अपने सारे परिचितों और रिश्तेदारों से उनका पता किया, मगर उसे कोई बता नहीं सका कि वे लोग कहां गए, दिल्ली आए तो कहां ठहरे हैं ? रेवाड़ी में उसने इस बात की अच्छी तरह छानबीन कर ली थी कि वहां किसी मुसलमान को नहीं मारा गया। स्टेशन पर उसके मौसा काफी जाने-माने व्यक्ति थे, इसलिए उनके बारे में कोई ऐसी-वैसी बात होती तो उसे जरूर पता चल जाता। रेवाड़ी शहर में हालात अनूकूल नहीं थे, मगर स्टेशन अभी तक सुरक्षित था। उसे जब सब कुछ स्टेशन पर ही मालूम हो गया तो उसे शहर जाने की जरूरत ही नहीं पड़ी। नईमा से कुछ महीने की जुदाई ने, मुहब्बत की पहली कोंपल को अब एक पूर्ण पौधा बना दिया था। उदास और परेशान होकर, वह दिल्ली में उन्हें हर जगह तलाश करता रहा। रिश्तेदारों ने उसे कुछ क्षेत्रों में जाने से रोका भी, मगर निस्संकोच उसने सारा शहर छान मारा। निराश होकर वह लखनऊ लौटा तो घर पर उसके बड़े भाई और मां पाकिस्तान जाने की तैयारियां कर रहे थे। जायदाद को औने-पौने उसकी अनुपस्थिति में ही वे बेच चुके थे। अब उनके लिए लखनऊ में कोई आकर्षण नहीं था। नई और अपनी धरती, अपने आजाद देश का एहसास उन्हें शनैः-शनैः अपनी तरफ खींच रहा था। आसिम पाकिस्तान नहीं जाना चाहता था। अभी उसका दिल इधर ही अटका हुआ था। आस-पास भी कई लोग बड़ी निश्चिंतता से स्थितियों का मुकाबला करने और यहीं डटे रहने का निश्चय किए हुए थे। इधर महात्मा गांधी की मुसलमानों से घरों को न छोड़ने की अपील और मरण-व्रत ने भी उनका उत्साह बढ़ाया था।बहुत से लोग डटकर घरों में बैठ गए थे। आसिम ने मां और भाई को समझाने की काफी कोशिश की थी, मगर उसे छोटा और नादान कहकर उपेक्षित कर दिया गया और उसे जबरदस्ती अपने साथ चलने पर विवश किया जाने लगा। इधर महात्मा गांधी की हत्या ने उनके डर पर जलते पर तेल का काम किया। आसिम ने बचपन से अपने पिता की जगह पर बड़े भाई को देखा था। वह उनका बहुत सम्मान करता था और उनसे डरता भी था। उसकी मां ने भी भाई की कल्पना उसके हृदय में एक बाप जैसी बिठाई थी, इसलिए विवश होकर उसे उनके साथ जाना ही पड़ गया।

पाकिस्तान पहुंचने के कुछ समय बाद उसके भाई की शादी कर दी गई। उसका भाई उम्र में उससे काफी बड़ा था, मगर बीच में एक बहन होने के कारण उसकी शादी रुकी रही थी। जब बहन की शादी की जिम्मेदारी से निवृत्त हुए तो देश की स्थिति बिगड़ी हुई थी, इसलिए बड़े भाई की शादी का काम खटाई में पड़ा हुआ था। अब बड़े भाई की तरफ से निश्चिंतता के बाद उसकी मां ने उसकी

ओर ध्यान दिया। आसिम तब इंटर कर चुका था। मां चाहती थी कि वह शादी करके कोई नौकरी शुरू कर दे, मगर वह कम से कम ग्रेजुएशन तो करना ही चाहता था। बी.ए. करने तक किसी न किसी तरह मां और भाई को टालता रहा। उन्होंने बहुत समझाया कि वह शादी भले ही बी.ए. करने के बाद करे, मगर कम से कम सगाई के लिए तो हामी भर ले, किंतु उसने मां से साफ-साफ कह दिया कि शिक्षा समाप्त होने से पहले वह इस संबंध में सोचने को भी तैयार नहीं है और अगर उन्होंने उसे ज्यादा तंग किया तो वह कहीं भाग जाएगा।

परीक्षाओं के बाद जब दोबारा उस पर दबाव डाला जाने लगा तो वह सचमुच भाग खड़ा हुआ। वह करांची से तेहरान और आगे मोटरों-गाड़ियों से होता हुआ देश-देश घूमता जर्मनी और वहां से लंदन जा पहुंचा। तब लंदन बांहें फैलाए हर आने वाले का स्वागत करता था, क्योंकि युद्ध ने काम करने वाले हाथों की बहुत कमी कर दी थी। वह संसार के इस महानगर की भीड़-भाड़ में गुम हो गया। शुरू-शुरू में उसे बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। दिन-रात मेहनत-मजदूरी करनी पड़ी। अपने कुछ लोग जो वहां रहते थे, साथ भी देते थे, दोस्ती भी निभाते थे, मदद भी करते थे, मगर पारिश्रमिक काफी चोखा वसूल करते थे। कई लोगों ने तो नियमित नए आने वाले अनभिज्ञ और नादान लोगों का शोषण और ब्लैकमेल करना भी शुरू किया हुआ था। पाकिस्तान और भारत के अनपढ़ पंजाबियों के रेले लंदन आ रहे थे। और इंग्लैंड के छोटे-छोटे कस्बों तक में फैलते जा रहे थे, आसिम ने बहुत कठिनाइयां देखीं, मगर पीछे भी उसके आम के बाग नहीं लगे हुए थे, इसलिए वह डटा रहा। अंग्रेजी उसकी अच्छी थी, इसलिए उसे जल्दी ही एक व्यक्ति ने अपने यहां नौकर रख लिया। उसने अभी नया-नया स्टोर खोला था। वह खुद अंग्रेजी बस कामचलाऊ ही जानता था। जब वह जरा संभला तो उसने मां और भाई को पत्र लिखा। इंग्लैंड में उसे काम करने की अनुमति मिल गई थी, इसलिए उसने लिखा कि वह उन्हें मिलने भी आएगा। फिर उसकी मां के बेचैनी भरे पत्र आने लगे तो वह घर चला गया, मगर जल्दी वापस भाग आया क्योंकि फिर उसे बांधने के किए जा रहे थे।

इधर लंदन में एक हृदय-रोग विशेषज्ञ अंग्रेज महिला डॉक्टर मिस ट्रेसा से उसका प्रेम-संबंध चल रहा था। यह एकतरफा प्रेम था। आशिक वह थी, महबूब आसिम था। वह प्रायः उसके यहां आने-जाने लगी थी। वह उदास होता तो ट्रेसा उसे अपने साथ क्लबों में ले जाती। अपने सामने बिठाकर खाना खिलाती और उसके पहलू में घंटों पड़ी रहती थी। उसके समय, बेसमय आने पर एक बार उसके मकानमालिक ने आपत्ति की तो उसने आसिम को एक नई जगह कमरा दिलवा दिया। वह आसिम से विवाह करना चाहती थी। आसिम ने उसे बहुत समझाया कि वह टूटे दिल का इंसान है, उसे खुश नहीं रख सकेगा, मगर वह हठ कर रही

थी कि वह शादी करेगी तो उसी से वर्ना जिंदगी भर कुंआरी बैठी रहेगी। कभी जब आसिम आईने में उसे और खुद को इकट्ठे देखता तो हीन भावना से उसका दिल भर जाता था। कहां एक गोरी-चिट्टी, लंबी सुंदर और आकर्षक रूप-रंग वाली पश्चिमी सुंदरी और कहां वह छंटाक भर का काला-कलूटा क्लर्क ! ठीक है, वह काला भुजंग तो नहीं था, मगर दर्पण में जब वह उसके साथ तुलना करता तो वह अपने आपको और भी अधिक काला महसूस करने लगता था। ट्रेसा ने हर तरह से उसे समझाने की कोशिश की कि वह जिस बात पर इतना परेशान है वही उसकी नजरों में उसका गुण है, जिस पर वह हजार जान से मर मिटी है। जब कभी वह न आ पाती या अस्पताल में अधिक व्यस्त होती तो उसे बहुत ही प्यार भरे रंगीन और सुंदर फूलदार कागजों पर सुगंधित प्रेम-पत्र लिखती। आसिम के दिल का डर उसे हर समय दूर रखने की कोशिश करता। वह डरता था कि वह अगर गर्भवती हो गई तो फिर उसके गले मंढ़ जाएगी और कानून भी उसी का पक्ष लेगा।

आखिर आसिम ने उससे मिलना-जुलना बंद कर दिया। वह आती तो दरवाजा ही न खोलता। लंदन में उसका कोई और दोस्त या परिचित नहीं था। शुरू-शुरू में अपनों ने उसे ऐसे झटके दिए थे कि वह अब किसी से मेल-मिलाप नहीं रखना चाहता था। हां, पत्रिकाएं और किताबें पढ़ने का शौक उसने जरूर पाल लिया। वह किताबें मांगकर या पुस्तकालय से लाकर पढ़ना पसंद नहीं करता था, क्योंकि इस तरह उसे किताबें वापस करने की चिंता रहती थी। वह किताबें खरीदकर पढ़ना पसंद करता था। जब चाहो पढ़ो, जो चाहो पढ़ो। वह काम पर जाता और वापस आकर किताबों के साथ कमरे में कैद हो जाता। ट्रेसा ने उसे बहुत से पत्र लिखे, खुदा का वास्ता दिया। उसका धर्म अपना लेने का प्रस्ताव रखा, मगर वह टस से मस न हुआ। आखिर उसने लिखा कि अब अगर वह उसे न मिला तो वह आत्महत्या कर लेगी। उसने उसे मात्र धमकी समझा। प्रेम में जान देना इन पश्चिमी लोगों के बस की बात नहीं, उसने सोचा और अपनी दुनिया में मगन रहा। कुछ समय बाद जब अचानक उसका दरवाजा जोर-जोर से खटकाया गया तो वह चौंका जरूर, मगर फिर भी उसने दरवाजा नहीं खोला। आखिर मालिक-मकान से दूसरी चाबी लेकर उसका दरवाजा खुलवाया गया। लंदन पुलिस के दो अधिकारी उसके सामने खड़े थे। जब उसे पता चला कि ट्रेसा ने ट्रेन के नीचे आकर आत्महत्या कर ली है तो वह घबरा गया। उसके सामने अखबार की खबर रखी गई तो उसे विश्वास करना पड़ा। मरने से पहले ट्रेसा ने एक पत्र छोड़ा था कि वह उसके प्रेम में असफल होकर अपनी जान दे रही है।

कुछ दिन पुलिस की तफ्तीश चलती रही, मगर वह निर्दोष था। उसने ट्रेसा

को अपनी राह से हट जाने की सलाह दी थी। इस सदंर्भ में एक-दो पत्र भी लिखे थे कि तुम एक बहुत बड़ी डॉक्टर हो, सुंदर हो और जवान हो, तुम्हारा और मेरा कोई मेल नहीं। तुम कोई अपने जैसे लंबे-तड़ंगे और सुंदर अंग्रेज को अपना जीवन साथी बना लो। वह पत्र पुलिस के हाथ लग चुके थे, इसलिए उसे परेशान नहीं किया गया। काम पर जाने से भी नहीं रोका गया, बल्कि उसके काम से वापस आने पर मात्र एक-दो घंटों के लिए, दो-तीन दिन तफ्तीश के लिए उसके अपने ही घर पर व्यस्त रखा गया और फिर सारा मामला समाप्त हो गया। यह उसे मुहब्बत का दूसरा बड़ा झटका था। वह लगभग दो साल उदास और एकांतवासी रहा, फिर धीरे-धीरे पत्रिकाओं और किताबों में डूबता चला गया। पत्रिकाओं की दुनिया में ही उसकी मुलाकात राबिया राहगीर से हो गई।

"क्यों, अभी तक जाग रहे हो?" सरन ने पूछा, उसकी नींद अचानक उचट गई थी।

"बाहर सुबह हो रही है," आसिम ने कहा।

सरन ने खिड़की की दाहिनी ओर लटकता धागा नीचे खींचा तो पर्दा खटाक से ऊपर जा लगा और खिड़की नंगी हो गई। शीशे के पार पेड़, पहाड़ और मकान आदि उल्टी दिशा में दौड़ रहे थे, उन पर सुबह की रोशनियां नाच रही थीं।

"मेरा विचार है, म्यूनिख नजदीक आ रहा है," सरन ने कहा।

"नजदीक आ रहा है कि बस आने ही वाला है," आसिम ने घड़ी देखते हुए कहा, "सुबह साढ़े आठ बजे गाड़ी वहां पहुंचेगी, अभी आठ पांच हो रहे हैं।"

सरन को नींद आ रही थी, ओवरकोट ऊपर खींचते हुए बोला, "अभी पंद्रह मिनट और सोया जा सकता है।"

सरन की मस्ती देखकर आसिम ने सोचा, यह व्यक्ति कितना मलंग आदमी है। किसी दुख या चिंता को पास नहीं फटकने देता। एक मैं हूं जिसने हजारों दुख पाल रखे हैं। मैं अपने आपको अंदर ही अंदर कत्ल करता रहता हूं और फिर अपनी अंदरूनी मौत पर आजीवन दुखी रहता हूं। इसी दुख से भागने के लिए मैं सरन के पीछे लगा हुआ हूं, क्या इसे कोई दुख नहीं होगा, या इसका जीवन आनंदमय होगा ? यदि इसे इतने सुख मिले होते तो यह यहां क्यों धक्के खाने आता ? उम्र भी इसकी पैंतीस-छत्तीस साल से कम न होगी। न जाने शादी भी की है या नहीं! नहीं की है तो क्यों ? रेलवे में काम करता था, उचित नौकरी थी। उसे छोड़कर भाग क्यों आया ? यह जो इसकी जिंदगी की घटनाएं मेरे दिल में खलबली मचाती हैं, क्या इसे नहीं झिंझोड़ती होंगी ? गुण इसमें बस यही है ना कि वह अपने दुख अपने तक सीमित रखता है। उसका दिल एक स्याहीचूस की तरह है जो अपने दुखों की स्याही अपने ही अंदर सोख लेने की कला जानता है।

मेरी जिंदगी में गम जो इतने थे

दिल भी यारब कई दिए होते।

"सरन!" आसिम ने आवाज दी, मगर जवाब में उसकी ओर से पूर्ण खामोशी पाकर उसने फिर उसे जोर से पुकारा।

हड़बड़ाकर सरन ने सिर उठाया, "क्या है?"

"सो रहे हो?"

"स्टेशन आ गया?" सरन ने प्रश्न किया।

"आने वाला है," आसिम ने कहा, "कभी तुम वह शेर सा क्या कह रहे थे?"

"शेर?"

"हां, मेरी जिंदगी में गम जो इतने थे...शायद तुम नींद में बोल रहे थे।"

सरन उठ बैठा और बोला, "आसिम, तुम इग्लैंड में कब से हो?" फिर खुद ही बोला, "मेरा विचार है, आठ-दस साल तो हो गए होंगे।"

आसिम उसके मुंह की तरफ देखने लगा। जाने वह क्या कहना चाहता है ? "यहां का एक ही पाठ सीख लो, 'यह मेरी समस्या नहीं है,' तुम्हारा जीवन सुधर जाएगा और तुम्हारे कई दुख स्वतः समाप्त हो जाएंगे, बल्कि मैं तो कहूंगा कि यह पाठ हमारे पूरे समाज के लिए भी बहुत जरूरी है और लाभकारी भी।"

"खैर, तुम नहीं बताना चाहते तो न बताओ। मैं तो एक हमदर्द और शुभचिंतक दोस्त के नाते से पूछ रहा था," आसिम ने कहा, "तुमने शेर ही ऐसा पढ़ा था जो तुम्हारे दुखी दिल का प्रतिबिंब था।"

"दोस्त, तुम ठीक कहते हो। मैं तुम्हारी हमदर्दी का आभारी हूं, मगर घाव को कुरेदने से लाभ?"

उदासी सरन के सारे चेहरे पर बिखर गई। आसिम ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "ओके-ओके, उठो तैयार हो जाओ, स्टेशन आने वाला है।"

म्युनिख उतरकर वे वेटिंग रूम में जा बैठे। आसिम ऑटोमार्ट से दो प्याले कॉफी, बिस्कुट का एक पैकेट निकाल लाया। सरन के सामने रखता हुआ बोला, "हो जाए शेर।"

"मगर मैने तो अभी मुंह भी नहीं धोया," सरन बोला।

"फिर वही बात," आसिम ने कहा, "शेरों के मुंह किसने धोए हैं?"

दोनों खिलखिलाकर हंस पड़े और कॉफी पीने लगे। निवृत्त होकर उन्होंने बैग से कपड़े निकालकर बदले। नीचे सीढ़ियां उतरकर कई बाथरूम थे। दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर वे दीवार में लगे मशीन में सिक्के डालकर शेव करने लगे। अपने-अपने बैग स्टेशन के लॉकर्स में रखकर और वांछित सिक्के डालकर उन्होंने ताले बंद किए और चाभियां अपनी-अपनी जेब में डाल लीं और बाहर आ गए। बाहर नन्हें से क्लोनियाल स्टोर के शीशे से केले, आडू, सेब, नाशपातियां देखकर वे थोड़ी देर रुके और फिर एक-दूसरे की तरफ देखकर उसकी खिड़की के पास

जा खड़े हुए। फ्रूट, चाकलेट, डाइम नट्स, आदि लेकर चरते-चुगते वे बस-स्टाप पर आ गए। उन्होंने एक राह चलते व्यक्ति से पूछा, "ओलंपिक विलेज?" वह व्यक्ति जर्मन था, समझ गया कि वे परदेशी है, बोला, "स्ट्रासे बाहनन" (स्ट्रीट कार) और दूसरी ओर लाइन की तरफ संकेत कर दिया। सड़क पार करके वे ट्राम के स्टाप पर जा खड़े हुए। कुछ ही देर बाद एक ट्राम आ गई। ड्राइवर से टिकट लेते हुए उन्होंने फिर पूछ लिया, "ओलंपिक विलेज।"

ड्राइवर ने संकेत से कहा, "रुके रहो, आने पर बता दूंगा।"

ओलंपिक विलेज के महान द्वार पर पहुंचकर उन्होंने देखा, एक बड़ा कस्बा सा बसा हुआ था, मगर अब सुनसान पड़ा था। सुंदर मकान, कार्यालय, खेल के मैदान, तालाब, पार्क, सड़कें, रास्ते, नहरें। सुंदर कला के नमूने, आकर्षक टेढ़े-मेढ़े रास्ते। कहीं-कहीं कुछ लोग इधर-उधर आ-जा रहे थे। कुछ मजदूर ट्यूबों से पार्कों की घास को पानी दे रहे थे। उन्होंने सारा विलेज छान मारा। कई स्थानों पर रुककर एक-दूसरे के फोटो लिए। बड़े-बड़े हालों, झालों, मैदानों और बनावटी पहाड़ी और दरियाई रास्तों को देखा। जहां खेल खेले गए थे, एक महानगर बसा हुआ था।

तब वहां कितनी रौनक रही होगी ! वहां आसिम नहीं आ सका था। सारे खेल उसने टी.वी. पर देखे थे, मगर विलेज देखने की इच्छा बहुत दिनों से वह दिल में लिए फिरता था। लंदन से जर्मनी के लिए चलते समय उसने सरन के साथ जर्मनी का दूसरा बड़ा शहर म्युनिख देखने के साथ-साथ ओलंपिक विलेज देखने का भी कार्यक्रम बना लिया था। सरन ने ओलंपिक खेलों के दिनों में म्युनिख देखा था, तब वह कुछ भी नहीं देख सका था। शहर में बहुत भीड़ होती थी। पता ही नहीं चलता था कि वह कहां जा रहा है, क्या देख रहा है। जो वहां खेल देखने आए थे वे भी खेलों का कोई एक अंश ही देख पाते थे। हां, यह जरूर है कि वे वही खेल अच्छी तरह देख लेते थे, मगर उसी दौरान उसके दूसरे खेल चूक जाते थे, जबकि जर्मनी या यूरोप के दूसरे देशों के लोग घर बैठे टी.वी. पर सारे खेल एक साथ देख लेते थे, क्योंकि टी.वी. सारे खेलों को प्रसारित करने का प्रयत्न करता था। सरन तो म्युनिख खेल देखने नहीं आया था, व्यापार करने आया था। वास्तव में वह एक परिचित सरदार भंजन सिंह के साथ 'मिट फाहर' की लिफ्ट फिफ्टी-फिफ्टी के शेयर से वहां पहुंचा था। इरादा तो उसका खेल देखने का था, मगर सरदार को वहां विलेज से थोड़ी दूर लगे स्टालों पर नकली मालाएं और नकली नेकलेस आदि सप्लाई करते देखकर उसे भी व्यापार का शौक चर्राया था। वह सरदार ही के साथ वापस फ्रैंकफर्ट पहुंचा, सेठ पतूड़ी मल से उसने मालाएं और नेकलेस मांगे, मगर सेठ बोला, "मेरी सारी मालाएं और नेकलेस तो भंजन सिंह ने बुक कर लिए हैं। उसने दो हजार मार्क एडवांस रख दिया है। दस दिन तक मैं उसका माल किसी और को नहीं दे सकता।"

सरन ने दास ब्रदर्स, जी.एम.वी.एच., आसरा ओरियंट हैडिलप, डॉक्टर

साहब और सिंह ब्रादर्स के यहां पता किया, उनके पास माल दूसरा था और एडवांस भी वे अधिक रखना चाह रहे थे। विवश होकर वह फिर अपने पतूड़ी मल के पास पहुंच गया। सेठ बोला, "देखो दोस्त, तुम अपने आदमी हो, डेढ़ हजार एडवांस लूंगा। दस दिन तक माल तुम्हारे डिस्पोजल पर होगा।"

"मगर माल क्या है?" सरन बोला।

सेठ उसे अंदर ले गया। सेठानी से बोला, "इसे माल दिखाओ।"

सरन ने उसे सेठानी की तरफ आंख मारते देख लिया था, मगर वह रिकार्ड की तरह बजने लगी, "सरन बाबू, मैं तो एक बात कहूंगी, तुम्हारे दिन फिर जाएंगे। बस जरा दिल रखने की बात है।"

वह बोलती भी गई और साड़ी में लगे चाभियों के गुच्छे से स्टोर की चाबी ढूंढती हुई आगे भी बढ़ती गई। दरवाजा खोलकर वह एक मेज के पास जा खड़ी हुई। एक बहुत बड़ी मेज पर पोरस की फौज के हाथी लाइन से खड़े थे। ये लाख के हाथी/थे। छोटे बड़े और मध्यम। उनके शरीर पर छोटे-छोटे चने के दानों के बराबर रंग-बिरंगे शीशे और बाजरे के दानों के बराबर छोटे-छोटे मनके चिपके हुए थे। उनके हौदों पर सुंदर आकृति बनी थी, मगर वह स्थायी नहीं थे। कई जगह से उनके शीशे और मनके झड़कर गिर चुके थे, मगर ध्यान से देखने से ही उनकी इस कमी का पता चलता था।

सरन बोला, "मैडम, ये तो बहुत खस्ता हाल है, वहां जाते-जाते ही टूट जाएंगे।"

"देखिए सरन साहब, मैं तो एक बात कहूंगी। ये बहुत सुंदर डेकोरेशन पीस हैं। आपको इन्हें घर ले जाकर मेंटल-पीस पर सजा कर रख देंगे, बताइए फिर इनमें कमी कहां रह जाएगी?"

"ओके, मैं कल ही एक हजार पीस ले जाता हूं। माल चला तो फिर एडवांस भी जमा करा दूंगा और ज्यादा माल भी उठाना शुरू कर दूंगा। वैसे आपके पास माल कितना है?"

पांच बड़े-बड़े बक्से दिखाते हुए सेठानी ने कहा, "दस हजार से कम क्या होंगे ? आप चाहे पांच ही ले जाएं, मगर इस बीच किसी और ने एडवांस दे दिया तो माल उसका हो जाएगा, यह ध्यान रहे, सरन बाबू !"

"ओ के, आप इस समय तो हजार पैक करा दीजिए," सरन बोला।

हजार प्रति, दो बड़े-बड़े अटैची-केसों में बंद करवा कर भंजन सिंह के साथ साझा टैक्सी लेकर वह म्युनिख पहुंचा तो उसके हाथी को कोई भी स्टाल वाला लेने पर तैयार नहीं हुआ। मगर हाथियों के बाहर निकालते ही उसी स्टाल के ग्राहक उन्हें वहीं लालायित दृष्टि से देखने लगे और वहीं खड़े-खड़े उसके दस हाथी पंद्रह-पंद्रह मार्क के बिक गए। स्टाल वाले के आपत्ति करने पर वह वहां से जाने

ही लगा था कि उसने उसे रोक कर सौ हाथी आठ-आठ मार्क के हिसाब से खरीद लिए। लोग धड़ाधड़ चीजें खरीद रहे थे। स्टाल वालों की चांदी ही चांदी थी। लोगों की भीड़ थी कि जैसे तूफानी नदी। हर तरफ सिर ही सिर नजर आते थे। आस-पास के स्टालों पर भी सरन के हाथी हाथोंहाथ बिक गए और कुछ स्टालों पर सेल के आधार पर उसने कुछ हाथी रखवा दिए। आधे घंटे बाद स्टाल वाले उससे और हाथी मांग रहे थे। उन सबसे एडवांस लेकर वह फ्रैंकफर्ट पहुंचा। अब उसकी जेब में लगभग छह हजार मार्क थे। उसने सारे हाथी और लगभग दो हजार अगरबत्ती ढाई हजार मार्क अग्रिम जमा करवा कर अपने लिए बुक कर लीं। वह अभी माल पैक ही करवा रहा था कि भंजन सिंह आ पहुंचा। सेठानी के साथ उसे अंदर खड़ा देखकर बोला, "बीवीजी, लालाजी कहां हैं?"

"उधर दफ्तर में होंगे," सेठानी ने कहा।

फिर वह सरन से बोली, "मैं तो एक बात कहूंगी सरन साहब, आपने बहुत अच्छा कदम उठाया है। आजकल दिन हैं, हाथ रंग लो।"

"आपके पास कुल कितने पीस होंगे?" सरन ने पूछा।

"बीस हजार। क्यों, ज्यादा चाहिए?" सेठानी ने सवाल किया।

"पच्चीस हजार तक मेरे हो गए। दस दिन तक न उठाऊं तो दो हजार जब्त कर लेना। ओ के ?"

"ओ के-ओ के, सरन बाबू, मैं तो एक बात कहूंगी..."

सेठ पतूड़ी मल के साथ भंजन सिंह को अंदर प्रवेश करते देखकर वह रुक गई। सेठ बोला, "माल होगा? भंजन सिंह को जरूरत थी।"

"माल तो नहीं है। मैं तो एक बात कहूंगी..."वह सेठ और भंजन सिंह की ओर संबोधित होते हुए बोली, फिर उसे विचार आया कि उसने अकारण मना कर दिया। यह तो पूछा ही नहीं कि जरूरत क्या है। बोली, "भंजन सिंह का माल तो अनटच्ड पड़ा है। टचवुड, मैं तो दूसरे का माल किसी को दिखाऊं भी नहीं। मैं तो एक बात कहूंगी..."

"इसे कुछ हाथी चाहिए थे," सेठ बोला।

"मैं तो..." उसने बात आधी छोड़कर सरन की तरफ देखा, "हाथी तो बिक गए।"

तब सरन म्युनिख से फ्रैंकफर्ट और फ्रैंकफर्ट से म्युनिख ही आता-जाता रहा था। उसने हाथ अच्छे रंग लिए थे। हां, खेलों में रहकर भी वह उन्हें नहीं देख सका था।

घूमते-फिरते वे ओलंपिक मीनार के नीचे जा खड़े हुए, जहां एक समय में खेलों की महाजोत जला करती थी, अब वह जगह शांत थी। पास ही घास पर लेटकर उन्होंने मीनार की ऊंचाई को कैमरे में कैद किया। बड़े-बड़े गोल तंबुओं

के बने हालों में घूमे। अचानक कमरों की एक लाइन के पास से गुजरते हुए उनके कदम रुक गए। एक कमरे के सामने सूखे फूलों के चक्र अभी तक पड़े थे। पास पहुंचकर उन्होंने एक सफेद पत्थर पर ग्यारह खिलाड़ियों के नाम खुदे हुए देखे। ये इस्राइल के के ग्यारह खिलाड़ी थे जिन्हें आतंकवादियों ने मौत के घाट उतार दिया था। वे क्षण भर वहां खामोश खड़े रहे, फिर उन्होंने उन नामों के फोटो ले लिए।

वे कुछ देर और घूमे। आगे एक जमीन का गोल ग्लोब लगभग 15 फुट ऊंचा और लगभग 20 फुट व्यास का दिखाई दिया, जिस पर लोगों ने अपने नाम लिख रखे थे। उन्होंने भी अपने-अपने नाम ग्लोब पर लिखे, उसे कैमरे में बंद किया और आगे बढ़ गए। एक झील के पास पहुंचकर किनारे पर और पानी के अंदर खड़े होकर सरन ने हाथ ऊपर उठाए। आसिम बोला, "ऐसे ही रुके रहो," और कैमरे की आंख पर आंख रखे आगे-पीछे होता उसके फोटो लेता रहा, बोला, "इन फोटोओं में ऐसे लगोगे जैसे ऊपर वाले से विनती कर रहे हो !

आस्मां पे है खुदा और जमीं पे हम
आजकल वह इस तरफ देखता है कम।
चाहे कुछ भी कीजिए वह टोकता नहीं
आजकल किसी को वह रोकता नहीं।

"मगर यह आजादी उसने अपने खास भक्तों को ही दे रखी है, हर एक को नहीं," सरन बोला।

उसकी आवाज में उदासी घुली हुई थी। आसिम ने भी उसे महसूस किया। धीरे-धीरे उनके चेहरे उदास और बातों के लहजे धीमे होते गए तो वे विलेज से बाहर निकल आए।

शहर पहुंचते-पहुंचते वे एक-दूसरे से आंखें चुरा रहे थे। आसिम कोशिश कर रहा था कि सरन को कुरेदे नहीं। बाजार पहुंच कर उन्होंने आइसक्रीम खाई। धूप धीरे-धीरे ढल रही थी और वे काफी थके हुए थे। वे एक रेस्तरां में जा बैठे और अपनी-अपनी पसंद का खाना और एक-एक बोतल कोला लेकर खाने बैठ गए।

दूसरे दिन फ्रैंकफर्ट पहुंचते ही वे स्टेशन के कैफटेरिया में जा बैठे। खाना खाते हुए उन्हें लगा जैसे शब्द वे कहीं गुम कर बैठे हैं। दोनों के जबड़े खामोशी से चलते रहे। कुछ देर बाद आसिम उठा और पूछ-ताछ केंद्र से लंदन जाने वाली ट्रेन पूछने चला गया। उसकी गाड़ी आधे घंटे बाद जा रही थी। उसने जब सरन से आज्ञा मांगी तो वह मुस्कराकर बोला, "आज्ञा ही आज्ञा है, भाई ! चाबी तो तुम्हारे सामने सेठ को लौटा चुका हूं।"

सरन उसे गाड़ी पर छोड़ने के लिए उठ खड़ा हुआ। उसके सामने स्वयं अभी रात बिताने की समस्या थी, आसिम को किस बूते पर रुकने को कहता ?

गाड़ी के जाने के बाद वह फिर केफटेरिया में आ बैठा। लोग दिनभर एक

बीयर का गिलास सामने रखे बैठे रहते थे। बहुत बड़ा हाल था और अनगिनत मेजें व कुर्सियां। कोई पूछता नहीं था कि कोई कब आया, कब गया। बीयर पीकर सरन या तो चुप साध लेता था या फिर सोचों के समुंदर में गहरी डुबकी लगा लेता था। खुद उसके अंदर विचारों और यादों का अटूट क्रम था, जिसकी दुनिया में डूबकर वह कितने-कितने घंटे अकेले गुजार सकता था। अकेले रहकर भी उसे उदास होना या अपनी दुनिया में मस्त रहना आता था। परोक्ष रूप से उसका चेहरा ऐसे खिले फूल जैसा था जिसके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था कि ऐसे फूल की टहनी में भी कुछ ऐसे रेशे हो सकते हैं जो शीघ्र ही उसे मुर्झा कर उदास कर देंगे।

अपनी आंतरिक दुनिया में सरन के पास जिंदगी के न जाने कितने भरपूर दिन थे, और उदास दिन भी। प्रेम और विजय जो स्वयं उसकी झोली में पड़ने को बेचैन रहती थीं और उसकी चाहतें जिनकी तलाश में वह भटकता रहा था। उसके सोचने का ढंग ही दुनिया से निराला था। वह कहता था, दिल एक मंदिर है जीता-जागता, भावना से परिपूर्ण, जिसकी दीवारें भी पहचान रखती हैं, जो अपने अंदर एहसास की सचाइयों से सिर्फ एक मूर्ति दो जगह देखती है। मूर्तिकार सैकड़ों मूर्तियां बनाता है, उसे अपनी हर रचना से प्रेम होता है। अगर यह सच है तो फिर वह और नई-नई मूर्तियां क्यों बनाता रहता है ? स्पष्ट है कि अभी वह, वह मूर्ति नहीं बना सका जिसके बाद कहे बस, मेरे पास अब और कुछ नहीं। सौंदर्य का कोई दृष्टिकोण जो वह उसके बाद बनने वाली मूर्तियों को दे सके, या उसके बाद वह अपनी कला दोहराता महसूस करे !

8

सरन के पिता मलिकवाल जंक्शन पर रेलवे में पार्सल क्लर्क थे। तब मलिकवाल में सिर्फ मिडिल स्कूल था। इसलिए उसे भेरा में स्कूल के छात्रावास में रहकर पढ़ाई जारी रखनी पड़ी थी। वहीं उसके सगे चाचा भी रहते थे। वह हर छुट्टी पर मलिकवाल अपने माता-पिता से मिलने पहुंच जाया करता था, मगर अधिकतर वह भेरा में ही रहना पसंद करता था, क्योंकि उसके चाचा का लड़का न सिर्फ उसका सहपाठी था बल्कि समविचार वाला और अच्छा दोस्त भी साबित हुआ था। इसलिए जब भी लंबी छुट्टियां होतीं वह कुछ ही दिन मलिकवाल रहकर शेष छुट्टियां बिताने भेरा पहुंच जाता। मार्च सन् 1947 में सरन ने मैट्रिक की परीक्षा दे दी थी और स्कूल व छात्रावास से निवृत्त होकर माता-पिता के पास मलिकवाल आ

गया था, मगर दो-ढाई माह से अधिक वह मलिकवाल न टिक सका और शीघ्र ही अपने समान विचार वाले दोस्त, चचेरे भाई ओमप्रकाश के पास भेरा पहुंच गया। अपने सगे चाचा का तो घर था, कौन मना करता ? जब चाहता, जितना चाहता वहां ठहर सकता था।

अगस्त 1947 के शुरू में वह भेरा में ही था कि इधर-उधर से फसाद की खबरें आने लगीं। उन्हीं दिनों नौकरी करने वालों से लिखवाया जा रहा था कि वे अपनी इच्छा एक छपे हुए फार्म पर लिखकर दें कि वे हिंदुस्तान जाना चाहते हैं या पाकिस्तान में नौकरी जारी रखना चाहते हैं। किसी हिंदू ने पाकिस्तान में रहना पसंद करके फार्म पर लिख भी दिया, तो हालात बिगड़ने पर रेले में उन्हें बाहर धकेल दिया गया। भारत में तो कई लोगों ने वहां रहना पसंद करके ऐसा लिख भी दिया और रह भी गए, मगर पाकिस्तान के ज्यादातर हिस्से में अगर किसी हिंदू ने ऐसा किया तो वह तमाशा बनकर रह गया। ऐसा तमाशा एक और भी हिंदू के साथ हुआ, जिसने भारत में रहते हुए पाकिस्तान जाना पसंद किया था, मगर जब वहां काफिलों के काफिले आते देखे तो घबरा गया, तब तक वह अपनी सरकारी नौकरी से सेवामुक्त हो चुका था। वापसी का दरवाजा बंद और आगे के सारे रास्ते भटके देख वह काफी दिनों तक दो नावों में सवार इधर-उधर डोलता रहा, मगर आखिर में बड़ी नाव वालों ने उसे अपनी नाव पर उतार ही लिया। वह वापस भारतीय नागरिकता पाने में सफल तो हो गया, मगर यार लोगों ने उसका नाम 'द मैन हू ऑप्टेड पाकिस्तान' रख दिया।

फिल्म कलाकार दिलीप कुमार का भाई नासिर खां कोशिश करके पाकिस्तान गया था, यह देखने के लिए कि उसके लिए आर्थिक रूप से कौन सा देश ठीक रहेगा। वह वहां की सबसे पहली फिल्म 'तेरी याद' में नायिका आशा भोंसले के साथ नायक के रूप में भी आया था, मगर वह जल्द ही वापस लौट आया। ऐसे और भी कितने बड़े-बड़े मुसलमान चुनाव के दोराहे पर खड़े थे, और नहीं जानते थे कि उनके लिए कौन सा देश लाभकारी होगा। हिंदुओं के साथ ऐसी कोई समस्या नहीं थी, क्योंकि वे जानते थे कि छोटे भाई के घर के दरवाजे हमेशा के लिए बंद कर दिए गए हैं। कुछ सिक्कों के फायदे के लिए कइयों ने बहुत देर बाद भी पाकिस्तान जाना पसंद किया, जिनमें जोश मलीहाबादी का नाम सर्वोपरि है।

सरन के पिता ने जुलाई में ही भारत जाना पसंद करके परिवर्तन का प्रार्थना-पत्र दे दिया था, मगर जल्द ही हालात ऐसे खराब हो गए कि हिंदुओं का बाहर निकलना खतरे से खाली न रहा। उधर सरन के पिता के स्थानांतरण के आदेश आ गए और विवश होकर उन्हें 11 अगस्त को रवाना होना पड़ गया। अपनी जवान और सुंदर बेटी के कारण वह खुद भी जल्दी निकल जाना चाहते थे। जाने से पहले

उन्होंने अपने भाई को लिख दिया कि वह जब भेरा से निकलें तो वह सरन को साथ लेते आएं। उन्होंने लिखा कि वह हालात के हाथों जल्दी चले जाने पर मजबूर हैं, वर्ना दोनों परिवार मिलकर घरों को छोड़ते। इधर भेरा और मलिकवाल के तीन स्टेशनों के सेक्शन पर किसी हिंदू-सिख के लिए गाड़ी पर सवार होना कठिन हो गया था, क्योंकि लाइन पर इक्का-दुक्का हमले और छुरेबाजी की घटनाएं होने लगी थीं।

जब हालात ज्यादा बिगड़ने लगे तो सरन बार-बार अपने चाचा-चाची को निकलने के लिए मजबूर करने लगा। मगर उसके चाचा अभी नहीं निकलना चाहते थे, क्योंकि उनका दिल उनके नए मकान में अटका हुआ था जो उन्होंने दो साल पहले बनाया था। दरअसल वह उसके पैसे खरे करके ही निकलना चाहते थे। मध्य अगस्त के बाद तो हालात और भी ज्यादा बिगड़ गए थे, मगर फिर भी स्पेशल ट्रेनें लोगों को भारत ले जाने के लिए चलाई जा रही थीं। जब सरन ने सुना कि मलिकवाल से भी एक गाड़ी सितंबर के पहले सप्ताह में चलेगी तो वह उसकी टोह में रहने लगा। उसका एक मुसलमान दोस्त मीर असलम खां उसे सारी स्थितियों से अवगत करा रहा था। जब उसने स्थिति और अधिक खराब होने की सूचना दी तो सरन ने अपने चाचा से निकल जाने के लिए बार-बार कहा, मगर वह स्वयं तो घर छोड़ने पर राजी न हुए और न ही ओमप्रकाश को उसके साथ भेजने को तैयार हुए। हां, सरन के जाने पर विवश होकर मान गए। आखिर सरन असलम की ठीक सूचना और मदद से मलिकवाल से निकलने वाली शरणार्थी स्पेशल पकड़ने में सफल हो गया।

उम्र तो सरन की सिर्फ पंद्रह साल थी, मगर उसने खूब कद-काठी निकाली थी। सोलह यात्रियों के डिब्बे में जिसमें वह यात्रा कर रहा था चालीस यात्री और थे। इतने व्यक्तियों से भरा छोटा सा डिब्बा भेड़-बकरियों का बाड़ा लगता था, जिसमें बच्चे-बूढ़े, औरतें-मर्द और जवान लड़कियां भी थीं। वह बुड्ढा लालामूसा स्टेशन पर रात के अंधेरे में हाथ में लोटा लिए पानी लेने उतरा था। पानी भर कर वह लौट ही रहा था कि पेड़ों के साये में किसी ने उसे छूरा घोंप दिया। वह एक हाथ से जख्म दबाए और दूसरे हाथ में लोटा लिए जैसे-तैसे गाड़ी पर पहुंच ही गया। उसकी पगड़ी से लोगों ने उसका जख्म कसकर बांध दिया। उसकी जवान पोती उसका सर गोद में रखे 'बाबा', 'बाबा' कहती सिसकती जा रही थी। वह बार-बार उससे आग्रह करती, ''बाबा, मुझे अकेली छोड़कर मत जाना।''

बुड्ढा अपनी बंद होती हुई आंखें बड़ी मुश्किल से खोलकर लड़की की तरफ देखता और कमजोर व बेबस हाथ उसके सिर पर रखकर उसे दिलासा देता जा रहा था। उसका खून अब पगड़ी में से रिस-रिसकर फर्श पर गिरने लगा था, और बुड्ढे का हाथ अब उठने की शक्ति खोता जा रहा था। लालामूसा आने से बहुत

पहले उसने सरन से घिघियाते हुए पानी ला देने की विनती की थी, मगर खतरे के डर से सरन ने उसे टाल दिया था। अब वह सारे यात्रियों के सामने अपने आप को दोषी महसूस कर रहा था। उसे लग रहा था कि अगर वह पानी लेने गया होता तो निश्चित ही आक्रमणकारी के वार से बच जाता, क्योंकि उसकी जवान श्रवण- शक्ति आक्रमणकारी की आहट से उसे पहले की सावधान कर देती और भाग कर वह उसके वार से जरूर बच निकलता। ऐसी कई घटनाएं उसके सामने हुई थीं, जिनमें नौजवान अपनी फुर्ती से आक्रमणकारियों के हाथों से फिसल कर निकल आते थे जबकि बूढ़े, कमजोर और औरतें बड़ी आसानी से उनका शिकार हो जाती थीं। डिब्बे के लोगों की आंखें भी सरन को पाप-बोध की याद दिला रही थीं और वह पास ही आंखें झुकाए बैठा था।

कमजोरी के कारण बूढ़े पर अवचेतन के दौरे पड़ने लगे थे, मगर जैसे बुझने से पहले दीए की लौ तेजी से भड़क उठती है, बूढ़े ने अपनी पूरी ताकत से आंखें खोल दी थीं और कमजोर आवाज में उसने सरन को अपने पास बुला लिया था। डिब्बे के शेष यात्री भी पास खिसक आए थे। बूढ़ा धीरे-धीरे कह रहा था :

"बेटे, तुमने अच्छा किया जो पानी लेने नहीं गए। तुमने अभी जिंदगी का देखा ही क्या है?" वह क्षणभर के लिए खामोश हो गया। लड़की ने उसे थोड़ा सा पानी पिलाया तो वह फिर बोलने लगा, "मैं बच नहीं सकूंगा, बेटे ! मेरी जिंदगी की शाम अब बहुत करीब आ गई है।"

लड़की बोली, "बाबा, तुम्हें कुछ नहीं होगा। बस आठ-दस घंटे की यात्रा और है। उधर पहुंचते ही तुम्हारा अच्छा इलाज..."

बूढ़े ने उसे हाथ के इशारे से रोक दिया और सरन से बोला, "बेटा, मेरे पास समय बहुत कम है। तुम जवान हो, शादी तो आखिर करोगे ही। मेरी बिटिया जवान है, सुंदर है, पढ़ी-लिखी है।"

वह पल भर के लिए रुक गया, फिर वह अपने कमजोर हाथों से अपने टुब्बे को टटोलने लगा। एक पोटली निकाल कर उसने सरन की तरफ बढ़ाई, बोला, "इसमें पंद्रह सौ रुपए हैं और करीब पंद्रह तोले सोने के जेवरात भी। मेरी पोती के साथ ये तुम्हारे हुए। बेटा देखो, मरते हुए मनुष्य का दिल न तोड़ना।"

पोटली बूढ़े के हाथों से सरन की गोद में गिर गई और वह एक बार फिर गश खा गया। लड़की ने घबराकर उसकी छाती पर सिर रख दिया। वह दहाड़ें मार कर रोना ही चाहती थी कि उसे अपने दादा की छाती की धड़कन सुनाई दी। उसने दोबारा उसके होठों में थोड़ा सा पानी टपकाया। बूढ़े की अंतिम इच्छा के बारे में सोचते हुए सरन ने असहाय दृष्टि से डिब्बे के यात्रियों की ओर देखा। इतनी छोटी उम्र में इतना बड़ा फैसला करना उसके लिए मुश्किल हो रहा था। उन दिनों ऐसी शादियों के बारे में लगभग हर किसी ने सुन या देख रखा था। खुद सरन ने भी

भेरा में ऐसी चार शादियां देखी थीं, जो हालात की मजबूरी में की गई थीं। डिब्बे के सारे यात्री उसकी तरफ आग्रहपूर्ण दृष्टि से देख रहे थे। होश आने पर जब दोबारा बूढ़े ने पोटली सरन की तरफ बढ़ाई तो किसी अदृश्य शक्ति के प्रभाव से उसके हाथों ने बूढ़े के हाथों से पोटली थाम ली और उसकी आंखों में आंसू तैरने लगे। सहसा बूढ़े के हाथ को आशीर्वाद के लिए उठे, "बच...ची...के....मां...बाप... का...पता..." कहते हुए उसकी उंगली पोटली की तरफ उठकर गिर गई। अब बूढ़े की छाती के पिंजरे के पक्षी की फड़फड़ाहट बंद हो चुकी थी। लड़की उसकी छाती पर सिर रखकर दहाड़ें मार-मार कर रोने लगी।

"बाबा, बाबा, मुझे अकेली छोड़कर मत जाओ, बाबा !"

लड़की बहुत देर तक दहाड़ें मारती, रोती और सिसकती रही। कुछ देर बाद एक बुजुर्ग ने उसके सिर पर हाथ रखते हुए कहा, "बेटा, हिम्मत रखो, सब्र करो, तुम्हारा बाबा तुम्हें अकेला छोड़कर नहीं गया। तुम्हारे सिर का साईं अब तुम्हारे साथ है।"

लड़की बूढ़े की लाश अपने साथ भारत ले जाना चाहती थी, मगर जब गाड़ी शाहदरा (लाहौर) के पास कई दिन रुकी रही तो सब लोग लाश नीचे उतार देने के लिए उसे मजबूर करने लगे। फिर जब एक जगह गाड़ी बहुत देर रुकी और लाइन के पास ही बाढ़ग्रस्त रावी का फैला हुआ पानी नजर आया तो सबने मिलकर बूढ़े की लाश को उसकी पगड़ी का कफन पहनाया और लाइन के पास ही पड़ा हुआ एक बहुत बड़ा पत्थर उसकी कमर से बांध कर उसे गहरे पानी में उतार दिया।

दिल्ली पहुंचकर उषा के मां-बाप को तलाशने में कोई सरन को विशेष कठिनाई नहीं हुई। उसके बाप की कश्मीरी गेट के पास मोटर पार्ट्स की छोटी सी दुकान थी और पीछे मुहल्ले में ही एक मकान भी था। उन्होंने अपनी इकलौती बेटी उषा का खुले हाथों स्वागत किया, मगर सरन को उन्होंने कोई विशेष महत्त्व न दिया। उनकी दृष्टि में वह कठिन समय की जरूरत मात्र था, समय जो अब टल चुका था। सरन कुछ दिन उनके यहां पड़ा रहा, फिर उसने पास ही एक खाली मकान पर कब्जा कर लिया। शुरू-शुरू में तो उषा भी उसके यहां उठ आई, मगर वह अपना अधिकतर समय पास रहने वाले अपने मां-बाप के यहां बिताती रही। धीरे-धीरे उसके मां-बाप का रंग उस पर चढ़ रहा था। उधर सरन के मां-बाप का कोई पता नहीं चल रहा था। उन्हीं तारीखों में उधर से आने वाले कुछ लोगों के द्वारा पता चला था कि जिस गाड़ी में उसके मां-बाप और बहन निकले थे, वह लुट गई और उसके बहुत से यात्री मौत के घाट उतार दिए गए। उषा उम्र में सरन से दो साल बड़ी थी। उसने भी मैट्रिक किया हुआ था। मैट्रिक तो सरन भी था, मगर नौकरी के लिए अभी वह अयोग्य था जबकि उषा को चीफ कमिश्नर क्लेम्ज के कार्यालय में नौकरी मिल गई थी। मां-बाप के साथ, लाड़-प्यार, खुला पैसा, और

आभूषणों ने उसे घमंडी तो बना ही दिया था। नौकरी ने उसके दिमाग में और ज्यादा फतूर भर दिया। वह सरन से ऐसा व्यवहार करती जैसे वह नादान बच्चा हो और जरा-जरा सी बात पर उसे झिड़कने से भी न चूकती।

उम्र कम होने के कारण सरन को सरकारी नौकरी नहीं मिल रही थी। मोटर पार्ट्स की एक और दुकान पर उसने काम शुरू किया तो उसके ससुर लाला राम-रतन ने उसे अपना अपमान समझा। आखिर उषा के बार-बार अपत्ति करने पर उसे वह काम छोड़ना ही पड़ गया। वह चाहता था, छोटी सी छाबड़ी ही लगाकर उषा के अपमानजनक व्यवहार से स्वयं को आजाद कर ले, मगर उसे यह भी नहीं करने दिया गया। विवश होकर वह एक घरेलू पत्नी की तरह अंदर बंद रहने लगा। जैसे-तैसे दो साल बीतने के बाद उसने फिर नौकरी के लिए अखबारों में विज्ञापन देखने शुरू किए। एक बार उसने रेलवे में सहायक स्टेशन मास्टर की भर्ती का विज्ञापन देखा तो भगवान का नाम लेकर उसने भी प्रार्थनापत्र भेज दिया। तब एक रुपए का प्रार्थनापत्र शरणार्थियों के लिए मात्र चार आने में किसी भी स्टेशन से प्राप्त किया जा सकता था। बीस दिन के बाद उसे दिल्ली से बंबई के रेलवे के मुफ्त पास के साथ बंबई रेलवे सर्विस कमीशन के सामने साक्षात्कार का बुलावा आ गया।

सरन ने उषा को साक्षात्कार के बारे में कुछ भी नहीं बताया। केवल अपने मां-बाप को तलाश करने पंजाब जाने का बहाना बनाकर वह बंबई पहुंच गया। लिखित परीक्षा और साक्षात्कार में 120 उम्मीदवारों में वह तृतीय आया। दस-दस उम्मीदवारों का ग्रुप बनाकर उनसे पूछा गया कि वे बंबई-बड़ौदा और सेंट्रल इंडिया रेलवे के किस क्षेत्र में जाना पसंद करेंगे। सरन चूंकि पहले दस लड़कों के ग्रुप में था इसलिए उसे सबसे पहले अपनी पसंद बताने का अवसर दिया गया। सरन ने तुरंत दिल्ली क्षेत्र मांग लिया। यह क्षेत्र छोटी लाइन का दिल्ली से रेवाड़ी और रेवाड़ी से हिसार और फाजिलका जिला फिरोजपुर तक का क्षेत्र था। सरन ने सोचा, वह दिल्ली या दिल्ली के आस-पास के किसी स्टेशन पर नियुक्ति करवा लेगा। दूसरे दिन ही उसे बंबई से अजमेर रेलवे ट्रेनिंग स्कूल भेज दिया गया जहां उसे एक साल की ट्रेनिंग लेनी थी। पंद्रह दिन बाद उसने उषा को रेलवे की नौकरी पा लेने और ट्रेनिंग स्कूल पहुंच जाने की शुभ सूचना का पत्र लिखा, मगर उधर से एक तरह का औपचारिक सा पत्र मिला, जिसमें उसे नौकरी प्राप्त कर लेने पर किसी प्रकार का हर्ष नहीं व्यक्त किया गया था।

सरन को उषा के मुकाबले में अपनी नौकरी कई गुना अच्छी महसूस हुई और वह ट्रेनिंग पर डटा रहा। छुट्टियों में एक दो-बार वह उषा से मिलने दिल्ली भी गया, मगर हर बार उस बड़े बाप की बेटी ने उसे अपने से कम ही जाना और उसके व्यवहार में रत्ती भर भी फर्क न आया।

एक साल की ट्रेनिंग के बाद उसे रेवाड़ी जंक्शन पर नियुक्त कर दिया गया। इतने बड़े जंक्शन पर उसे बुकिंग आफिस, तार घर, पार्सल आफिस, टिकट संग्रह, ट्रेन ब्रांच और ट्रेन वर्किंग की व्यावहारिक ट्रेनिंग लेनी थी। इतने से काम सीखने के लिए दो साल तक उस स्टेशन पर उसका जाना लगभग निश्चित था। उसके बाद जहां भी स्थायी नियुक्ति होती उसे क्वार्टर जरूर मिलता। इसलिए उसने रेवाड़ी शहर में एक छोटा सा मकान किराए पर ले लिया और उषा को लेने दिल्ली पहुंच गया।

"देखो, अब मुझे रेवाड़ी में मकान भी मिल गया है। दो-ढाई साल आराम से बीत जाएंगे। उठो उषा, सामान बांधो और चलने की तैयारी करो।"

"यह कैसे हो सकता है ? मेरी यहां की पक्की नौकरी है, मां-बाप हैं, मुझे शहरी जिंदगी पसंद है, दिल्ली के मुकाबले रेवाड़ी तो एक छोटा सा गांव होगा। मैं यहां बहुत खुश हूं। तुम ही कभी-कभी आते-जाते रहना," उषा बोली।

"नहीं उषा, हमें जीवन साथ बिताना है। मुझे यह भाग-दौड़ की जिंदगी पसंद नहीं। तुम्हें वहां चलना ही होगा," सरन ने उसे समझाते हुए कहा।

"ऐसी क्या मजबूरी है कि मुझे वहां जरूर जाना ही पड़ेगा ? यहां मुझे किस चीज की कमी है ?" उषा बोली।

"मेरे साथ की," अपनी तरफ से सरन ने उसकी कमजोर नस पर हाथ रखा था, मगर यह उसकी गलतफहमी थी।

उषा बोली, "रोज-रोज का साथ भी कोई अच्छी चीज नहीं है। हम दूर होंगे तो एक-दूसरे के लिए और भी तड़प पैदा होगी।"

"अच्छा तर्क है ! उषा, मैं समझ गया हूं, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं, दिल्ली की धरती ही ऐसी है। यहीं पर श्रवण कुमार जैसे आज्ञाकारी बेटे ने अपने माता-पिता की अवज्ञा की थी। तुम यह मत समझना कि दिल्ली की हवा सिर्फ तुम्हें ही लगी है, इसका प्रभाव मुझ पर भी हुआ है। सच यह है कि अपने मन-मंदिर की देवी के लिए मैंने जिस औरत की कल्पना की थी वह तुम बिल्कुल नहीं हो। उसकी परछाई तक भी नहीं," गुस्से में सरन ने अपने दिल की सारी भड़ास निकाल दी।

तड़पकर उषा ने कहा, "अभी कुछ देर पहले जो तुम राल बहा-बहा कर मुझे रेवाड़ी चलने पर मजबूर कर रहे थे सच वह था या यह है जो तुमने अब कहा है !"

"उषा, हर किसी को सपनों की रानी कभी नसीब नहीं होती। मैंने जो वादा तुम्हारे मरते हुए दादा से किया था, मुझे उसी की चिंता है और उसी वादे के आधार पर मैं सारा जीवन तुम्हारे साथ बिता सकता हूं।"

"अभी दूध के दांत तो तुम्हारे टूटे नहीं और सपनों की रानियों की बात करते हो ! मैं औरत हूं और औरत कभी अपना इतना बड़ा अपमान बर्दाश्त नहीं

कर सकती। मैं यहीं रहूंगी, तुम्हारा बहुत दिल चाहे तो आ जाया करना। मैं घर का दरवाजा कभी तुम्हारी मुंह पर नहीं मारूंगी।'' उषा ने निर्णायक स्वर में कहा।

सरन वापस रेवाड़ी आ गया था। कभी बहुत उदास हो जाता तो तीन-चार महीने के बाद उषा के पास दिल्ली पहुंच जाता। मगर हर बार उषा का व्यवहार उसे उससे दूर करता जाता। उसकी अनुपस्थिति में कभी-कभी स्वयं उषा उसके लिए उदास हो जाती थी, मगर मुलाकात होते ही उसकी श्रेष्ठता का बोध उससे कोई न कोई ऐसी दिल टूटने वाली हरकत करवा देता जो सरन को फिर काफी समय के लिए उससे दूर कर देती। वह उसे कभी-कभार पत्र भी लिखती रहती, बुलाती भी थी, मगर फिर किसी न किसी बात से अपना और सरन का मूड खराब कर लेती।

सरन एक साल तक उषा से अलग रहा था। वह काफी दिनों के बाद दिल्ली जा रहा था। फुलेरा से आकर दिल्ली जाने वाली गाड़ी 20 डाउन में वह द्वितीय श्रेणी के डिब्बे में बैठा था। रेवाड़ी से कुछ छात्र भी छुट्टियों में घर जाने के लिए उसके साथ उसी डिब्बे में सवार हुए थे। डिब्बे में एक यूरोपीय लड़का व लड़की भी सफर कर रहे थे। रेवाड़ी के लड़के उससे बात करना चाहते थे, मगर उन्हें बात शुरू करने का बहाना नहीं मिल रहा था। कुछ लोगों को सफेद चमड़ी वालों से बात करने की हिम्मत भी नहीं होती। लड़के कालेज स्टूडेंट थे, मगर फिर भी उन्हें अपनी अंग्रेजी पर इतना भरोसा नहीं था कि बात शुरू कर सकते। उनमें से एक ने उनका अखबार उठा लिया। फिर सबने एक-एक पृष्ठ बांटकर पढ़ना शुरू किया। यूरोपीय जोड़े ने उन्हें कुछ भी नहीं कहा, मगर सरन को उनके बिना आज्ञा अखबार उठा लेने की हरकत अच्छी नहीं लगी। सरन ने जोड़े से कहा—

''ये लड़के वास्तव में आपको पसंद करते हैं। आपसे बातें करने के इच्छुक हैं।''

वे लड़के तो फिर भी उनसे बात करने की हिम्मत न कर सके क्योंकि उनकी स्कूली अंग्रेजी कालेज की चार दीवारी तक ही सीमित थी, मगर सरन की अंग्रेजी शुरू से ही बहुत अच्छी थी, इसलिए वह उनका बहुत अच्छा दोस्त बन गया। दिल्ली तक उनमें बहुत से विषयों पर विचार-विमर्श होता रहा। भारतीय संस्कृति, धर्म, रहन- सहन, इतिहास और कालों पर सरन ने उनसे खुलकर बहस की और उन्हें बहुत कुछ धनात्मक पहलुओं से आगाह किया। गढ़ी हरसुरू जंक्शन, जो गुड़गांवा स्टेशन से पहले आता है, वहां सरन ने उन्हें मिट्टी के कुल्हड़ों में चाय पिलाई। गीले कुल्हड़ों की सोंधी सुगंध में चाय का मजा दो गुना हो गया तो वे पूछने लगे कि चाय में क्या डाला गया है जो वह इतनी स्वादिष्ट बन गई है। जब सरन ने उन्हें बताया कि वह मात्र चाय है और जो चीज उन्हें स्वादिष्ट लग रही है वह सिर्फ कुल्हड़ों की गीली मिट्टी के अतिरिक्त और कुछ नहीं, तो वे बहुत

हैरान हुए। जब वे चाय खत्म कर चुके और कुल्हड़ों को संभालकर एक तरफ रखने लगे तो सरन ने उन्हें बताया कि वह इंडियन वन टाइम क्राकरी है। फिर जब उसने कुल्हड़ खिड़की से बाहर फेंका तो उसकी टूट-फूट की आवाज को उन्होंने बड़े मजे से सुना, फिर बच्चों की तरह उन्होंने भी अपने कुल्हड़ उठा-उठाकर बाहर फेंकने शुरू कर दिए और उनके जमीन से टकराकर ठीकरों के रूप में बदलने और बजने की आवाज पर खिलखिलाकर हंस दिए।

धर्म के बारे में बात करते हुए सरन ने उन्हें बताया कि पुराने समय में हिंदुओं ने अपने जीवन-काल को चार भागों में विभाजित कर रखा था। ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और संन्यास आश्रम। एक आदमी की अवस्था उस समय लगभग सौ साल होती थी। पहले पच्चीस साल उसका विद्यार्थी जीवन और नारियों से दूर रहने की अवस्था मानी गई थी।

"नारियों से दूर रहना पच्चीस साल तक ही क्यों?" दोनों ने एक साथ सवाल किया था।

"ताकि लड़के सेक्स के चक्कर में न पड़े, मात्र शिक्षा पर ही आत्मकेंद्रित हो सकें।"

"तो क्या रोटी खाने से शिक्षा पर ध्यान कम होता है?" लड़के ने सवाल किया था।

"रोटी की बात और है," सरन ने कहा था।

"भई, सेक्स भी तो एक प्रकार की भूख है। तुम भूखे को रोटी नहीं दोगे तो वह पत्ते खा लेगा, चोरी करेगा। यही बात सेक्स के मामले में भी है। उम्र के एक विशेष भाग में पहुंचने के बाद अगर उस भूख को मिटाने का इंतजाम न किया जाए तो भूखा व्यक्ति चोरी करेगा, दांव लगाएगा या पत्ते खाएगा, अर्थात गलत ढंग से पेट भर लेगा।"

"पुराने समय में लोग चार आश्रमों का सख्ती से पालन करते थे।"

"और अब?"

"अब भी होता है," सरन बोला, "कम से कम छात्र जीवन में लड़के-लड़कियों को एक-दूसरे से दूर रखा जाता है। कहीं बड़े शहरों में वे इकठ्ठे पढ़ते भी हैं तो लड़के लड़कों के साथ उठते-बैठते हैं, लड़कियां लड़कियों के साथ।"

"होता होगा, मगर वह जो भूख जाग चुकी होती है, वह दबती नहीं, और भड़कती है। गलत ढंग से बुझाई जाती है। मैंने, अपनी इस गर्लफ्रेंड की तरफ देखते हुए, यहां लोगों की नजरों में भूख ही भूख देखी है। मैंने कई भारतीय फिल्में भी देखी हैं। मुझे तो वह इसी भूख की खुराक बेचने की दुकानें महसूस हुई हैं और दुकानदार इनके इतने चालाक हैं कि बस मिठाई की दूर से खुशबू सुंघाकर ही ग्राहकों से पैसे वसूल कर लेते हैं।"

सरन ने काफी देर तक उनसे इस विषय में बातें की थीं। अपनी तरफ से उन्हें समझाने की कोशिश की थी, मगर खुद उसके अपने अंदर की आग जो उसे उषा से जुदाई के लंबे समय में दूसरी औरतों के पास लिए फिरी थी, उसे झुठला रही थी। पहले भी हर बार उषा के व्यवहार से वह सोचता था कि अब वह उसके पास कभी नहीं जाएगा। खुद उषा भी उसके साथ इस बुरी तरह पेश आती थी जैसे उसकी उसे कोई जरूरत ही नहीं, मगर कुछ ही समय बाद फिर उषा की तरफ से पत्रों का क्रम चल पड़ता था जो सरन को बांधकर दिल्ली पहुंचा देता था। बहस के लिए बहस करना सरन को बिल्कुल पसंद नहीं था। अगर उसके दिल में सचाई थी तो अभी पहले आश्रम की अवस्था से बहुत नीचे होने के बावजूद वह क्यों बेलगाम दिल्ली भागा जा रहा था ?

सरन ने बात को किसी दूसरे विषय की तरफ मोड़ दिया था, मगर अंदर ही अंदर उसे यूरोपीय लड़के की बात की सचाई कचोटे जा रही थी। उसने निश्चय कर लिया कि आज उषा के पास जाने के बजाय रात दिल्ली जंक्शन के प्रतीक्षालय में बिताएगा और सुबह रेलवे के बड़े दफ्तर में रेवाड़ी से दिल्ली अपने स्थानांतरण के लिए प्रार्थनापत्र देगा और वापस रेवाड़ी आ जाएगा।

प्रार्थनापत्र देने और दो-एक बार याद दिलाने के बाद उसे दफ्तर से स्थानांतरण आदेश मिल गया। उसे दिल्ली के सराय रोहेल्ला स्टेशन पर स्थानांतरित कर दिया गया था। वह उषा को दिल्ली में अपने साथ रखना चाहता था मगर उसके पास क्वार्टर नहीं था। सराय रोहेल्ला पर रेलवे क्वार्टर की बारी आने तक तीन वर्ष का समय लग जाता था। आस-पास पूछने पर उसे पता चला कि साथ वाले स्टेशन दिल्ली कैंट पर एक क्वार्टर खाली पड़ा है। क्वार्टर तो बिल्कुल नया और सुंदर था, मगर किसी ने भ्रम डाल दिया था कि उसमें भूतों का डेरा है। सरन ने उस भ्रम को महत्व नहीं दिया और वह क्वार्टर प्राप्त कर लिया। प्रार्थना करने पर उसका हेड-क्वार्टर भी दिल्ली कैंट कर दिया गया। अब उसे दिल्ली कैंट, पालम, बिजवासन और गुड़गांव के स्टेशनों पर किसी छुट्टी जाने वाले ए.एस.एम., बुकिंग क्लर्क, टिकट क्लक्टर, पार्सल क्लर्क, तार बाबू या ट्रेन क्लर्क की जगह काम करना पड़ता, जिससे वेतन के अलावा काफी भत्ता भी बन जाता था। करीब छह महीनों से वह उषा से नहीं मिला था। उधर उषा के पत्र पर पत्र आ रहे थे, मगर खुद जाने के बजाए वह भी उसे आकर क्वार्टर बसाने पर मजबूर कर रहा था। उसने लिखा था कि वह दिल्ली कैंट से भी आसानी से अपने काम पर आ-जा सकती है, मगर उषा उसे पास बुलाने और मां-बाप के पास रहने पर अड़ी रही थी। अपने हेडक्वार्टर दिल्ली कैंट के अलावा सरन को बाकी किसी स्टेशन पर काम करने पर भत्ता मिलता था। एक बार वह गुड़गांव किसी सहायक स्टेशन मास्टर की जगह काम करने गया तो उसे वहां तीन महीने लग गए, क्योंकि

सहायक स्टेशन मास्टर के आने के बाद बुकिंग क्लर्क छुट्टी पर चला गया और सरन को उसकी जगह काम करना पड़ा। फिर पार्सल क्लर्क और टिकट कलक्टर छुट्टी पर चले गए। ड्यूटी से खाली होकर वह दिल्ली कैंट अपने क्वार्टर पर पहुंच जाया करता था, जहां उसे हर तरह का आराम और खाना पकाने के सामान उपलब्ध थे। उन दिनों वह पार्सल क्लर्क की जगह काम कर रहा था। इसलिए काम का समय निर्धारित था। निर्धारित ड्यूटी के कारण वह रोजाना दिल्ली कैंट के लिए शाम की गाड़ी ले लेता था। गाड़ी में वह एक कोने में बैठा किताबें पढ़ता रहता था। उसे यात्रियों से वाद-विवाद या बातचीत में हिस्सा लेने का बिल्कुल शौक नहीं था। वह लाइब्रेरी से दो-तीन किताबें ले आता था। पत्रिकाएं भी खरीद लेता था, जिन्हें वह गाड़ी में पढ़ डालता था। कुछ दिनों से उसे ज्योतिष और हस्तरेखा-ज्ञान की पुस्तकें पढ़ने का चस्का लग गया था। गाड़ी के द्वितीय श्रेणी में कुछ लड़कियां भी होती थीं। दूसरे यात्रियों की उपस्थिति में या तो वे खामोश रहती थीं या आपस में आहिस्ता-आहिस्ता खुसुर-फुसर करती रहती थीं। मगर जब कभी वे सब होतीं और उनके साथ सरन अकेला होता तो वे खूब चहकतीं। अगर किसी जगह मर्द एक हो और औरतें कई हों तो वह खुलकर बोलती और शोर मचाती हैं। मगर कई मर्दों में एक औरत हो तो वे सब खामोश रहते हैं। सरन तो अत्यधिक शर्मीला था। अगर कोई लड़की उससे समय भी पूछ लेती तो शर्म से उसका चेहरा लाल हो जाता था। उसके शर्मीलेपन से लड़कियों को शह मिलती थी और वे उसे छेड़ने के लिए कोई न कोई बात उससे पूछ ही लेती थीं, मगर वह संक्षिप्त सा उत्तर देकर फिर अपनी किताबों की दुनिया में गुम हो जाता था।

एक दिन एक अध्यापिका, जो हर दिन उसी गाड़ी से दिल्ली जाती थी और कनखियों से सरन की तरफ देखती रहती थी, ने सरन को हस्तरेखा की किताब में खोया हुआ देखकर पूछा, "आप हाथ देखना भी जानते हैं?"

"हां, थोड़ा-बहुत देख लेता हूं।" उसने किताब से दृष्टि हटाते हुए कहा।

"मुझे हाथ तो खैर नहीं दिखाना, देखना यह था कि आप गूंगे तो नहीं," वह बोली।

सरन खामोशी से फिर किताब पढ़ने लगा तो एक और बोली, "शायद मौन व्रत रखते हैं ज्योतिषी जी।"

एक और बोली, "अरी मोना, इन्हें हाथ दिखा ले, शायद तेरी किस्मत संवर जाए।"

मोना ने थप्पड़ मारने के से अंदाज में हाथ लहराया, "देखिएगा, ज्योतिषी जी!"

सब खिलखिलाकर हंस पड़ीं तो मोना ने एक अदा से हथेली उसकी तरफ बढ़ा दी।

"ज्योतिषी जी, देखिए ना," एक ने विनती की, "हो सकता है, इन कर

कमलों में आपका भाग्य बंद हो।''

सरन ने किताब से नजरें हटाकर गोरी-गोरी हथेली की तरफ देखा। धन-दौलत, अवस्था—सारी रेखाएं ठीक-ठाक और स्पष्ट थीं। सरन ने उसकी हथेली को थाम लिया। पलभर वह सारी रेखाएं देखता रहा।

''खो गए, महाराज!'' एक ने टोका। सब मुस्कराई, मगर सरन तो रेखाओं में डूब गया था। सब कुछ साफ और सीधा था। इतना सुंदर हाथ, इतनी सुंदर रेखाएं—अपनी-अपनी राह जाती हुई। लंबी अवस्था, घर का सुख, पति...मगर संतान का खाना खाली था। सरन के चेहरे का रंग बदलने लगा। वह क्या बताए, क्या छिपाए! उसने नजरें उठाकर लड़की की तरफ देखा। अब वह बहुत सावधानी और शांति से अपनी रेखाओं का हाल जानने के लिए स्वयं भी अपनी हथेली की तरफ देख रही थी, जिसकी रेखाओं के जाल पर सरन की उंगलियां किसी शंटिंग इंजन की तरह आगे-पीछे घूम रही थीं।

''बताइए ना, ज्ञानी जी महाराज!'' एक ने कहा।

और सरन की जबान का ताला खुल गया। वह एक-एक बात खुलकर बताता गया। लड़कियां मुस्करातीं, खिलखिलातीं और मोना का मजाक उड़ाती रहीं। ''मगर...'' सरन रुक गया।

''क्या हुआ, महाराज?'' मोना ने चौंक कर पूछा और सरन की आंखों में आंखें डाल दीं।

कितनी गहरी आंखें थीं! सरन ने देखा, बाल, माथा, आंखें, गाल, होंठ, ठोड़ी, गर्दन, शरीर, सरापा—सरन डूबता चला गया। सरन के मस्तिष्क में घंटे बजने लगे। यही तो है वह, यही तो है वह। जैसे गाड़ी के पहिए रट लगा रहे थे। सरन के दिल का पन्ना शायद इसी नाम के लिए शादी के बावजूद अब तक सादा पड़ा था। दिल का मंदिर शायद इसी देवी को स्थापित करने के लिए अभी तक वीरान पड़ा था।

''महाराज!'' एक लड़की ने सरन की आंखों के सामने उंगलियां लहराईं।

''होश में आओ, मुनि जी!'' दूसरी ने कहा।

''होश में हूं,'' सरन बोला, ''मोना जी, मैं क्या कहूं! सब कुछ है आपके भाग्य में...''

''फिर...?''

''बस संतान...''

''क्या है?'' एक ने पूछा।

''संतान...'' सरन ने दाएं हाथ की उंगलियों को खोल कर घुमा दिया और ना के अंदाज में सिर हिला दिया।

सब उदास हो गईं। उनमें कई अभी नादान बच्चियां थीं, मगर औरत पैदा

होते ही मां की कल्पना साथ लाती है। जरा सा होश संभालते ही वह अपने छोटे बहन-भाइयों की मां बन बैठती है। अगर उसके छोटे बहन-भाई न हों तो वही प्यार वह अपने से छोटे दूसरे बच्चों या गुड़ियों पर लुटाना शुरू कर देती है। किसी नारी को यह बताना कि वह मां नहीं बन सकेगी, एक गाली से कम नहीं होता।

एक बोली, "कोई उपाय?"

सरन बोला, "बस, एक ही रास्ता है। पहली शादी टूट जाए और फिर किसी और से शादी हो।"

मोना गंभीर हो चुकी थी, मगर उसने सोचा कोई जरूरी तो नहीं कि उसके पति के हाथ पर भी संतान की रेखा न हो। इस बात ने स्वयं ही उसका मूड ठीक कर दिया। वह खिलखिला कर हंस पड़ी और सरन के हाथों से हाथ छुड़ाकर बोली, "अच्छा ज्योतिषी जी, यह बताइए, स्वयं आपके हाथों में संतान की रेखा है?"

सरन ने अपने हाथ को इधर-उधर घुमाते हुए और देखते हुए कहा, "हां, है, क्यों?"

"और यदि आपकी पत्नी के हाथ में यह रेखा न हो तो...?" मोना ने कहा।

सरन सोच में पड़ गया। मोना बोली, "शायद आप नई-नई ज्योतिष सीख रहे हैं। खैर, रहने दीजिए। यह बताइए, आप काम क्या करते हैं?"

"आपकी गाड़ी चलाता हूं।"

"धत तेरी की, फूट गई," एक ने माथे पर हाथ मारा—कोचवान है।"

मोना धीरे से बोली, "आप रेलवे में ड्राइवर हैं? मगर रंग तो आपका बहुत साफ है। ड्राइवर तो कोयला झोंकते-झोंकते स्वयं भी कोयला हो जाते हैं।"

"मैं ड्राइवरों को चलाता हूं," सरन ने कहा।

"आप पहेलियां भी पूछा करते हैं?"

"नहीं, सीधी सी बात है," सरन बोला, "गाड़ियों को लाइन क्लियर लेता देता हूं। उन्हें लाइनें एलाट करता हूं। सिग्नल डाउन और अप करवाता हूं। मैं ए.एस. एम. हूं।"

"आपका सांस तो नहीं फूल गया?" मोना ने मजाक किया, "आप केवल इतना भी तो कह सकते थे कि ए.एस.एम. हूं।"

सरन ने पहली बार हिम्मत करके कहा, "आपका ए.एस.एमों से बहुत वास्ता पड़ता है क्या?"

"बस, आज पहली बार पड़ा है," मोना बोली, "अब आजीवन ए.एस.एम. की परिभाषा नहीं भूल पाऊंगी।"

गाड़ी कैंट स्टेशन में प्रवेश कर रही थी। सब मुस्कराती हुई नीचे उतर गईं। शक्ल-सूरत सरन की बहुत अच्छी थी। साफ-दिली और भोलेपन ने एक विशेष प्रकार का आलोक उसके चेहरे पर बिखेर दिया था। एक आकर्षण, जो नारी को

उसकी तरफ खींचता था। उषा से जुदाई के लंबे समय में वह स्वयं भी कई लड़कियों की तरफ खिंचा था, मगर औरत जब किसी मर्द को अपनी ओर आकर्षित हुए देख लेती है तो उससे ही अपनी तरफ हाथ बढ़ाने की आशा रखती है। इसी बात की सरन में हिम्मत नहीं थी, जिस कारण उसकी समस्त इच्छाएं अंदर ही अंदर घुट कर दम तोड़ देती थीं। जो लड़कियां सरन की तरफ खिंची थीं वह उनका शायद केवल सामयिक प्यार था जो सरन की जवानी और सुंदरता की दौलत लूट लेने के लिए जागा था—जैसे, माल बाबू की बेटी जिसे वह अंग्रेजी पढ़ाता था खुद ही उस पर मर मिटी थी मगर मिलाप का अमृत धारा पाने के बाद फिर जी उठी थी, किंतु फिर खुद ही डर कर उससे दूर भाग गई थी इससे पहले कि कुछ और उसके अंदर न जी उठे। एक रेलवे अधिकारी की जवान पत्नी ने भी उसे रिश्वत के रूप में खाया था। वह उसे प्लेट में सजाकर और नमक-मिर्च लगाकर आहिस्ता-अहिस्ता खाती थी। वह उसके लिए बादामे रोगन, चमेली या गुलाब के फूलों से बने साबुन लाती थी और अपने हाथों से मल-मल कर नहलाती थी। उसकी मेहरबानी से वह अपनी बदली अपने मनपसंद स्टेशन पर करवा लेता था। बिजवासन गांव की नर्स ने साइकिल पर उसके आगे लिफ्ट ले-लेकर और अपना सारा बोझ उसकी छाती पर डाल-डालकर उसके अंदर के सोए हुए मर्द को जगाया था। फिर उसे साइकिल से कार पर उठा लिया गया था। यह कार वाली एक लेडी डॉक्टर थी। एक लड़की ने उसे हिसार से भिवानी आते हुए रात की गाड़ी में प्रथम श्रेणी के डब्बे में फांस लिया था। वह तो गहरी नींद में था जब उसे कोई चीज अपनी कमर में चुभी थी। आंखें खोलकर जब उसने देखा था तो सामने की सीट पर एक सुंदरी उसकी सीट पर पांव रखे बैठी थी। उसने ही अपने पांव का अंगूठा सरन की कमर में खुबोया था। सरन की आंखें खुलीं तो उसने हिम्मत करके पूछा था, "आप कहां जाएंगी?"

"जहां मौत मिले," लड़की ने उदासी से कहा था।

सरन हैरानी से उसकी तरफ देखता रह गया था।

"हां, मैं सचमुच मौत की तलाश में हूं।" उसकी आंखों में आंसू छलक आए थे। सरन ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा था। वह बहुत कीमती सलवार कमीज पहने आभूषणों से लदी थी।

"आप मेरे कपड़े और आभूषण देख रहे हैं। काश! कोई मुझसे यह सब कुछ ले ले और खुशियों के दो पल दे दे।" उसने रुआंसी आवाज में कहा था।

"आपको क्या दुख है?" सरन ने पूछा था।

"ऊपर से भली-चंगी लगती हूं, मगर अंदर से मेरा कलेजा छलनी हुआ पड़ा है। जानते हो, क्यों? मैं एक अच्छे-भले पैसे वाले की पत्नी हूं। मेरा पति सिरसा में रेलवे ड्राइवर है। ड्राइविंग एक काम है और काम कुछ घंटों का होता है। बाकी

के घंटे आदमी बाप, पति, भाई या दोस्त होता है। मगर मेरा पति चौबीस घंटे ड्राइवर है। प्रथम तो उसकी ड्यूटी के समय ही मेरी समझ में नहीं आते और जब कभी वह घर आता है तो इतना थका हुआ होता है कि आते ही बिस्तर पकड़ लेता है, जैसे लंबे समय से बीमार हो। और तो और, वह सपनों में भी रेलवे की बातें बड़बड़ाता रहता है। अपने इंजन के पीछे वह कितनी गाड़ियां खींचता है, मगर जिंदगी के इंजन के पीछे एक गाड़ी का भी उसे ज्ञान नहीं कि वह उसके साथ चल भी रही है या नहीं। शादी के पांच साल बाद भी मुझे अभी तक पता नहीं चल सका कि मैं विवाहित हूं कि नहीं। कई बार दिल चाहता है, अपना जीवन समाप्त कर दूं। यही कपड़े और जेवर दिल बहलाने के माध्यम बना रखे हैं या किसी भूखे जानवरों की तरह दूसरे के खेतों में मुंह मार लेती हूं। मैं औरत होकर अपने मुंह पर लगी कालिख का वर्णन कर रही हूं। उसके चेहरे और दिल ने मुझे कालिख ही प्रदान की है तो मैं खुद भी कभी-कभी चेहरे पर कालिख पोत लेती हूं। कितने दुख की बात है मैं औरत होकर...औरत...'' वह सिसकने लगी थी, ''इससे तो मर जाना बेहतर है।''

वह उठकर टॉयलेट में चली गई थी, शायद मुंह धोने के लिए, मगर जब वह काफी देर तक बाहर नहीं निकली तो सरन को संदेह हुआ कि कहीं वह अंदर कुछ कर न बैठे। कुछ देर बाद सरन ने धीरे से दरवाजा खटखटाया था। दोबारा जब उसने दरवाजा खटखटाने के लिए हाथ बढ़ाया था तो जरा सी दस्तक से दरवाजा खुल गया था। सरन ने उसे दिलासा देते हुए बाहर आने को कहा था, मगर उल्टा उसने सरन को अंदर खींच लिया था और उसके कंधों पर सर रखकर सिसकती रही थी, फिर भिवानी स्टेशन आते-आते तक वे डूब गए थे। सरन को आगे जाना था, मगर जब वह भिवानी स्टेशन पर उतरी तो खुश थी। उसने सरन से पता पूछा था मगर सरन ने टाल दिया था, कहा था, ''मैं रेलवे में हूं। रिलीविंग ड्यूटी में इधर-उधर भटकता रहता हूं।''

उसने सरन के हाथ वाली पत्रिका पर अपना नाम और पता लिखते हुए कहा था, ''कभी-कभी आप आते रहेंगे तो मुझे जीने का बहाना मिलता रहेगा, वर्ना मुझे आना पड़ेगा।'' वह मुस्कराई थी ''आपने अपना पता तो नहीं बताया, मगर मैंने आपके बैग से नोटकर लिया है। रेलवे वालों का पता कौन सा मुश्किल होता है?''

सरन तो उसे फिर कभी मिलने न जा सका, मगर वह खुद ही कंट्रोल फोन से उसका पता करवा कर उसके पास चारा डालने पहुंच जाती थी। दूसरे माध्यम से भी वह अपनी यौन तृप्ति करती रही थी। उषा की बेपरवाही उसे इधर-उधर लुढ़का रही थी और वह दिल को यूं बहला लेता था जैसे वह मूर्तियों को परख रहा है कि मन-मंदिर में बिठाने योग्य कौन सी है। उसका दिल उसे अपमानित भी करता था। ऐसे उल्टे-सीधे तर्क पर धिक्कारता भी था, मगर वह यूरोपीय लड़के

की बात से खुद को बहला लेता था—उसे घर में भूखा रखा जाएगा तो वह जरूर बाहर की गंदगियों से पेट भरेगा। कुछ चेहरों पर सरन दिलोजान से मोहित हुआ था, मगर उसमें साहस न होने के कारण वह दूसरों की झोलियों में जा पड़े थे।

9

मोना को देखते ही सरन को लगा था जैसे वह अब तक इसी चेहरे की तलाश में भटक रहा था। ऐसी ही लड़की को अपने मन-मंदिर में बिठाने के लिए वह भटकता रहा था। संपूर्णता का यही रूप था जिसे उसके मस्तिष्क की सारी सोचों ने तराशा था। वह रोज उसे मिलती भी थी। आते-जाते कई बार उनका सामना होता था, मगर वह उससे बात करने का साहस नहीं जुटा पाता था। वह रोज सवेरे डीजल से आकर उसके दफ्तर से बाहर पड़ी बेंच पर बैठती थी और 19 अप गाड़ी का इंतजार करती थी। कभी-कभी समय मिलाने के बहाने वह उसके दफ्तर के अंदर भी आ जाती थी और गाड़ी का समय पूछने अंदर आने का एक सुंदर बहाना था जो वह प्रायः इस्तेमाल करती थी। स्टाफ के लोगों ने संकेत से और मजाक में सरन से कहा भी था कि जब वह ड्यूटी पर नहीं होता तो वह अंदर आना तो दूर बाहर वाले बेंच पर भी नहीं बैठती, बल्कि दूर प्लेटफार्म के किसी और बेंच पर बैठी कोई किताब पढ़ती रहती है।

सरन से बात करते हुए उसके होठों पर मोनालिजाई मुस्कराहट खिल उठती थी, गाल और आंखें बोलती महसूस होती थीं। दिल्ली कैंट स्टेशन पर सरन की आठ घंटे की शिफ्ट ड्यूटी थी। सुबह छह से दोपहर दो बजे तक, दोपहर दो बजे से रात दस बजे तक, रात दस बजे से सुबह छह बजे तक, जो हर सप्ताह बाद क्रमशः बदलती थी। सुबह की शिफ्ट में सप्ताह भर रोज उसे मोना के दर्शन हो जाते थे। यह कैसी देवी थी जो खुद ही मंदिर आती थी और उसको खुद ही वीरान कर जाती थी! मगर दोष उसका नहीं था, सरन की शिफ्ट ड्यूटी का था। सरन सोचता, वह ड्यूटी पर खामखाह आरोप लगाता है, दोष स्वयं उसका अपना है। वह तो हर बार उसके दरवाजे पर आती है। गाड़ी में, उसके साथ खुल भी चुकी है। अब उसे खुद उससे बाहर कहीं और मिलना चाहिए, तभी बात खुलकर हो सकेगी। प्रेम का प्रस्ताव रखना मर्द का काम है और वही आगे बढ़ने से कतरा रहा है। वह अगर उसकी मार्निंग शिफ्ट में सातों दिन किसी न किसी बहाने उसके समीप आती है तो क्या बाकी दिनों में उसे उसके समीप नहीं जाना चाहिए? वैसे भी उसे अगर मोना से मिलना है और कोई बात करनी है तो उचित स्थान कहीं बाहर ही हो सकता है।

स्टेशन पर तो वह उसका और अपना तमाशा बनाकर रख देगा।

सरन कई दिनों तक सोचता रहा कि वह उसे कहां मिले। मिले तो क्या कहे, कैसे कहे, जाने उसका व्यवहार क्या होगा, जाने वह उसके साथ कैसे पेश आएगी? वह जितना सोचता गया, अपने विचारों में उलझता गया। हर सवाल का जवाब उसे डराता और उसके जवाब के आगे जवाब प्रस्तुत करने में उसका मस्तिष्क खुद को बेबस पाता। आखिर उसने सोचा, वह उससे ऐसे मिले जैसे मिला नहीं, केवल टकरा गया है। हर टक्कर के बाद मस्तिष्क बड़ी तेजी से अपने आप उचित रास्ता तलाश कर लिया करता है।

ड्यूटी से खाली होकर उसने सारा प्लेटफार्म देख डाला, मगर उसे मोना कहीं नजर नहीं आई। फिर वह उसे 19 अप में देखने के लिए रुक गया। ट्रेन आई तो वह एक सिरे से दूसरे सिरे तक सारे डिब्बों में झांकता गया। भांति-भांति के यात्रियों को देखना भी समय काटने का एक श्रेष्ठ उपाय है। हर यात्री अपने रंग-ढंग, पहनावे और बोल-चाल से एक अलग दुनिया की रूपरेखा अपने अंदर लिए होता है। इंसानी चेहरों के विभिन्न रूप और अभिनय देखने के लिए रेलवे प्लेटफार्म या ट्रेन एक उत्तम मंच है। इस मंच पर महान हस्तियों, पवित्र चेहरों, कुशल नेताओं, सदाचारी इंसानों के साथ-साथ गुंडों, बदमाशों, जेबकतरों, उठाईगीरों को भी देखने के अवसर प्राप्त होते रहते हैं। हर रुचि के आदमी को अपने रुचि का सामान यदि प्राप्त हो सकता है तो वह जगह रेलवे प्लेटफार्म है। वैसे कहने को तो हवाई अड्डों पर भी हर प्रकार के यात्री एकत्र होते रहते हैं, मगर वे तस्वीर का केवल एक पक्ष प्रस्तुत करते हैं, जिंदगी की तस्वीर का सिर्फ ऊपरी पक्ष। ऊपर जहां चमक-दमक और मुलम्मा होता है और अंदर जहां खालीपन होता है, कोई एहसास, कोई भावना वहां मौजूद नहीं होती। एक भागदौड़ होती है जैसे चोर के पीछे चोर भाग रहा हो।

रेलवे के कई कर्मचारी अपनी आठ घंटे की ड्यूटी और लगभग इतनी ही नींद के बाद शेष आठ घंटे रेलवे सीमा में ही बिता कर अपनी हर इच्छा की पूर्ति कर लेते हैं अर्थात दूसरे शब्दों, में उनका क्लब, सिनेमा, ऐयाशी और मनोरंजन का अड्डा प्लेटफार्म ही रहता है। रेवाड़ी-दिल्ली सेक्शन पर अपनी ड्यूटी देते हुए और इधर-उधर आते-जाते एक टेढ़े-मेढ़े गार्ड से प्रायः सरन का वास्ता पड़ता रहता था। ऊंट के कलों का टेढ़ापन ऐसे ही बदनाम है। गार्ड साहब की कलें भी टेढ़ी और विचार भी टेढ़ा, ऐसा कि बस देखते जाओ कि अल्लाह मियां ने ऐसा नमूना गढ़ कर अपना क्या कमाल दिखाना चाहा है। सरन को या किसी और कर्मचारी को अगर दिल्ली या रेवाड़ी जाना होता और गाड़ी में ज्यादा भीड़ होने की वजह से कहीं जगह न मिल पाती तो वे लोग गार्ड के डिब्बे में बैठ जाते और गार्ड लोग भी गप-शप और साथ के लिए उनका सहर्ष स्वागत करते। इधर टेढ़े साहब कभी तो इतनी उदारता से यात्रा करने वाले सारे कर्मचारियों को बुला-बुलाकर अपने पास

बिठाते जाते कि उनका डिब्बा भर जाता और स्वयं उन्हें सारे रास्ते खड़े होकर यात्रा करनी पड़ती। मगर कभी वह किसी का भी अंदर बैठना बर्दाश्त न करते और उनका डिब्बा सारे सेक्शन पर खाली रहता। उनके डिब्बे को खाली देखकर रेलवे वाले खुद ही इधर-उधर दूसरे डिब्बों में टिक जाते। सेक्शन का हर कर्मचारी जानता था कि गार्ड-ब्रेक के साथ वाले महिला डिब्बे में जरूर आज कोई विशेष सवारी है। उस विशेष सवारी की पहचान खुद टेढ़े साहब की नजरें और उनकी हर स्टेशन पर डिब्बे के सामने उपस्थिति कर देती। टेढ़े साहब यात्रा के मध्य उस चेहरे को देखने के लिए इतने बेचैन हो जाते कि अपने और महिला डिब्बे की बीच की लकड़ी की दीवार में चाकू की नोक से छोटा सा छेद करके उस पर आंख जमाए रखते। अगर महिला डिब्बा और उनके ब्रेक के मध्य टॉयलेट होता तो वह टॉयलेट में बैठे-बैठे छेद बनाकर उस पर आंख टिकाए, टॉयलेट की दुर्गंध को सुगंध समझते हुए अपनी यात्रा का सारा समय उसी में बिता देते। अगर महिलाओं के डिब्बे के टॉयलेट और उनके ब्रेक की टॉयलेट की दीवार संयुक्त होती और उधर से अंदर कोई जवान औरत आ जाती तो वह स्वर्गपुरी के दर्शन में इतने खो जाते कि उन्हें पता ही न चलता कि कब अगला स्टेशन आ गया और जब ड्राइवर बार-बार सीटी बजाकर उनका ध्यान चलने की आज्ञा की ओर आकर्षित करता तो वह बाहर आते और बड़बड़ाते हुए उसे चलने के लिए हरी झंडी दिखा देते। सैद्धांतिक रूप से और स्वाभाविक रूप से गाड़ी के स्टेशन से निकल आने पर गार्ड को दोबारा ड्राइवर को झंडी दिखानी चाहिए। मगर वह गाड़ी के चलते ही तुरंत टॉयलेट में दर्शन करने पहुंच जाते और ड्राइवर के सीटी देने पर भी दोबारा हरी झंडी न दिखाते। ड्राइवर फायरमैन से हंस कर कहता, टेढ़े साहब अपने स्वर्ग में डूबे पड़े हैं। और वह खुद ही उनकी ब्रेक के साइड लैंप को देखकर निश्चिंत हो जाता कि गाड़ी पूर्ण और ठीक-ठाक उनके पीछे आ रही है।

अगर टेढ़े साहब प्लेटफार्म पर आती किसी औरत को देख लेते, शर्त यह है वह सुंदर हो या कम से कम जवान तो जरूर हो, तो चलती गाड़ी को रोकने के लिए तुरंत लाल झंडी दिखाने या वैक्यूम गिराने से भी न चूकते और उस औरत को सवार कराकर ही गाड़ी को चलने देते। आखिर उनके अभ्यास ने उनके हजार टेढ़ेपन, कुरूपता और बुढ़ापे के बावजूद उनकी इच्छापूर्ति रेलवे प्लेटफार्म से हो गई और जब वह रिटायर हुए तो उनके पहलू में एक बीस वर्षीय सुंदरी भी थी। यह दूसरी बात है कि वह सुंदरी और गार्ड साहब की पेंशन की सारी राशि दो ही साल बाद एक नौजवान के पहलू और जेब में जा चुके थे।

जब गाड़ी चली तो अचानक उसे एक डिब्बे में मोना नजर आ गई। वह लपक कर उस डिब्बे में सवार हो गया। यात्रियों की भीड़-भाड़ में वह मोना तक नहीं पहुंच सका। पहुंच भी जाता तो इतने लोगों में दिल की बात उससे कैसे कहता?

गुडगांव प्लेटफार्म पर मोना के पास से गुजरा तो धीरे से बोला, ''आप वेटिंग रूम में पहुंचें। मैं अभी आता हूं। आपसे एक बात करनी है।''

वह उसे जवाब देने का कोई मौका दिए बिना आगे बढ़ गया। स्टेशन पर दो गाड़ियों की क्रासिंग के कारण काफी भीड़ थी, इसलिए किसी ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया था। तेज कदमों से आगे निकलकर उसने देखा, फर्स्ट क्लास वेटिंग रूम बंद पड़ा था। रिलीविंग ड्यूटी में कई बार उसने वहां स्टेशन मास्टर के रूप में काम किया था। उसने चुपचाप बिना किसी से पूछे सहायक स्टेशन मास्टर के मेज की दराज से चाबी निकाली और वेटिंग रूम का ताला खोल दिया। थोड़ी देर बाद मोना भी पहुंच गई। उसने पूछती हुई निगाहों से सरन की तरफ देखा। वह बोला, ''आप से कुछ कहना था।''

''कहिए।''

''दरअसल मैं चाहता था कि... हम मिलते रहा करें।''

''वह किसलिए?''

''ताकि हम एक-दूसरे को जान सकें।''

''वह किसलिए?''

''ताकि हम एक-दूसरे के पास रह सकें। अब आप 'वह किसलिए' मत कहिएगा और अगर आपको कहना ही है तो जवाब भी सुन लीजिए। वास्तव में मैं आपको...''

''आप बहुत गहरी नींद सोते हैं।''

सरन ने भोलेपन से कहा, ''मैं समझा नहीं।''

''आपका सारा स्टाफ समझ चुका है।''

''हां, मुझे पता लगा है कि आप प्रायः आती रही हैं।''

''और आप जाते रहे हैं।''

''मगर अब तो आपके पीछे यहां तक चला आया हूं। सुबह का भूला सही, शाम को तो घर आ गया हूं। मोना, अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा।'' उसने मोना का हाथ थाम लिया।

मोना ने हाथ नहीं छुड़ाया मगर बहुत धीमी आवाज में बोली, ''बहुत कुछ बिगड़ चुका है, मेरी शादी हो रही है।''

''शादी, कहां?''

''कहीं भी, क्या फर्क पड़ता है?''

'मुझे फर्क पड़ता है,'' सरन बोला।

''तो मुझे कहीं ले चलो, अपने आप शादी रुक जाएगी,'' मोना ने सुझाव रखा, ''इसके बावजूद मैं तुमसे शादी करूंगी, इसका भी कोई वादा नहीं करती। इस समय तो केवल इस मुसीबत से बचना चाहती हूं।''

"मैं तुम्हें कहां ले जाऊं, मुझे नहीं मालूम," सरन ने सोचते हुए कहा।

"मुझे पता है कि तुम मुझे कहीं नहीं ले जा सकते और यह भी मैं जानती हूं कि तुम..."

"कि तुम विवाहित हो," सरन ने दिल में सोचा और कांप कर रह गया, मगर वह बोली, "कि तुम कायर हो।"

सरन ने संतोष का सांस लिया और बोला, "मैं ऐसी ड्यूटी पर हूं कि कहीं गायब नहीं हो सकता और छुट्टी भी जल्दी नहीं मिल सकती।"

"तो ठीक है, रहने दो," मोना ने दरवाजे की तरफ कदम बढ़ाते हुए कहा, "अगले मंगलवार को मेरी शादी है," फिर वह व्यंग्य से बोली, "दूल्हे के साथ बराती बनकर नाचते हुए मेरे द्वार तो आ सकते हो ? कार्ड भिजवा दूंगी।"

वह तेज कदम बढ़ाती बाहर निकल गई। सरन सोचता रह गया, फिर टू बी डी आर ट्रेन से वापस दिल्ली कैंट पहुंच गया। कुछ दिनों तक वह उदास रहा। उसे बात-बात पर गुस्सा आने लगा था। खामखाह उसका दिल चाहता कि वह किसी से भिड़ जाए, नहीं तो दीवार से टक्कर मार ले। उसे अपने आठ वर्ष के लंबे विवाहित समय पर पछतावा आ रहा था जो उसने अविवाहितों से भी बुरा गुजारा था। काश! उसने उस बूढ़े पर तरस न खाया होता तो आज उसके जीवन का इतना बड़ा हिस्सा रेगिस्तान न होता।

आखिर उसे टक्कर मारने का बहाना हाथ लग ही गया। वह स्टेशन पर उषा के दफ्तर टेलिफोन करने गया था। उसे फोन पर रामदयाल बातें करता मिल गया। वह एक कुर्सी पर एक तरफ बैठकर फोन के खाली होने का इंतजार करने लगा। रामदयाल पास की एक छोटी सी बस्ती नांगलराया का रहने वाला था और सेंट्रल आर्डिनेंस डिपो में काम करता था, मगर इसके अलावा वह उस क्षेत्र का 'दयाला' के नाम से मशहूर बदमाश भी था, जिससे रेलवे स्टाफ बिगाड़ नहीं पैदा करना चाहता था, इसलिए वह कभी-कभी स्टेशन पर आकर लोकल फोन का प्रयोग कर लिया करता था। वह सरन की ड्यूटी में भी फोन करने आता था, परंतु सरन के साथ रौब से नहीं नर्मी से बात करता था। और कभी-कभी तो अनुनय-विनय भी करने लगता था, इसलिए सरन ने भी कभी उसे छेड़ने या दुश्मनी मोल लेने की आवश्यकता महसूस नहीं की थी। रामदयाल कोई पंद्रह-बीस मिनट तक लगातार बातें करता रहा। तब एक नया रिलिविंग सहायक स्टेशन मास्टर ड्यूटी पर था जो दयाले को नहीं जानता था। वह किसी ट्रेन को रवाना करने बाहर प्लेटफार्म पर गया हुआ था। वापस आया और एक अजनबी को फोन पर लंबी बातचीत में व्यस्त पाया तो बोला, "साहब आप कौन हैं, फोन बंद कीजिए। आई एम वेटिंग फॉर एन अर्जेंट कॉल।"

रामदयाल सुनी-अनसुनी करता अपनी बातों में व्यस्त रहा। सहायक स्टेशन

मास्टर बोला, "मिस्टर आप कौन हैं, सुनते क्यों नहीं?"

दयाले ने चोंगे पर हाथ रखकर आवाज को पास होने से रोकते हुए कहा, "आप नहीं जानते कि मैं कौन हूं, मगर दिल्ली कैंट का सारा स्टाफ और इस क्षेत्र का बच्चा-बच्चा दयाले को जानता है।"

उसने फिर बात शुरू कर दी, "मैं मंत्री जी के लिए दस बोतलों का इंतजाम कर रहा हूं—जी हां, जी हां—श्रेष्ठ व्हिस्की होगी—जी हां, कल ही पहुंच जाएगी।"

सहायक स्टेशन मास्टर पहले तो किसी मंत्री के बारे में सुनकर घबराया, मगर राम दयाल ने फिर लंबी बातों का क्रम शुरू कर दिया तो उसने हिम्मत करके राम दयाल का हाथ रोक दिया, "आप फोन बंद कीजिए, मुझे हेडक्वार्टर आवश्यक सूचनाएं देनी हैं।"

दयाले ने सहायक स्टेशन मास्टर का हाथ झटक दिया और बोला, "अब आपने मुझे छुआ तो आपका हाथ तोड़ दूंगा।"

सरन प्रतीक्षा करते-करते उकता चुका था। न जाने एकदम उसे क्या हुआ कि उसका पारा तुरंत अपनी आखिरी डिग्री तक पहुंच गया। उसने एक झटके से चोंगा दयाले के हाथ से झटक लिया और दूसरे हाथ में रजिस्टर पर रेखाएं खींचने वाला रूल पकड़कर गरजा, "अब अगर तुमने फोन को हाथ लगाया तो मैं तुम्हारा हाथ तोड़ दूंगा।"

दयाला फोन छोड़कर एक तरफ को हो गया, "सरन साहब, आप अपने दफ्तर में खड़े गरज रहे हैं। बाहर आएं तो बताऊं कौन किसका हाथ तोड़ सकता है।"

सरन बाहर निकलता हुआ गरजकर बोला, "यह प्लेटफार्म तो मेरे बाप की जायदाद है। यहां तो मैं तुम्हारा सिर गाड़ी के नीचे दूंगा और एक्सीडेंट रिपोर्ट भी नहीं बनाऊंगा। मगर उधर नांगलराया तो तुम्हारा क्षेत्र है, मैं तुम्हारे साथ उधर चल रहा हूं। देखता हूं, तुम मेरा क्या कर लोगे?"

सरन सचमुच स्टेशन के पश्चिमी कोने में बढ़ने लगा। दयाल भी बक-बक करता उसके साथ चलने लगा। बाहर गेट के पास ही बाईं तरफ एक हलवाई की दुकान थी। जब वे उसके पास से गुजरे तो दयाल रुक गया, बोला, "सरन बाबू, आपसे मेरा कोई झगड़ा नहीं। मैं आपका शुरू ही से सम्मान करता आया हूं," फिर उसने हलवाई से कहा, "लाला, दो गर्म-गर्म चाय बनाना और एक पाव बर्फी भी तौल देना।"

उसने सरन की बांह पकड़कर अंदर पड़ी कुर्सियों की तरफ खींचना शुरू कर दिया, मगर सरन उससे बांह छुड़ाकर स्टेशन की तरफ लौट गया। सहायक स्टेशन मास्टर कार्यालय में स्टेशन स्टाफ के साथ खड़ा कानाफूसी कर रहा था। सरन बोला, "आपलोग इतने हो और एक आदमी के सामने आप सबकी जान निकल जाती है। अगर आप सब उसे एक-एक थप्पड़ भी मार दें तो उसका मुंह

घूमकर पीठ की तरफ हो जाएगा।"

श्रीनिवास ट्रेन क्लर्क बोला, "सरन साहब, आपने तो झगड़ा मोल ले लिया, मगर आपके दूसरे साथी स्टेशन मास्टर उसकी जरा सी धमकी पर उसके आगे हाथ जोड़ने लगते हैं और चाय या कोका कोला मंगवाने लगते हैं।"

बात आई-गई हो गई। सरन ने चोंगा उठाया और उषा को फोन करने लगा, "उषा, मैं कल शाम को पहुंच रहा हूं, घर पर ही रहना।"

उषा बोली, "नहीं, कल तो मैं एक सहेली के साथ पिक्चर देखने जा रही हूं।"

"कल मेरा रेस्ट है, कल मैं जरूर पहुंचूंगा," और उसने फोन बंद कर दिया।'

दूसरे दिन शाम को जब वह अपनी ससुराल पहुंचा तो उषा कपड़े बदले बाहर जाने को तैयार खड़ी थी। वह बोला, "मैंने कहा था ना कि आज मेरा रेस्ट है, तुम कहीं न जाना।" उसकी आवाज में एक दबदबे की खनक थी जिसे उषा ने भी महसूस कर लिया। वह बोली, "प्रोग्राम मैंने पहले तय कर रखा था।"

"ओके, तो मैं भी तुम्हारे साथ चल रहा हूं।"

"मेरे साथ मेरी सहेली जो जा रही है।"

"तो मैं उसे कब रोक रहा हूं और न ही मेरा उसे खा जाने का इरादा है।"

वह जबरदस्ती उसके साथ चल पड़ा। उषा की सहेली भी उन्हें मोती सिनेमा के बाहर मिल गई। उन्होंने राजकपूर की फिल्म 'संगम' देखी। रात बारह बजे वह और उषा वापस घर पहुंचे तो उनके लिए एक अलग कमरे में दो बिस्तर लगे हुए थे। सोते हुए कुछ देर बाद उसने उषा की कमर पर हाथ रखा, मगर वह उसकी तरफ पीठ किए लेटी रही। सरन पर फिल्म का मूड सवार हो रहा था। चहक कर बोला, "क्यों, हो जाए, फिर दाने ऊपर दाना।"

वह खामोश पड़ी रही तो सरन बोला, "उषा, जानती हो, हम कितने समय बाद मिल रहे हैं?"

वह कुछ देर खामोश रही, फिर उसकी तरफ घूमकर बोली, "इसका जिम्मेदार कौन है?"

सरन ने उसकी बात का जवाब दूसरी तरह दिया, "सोचो उषा, दस महीने में कितने सप्ताह, कितने दिन और कितने क्षण होते हैं।"

उषा को अपने सवाल का जवाब नहीं मिला था और सरन भी अपना मूड खराब करना नहीं चाहता था। उसकी खामोशी की उपेक्षा करते हुए बोला, "दस महीने में तो औरतें एक संपूर्ण इंसान बनाकर दे देती हैं।"

सुबह जब उषा दफ्तर जाने लगी तो सरन बोला, "मेरी कल सुबह छह बजे

ड्यूटी है। रात यहीं रहूंगा। कल सुबह पहली गाड़ी से चला जाऊंगा। तुम आज शाम को जल्दी आ जाना।''

तब तो उषा खामोश रही, मगर दफ्तर जाकर उसने फोन से दुकान पर कहलवा दिया कि वह शाम को अपनी सहेली के पास रहेगी और रात का शो देखने के बाद उसी के घर सो जाएगी। सरन को बहुत गुस्सा आया। उसने सोचा, अब लगभग एक साल या शायद उससे अधिक अवधि का अलगाव और रहेगा। शाम होते-होते उसके गुस्से का पारा चढ़ने लगा और वह मजबूर व बेबस होकर रात की बीकानेर मेल से दिल्ली कैंट लौट गया।

अब सरन रोज सुबह 19 अप और डीजल देखने लगा, मगर उसे मोना कहीं नजर नहीं आई। फिर उसे याद आया, मोना ने कहा था कि एक सप्ताह बाद वह पराई हो जाएगी। उसकी शादी में अब दो दिन रहते हैं। उसने सोचा—क्या वह अभी तक नौकरी करती फिर रही होगी, उसे जरूर घर में बिठा लिया गया होगा। उसने एक दो बार उषा को फोन किया, मगर वह टाल गई। एक बार वह अचानक पहुंच गया तो यह पता लगते ही बाहर-बाहर ही सहेली के घर चली गई। विवश होकर सरन गुस्से और अपने ही गर्म खून की आग में जलता-भुनता अपने अधिकारी की पत्नी के पास पहुंच गया। वह उम्र में सरन से दो साल छोटी थी, मगर लगती उससे कई साल बड़ी थी। सरन उसे दलदल समझता था, मगर जब जोहड़ में पानी सूख जाता है तो भैंसे बचे-खुचे पानी के दलदल में ही अपने आपको ठंडा कर लिया करते हैं। एक ऐसी ही मुलाकात में वह सरन से बोली, ''सरन, अगले महीने तुमलोगों की बदली हो रही है न?''

''सुना तो है,'' वह बोला।

''मैं कोशिश कर रही हूं, तुम्हें कहीं दूर न जाने दूं।''

सरन दिल्ली से दूर जाना चाहता था। वह खामोश रहा, उसकी खामोशी को वह सहमति समझकर बोली, ''ओके, आई विल सी।''

नई ट्रांसफर लिस्ट में सरन का ट्रांसफर दिल्ली कैंट के साथ वाले स्टेशन पालम पर हो गया। नए स्टेशन पर वह जल्द ही अपने साथी सहायक स्टेशन मास्टर की सुंदर पत्नी से अटक गया। दरअसल सरन और उसकी पत्नी के मिलाप के खेल में हेमनाथ स्वयं एक बहुत बड़े मोहरे का रोल अदा कर रहा था। सरन जब भी उससे मिलने जाता वह अपनी पत्नी और उसे अकेला छोड़कर खुद कई घंटों के लिए किसी बहाने से बाहर खिसक जाता। जब बात बहुत आगे बढ़ गई तो सरन ने एक दिन अपनी नई प्रेमिका से पूछ ही लिया, ''बाबू हेमनाथ हम पर बहुत भरोसा करते हैं। कभी उन्हें पता चल गया तो उनका दिल टूट जाएगा।''

''आप बहुत भोले हैं,'' वह बोली।

सरन की आंखें हैरानी से खुली रह गईं तो वह बोली, "उन्हें बाप बनने का बहुत शौक है, मगर..." उसने उंगलियां खोलकर इधर-उधर घुमा दिया, "चिंता मत करो, वह ऊपर से कभी नहीं आएंगे।"

सरन डेढ़ साल पालम रहा, मगर वहां कोई नन्हीं सी कोंपल तक न निकली तो उसने सोचा— कभी वह उंगलियां खोलकर हाथ घुमाकर कह देगी, 'सरन बाबू ...बस,' तो फिर क्या जवाब देगा।

उधर अधिकारी की पत्नी के भी उसे बुलावे आ रहे थे मगर उसी बीच उसे हिसार लाइन पर रेवाड़ी जंक्शन से दूसरे स्टेशन कोसली भेज दिया गया। जब वह रीलीव होकर उषा, बाबू हेमनाथ की पत्नी आशा और दलदली दुनिया से दूर जाने लगा तो मिसेज हेमनाथ ने उसे बुलाया, बोली, "बदली करा ली, मुझे बताया तक नहीं?"

"क्या लाभ?" वह बोला।

"खैर तुम्हारी इच्छा," वह बोली, "मुझसे पूछ तो लेते—अब कोई संदेह दिल में लेकर मत जाना। बंजर जमीन मैं खुद हूं।"

10

कोसली एक छोटा सा स्टेशन था, मगर वहां उसके पास के दूसरे स्टेशनों वाली बात नहीं थी जहां दूर-दूर तक मानव का निशान तक नजर नहीं आता था, बल्कि इस स्टेशन से बाहर निकलते ही छोटा सा बाजार शुरू हो जाता था जिसमें मकान बनाने के सामान, लकड़ियां, दरवाजे, बल्लियां, पत्थरों आदि की दुकानें थीं। एक मिट्टी के तेल की दुकान थी। कुछ आस-पास के गांवों से अनाज खरीद कर रेल द्वारा आगे भेजने वाले सेठों के गोदाम थे। चार-पांच चाय की दुकानें भी थीं। स्टेशन के हर तरफ निर्माण का काम जारी था और नई-नई दुकानें खुल रही थीं। दो सराय थीं, दुकानदारों के घर थे। यह छोटा सा बाजार दूर व पास के लगभग बीस गांवों की हर प्रकार की खरीदारी का केंद्र था। इसलिए वहां काफी रौनक रहती थी। सरन को उस स्टेशन पर जो कठिनाई आई वह उसके लिए क्वार्टर का न होना था। वास्तव में एक सहायक स्टेशन मास्टर लंबी बीमारी की छुट्टी पर था और उसका क्वार्टर बंद पड़ा था। इस बात को गुप्त रखकर एक सहायक स्टेशन मास्टर ने उससे बदली ली थी। विवश होकर उसे स्टेशन के ही एक कमरे में रहना पड़ गया जो एक ही समय में स्टेशन मास्टर का कार्यालय, माल गोदाम, स्टोर और सरन का निवास-स्थान था। यहां सरन को खाना पकाने, रहने और नहाने-धोने

में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता, मगर बिहारी लाल स्टेशन मास्टर का व्यवहार मित्रवत और सराहनीय था। उसका दूसरा साथी सहायक स्टेशन मास्टर अपनी एक अलग दुनिया में मस्त रहता था, न किसी के लेने में न देने में, न दोस्ती न दुश्मनी। बस अपनी आठ घंटे की ड्यूटी का पाबंद, उसके बाद तू कौन और मैं कौन। वह अपने ही क्वार्टर की छोटी सी दुनिया में बंद रहता है। शायद बाबू बिहारी लाल के सरन के बहुत निकट आ जाने के कारण रामभज सहायक स्टेशन मास्टर की लापरवाही और अपनी ही दुनिया में मस्त रहने की आदत रही हो। ड्यूटी का चार्ज लेते समय रामभज से नमस्कार आदि हो जाती या ट्यूब में इतना नगद है, अमुक ट्रेन को लाइन क्लियर दे दिया है, अमुक ट्रेन से इतने पार्सल उतरेंगे या इतने लोड होंगे आदि। रूखी-सूखी दफ्तरी कार्रवाई के अलावा हर बात में रामभज का सरन और स्टेशन मास्टर से दूर रहना, सरन और बड़े बाबू बिहारी लाल को दिन-प्रतिदिन पास ला रहा था। अब वे शाम को खेतों की ओर लाइन के साथ दूर-दूर तक सैर को निकल जाते। कभी-कभी नाहड़ गांव की तरफ जाने वाली छोटी सी सड़क पकड़ लेते तो लंबी सैर हो जाती।

सरन जब बाबू बिहारी लाल को 'बड़े बाबू जी' कहकर बुलाता तो उन्हें बहुत अच्छा लगता जैसे वह उन्हें बड़े बाबूजी न कह रहा हो, पिता जी कह रहा हो। सरन के साथ सैर के मध्य जब बाबू बिहारी लाल ने उससे कहा कि वह उसे पास ही कोई मकान किराए पर दिलवा देंगे और वह अपने परिवार को ले आए तो सरन ने उन्हें अपनी सारी स्थिति बता दी। मां-बाप का खो जाना, बहन का लापता होना, अपनी शादी की घटना, अपनी पत्नी का आचार-व्यवहार, उसका उसे अपने बराबर न समझने का घमंड आदि।

धीरे-धीरे बाबू बिहारी लाल के दिल में सरन के लिए निश्छलता और प्यार जागने लगा और उनका व्यवहार सरन के लिए पितृवत और स्नेहपूर्ण होता गया।

"बड़े बाबूजी, दिल चाहता है कि यहां से बदली करवा लूं।"

"क्यों, यहां तुम्हें क्या कष्ट है?" बड़े बाबू ने पूछा।

"आवास की, यह तो कोई रहने का ढंग न हुआ," सरन बोला।

"तुम्हें कहा तो है कि मकान किराए पर दिलवा देता हूं। नठीड़ा गांव पास है, वहां मेरी जान-पहचान भी है," बाबू बिहारी लाल बोला।

"नहीं, वह भी दूर है। मुझे तो डर लगता है, रात बारह बजे ड्यूटी से ऑफ होकर घर कैसे जाऊंगा?"

"जैसे गांव के और लोग आते-जाते हैं।"

"नहीं बड़े बाबू जी, हमारी पब्लिक ड्यूटी है। सौ लोग खुश, सौ नाराज। मैं शेर-चीते से नहीं डरता। मानव से भय लगता है, जो अंधेरे में और पीछे से वार करता है।"

बाबू बिहारी लाल तब तो खामोश रहे, मगर कुछ दिनों बाद जब वे शाम

की सैर से लौटे तो सरन से बोले, "सरन, आज खाना मेरे यहां खा लेना। तुम्हारी आंटी खाना तैयार कर रही होगी। मैं कुछ देर बाद किसी को भेज कर तुम्हें बुला लूंगा।"

सरन ने देखा, बाबू बिहारी लाल का क्वार्टर दो कमरों का छोटा सा मकान था। बाहरी तरफ छोटा सा बरामदा, जिसके एक कोने में छोटा सा किचन बना हुआ था, दूसरे कोने में एक छोटी सी कोठरी का विस्तार किया गया था और उसके बाद चारदीवारी में छोटा सा आंगन था। एक कमरा बाबू बिहारी लाल और उसकी पत्नी के लिए था, दूसरा बैठक जैसा कमरा था। छोटा कोठरी अपनी बहू के आने के बाद उन्होंने स्वयं ही बनाई थी। यह एक छोटा सा घर था जैसा साधारण रेलवे बाबुओं का होता है। बैठक में एक तरफ एक पलंग बिछा था, जिस पर आज एक नई चादर बिछाई गई थी। दूसरी तरफ तीन कुर्सियों का एक सोफा था। बीच में मेज पर फूलपात्र और उसमें कागजी फूलों का एक गुलदस्ता, सामने रेलवे की तीन कुर्सियां, शेल्फ पर कुछ मिली-जुली किताबें, जिसमें धार्मिक पुस्तकें थीं और स्कूली किताबें भी। उनके साथ एक शीशे के फ्रेम में काढ़ा हुआ एक सफेद खरगोश कैद पड़ा था, जिसके मुंह के पास हरी-भरी घास के कुछ टुकड़े काढ़े हुए थे। दीवार पर देवी- देवताओं के चित्रों के साथ एक-दो फिल्मी चित्र भी एक ही लाइन में लगे हुए थे। एक चित्र में हनुमान संजीवनी बूटी का पहाड़ हाथ पर उठाए उड़ आ रहे थे तो दूसरी में फिल्म अभिनेत्री नरगिस अपने मोतियों जैसे दांतों की झालर से अपनी मासूम हंसी का प्रदर्शन कर रही थी। पुराने वर्षों के कलैंडर भी अभी तक दीवारों पर से नहीं हटाए गए थे। शायद इन धार्मिक चित्रों को हटा इन धार्मिक लोगों की समस्या रही हो या श्रद्धा से उन्होंने उन्हें लगाए रखना ही ज्यादा पसंद किया हो। उनसे घर की सज्जा भी एक उद्देश्य हो सकता है।

सरन अभी कमरे का निरीक्षण कर ही रहा था कि साथ वाले दरवाजे से एक लड़की प्याजी रंग की सूती साड़ी में, घूंघट निकाले, हाथों में खाने की दो थालियां लिए अंदर आती दिखाई दी। उसने थालियां सरन और बड़े बाबू के आगे मेज पर रख दीं और बाबूजी के किसी आदेश की प्रतीक्षा में पल भर खड़ी रही।

"बेटी, यह अपने सरन बाबू हैं, नए सहायक स्टेशन मास्टर।" लड़की ने नमस्ते के लिए हाथ जोड़ दिए। सरन ने भी हाथ जोड़कर नमस्ते कहा।

"बेटी, सरन बाबू मेरे बेटे के बराबर हैं। हरबंस के भाई ही समझो।"

लड़की अब भी घूंघट निकाले खड़ी थी। बाबू बिहारी लाल बोले, "बेटा, इस हिसाब से ये घर के आदमी हुए। इनसे क्या पर्दा?"

लड़की ने धीरे से घूंघट पीछे हटा लिया। सरन ने देखा तो देखता ही रह गया। यह मोना थी। उसके मुंह से 'मोना तुम' निकलते-निकलते रह गया। उसका चेहरा हैरानी और जिज्ञासा का दर्पण बन गया। बाबू बिहारी लाल की अनुभवी

आंखों में उस दर्पण ने एक बिंब देखने की कोशिश की तो सरन को कहना पड़ा, "लगता है, मैंने इन्हें पहले भी कहीं देखा है।"

मोना की विनती करती आंखों ने सरन से कह दिया, "कुछ मत कहना कुछ मत बताना।" सरन बोला, "कुछ याद नहीं आता। शायद यह मेरी नजरों का धोखा हो।"

मोना ने संतोष की सांस ली, मगर बाबू बिहारी लाल ने टोका, "हम दिल्ली लाहोरी गेट में रहते थे। यह गुड़गांव स्कूल में पढ़ाने ट्रेन से जाती थी। शायद तुमने कभी इसे गाड़ी में देखा हो।"

सरन बोला, "हो सकता है।"

खाना खाने के बाद उनमें बातें होने लगीं। थोड़ी देर बाद बाबू बिहारी लाल की पत्नी भी उनकी बातों की साथी बन गई। जब उसे सरन की आवास की समस्या का पता चला तो वह अपने पति से बोली, "आप सरन को हरबंस का छोटा भाई कहते हैं तो फिर जब तक उसके अपने क्वार्टर का प्रबंध नहीं हो जाता, उसे हमारे पास रहने में क्या हर्ज है?"

"कोई हर्ज नहीं, भली लोक! तूने मेरे दिल की बात छीन ली है," बाबू बिहारी लाल ने कहा, "हमारा कौन सा बड़ा परिवार है, मात्र तीन ही तो जीव हैं। सरन बैठक में सो जाया करेगा। मोना का अपना छोटा सा अलग कमरा है। हरबंस ने तो हमें भुला दिया है।"

दूसरे दिन बाबू बिहारी लाल ने सरन का थोड़ा सा सामान अपने घर पर मंगवा लिया और वह उनके साथ रहने लगा। क्रय-विक्रय और खाने-पीने के सामान के लिए सरन को रेवाड़ी जाना पड़ता था। वह राशन आदि अपने ही पैसों से लाने लगा। बाबू बिहारी लाल और उसकी पत्नी, जिसे चाची कहने लगा था, के हजार कहने पर भी उसने राशन के पैसे लेने से इनकार कर दिया। राशन था ही कितना, बस कभी-कभी सब्जियां, दालें या चाय की पत्ती आदि लानी पड़ती थीं। आटा, दूध, चीनी और घी आदि का बाबू बिहारी लाल स्वयं ही प्रबंध कर लिया करते थे। घर में तीन जीव थे और इस खर्च का लगभग तीसरा या चौथा हिस्सा सरन किसी न किसी चीज की खरीद के रूप में भुगतान कर ही देता था।

पास रहने पर उसे मोना के बारे में बहुत कुछ मालूम हुआ। रही-सही कसर बाबू बिहारी लाल ने पूरी कर दी। उन्होंने अपने घर के सारे निजी मामले भी उसे बताने शुरू कर दिए। वे सरन पर इतना विश्वास करने लगे कि उन्होंने वह सब कुछ भी उसे बता दिया जो अब तक खुद मोना से भी छिपा रखा था। एक दिन सरन के साथ अकेले सैर करते हुए उसने अपने घर की सारी राम-कहानी उसे कह सुनाई।

"यह मोना जो है ना, मेरी तो यही बहू भी है, बेटी भी। मैं सियालकोट

पाकिस्तान से निकला हुआ शरणार्थी हूं। मेरी केवल एक बेटी थी जो अपने बच्चे और पति के साथ सियालकोट हमारे पास आते समय गुंडों के आतंक का शिकार हो गई। बस तभी मैंने दिल में निश्चय कर लिया कि स्वयं ऐसे किसी पागलपन का प्रदर्शन नहीं करूंगा और हो सका तो ऐसे किसी दुखी इंसान के काम आने की कोशिश करूंगा। वहां से आते हुए एक नौजवान लड़के और हमारा साथ हो गया। उसके मां-बाप हमारे ही सामने मार दिए गए थे और वह मानसिक रूप से इतना अस्वस्थ हो चुका था कि उसे अगर हम पति-पत्नी सहारा न देते तो वह जरूर किसी को मार डालता या फिर आत्महत्या कर लेता। अब इतने समय बाद अपने आपको शरणार्थी कहना और उन घटनाओं को दुहराना अच्छा नहीं लगता, इसलिए मैं संक्षिप्त में बताने की कोशिश कर रहा हूं। लड़के ने वाल्टन ट्रेनिंग स्कूल लाहौर से रेलवे गार्ड का इम्तहान पास किया हुआ था और शीघ्र ही नियुक्ति के आदेश की प्रतीक्षा कर रहा था कि यह उथल-पुथल हो गई। वह हमारे पास दो ही माह रह पाया था कि उसे मुरादाबाद जंक्शन पर नियुक्ति मिल गई, किंतु उस भले लड़के ने हमें सगे मां-बाप की तरह माना और हर तीज-त्योहार पर हमारे घर नियमित रूप से आता रहा। वह हमारे लिए उपहार आदि भी अपने बेटे की तरह लाता था। हम भी उसे अपने बच्चे की तरह प्यार करने लगे और उसके शादी-विवाह की चिंता में सगे मां-बाप की तरह डूबे रहने लगे मगर वह शुरू-शुरू में शादी के नाम से ही बिदकता था। हमने सोचा, मां-बाप की मौत ने उसे मानसिक आघात पहुंचाया है। समय हर दर्द का मरहम है। धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा। शादी-विवाह का काम भी पूर्ण हो जाएगा।

मोना की कहानी उससे बिल्कुल ही अलग है, मगर है वह भी दर्द भरी कहानी। तब हम नए-नए पाकिस्तान से दिल्ली पहुंचे थे। कश्मीरी गेट के पीछे एक मुहल्ले में मैंने एक मकान प्राप्त कर लिया था। मकान छोटा-सा था और किराया नाम मात्र था, मात्र बारह रुपए। उसके ऊपर वाले तल पर एक मुस्लिम पर्दादार परिवार रहता था। हमारे दिल में किसी के लिए बैर या दुश्मनी नहीं थी। बेटा! बैर और दुश्मनी के पेड़ पर हमेशा कडवे ही फल उगते हैं। मैंने उससे संबंध बढ़ाने की कोशिश की, मगर उन्होंने मेरे शिष्टाचार को संदेह की दृष्टि से देखा। उनका संदेह तब की स्थिति के अनुसार उचित था, इसलिए मैंने भी स्थिति के अनुकूल हो जाने की प्रतीक्षा करनी शुरू कर दी, जब हम ऊपर-नीचे वाले हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई एक जैसे हालात में एक-दूसरे के गले मिल सकेंगे, मगर मेरे सुनहरे सपने पूरे होने से पहले दिल्ली में इक्का-दुक्का घटनाएं होने लगीं। उन्हीं में से एक वारदात हमारे घर के ऊपर वाले परिवार के साथ भी हुई। ऊपर एकदम जरा सी देर के लिए चीख-पुकार हुई और फिर खामोशी छा गई, मौत की सी खामोशी। इससे पहले कि मैं ऊपर जाता और घटना जानने की कोशिश करता

या अपने पड़ोसियों के किसी काम आता, ऊपर जंगले से एक पत्थर सा हमारे आंगन में पड़े एक लंबे-चौड़े पलंग, जिस पर हमारे रात के बिस्तर, सिरहाने, रजाइयां आदि पड़ी रहती थीं, पर धड़ाम से आ गिरा। यह पत्थर एक जवान लड़की का शरीर था। रजाइयों आदि के ढेर पर गिरने के कारण उसका शरीर चोट खाने से तो बच गया, मगर उसका सिर पलंग के पाए से टकरा गया और वह बेहोश हो गई। मैंने सबसे पहले दौड़कर बाहरी दरवाजा बंद किया। उस समय मेरा मस्तिष्क बहुत तेजी से काम कर रहा था। मैं और मेरी पत्नी लड़की को उठाकर अंदर ले गए। उसके सिर से खून बह रहा था। इस बीच हमारा दरवाजा धड़धड़ाया जाने लगा। ऊपर के बारे में हमें बस इतना मालूम था कि वहां एक पति-पत्नी अपनी बेटी के साथ रह रहे थे। शायद उनके मकान पर कब्जा करने की कोशिश में किसी की उनसे झड़प हुई थी। तब बेघर लोग जबरदस्ती मकान प्राप्त करने की कुछ ऐसी हरकतें कर चुके थे। लड़की को पत्नी की देखभाल में छोड़कर मैं दरवाजे की तरफ लपका। दरवाजा खोलकर बाहर खड़े छह बदमाशों पर गरजा—'क्यों शोर मचा रखा है, यह शरीफ आदमी का घर है।'

'आपके घर में...' उनमें से एक बड़ी-बड़ी मूंछों और खतरनाक चेहरे वाला आगे बढ़ा।

'एक पत्नी और एक बीमार लड़की के अलावा और कोई नहीं।' और मैंने दरवाजा उनके मुंह पर मारकर अंदर से कुंडी लगा ली।

दो-चार मिनट की खामोशी के बाद दरवाजा फिर जोर-जोर से धड़धड़ाया जाने लगा। मैंने अपने जीवन में कभी चूहा तक नहीं मारा था, मगर मुझमें न जाने कहां से इतनी हिम्मत आ गई कि मैंने लकड़ियां चीरने वाला कुल्हाड़ा उठा लिया और दरवाजे के पीछे खड़ा हो गया। तैयार था कि दरवाजा टूट कर गिरे, कोई अंदर प्रवेश करे और मैं उसका सिर चीर डालूं। शायद मेरे अंदर वह स्वाभिमानी बाप जाग उठा था, जिसकी बेटी की इज्जत उसके सामने लूटने की कोशिश की जा रही हो। ऊपर वाला बड़ा कारसाज है। फिर जाने क्या हुआ कि धड़धड़ाहट बंद हो गई। कुछ देर बाद मुझे ऊपर वाले मकान की सीढ़ियों पर भारी बूटों के चढ़ने की आवाज आई संभवतः पुलिस आ चुकी थी। दूसरे दिन मुझे पड़ोस से पता चला कि पुलिस वाले ऊपर वाले मकान से दो लाशें ले गए हैं।

मेरी पत्नी ने अंदर एक रेशमी साड़ी का टुकड़ा फाड़कर और उसे जलाकर उसकी राख को शहद में मिलाकर लड़की के जख्म पर मरहम-पट्टी कर डाली थी। साधारण चोटों का यही इलाज प्रायः घर में पहले भी अमृत सिद्ध होता रहा था। वह उसे दूध में कच्चा अंडा पिलाती रही और शहद भी खिलाती रही तो लड़की तीन दिन में ही होश में आ गई, मगर उसके पपोटे फड़कते और आंखें हैरानी से हमारे चेहरों की तरफ देखती थीं जैसे हमें पहचानने की कोशिश कर रही हो।

आखिर उसने मेरी तरफ बाहें फैला दीं और बोली, 'अब्बू!'

मेरी पत्नी ने उसे समझाया, 'बाबू, बाबूजी।'

थोड़ी देर वह मेरी तरफ देखती रही फिर उसने मेरे गले में बाहें डाल दी और बोली, 'बाबू, बाबू जी।' उसके अब्बू से एकदम बाबू और फिर बाबूजी पर आ जाने से हमने अनुमान लगा लिया कि सिर की चोट ने उससे यादों का खजाना लूट लिया है। उसे गले से लगाए मैं पल भर खड़ा रहा, सिसकता रहा। मेरा सिर उसके कंधे पर था। वह मुझे रोता नहीं देख सकी, मगर सिसकियां भरते हुए मेरे हिलते शरीर से उसने मेरी आंतरिक दशा का अनुमान लगा लिया और मेरी पत्नी से बोली, 'बाबू, बाबू जी?'

मैं उसे छोड़कर मुंह दूसरी तरफ किए बाहर बरामदे में आ बैठा। और कहां जाता? जरा सा तो घर था। एक कमरा, एक बरामदा, छोटा सा आंगन, सामने लकड़ी का केबिननुमा छोटी सी रसोई थी और दूसरी तरफ एक कोने में बाथ और टॉयलेट।

मेरी पत्नी ने कहा, 'कुछ नहीं बेटी, तुम बीमार थीं ना, आज तुम्हें ठीक देखकर उनकी आंखों में खुशी के आंसू आ गए।''

उसे पिछली जिंदगी का अब कुछ भी याद नहीं था। उसकी भलाई, स्वास्थ्य और अपने स्वार्थ के लिए भी, यद्यपि हमारा स्वार्थ किसी बुरी नीयत पर आधारित नहीं था, हमने उसकी याददाश्त के अंतिम दो शब्द अब्बू और अम्मी को बाबू और मम्मी से बदल कर उससे छीन लिया। इसके सिवा अब चारा ही क्या था? इन शब्दों के मालिक तो अब इस दुनिया में नहीं थे। दूसरे, उसने स्वयं ही ये शब्द हमें सौंपे थे। अब इनकी लाज रखना हमारा मानवीय कर्तव्य था।

पाकिस्तान में मैं स्टेशन मास्टर था, मगर यहां मुझे रेलवे कैश आफिस दिल्ली स्टेशन पर काम मिल गया था, इसलिए मैं दिल्ली रहने पर मजबूर था, मगर लड़की की भलाई के लिए उसे वहां से दूर रखना जरूरी था। इसलिए मैंने लाहोरी गेट स्टेशन के पास एक रेलवे क्वार्टर किराए पर ले लिया और लड़की का नाम अपनी बेटी ही के नाम पर मैंने मोना रख दिया। मोना पढ़ना-लिखना भी लगभग भूल चुकी थी और पहले पांच-छह साल मुझे उस पर बहुत मेहनत करनी पड़ी। कैश आफिस में दो-तीन या चार घंटे से ज्यादा काम नहीं होता। स्टेशनों से आए हुए पैसे गिनो, चेक कराओ और घर जाओ। मेरे पास बहुत समय था। मैंने अपना सारा समय उसकी पढ़ाई-लिखाई में खर्च करना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे वह चल निकली तो दिन-प्रतिदिन पढ़ाई में होशियार होती गई। फिर मैंने उसे एक पास के स्कूल में भर्ती करा दिया। वहां माध्यम हिन्दी था। मेरे दिल ने कहा, जाने कब उसकी यादें वापस लौट आएं और मुझे उसे खुशी-खुशी यादों के दरबार में जाने की इजाजत देनी पड़े तो तब उसे अपने क्षेत्र और अपने माता-पिता की भाषा की

जरूरत पड़ेगी। यह सोचकर मैंने उर्दू उसे घर पर पढ़ानी शुरू कर दी। देर से सहीं मगर उसने मैट्रिक बहुत अच्छे अंकों से पास कर लिया, फिर वह इंटर भी हो गई। बाद में टीचर ट्रेनिंग करके गुड़गांव के एक स्कूल में नौकरी ढूंढ ली और प्रति दिन ट्रेन से आने-जाने लगी। उसने हमें इतना प्यार दिया कि हमें अपनी बेटी की कमी भूल गई। हमें लगने लगा जैसे हमारी ही बेटी ने हमारे घर दूसरा जन्म लिया है।

पहले वह एक ही ट्रेन से आती और एक ही ट्रेन से जाती थी, इसलिए उसके आने-जाने का समय निश्चित था, मगर दो बार वह देर से आई तो मां से गाड़ी के देर से आने का बहाना बना दिया। कुछ दिन बाद वह कभी-कभी घर से भी सवेरे-सवेरे निकलने लगी। धीरे-धीरे उसके आने-जाने के समय में कमी बेशी नजर आने लगी तो मेरी पत्नी को संदेह हुआ। इस बीच मुझे भी कुछ भनक सी मिली कि वह किसी लड़के में रुचि ले रही है।

हमने सोचा, उसकी शादी की उम्र निकली जा रही है। हमें इस कर्तव्य से भी सम्मान-सहित निवृत्त हो जाना चाहिए और कोई अच्छा सा लड़का उसके लिए तलाश करना चाहिए। अब हम किसी मुस्लिम लड़के का विचार करते हैं तो भेद खुलता है। आखिर बहुत सोच-विचार के बाद हमारी नजर अपने हरबंस पर गई। उसे मुरादाबाद में रेलवे क्वार्टर मिल चुका था। उसके बारे में मोना को हमने बहुत पहले सब कुछ सच-सच बता दिया था। हमने सोचा, क्यों न मोना की शादी हरबंस से कर दी जाए। इस तरह हमारी बेटी ही हमारी बहू बनकर हमारे और पास आ जाएगी। हरबंस खुद भी दिल्ली में तबादले की कोशिश कर रहा था। इधर मुझे भी अपने क्लेम के बदले में दिल्ली में ही कुछ न कुछ जायदाद मिल जाने की आशा बंधी थी। मैंने सोचा, मेरी जायदाद कल को मेरी अपनी ही बेटी और बेटे के पास रह जाए तो मुझसे ज्यादा भाग्यवान और कौन होगा? यह जरूर हमारा थोड़ा सा स्वार्थ था, मगर ऐसा स्वार्थ हर उस मां-बाप में होता है, जो अपनी संतान को सुखी देखना चाहते हैं। हरबंस मोना के लिए एक बहुत अच्छा पति सिद्ध हो सकता था और हम हर तरह से संतुष्ट थे। हमने मोना के सामने जब यह प्रस्ताव रखा तो वह चुप साध गई और हमने उसकी खामोशी को मौन स्वीकृति और शर्म समझते हुए बात आगे बढ़ानी शुरू कर दी।

उधर हरबंस ने भी हर संभव ढंग से रस्सियां तुड़वाने की कोशिश की, मगर आखिर हम किसी न किसी तरह रोकर, विनती करके, मुहब्बत का वास्ता दे-देकर उन्हें एक बंधन में बांधने में सफल हो ही गए। मगर हाय भाग्य! हमारे सारे सपने मिट्टी में मिल गए। मोना सवा साल हरबंस के पास रह कर वापस आ गई। शायद हरबंस के पास ऐसा कुछ भी नहीं था जो पत्नियों को पतियों की दासी बना लेता है। नौकरी तो वह छोड़ ही चुकी थी, इसलिए अब वह घर पर ही रहने लगी।

इधर मेरी बदली इस स्टेशन पर स्टेशन मास्टर के रूप में हो गई। इस शादी में बेटी को खुशी तो न दे सका, उल्टे बेटा भी खो बैठा। हरबंस ने फिर अपनी बदली वहीं रुकवाकर हमारे यहां आना-जाना बिल्कुल ही छोड़ दिया। जब बेटे ने ही मुंह मोड़ लिया तो बेटी का क्या है, वह तो होती ही है पराया धन। वह कहीं और अब शादी करना चाहे तो मैं उसकी राह का रोड़ा नहीं बनूंगा। एक-दो बार तुम्हारी चाची ने उससे इस विषय में बात भी की थी। कहती है, अगर उसे फिर मजबूर किया गया तो वह फिर से नौकरी शुरू करके हमसे कहीं दूर चली जाएगी। लगता है, अब तो उसे शादी के नाम से ही चिढ़ हो गई है। बेटा! हमें उसके दूर चले जाने का कोई दुख नहीं होगा, क्योंकि बेटियां कौन सी सदा मां-बाप के घर बैठी रहती हैं। हां, ऐसे जाए, जैसे लड़कियां जाया करती हैं! नियम से शादी करके, तभी हमारी आत्मा को शांति मिलेगी।''

सरन और मोना के कमरों के बीच छोटा सा दरवाजा था। वह चाहता तो बड़ी आसानी से उसके पास जा सकता था या उसे पास बुला सकता था, मगर वह जो कहते हैं कि औरत और मर्द के मामले में पहल मर्द को करनी पड़ती है। वह बिल्कुल गलत बात है, जो पहल करते हैं वह भरे बाजार में अपमानित होते हैं। वास्तव में पहल हमेशा औरत की ओर से होती है। इसे हमारी भाषा में 'हंसी तो फंसी' के मुहावरे से स्पष्ट किया गया है। अगर औरत मर्द की तरफ मीठी मुस्कान नहीं फेंकती तो उसे पहल नहीं करनी चाहिए वर्ना उसे मायूसी का सामना करना पड़ेगा। अंग्रेजी में ऐसे आमंत्रण को 'लिफ्ट' कहते हैं। सरन ने ऐसी लिफ्ट पाने का बहुत इंतजार किया। एक-दो बार जब वह रात को उसके लिए दूध का गिलास लाई तो गिलास पकड़ते हुए उसने मोना की उंगलियों को छू लिया, मगर मोना ने उसे कोई महत्व नहीं दिया। न शर्म से उसका चेहरा लाल हुआ और न ही गुस्से की कोई रेखा उसके चेहरे पर नजर आई, जैसे सरन की उंगलियां मात्र पत्थर की किसी बेजान मूर्ति से टकराई हों।

इसी बीच मोना की डायरी का एक पन्ना सरन के हाथ लग गया। शायद डायरी के ढीले धागे ने उसे अपनी पकड़ से आजाद कर दिया था, लिखा था—'मैं हरबंस के साथ सवा साल के लगभग रही हूं, मगर मैंने उससे कुछ भी नहीं पाया। वह मेरा मालिक है। मेरे मां-बाप ने मुझे उसको सौंपा है, मुझे उसे हर रूप में स्वीकार करना है। मर्द अत्याचारी भी हो सकता है, कंजूस, कायर, नालायक और कुरूप भी। औरत हमेशा हर प्रकार के दुराचारी मर्द के साथ गुजारा करती रही है, मगर उसे मर्द तो होना ही चाहिए। कभी-कभी तो सोचती हूं, शायद तब भी मैं उसे स्वीकार न कर सकती थी। न जाने यह बागी औरत मेरे अंदर कौन है? मैं इतना समय उसके साथ रहकर भी वैसी ही हूं जैसी गई थी, अछूती।'

एक दिन मौका पाकर सरन ने उसे पूछ ही लिया, "मोना, क्या तुम शादी से खुश नहीं थी?" मगर जवाब देने के बजाय उसने रोना शुरू कर दिया।

अब सरन और बाबू बिहारी लाल के साथ चाची और मोना भी सैर को जाने लगी थीं। कई बार सरन और मोना बातें करते बेध्यानी में अपनी जवान रफ्तार से उन दोनों वृद्धों से काफी आगे निकल जाते। एक दिन ऐसे ही मौके पर उसने फिर मोना के दिल को टटोलना चाहा तो वह मात्र पत्थर की सिल ही सिद्ध हुई। पत्थर, जो सालों नदी किनारे पानी में डूबा रहने के बावजूद जब तोड़ा जाता है तो अंदर से सूखा ही निकलता है। सरन ने सोचा, शायद वह तब की नाराजगी दिल में लिए फिरती है जब उसने उसे कहीं ले चलने को कहा था और सरन ने कायरता दिखाई थी। उसने सोचा, वह एक बार फिर जरूर उसके संदेह को दूर करने की कोशिश करेगा और अगर बात बन गई तो उसे प्राप्त करने के लिए हर तरह का त्याग करने को तैयार हो जाएगा। चाहे उसे उषा को भी हमेशा के लिए छोड़ना पड़ जाए।

अकेले में बात करने का एक और मौका पाते ही उसने मोना से कहा, "मोना, एक बार तुमने कहा था कि मैं तुम्हें कहीं ले चलूं।"

मोना खामोश रही।

"तब मैंने ड्यूटी का बहाना बना दिया था, छुट्टी न मिल सकने की शिकायत की थी।"

मोना खामोश रही।

"मोना, मैं तुम्हें पाने के लिए दुनिया भी छोड़ सकता था, मगर मेरे कदमों में बहुत भारी जंजीर थी।"

मोना खामोश रही।

"और उस जंजीर ने मुझे एक खूंटे से बांध रखा था, इसलिए पहले उससे छुटकारा प्राप्त करना जरूरी था।"

मोना खामोश रही।

"तुम सोचोगी, मैं पहेलियां बुझा रहा हूं। ठीक है, तुम्हारा ऐसा सोचना उचित है। मेरी जगह कोई और भी होता तो वह भी मेरी तरह बेबस होता। मैं विवाहित हूं।"

मोना खामोश रही, मगर इस बार उसकी नजरें उठीं और पल भर के लिए सरन के चेहरे पर टिक कर रह गईं।

"यह गुलामी का पट्टा एक मजबूरी में स्वीकार करना पड़ गया था, मगर अब तक न ही जंजीर कट सकी है और न ही आजादी मिल सकी है।"

मोना को अपनी कहानी की तरफ आकर्षित पाकर उसने अपनी बेबसी और मजबूरी की सारी राम-कहानी उसे कह सुनाई। मोना तब भी खामोश रही तो उसने

कहा, "मोना, मैं जिंदगी में पाक, पवित्र और देवता बनकर नहीं रह सका और न ही मैंने कभी ऐसा ढोंग रचाने की कोशिश की है, मगर इसके बावजूद मैंने तुम्हें, कम से कम तुम्हें सच्चे दिल से चाहा है, इसलिए तुम्हें धोखा नहीं दे सकता था।"

अब मोना खामोश न रह सकी, "मैं भी तुम्हें धोखे में नहीं रखना चाहती थी और अब भी नहीं रखना चाहती। मैंने तब भी तुमसे कह दिया कि मैं तुम्हारे साथ जाने के बावजूद तुमसे शादी का कोई वादा नहीं करती। हां, मुझे तुम पर पूरा विश्वास जरूर था, न जाने क्यों!"

अब सरन ने मोना की तरफ देखा, मगर वह कहती गई, "विश्वास, विश्वास होता है, प्यार नहीं होता।"

"तो क्या तुम किसी और से प्यार करती हो?" सरन ने सवाल किया।

"हां!" मोना ने जवाब दिया, "मगर वह कौन है, कहां है, मुझे नहीं मालूम। बस, कभी-कभी एक परछाईं सी आंखों के आगे तैर जाती है।"

"मोना, तुम..."

"प्लीज नो मोर क्वेश्चन," मोना ने सरन का मुंह बंद कर दिया।

कोसली में मोना से मिलने का बाद सरन को उम्मीद बंध चली थी और वह इसी उम्मीद के सहारे बड़े से बड़ा कदम भी उठाने पर खुद को तैयार पा रहा था, मगर अब उसकी आस एक कच्चे धागे की तरह टूट गई थी। उषा उसकी अपनी होकर भी उसकी नहीं बन सकी थी। मोना उसके इतने पास होने के बावजूद उससे कोसों दूर थी। अब वह किसके सहारे जीता? उसने चुपचाप बिना किसी को बताए बदली की अर्जी दे दी। बाहर ही बाहर वह दफ्तर में मिल-मिलाकर अपनी नई नियुक्ति के आदेश भी ले आया और वहां से छुट्टी पाकर सब-ए.एस.एम. के रूप में जंक्शन पर पहुंच गया। इस नई जगह पर ट्रेन वर्किंग का काम बहुत ज्यादा था और उसका बेचैन दिल उससे गलतियां करवाने लगा। एक दिन उसने सोचा—कहीं उसकी गलती कोई बहुत बड़ी दुर्घटना कराकर हजारों निर्दोष जानों का नुकसान न कर दे, इसलिए उसे भाग जाना चाहिए। वह स्टेशन पर खड़ा होता तो आती-जाती गाड़ियां, शांटिंग करते इंजन, यहां तक कि पड़ोस के टेलीग्राफ आफिस में बजती हुई टेलीग्राफ की किरकिट तक कहती, 'भाग जाओ, भाग जाओ।'

वह कभी-कभी सचमुच भाग खड़ा होता, मगर दिल्ली से जाने वाली गाड़ी के पहिए भी उसे 'भाग जाओ, भाग जाओ, भाग जाओ' का राग गाते महसूस होते। और वह फिर भाग खड़ा होता, मगर गाड़ी के पहिए फिर वही राग गाते हुए उसे वापस रेवाड़ी ले आते, मगर उसका मस्तिष्क इस रागिनी से छुटकारा न पा सकता, 'भाग जाओ, भाग जाओ।'

और फिर एक दिन सचमुच वह भाग खड़ा हुआ।

11

केफटेरिया के निकलने के बाद सरन स्टेशन पर आया, वह कुछ देर इधर-उधर घूमता रहा। रात का ठिकाना भी करना था, मगर मस्तिष्क ने किसी नई राह पर सोचने से इनकार कर दिया। अचानक उसने खुद को एक मशीन के सामने खड़ा पाया। यह मशीन एक छोटा सा जुआखाना था, जिसमें सिक्का डालकर उंगली से उसे एक कोने में उछालना होता था। आगे उसके पांच खाने थे जिनके ऊपर दो, तीन, सात, तीन और दो लिखे हुए थे। यानी, आपका सिक्का इनमें से किसी खाने में जा पड़ा तो मशीन ऊपर के खाने के अनुसार उतने सिक्के नीचे वाले खाने में आपके लिए डाल देगी। मगर आपका सिक्का पचास में से किसी एक बार ही किसी खाने में गिर सकता था और इन अंकों के खाने इतने छोटे थे कि पचास मार्क देने के बाद अगर आपने बड़े खाने का मोर्चा मार भी लिया तो आपको केवल सात ही मार्क प्राप्त हुए। सरन खेलता रहा, हारता रहा, जीतता भी रहा। हार का पलड़ा जरूर भारी था, मगर कभी-कभी की जीत उसकी आस बंधाए रही और वह डटा रहा।

अचानक उसे अपने पीछे, बहुत ही पास किसी की उपस्थिति का आभास हुआ। उसने मुड़कर देखा, एक यूरोपीय औरत साड़ी बांधे उसके बहुत पास खड़ी थी। उसने सरन की तरफ देखा। उसके होठों पर पहचान की हल्की सी मुस्कराहट उभरी, मगर सरन की नजरों ने उसे पहचानने से इनकार कर दिया। वह फिर मशीन में सिक्का डालकर उसे उछालने के लिए उंगली की संतुलन ठीक करने लगा ताकि वह कम से कम सात के खाने का निशाना बांध सके। उसे अपने पीछे गर्दन पर हवा की गर्म-गर्म लहर सी तैरती महसूस हुई, उसने गर्दन घुमाई तो उसे वह औरत इतनी पास खड़ी नजर आई कि वह उसकी सांस तक को अपने चेहरे पर महसूस करने लगा। इससे पहले कि वह कुछ सोचता या भागने की राह ढूंढता, एक तरफ मशीन और दूसरी तरफ वह औरत—वह घिर गया। औरत ने आगे बढ़कर उसके गले में बांहें डाल दीं और उसे भींच कर गले लगा लिया, फिर वह धीरे-धीरे सिसकने लगी। वह जर्मन भाषा में कुछ कहती भी जाती थी। वह जर्मन भाषा भी थी या नहीं, सरन को अभी यह भी मालूम न हो सका था। हो सकता है वह जर्मन भाषा ही हो, मगर उच्चारण किसी दूसरे बड़े शहर का हो। सरन कुछ समझ नहीं पाया कि वह क्या करे, मगर उसने धीरे से उसकी बांहें अपने गले से हटा दीं और उसे थोड़ा सा परे कर दिया। औरत ने डबडबाई आंखों से उसकी तरफ देखा। चाहा कि सरन उसे पहचान ले, बढ़कर फिर अपने गले से लगा ले, मगर सरन की तरफ से कोई प्रतिक्रिया न पाकर वह फफक उठी और जार-जार रोने लगी। इतने में कुछ लोग उनके आस-पास जमा हो गए। एक ने सरन से कुछ पूछा, मगर सरन को जर्मन भाषा नहीं आती थी। वह मासूम किसी सवाल करने वाले की ओर देखता रह गया। उस व्यक्ति ने फिर औरत से कुछ सवाल किए। औरत

ने रो-रोकर कुछ कहा, फिर और ज्यादा जोर-जोर से रोने लगी। उस आदमी ने उसके हाथ से उसका पर्स लेकर खोला और रुमाल निकाल कर उसके हाथ में दे दिया। आंसू पोछते हुए भी औरत सिसके जा रही थी। आदमी ने उसके पर्स से सिगरेट की डिबिया से एक सिगरेट निकालकर उसके होठों में पकड़ाई और माचिस से तीली जलाकर उसे आग दिखा दी।

औरत सिगरेट के कश लगाने लगी और धीरे-धीरे उसकी सिसकियां धीमी होती गई, मगर जब भी वह सरन की तरफ देखती उसकी सिसकियों में दर्द शामिल हो जाता। इतने में किसी ने सरन को बांह से पकड़कर पीछे की तरफ खींचा। उसने मुड़कर देखा। कोई अनजान व्यक्ति संकेत से उसे खिसक जाने को कह रहा था। सरन धीरे-धीरे पीछे हटता भीड़ से बाहर निकल आया और फूलों की दुकान के पास आ खड़ा हुआ। कोई व्यक्ति रोती हुई औरत को गाड़ी पर बिठाने प्लेटफार्म नंबर सात की तरफ लिए जा रहा था, शायद उसने उधर ही की तरफ जाने वाली गाड़ी के रास्ते में पड़ने वाले अपने शहर का नाम बताया था।

फूल आज भी सुंदर थे, फूल कल भी सुंदर होंगे—सरन सोचने लगा। सौ साल पहले, हजार साल पहले भी। रंग-बिरंगे पक्षी, सुंदर तितलियां, मासूम और नादान बच्चे, सुंदर स्त्रियां, रंग व नूर, प्रकृति ने अपना सौंदर्य इंसान को हमेशा एक सा दिया, मगर इंसान हमेशा उसे विकृत करता रहा। इंसान ने धर्म, देश, नस्ल, रंग, संस्कृति और न जाने किन-किन बहानों की आड़ लेकर एक-दूसरे का खून बहाया, एक-दूसरे को धोखा दिया। आराम से घर बैठे शरीफ इंसान पर तलवार, बंदूक और तोपें लेकर चढ़ दौड़ा, यह मानकर कि मैं बड़ा हूं वर्ना तेरी गर्दन उड़ा दूंगा और यह सब मनवाकर और अपने पेट के साइज से करोड़ गुना ज्यादा खुराक जमा करके भी भूखा रहा और अपनी निर्धारित उम्र से एक दिन भी ज्यादा न जी सका।

ऐ शरीफ औरत, मैं नहीं जानता कि तुझे किसने धोखा दिया है, तू किसके लिए साड़ी बांधती है, किसके नाम की बिंदिया अपने माथे पर लगाती है, मगर मैं तेरे दुख का साथी हूं। मुझे तेरे दुख का आभास है, मगर मैं क्या करूं? मैं वह नहीं जिसकी तुझे तलाश है। काश! तू जानती कि हर गुलाबी रंग की चीज गुलाब का फूल नहीं होती और गुलाब के फूल में भी कांटे होते हैं। क्या तू प्रेम-दीवानी तब अपने को इतना भूल गई थी कि तुझे कांटों की चुभन का पता ही न चला?

उदासी सरन के चेहरे पर लिखती गई जैसे सिनेमा के पर्दे पर सब कुछ अपने आप लिखता जाता है। न जाने सरन कब तक डूबा रहा, अपने आप में गुम रहा।

"हाय!" किसी ने पीछे से पुकारा।

सरन ने मुड़कर देखा और जवाब में कह दिया, "हाय!"

"बहुत सोच में डूबे हो।" वह व्यक्ति पहलवान जैसा लंबा-चौड़ा ज्यादा था

या शायद ज्यादा चौड़ाई की वजह से उसकी लंबाई कम लगती थी।

"दुनिया बहुत सुंदर है," सरन ने कहा। वह अभी तक उन्हीं विचारों में डूबा हुआ था। पहलवान ने सरन की तरफ यूं देखा जैसे कहता हो—सो तो है, मगर तुम कहना क्या चाहते हो? सरन बोला, "और यही दुनिया कुरूप भी है।"

"दार्शनिक लगते हो," वह बोला।

"नहीं, सीधी सी बात कह रहा हूं। इन फूलों की तरफ देखता हूं तो बहुत सुंदर लगते हैं। तुम्हारी तरफ देखता हूं तो डर लगता है।"

"क्या परेशानी है?" उसने पूछा, जिसमें हमदर्दी की थोड़ी सी झलक भी थी।

"पहली परेशानी तो यह है कि मुझे यह नहीं मालूम कि रात को कहां सोऊंगा। दूसरी परेशानी की परछाइयां, कुछ देर पहले की घटना मेरे मस्तिष्क पर छोड़ गई है। मगर उसे आपको बताने की जरूरत नहीं समझता और न ही आप उसे समझ सकेंगे," सरन बोला।

"ओ.के., मत बताइए, मगर पहली परेशानी तो आप मुझे बता चुके हैं, इसलिए मैं उसे दूर करने की जरूर कोशिश करूंगा। अभी तो मैं कहीं जा रहा हूं, मगर शाम साढ़े सात बजे आप साइल पर वूल्सवर्थ के पास वाली गली में आ जाएं। मैं आपको वहीं मिलूंगा," वह प्लेटफार्म की तरफ बढ़ता और घड़ी देखता हुआ बोला।

"शाम ठीक साढ़े सात बजे, भूलिएगा नहीं। मैं आपके देश का हूं, हमदर्द हूं। मिलने पर और भी बहुत कुछ मालूम हो जाएगा मेरे बारे में।"

और वह लपककर प्लेटफार्म नंबर बारह की तरफ दौड़ गया।

शाम को सरन जब वूल्सवर्थ के पास पहुंचा, वह वूल्सवर्थ के पास अंदर जाने वाली दोनों गलियों के सिरे पर खड़ा सोच ही रहा था कि कौन सी गली में जाए कि उसे बाएं हाथ वाली गली में दूर से आवाज आई, "बढ़े आओ।"

वह सरन को हाथ के इशारे से बुला रहा था।

बाईं तरफ की बिल्डिंग का वह चौथा तल था जहां वह उसे ले गया। उसने सरन के लिए एक कुर्सी डाल दी। बीस-पच्चीस औरतें और मर्द एक हाल में योगा कर रहे थे। वह जर्मन भाषा में उन्हें निर्देश दे रहा था। उनमें सरन को एक लड़की भी नजर आई। वह भी अंगिया और कच्छी में कसरतें कर रही थी। इश्क का भूत एकदम आंधी और तूफान की तरह सरन के सिर पर सवार हुआ। सरन भूखी नजरों से लड़की को देखता रहा। उसे लगा जैसे लड़की योग का अभ्यास नहीं कर रही है, उसका दिल लुभाने के लिए किसी देवदासी की तरह उसके सामने भरत नाट्य नाच रही है। कई दिनों की भूख के बाद वैसे भी कोई भी खाना इंसान को अच्छा लगता है, मगर सरन का भूत इतनी जल्दी सिर से उतर कर कहीं भाग गया जैसे कि वह उसके निकट कभी भटका ही नहीं था। जब कसरतें खत्म होने

पर पहलवान ने लड़की का परिचय कराते हुए उसे बताया कि वह उसकी गर्लफ्रेंड है। सरन को लगा जैसे उसके सामने बहुत स्वादिष्ट खाना परोसा गया था, उसे भूख भी थी, मगर मेजबान ने मिर्चों का पूरा डिब्बा उसके सामने सालन और खाने की सारी चीजों में उलट दिया है। अब वही मिर्चे सरन को अपनी आंखों में चुभती महसूस हो रही थीं।

रात नौ बजे सरन, पहलवान और उसकी प्रेमिका के साथ उसकी कार में उसके कमरे पर पहुंचा। यह एक छोटा सा कमरा था, जिसमें एक तरफ एक छोटी सी मेज थी, जिस पर खाने-पीने का थोड़ा सा सामान और बर्तन आदि पड़े थे। एक हीटर था, फ्रिज था, बाकी कमरा एक ही समय में मंदिर भी लगता था, किसी सेठ का दरबार भी जिसके मुंशी जमीन पर सफेद चांदनियां बिछाए आगे रजिस्ट्रों और बहियों के ढेर लगाए बैठे रहते हैं। कोने में एक लंबी मेज थी जो रात को इस्तेमाल में आनेवाले बिस्तरों, चादरों, रजाइयों और तकियों आदि से लदी थी।

खाना खाने के बाद पहलवान सरन से बोला, "भैया, परेशान होना छोड़िए। अब समझिए, आपका दुख हमारा दुख है।"

सरन खामोश रहा। उनके आगे फर्श पर खाने के बर्तन पड़े थे। उन्हें उठाने के लिए जब लड़की नीचे झुकी और उसका पीछा चौड़ा हुआ तो पहलवान ने उसके पीछे की चौड़ाई पर धप्प जमाते हुए कहा, "क्यों री छोरी, गोरी-गोरी! हो जाएं सरन बाबू से एक-दो बातें!"

लड़की ने घूमकर खाली-खाली नजरों से उसकी तरफ देखा जैसे कहती हो—मुझे क्या!

पहलवान बोला, "सरन बाबू, नाम तो मेरा बाल बहादुर है, मगर तुम मुझे बड़ी खुशी से सिर्फ पहलवान कह सकते हैं, पहलवान जी," उसने जी पर जोर देते हुए कहा, "वास्तव में मैंने बाल्यावस्था में ही बहादुरी के ऐसे काम कर दिखाए थे कि मेरे बाप ने मेरा नाम बाल बहादुर रख दिया। वैसे मैं यहां योगा की कक्षाएं लेता हूं, आप देख चुके हैं। यह मारी मेरी गर्लफ्रेंड है।"

"मेरा नाम तो तुम जान ही चुके हो," सरन बोला, "मैं पी.एम. बुरो में सेठ पतूड़ी मल के साथ था मगर बात बनी नहीं, इसलिए विदाई हो गई। मेरा नाम..."

"मारी ने आपकी बांह पर आपका नाम पढ़ लिया था, ये जर्मन लोग बहुत तेज हैं," वह बोला, "खैर, मैंने कहा ना, आपका दुख अब हमारा दुख है। आप अपनी परेशानी बताएं तो शायद मैं आपके काम आ सकूं। आप आवास की चिंता न करें। जब तक कोई और बंदोबस्त नहीं हो जाता, आप हमारे यहां रहें।"

"रोटियां तो खाऊंगा, मगर कमाऊंगा क्या?" सरन बोला।

"कमाई का साधन भी हो जाएगा," उसने लड़की की तरफ मुड़कर देखा।

लड़की ने नजरों से कहा, तुम्हीं कह दो तो वह बोला, "दरअसल हम यानी मैं कुछ योगा के करतब दिखाने के लिए कुछ शहरों में शो देना चाहता हूं। आपकी ड्यूटी टिकट बांटना होगी।"

लड़की अलमारी में से एक एल्बम निकाल लाई। पहलवान ने अखबार की कटिंग्स का एल्बम सरन को दिखाते हुए कहा, "मेरे पहले कुछ शोज की अखबारों ने बहुत अच्छी रिपोर्ट दी है।"

एल्बम में पहलवान के करतबों के फोटो थे। एक में एक हाथी उसकी छाती पर पांव रखे खड़ा था। दूसरे में रस्सी से बंधे एक ट्रक को वह दांतों से खींच रहा था। तीसरे में वह अपने सिर पर नारियल तुड़वा रहा था। चौथे में अपने पेट के जोर से एक लोहे के सरिए को टेढ़ा कर रहा था। ऐसे और भी कई करतब थे जैसे सरन ने भारत में भीड़ लगाने वालों को करते देखा था। सरन को सोचते देखकर वह बोला, "आपने ऐसे करतब भारत में बहुत देखे होंगे और ऐसे करतब करने वालों को भूखों मरते भी देखा होगा, मगर यहां कला का मूल्य है तो हम इसका लाभ क्यों न उठाएं?"

सरन, बाल बहादुर के लिए अपने दिल में जोड़-घटाव कर रहा था। अपने आपको पहचानने और अपनी कला को सम्मान की दृष्टि से देखने पर सरन के दिल में पहलवान के लिए जोड़ की संख्या एकत्र हो गई। पहलवान बोला, "आवास और रोटी के अलावा मैं आपको चार सौ मार्क वेतन भी दूंगा और लाभ में से पांच प्रतिशत कमीशन। आप सुबह तक सोच कर जवाब दे सकते हैं।"

मारी फर्श पर बिस्तर लगा रही थी। अपने और पहलवान के लिए उसने बिस्तर कमरे के बीच दरी पर लगाया था। सरन सोच रहा था कि वे दोनों सो जाएं तो वह अंधेरे में कपड़े उतारकर कच्छा-बनियान के साथ सो जाएगा, मगर पहलवान ने उनके सामने ही कपड़े उतारने शुरू कर दिए। अब वह मात्र जांघिया पहने हुए था। मारी ने भी सारे कपड़े उतार दिए थे। अब वह अंगिया खोल रही थी। जब सरन ने शर्म से अपनी नजरें नीची कीं तो पहलवान बोला, "देखो भई देखो, वर्ना वह समझेगी कि तुम उसके शरीर को कुरूप समझते हो। अगर उसकी तरफ देखते हुए तुम्हारी नजरें टकरा जाएं तो होठों पर प्रशंसा भरी मुस्कराहट ले आना, जैसे तुम उसके अति सुंदर शरीर पर मोहित हो उठे हो।"

सरन ने गुरु जी का पहला पाठ जैसे-तैसे गले से उतारने की कोशिश करते हुए मारी की तरफ देखा। अब वह बिना अंगिया के खड़ी थी और उसकी छातियों के कबूतर दाना चुग रहे थे। सरन को अपनी तरफ देखते देखंकर वह मुस्कराई और दूसरे क्षण वह गड़ाप से पहलवान के बिस्तर में घुस गई। सरन को गुडनाइट कहकर पहलवान भी उसके साथ रजाई में घुस गया। थोड़ी देर बाद उन्होंने कमरे की बत्ती बुझा दी।

सरन पहलवान के प्रस्ताव के बारे में सोच रहा था कि अंधेरे में कोई हल्की

सी चीज आकर उसके चेहरे से टकराई। सरन ने टटोल कर देखा, वह मारी की नर्म और गर्म कच्छी थी जो उसने उतारकर अंधेरे में उछाल दी थी। सरन उसे कुछ देर टटोलता रहा। उसकी उंगलियों ने महसूस किया कि उस पर उभरे हुए, फूल कढ़े हुए थे। वे फूल पहले सरन को बहुत मुलायम और नर्म महसूस हुए, फिर वह कांटों की तरह कठोर होते गए, यहां तक कि वह सरन के हाथों पर जलते अंगारे बन गए और सरन ने कच्छी को अंधेरे में एक तरफ उछाल दिया।

सरन के दिल में पहलवान की तरफ कुछ ऋण अंक और बढ़ गए। वह बोला, "खाना हजम होने से पहले जवाब देना जरूरी है क्या?"

पहलवान हंस दिया, बोला, "आदमी दिलचस्प हो। बोलो, स्वीकार है?"

पहलवान बचपन से ही जर्मनी में रह रहा था, इसलिए हिंदुस्तानी गुजारे लायक ही बोल या समझ सकता था। बातचीत अधिकतर अंग्रेजी में ही होती रही थी। अब सरन ने एक उर्दू शेर पढ़ दिया :

जानते बूझते जिस शख्स ने धोखा खाया
उसके अंदर कोई फनकार छुपा बैठा है।

फिर उर्दू में ही पहलवान से पूछ लिया, "शेर समझते हो?"

पहलवान ने बांहों की मछली फुलाकर कहा, "मैं खुद शेर हूं। वैसे तुमने क्या कहा था?"

"मैंने लंबी उर्दू में कहा था कि मुझे स्वीकार है।" सरन ने जवाब दिया।

"और अब जब कि तुमने कहा है कि तुम्हें मेरे साथ काम करना स्वीकार है तो अपनी ड्यूटी भी सुन लो—हॉल के गेट पर एक मेज लगाकर तुम टिकटें बेचोगे, और अगरबत्तियां भी।"

सरन अपनी ड्यूटी बढ़ती देखकर सोच में पड़ गया, अस्वाभाविक रूप से उसने सामने पड़ी एक जर्मन पत्रिका के पृष्ठ उलटने शुरू किए। एक पृष्ठ पर एक पहलवान की तस्वीर थी, जिसने एक बहुत मोटा ताजा सूअर मार रखा था और उसके मुंह में एक बहुत बड़ा लट्ठ घुसेड़ रहा था। उसने पृष्ठ पलटा। अगली तस्वीर में लट्ठ सूअर की पूंछ के नीचे से बाहर निकल आया था। उससे अगले पृष्ठ पर पहलवान लट्ठ को अपने कंधे पर उठाए हुए था, जिसमें सूअर टंगा उसके कंधे से लटक रहा था।

दूसरे दिन मारी और पहलवान, सरन को साथ लेकर केसर स्ट्रासे की एक दुकान पर पहुंचे। वहां, जहां वेश्याओं का बाजार खत्म होता था और कोने पर जहां मुलर ने सेक्स-वस्तुओं की नई शाखा खोली थी। वहीं ऊपर छठे तल पर सरदार खत्म सिंह का स्टोर था। सरदार खत्म सिंह वास्तव में इसी जगह से शुरू हुआ था और अब जबकि उसका आरंभ हो चुका था और उसका व्यापार चल निकला था, न जाने क्यों वह अभी तक खत्म सिंह ही बना फिरता था। शायद उसका

इरादा 'जीना यहां, मरना यहां' का हो, क्योंकि उसने एक जर्मन मेम भी रख ली थी। मुश्किल यह है कि मेम बूढ़ी हो या जवान, मेम ही कहलाएगी और मेम के साथ में फायदे ही फायदे हैं। कम से कम सरदार के तो सब गंदे अंडे स्वस्थ्य बच्चे देने लग गए थे। जर्मनों को हर वस्तु दिखाते समय चाहे वह नेकलेस, अगरबत्ती, नकली आभूषण हों, कढ़े हुए ब्लाउज या लाख के हाथी हों, वह एक वाक्य जरूर दुहराता था—ब्यूटीफुल कलर इन द वर्ल्ड एंड हैंड-मेड।' अगरबत्तियां दिखाते हुए जब उसने यही वाक्य पहलवान से कहा तो पहलवान झुंझला उठा, बोला, "सरदारजी, रहने दो, मुझे सब मालूम है।"

अगरबत्तियों का सरदार का रेट भी पहलवान को अधिक लगा। उधर सरदार एक पैसा भी कम करने पर राजी न हुआ क्योंकि उसकी मेम, जो फिक्स रेट की हामी थी, पास खड़ी थी। विवश होकर पहलवान ने वहां से अगरबत्तियां खरीदने का इरादा छोड़ दिया। और सरदार जी ने भी अपने आपको पूरा जर्मन सिद्ध करने के लिए उसकी रत्ती भर परवाह नहीं की। धीरे से अपनी पंजाबी भाषा में ही बोला, "टेकना तो टेक, नई तो अगली शॉप देख।"

अब पहलवान एक पल भी वहां कैसे रुकता? वह मारी की कमर में बांह डालकर बाहर निकल आया। थोड़ी दूर साइल पर ही मिस्टर शाह का भारतीय वस्तुओं का स्टोर था। वहां पहुंचे तो शाह खुद उपस्थित था। आगे-पीछे तो उसके दो सहायक ही उसे चीजें देते थे और उचित छूट भी कर देते थे। मगर आज मालिक की उपस्थिति के कारण पहलवान को वैसे ही व्यवहार की आशा थी जो उसके साथ पहली दुकान पर हुआ था। मगर जब सरन ने शाह को बताया कि वह पी.एम. बुरो के साथ संबद्ध रहा है तो वह बहुत उचित रेट पर अगरबत्तियां देने को तैयार हो गया और उसने एक सहायक को चाय बनाने का आदेश भी दे दिया।

लगता था, शाह आज अच्छे मूड में है। चाय के प्याले जब मेज पर आए तो वह काफी चहक रहा था। उसने अपनी मेज की दराज से एक सुंदर प्लेट निकाली और दूसरी दराज से बिस्कुटों का पैकेट निकालकर बिस्कुट प्लेट में भर दिए और बोला, "खाओ बादशाहो, खाओ।"

शाह का एक मुंह-लगा सहायक चाय का प्याला हाथ में लिए शाह की मेज के पास आ खड़ा हुआ और बोला, "शाह साहब, छोकरी एक ब्लाउज तो मुफ्त ले गई, मगर आपके हाथों से बोटी-बोटी तुलवा कर गई है।"

"देखना, फिर आएगी। मेरा क्या है, एक ब्लाउज और जाएगा, मगर मैं भी उसकी एक-एक बोटी तल कर खा जाऊंगा। पूरा नॉन-वेज हूं," शाह बोला, "जाने कितनी कुड़कुड़ाती हुई मुर्गियां अब तक जिबह कर चुका हूं।"

पहलवान ने मारी के कूल्हों पर धप मारी और बोला, "अपना यह दसवां

शिकार है।"

चाय के प्याले पर फिर दोनों घुलने लगे। पहलवान बोला, "शाह साहब, यहां पर तो खोटे से खोटा सिक्का भी चल रहा है। मैं योगा जानता हूं, मेरे पास तो खरा सिक्का है। मैं क्यों न हाथ मारूं? मगर हूं तो आखिर भारतीय ही, थोड़ा सा हेर-फेर न मिलाऊं तो मुझे नींद नहीं आएगी। इसलिए साथ अगरबत्तियां भी रख लेता हूं। आपके पास अगरबत्तियां होंगी?"

शाह बोला, "बादशाहो, जितना दिल चाहे ले लो। एकदम बढ़िया माल है।"

"माल बढ़िया वह है जिसे हम बढ़िया कह दें," पहलवान बोला, "हमने एक योगा का करतब दिखाया और हमारा पीतल भी सोना बन गया। आप तो बस दाम की बात कीजिए। दाम उचित होने चाहिए।"

"आप सरन साहब को साथ ले आए हैं तो आप जो दे देंगे हम उफ नहीं करेंगे। फिर आप भी तो मेरी तरह नॉनवेज हैं। एक ही नाव के सवार एक-दूसरे का कैसे बुरा चाह सकते हैं?" दोनों हंसने लगे। विवश होकर सरन और शाह साहब के सहायक को भी हंसी का साथी बनना पड़ा। इसी बीच अगरबत्तियां देखी गईं। शाह आज बहुत अच्छे मूड में था। वह जिम कार्बेट की तरह अपने पचासवें शिकार का हाल सुनाना चाहता था। इसीलिए उसने पहलवान को अगरबत्तियों में काफी छूट भी कर दी थी। अपने प्रेम का कच्चा चिट्ठा बयान करते हुए वह कहने लगा, "अल्लाह मियां ने कहा है, स्वर्ग में नदियां होंगी, फलदार पेड़ होंगे और सुंदर परियां होंगी। इस मामले में मैं पक्का मुसलमान हूं और मानता हूं कि यह सब कुछ वहां जरूर होगा, मगर पुनर्जन्म के मामले में मैं हिंदू हूं और जिंदगी व मौत के चक्कर में विश्वास रखता हूं और यह भी मानता हूं कि स्वर्ग व नरक इसी दुनिया में है। आप दुखी हैं, बीमार हैं, दीन हैं तो आप यहीं नरक में जल रहे हैं। आप स्वस्थ हैं, सुखी हैं, अमीर हैं और सुंदर औरतों से घिरे हैं तो आप स्वर्ग के मजे इसी दुनिया में लूट रहे हैं। मरे, कचहरी पहुंचे, लेखा-जोखा चेक हुआ, तुरंत न्याय मिला और वापस इसी दुनिया के स्वर्ग या नरक में पहुंच गए। कौन थोड़े से न्याय के लिए सदियों प्रलय की प्रतीक्षा करे? हो सकता है, उसने और भी कई संसार बना रखे हों। उसकी इतनी बड़ी सृष्टि और एक दुनिया, क्या मानी?"

शाह खूब चहक रहा था, "मेरे एक वृद्ध संबंधी आए थे। मुझे मौज-मेला करते देखा तो बोले, "चिरंजीव, तुम बहुत खानदानी लड़के हो, बहुत पाप कर रहे हो।"

मैंने कहा, "मान्यवर, पहले इस 'खानदानी' शब्द की परिभाषा बताओ। फिर पाप और पुण्य पर भी बात करेंगे।

वे बगलें झांकने लगे तो मैंने कहा, आपने बड़ी-बड़ी हवेलियों और

व्यापारियों या हराम के अपार धन पर बैठे सांपों को खानदानी मान रखा है। मेरी नजर में वह इंसान भी उतना ही खानदानी कहा जा सकता है, जो किसी गरीब भंगी या चमार के घर तो पैदा हुआ हो मगर शिक्षा के धन और सदाचार से मालामाल हो। जिन्हें बात तक करनी नहीं आती, वह भी धन के बलबूते पर अपने आपको खानदानी समझने लगते हैं और जुल्म यह कि जो ऐसे खानदानों की परछाईं के नीचे से भी गुजर जाते हैं, खानदानी हो जाते है, जैसे खानदान न हुआ पारस का पत्थर हो गया कि जिस लोहे से छुआ उसे सोना बना दिया। मैंने उनसे पूछा, ''स्वर्ग में क्या मिलेगा?'' बोले, ''हर किस्म का फल, दूध की नहरें और सेवा के लिए परियां।'' मैंने कहा, ''मान्यवर, यह सब कुछ तो मुझे यहां उपलब्ध है। आप किस स्वर्ग की बात करते हैं? कोई ऐसी बात बताइए जो स्वर्ग का भिन्न और अनदेखा चित्र प्रस्तुत करे, तो मैं आपकी बात मानने को तैयार हो सकता हूं।'' वे फिर इधर-उधर देखने लगे तो मैं उत्साहित हुआ। मैंने कहा, ''एक बात और भी लिखी है कि 'तुम स्वर्ग में होगे तो तुम्हें सब कुछ उपलब्ध होगा, मगर ऐसे में शैतान बहकाने आएगा और तुम्हें इन सारी खुशियों से दूर ले जाने की कोशिश करेगा,' तो महानुभाव, आप कहीं वही शैतान तो नहीं कि मुझ स्वर्ग के हर आनंद से घिरे इंसान की दुनिया में जहर घोलने आए हैं!''

सौ दर्जन अगरबत्तियों के पैकेट खरीदकर पहलवान, मारी और सरन घर आ गए। तीसरे दिन पहलवान को शो देना था। दोपहर का खाना बहुत अच्छा था। सरन ने बहुत दिन बाद आलू और गोभी के परांठे खाए थे, मगर न जाने क्यों उसे ऐसा लग रहा था जैसे बकरे को जिबह करने से पहले अच्छी तरह खिलाया-पिलाया जा रहा है। इसी तरह रात का खाना भी स्वादिष्ट दूध और मक्खन का मिश्रण था। दूसरे दिन पहलवान उसे छोटी-छोटी गलियां घुमाता एक घड़ियों की दुकान पर ले गया। न जाने दुकानदार और पहलवान में जर्मन भाषा में क्या बात हुई, मगर जब वहां से निकले तो पहलवान के हाथ में दुकानदार का दिया हुआ एक डिब्बा था। रास्ते में डिब्बा खोलकर सरन को दिखाते हुए पहलवान ने कहा, ''घड़ियां हैं, ओमेगा की। असली सोना, असली ओमेगा। यह भी हम निकालने की कोशिश करेंगे। कोई भी ओमेगा रिस्ट वाच एक हजार से कम की नहीं होती। पचास हजार तक की घड़ी आपको मिलेगी तो इसी कंपनी की। हम तो सोना भी दे रहे हैं और ओमेगा भी। पांच सौ मार्क एक घड़ी की कीमत कोई ज्यादा तो नहीं।''

सरन खामोश रहा। उसने शो केस में ओमेगा की मंहगी से मंहगी घड़ियां जरूर देखी थीं, मगर दुकान के अंदर जाकर कीमत पूछने की उसकी हिम्मत नहीं हुई थी। दिल तो उसका भी चाहता था कि उसके हाथ पर भी कभी ओमेगा घड़ी हो, मगर दिल का क्या है वह तो बहुत कुछ चाहता है।

सरन को खामोश और सोचता देखकर पहलवान ने उसे डिब्बा पकड़ाते हुए

कहा, "सोचो कम, करो ज्यादा। मेरा तो बस यही सिद्धांत है जिसका दिया खा रहा हूं।"

घर पहुंचकर डिब्बा सरन ने पहलवान की तरफ बढ़ाया तो वह बोला, "अपने पास रखो," फिर जोर-जोर से हंसने लगा, "मैं भी विचित्र आदमी हूं, पास रखने को कह रहा हूं, मगर यह नहीं बताया कि कहां रखो। वह सामने वाली अलमारी तुम्हारी है। उसी में अपना सामान भी रख दो और यह डिब्बा भी। इन घड़ियों को भी तुम्हें ही निकालना है।"

सरन अलमारी देखने और डिब्बा रखने आगे बढ़ा और उसे खोलकर डिब्बा रखने लगा तो अपूर्व रूप से चमकती हुई सुनहरी घड़ियों को देखने के लिए उसने फिर डिब्बा खोल लिया। फिर न जाने उसके मन में क्या आया कि चलो, दो दिन शौक ही पूरा कर लिया जाए। उसने एक घड़ी अलमारी के दरवाजे की ओट में अपनी कलाई पर बांध ली।

सेठ पतूड़ीमल के स्टोर पर सरन की एक छोटी सी अटैची पड़ी थी। उसे लेने के लिए पहलवान से कहकर वह बाहर निकल आया। बाहर आकर उसने घड़ी को चाबी दी और साइल पर लगी बड़ी घड़ी से समय मिलाया। कुछ देर इधर-उधर आवारागर्दी करने के बाद वह केसर, ट्रासे फिर सेठ पतूड़ीमल के स्टोर पर पहुंचा तो वह मौजूद नहीं था। और उसके कमरे में ताला लगा हुआ था। क्लर्क ने बताया कि वे दो-तीन घंटे बाद आएंगे। सरन का सामान अंदर स्टोर में था और चाबी सेठ के पास थी, वह बोला, "अच्छा, मैं फिर आ जाऊंगा।"

वह इधर-उधर घूमता रहा। साइल में शो केसों में देखने को बहुत कुछ था। साथ वाली गली में पाप का बाजार आमंत्रित कर रहा था। वेश्याओं ने कारों पर इधर-उधर चक्कर लगाकर रात भर के ग्राहक तलाश करने शुरू कर दिए थे। रेडलाइट एरिया अपने पूरे जोबन पर था। दो-तीन घंटे बिताना कोई मुश्किल बात नहीं थी। बहुत देर घूमने के बाद उसे भूख लग आई और वह स्टेशन वाले कैफटेरिया की तरफ बढ़ गया। सामने रेलवे की बड़ी घड़ी शाम के पौने पांच बजा रही थी। उसे अपनी ओमेगा का ध्यान आया। कलाई खोलकर घड़ी देखी तो वह केवल पांच मिनट चलकर खड़ी हो गई थी। उसने चाबी देनी चाही, देखा तो चाबी फुल थी। वह पास की घड़ियों की दुकान में घुस गया। कलाई पर से घड़ी उतार कर दिखाई और टूटी-फूटी जर्मन भाषा में कहा, "ओमेगा, प्योर गोल्ड, अभी खरीदी है, बंद हो गई है।"

दुकानदार ने घड़ी को हाथ में लिया। घुमा-फिराकर देखा और तरस खाती हुई नजरों से सरन की तरफ देखते हुए अंग्रेजी में कहा, "महानुभाव, यह न ओमेगा है और न सोना, इसे तुरंत वापस कर दो।"

कैफटेरिया में चाय पीते हुए सरन को पता ही न लगा कि कब दो घंटे

बीत गए। जब वह सेठ के स्टोर पर पहुंचा तो स्टोर बंद हो चुका था।

फ्रैंकफर्ट में पहलवान ने तीन प्रोग्राम दिए जो बहुत सफल रहे। सरन ने जब टिकटों का काम संभाला तो पहलवान उसके पास पहुंचा और पूछा, "सब ठीक है ना?"

सरन समझ गया। उसका संकेत टिकटों के अलावा अगरबत्तियों और घड़ियों की तरफ भी था। उसने खामोशी से अगरबत्तियां थैले में से निकालकर मेज पर लगानी शुरू कर दीं। उसके आज्ञापालन से प्रभावित होकर पहलवान बोला, "इन लोगों को पीने की बहुत आदत है और पीने की जिस वस्तु का वर्णन मैं कर रहा हूं, वह तो मोतियों के मोल बिकती है। समझे?"

खामोश इंसान तब रहता है जब वह किसी बात से अनभिज्ञ हो या तब, जब वह किसी काम में कोई रुचि न रखता हो। सीधा सा फार्मूला है, मगर कभी-कभी किसी का भोला-भाला चेहरा दूसरे को गलत परिणाम ग्रहण करने पर विवश करता है। यही पहलवान के साथ हुआ। उसने समझा, सरन तो बिल्कुल ही कच्ची मिट्टी का घड़ा है, अपने वश में रहेगा।

पहलवान ने दो दिन के दूसरे कार्यक्रम में दो शो वीजबाडन में दिए। वह भी काफी सफल रहा। पैसा अब तक सारा सरन ही के पास था जो दस-पंद्रह हजार मार्क तक पहुंच चुका था। कभी-कभी कुछ राशि सरन से खर्च के लिए ले ली जाती जो वह डायरी में नोट करके पलवान या मारी के हस्ताक्षर ले लेता था।

हैम्बर्ग में एक कार्यक्रम बहुत सफल हो चुका था, अभी दो प्रोग्राम और देने थे। पहलवान दिन भर दूसरे प्रोग्राम की रिहर्सल और तैयारियां करता रहा था। शाम को थकावट दूर करने और चहलकदमी के लिए वे थोड़ी देर के लिए बाहर निकले थे कि दूर से उन्हें कुछ भारतीय और पाकिस्तानी नजर आए। उनमें एक अड़तालिस-उनचास वर्षीय सरदार जी भी थे, जो सफेद कुर्ता-पाजामा, पगड़ी और खिचड़ी दाढ़ी के साथ आकर्षक लग रहे थे। वे अपने लोगों में अलग तो नजर आते ही थे, हजारों जर्मनों में भी अपनी अलग पहचान रखते थे। पहलवान उनके व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुआ। मारी से कुछ खुसर-फुसर करने के बाद वह सीधा उनकी तरफ बढ़ने लगा कि मारी ने उसे रोक लिया, बोली, "मैं उसे अभी यहीं लाती हूं।"

वह अपने चेले-चांटों से घिरे सरदार जी के पास पहुंची। हाथ मिलाने के लिए उनकी तरफ हाथ बढ़ाया। सरदार जी ने उसका हाथ थामते हुए बड़ी हैरानी से उसकी तरफ देखा। मारी बोली, "सरदार जी, एक काम करटा?"

"कविता।" सरदार जी बौखला गया।

"काम मंगटा," मारी ने सरदार जी का हाथ पकड़कर खींचते हुए उधर संकेत किया, जिधर पहलवान लापरवाही से कमर पर हाथ बांधे उनकी ओर पीठ

किए किसी शो केस में पड़ी कोई विशेष वस्तु देख रहा था। सरदार जी ने दूसरे हाथों से मूंछों पर ताव देते हुए अपने चेलों की तरफ देखा और मारी से पूछा, ''व्हेयर?''

मारी बोली, ''उधर योगी महाराज से मिलटा, काम मिलटा।'' बिना एक पल भी छोड़े वह उसे खींचती हुई पहलवान के पास ले आई और हंसते-मुस्कराते ठट्ठा-मखौल करते सरदार जी के साथी भी उनके साथ उनके पीछे आ गए। पहलवान बोला, ''आप लोग सरदार जी के साथ हैं? आपको पता होगा, मैं यहां योगा का प्रोग्राम दे रहा हूं,'' फिर वह सरन से बोला, ''सरन बाबू! कल के प्रोग्राम के इन सबको मुफ्त पास दे दो।''

सरन ने सात आदमियों की चिट लिखकर उनमें से एक को पकड़ा दी तो पहलवान बोला, ''आपलोग जरूर आइएगा। टिकट तो बहुत मंहगा है, मगर आप लोग तो अपने ही हैं, आपसे क्या लेना-देना?''

फिर वह सरदार जी को लेकर मारी और सरन के साथ पास के रेस्तंरा में घुस गए। अंदर जाकर एक मेज पर बैठने पर सबके लिए बीयर का आर्डर देने के बाद पहलवान ने सरदार जी से पूछा, ''सरदार जी, की कम करदे हो?''

''कवि हां जी असीं।'' (कवि हैं जी हम) सरदार जी ने छाती फुलाकर कहा, ''इक तेरा लक पतला...'' (एक तेरी पतली कमर...) वे गाने लगे।

पहलवान ने रोककर कहा, ''तुसी भूल जाओ जे तुसी कवि हो या कवे हो।'' (भूल जाएं कि आप कवि हैं या कवे)

''क्यों भूल जाएं जी?'' सरदार जी ने बुरा मानते हुए कहा।

''अच्छा, कम की करदे ओ?'' पहलवान ने नर्मी से पूछा।

''कम लभदे आं।'' (काम तलाश कर रहे हैं) सरदार जी बोले।

''जे तुसीं कविता दा चोला बनियान बना के थल्ले कर लेओ ते योगी दा चोलां उत्तां पालेउ तां समझो, त्वाडा काम बंड़ गया।'' (अगर आप कविता का चोला बनियान बनाकर नीचे पहन लें और योगी का चोला ऊपर डाल लें, समझो आपका काम बन गया।)।

सरदार जी ने कुछ न समझते हुए पहलवान की तरफ देखा तो पहलवान बोला, ''तुसी हुण कवि नई, साडे प्यो हो, साडे गुरु महाराज हो।'' (अब आप कवि नहीं, हमारे बाप और हमारे गुरु महाराज हैं।)

यह कहकर पहलवान ने सरदार जी के पांव पकड़ लिए। उसकी देखा-देखी मारी भी बीच रेस्तरां में सरदार जी के चरणों में मेजों के बीच लंबी पड़ गई। पहलवान ने सरन की तरफ भी इसी आशय से देखा कि वह भी उठकर सरदार जी के घुटने थाम ले, मगर वह बड़े आराम और लापरवाही से दूर बैठा सिगरेट के कश लगाता रहा। सरन को पहलवान के चेहरे की नागवारी का एहसास तो

हुआ, मगर वह मस्त रहा।

"साडा कम की होवेगा?" (हमारा काम क्या होगा?) सरदार जी ने पूछा।

"त्वाडा कम गद्दी ते बैठना ते जो कुछ मर्जी आवे कहना होवेगा," (आपका काम गद्दी पर बैठना और जो मर्जी आए कहना होगा) पहलवान ने कहा, "ते तन्खाह जिन्हीं हुकम करोगे पेश कराएंगे।" (और वेतन जितनी आप कहेंगे, पेश की जाएगी।)

"पर सानूं तां पंजाबी तूं बिनां होर कोई बोली बी नई आउंदी," (लेकिन मुझे तो पंजाबी के अलावा और कोई भाषा नहीं आती) सरदार जी ने कहा।

"तुसी बादशाहों, जम जम पंजाबी बोलो। जो कुछ बोलो असी आपों जर्मन भाषा विच अनुवाद कर लवांगे।" (आप बादशाह हो, खुशी से पंजाबी बोलो, हम खुद ही जर्मन भाषा में जो आप जो बोलेंगे, अनुवाद कर लेंगे) पहलवान ने कहा।

दूसरे दिन के प्रोग्राम में मंच के एक कोने में सरदार जी की विशेष रूप से गद्दी लगाई गई थी, जिस पर सरदार जी एक पुराने योगी की तरह आलथी-पालथी मारे, आंखें बंद किए, होठों में कुछ पढ़ते हुए विराजमान थे। प्रोग्राम शुरू करने से पहले सरदार जी ने पंजाबी में अपने गांव के खेतों, नदियों, नालों, ढोर-डंगरों तक के बारे में विस्तार से बताया था, जिसे पहलवान ने अनुवाद करते समय योगा पर एक व्याख्यान बना दिया था। उसके बाद पहलवान और मारी ने उनके आगे धूप-दीप जलाया था और उनके चरणों में पुष्प अर्पित करके उनका चरण-स्पर्श कर आशीर्वाद लिया था। पहलवान ने सरदार जी के चरणों पर पचास मार्क का नोट अर्पित किया था। उसके बाद मारी ने भी उनके चरणों पर शीष नवाकर सौ मार्क का नोट प्रस्तुत किया था। पहलवान ने सरन की ओर भी इसी आशय से देखा था कि वह भी उनका अनुसरण करे, मगर वह अपनी दृष्टि नीचे किए अपनी टिकटें और कैश गिनता रहा। मारी और पहलवान की देखा-देखी कुछ और लोगों ने भी मंच पर आकर उनके पांव छुए थे और कुछ न कुछ भेंट करके उनका आशीर्वाद लिया था। फिर तो जैसे एक लाइन ही चल पड़ी थी, उनके दर्शनाभिलाषियों और आशीर्वाद चाहने वालों की। सरदार जी के सामने नोटों का ढेर लग गया था, मगर वे आंखें बंद किए कुछ पढ़ते ही रहे थे।

जब प्रोग्राम खत्म हुआ तो पहलवान सीधा सरन के पास पहुंचा, पूछा, "कितनी सेल हुई?"

सरन नोट गिनने लगा, पहलवान बोला, "और घड़ियां कितनी निकलीं?"

सरन ने हाथ रोक लिया, "घड़ी तो एक भी नहीं निकली।"

"क्यों?"

"मैंने किसी को दिखाई ही नहीं," सरन ने बड़ी लापरवाही से जवाब दिया।

"वह किसलिए? घड़ियां निकालना भी तो आपकी ड्यूटी में था।"

"ओमेगा और सोने की घड़ियां/मैं सोने का मूल्य लेकर पीतल नहीं दे सकता था," सरन ने कहा।

"आपने तो मेरा बहुत नुकसान कर दिया। आप अपना वेतन रखकर शेष पैसे और चीजें मेरे हवाले कीजिए। सरदार जी का चेला अब यह काम संभालेगा। आपकी छुट्टी, तीन दिन बाद हम फ्रैंकफर्ट पहुंचेंगे तो आकर अपना सामान ले जाइएगा।" पहलवान ने कहा।

सरन डर रहा था कि पहलवान उसका सारा हिस्सा ही मार लेगा, मगर हिसाब की बात सुनकर वह मन ही मन बहुत खुश हुआ। उसने जल्दी से अपने वेतन और कमीशन का हिसाब करके पैसे जेब में रखे और रसीद, बाकी पैसे, टिकटें, अगरबत्तियां और घड़ियां पहलवान के हवाले कर दीं। जान बची सो लाखों पाए।

12

पहलवान के चंगुल से निकलने के बाद सरन सीधा हैम्बर्ग के मिटफाहर के दफ्तर पहुंचा। मिट अर्थात साथ, फाहर अर्थात यात्रा—साथ कार चलाना, सहयात्री बनना आदि। जर्मनी के बड़े-बड़े शहरों में कहीं-कहीं ऐसे दफ्तर खुले हुए हैं, कोई कार वाला अपनी यात्रा पर किसी दूसरे शहर जा रहा है और वह पेट्रोल के पैसे बचाना चाहता है या वैसे ही किसी के साथ का इच्छुक है या लंबी ड्राइव में कार चलाने में किसी की सहायता चाहता है जो संयोगवश उसी तारीख को उस ओर जा रहा हो तो वह सप्ताह-दस दिन या कुछ समय पहले मिटफाहर में अपनी यात्रा का विवरण अर्थात प्रस्थान का समय, रास्ता, स्थान, एक-दो यात्रियों की जरूरत, आदि लिखवा देगा। इसी प्रकार कोई रिआयती यात्रा का इच्छुक, कार न रखने वाला, मिटफाहर के दफ्तर से अपनी यात्रा के दिन जाने वाले किसी व्यक्ति का पता करेगा। मिटफाहर का दफ्तर उन्हें मिलाकर अपनी थोड़ी सी फीस चार्ज करेगा। साधारणतया ऐसी यात्रा का किराया गाड़ी के टिकट के मूल्य का आधा होता है या फिर जैसे दोनों पर्टियों में आपस में तय हो जाए।

मिटफाहर के दफ्तर में सरन को तुरंत ही फ्रैंकफर्ट जाने वाले एक व्यक्ति का साथ मिल गया। दोनों ने मिटफाहर की फीस का भुगतान किया और बाहर आ गए, जहां उस व्यक्ति की नीली चमकदार फाक्स वैगन खड़ी थी। सरन से हाथ मिलाते हुए वह बोला, "मेरा नाम हरमन शिमिथ है। मेरी राय में आपसे अंग्रेजी में बात करना ठीक रहेगा।"

"जी हां, मैं इंडियन हूं, मेरा नाम सरन आहूजा है।"

''आप ड्राइविंग जानते हैं?''

''जी नहीं, जानता भी होता तो यहां कोई काम न आती,'' सरन ने कहा।

''ओह यस, यस! राइट हैंड ड्राइव के कारण। खैर, कोई बात नहीं। फिर भी मैं आपको अपने साथ फ्री ले जाऊंगा, सिर्फ एक शर्त पर कि आपको ऊंघना नहीं होगा और किसी रोचक विषय से मुझे व्यस्त भी रखना होगा। वैसे भी साथी के नाते यह अधिकार तो मेरा बनता ही है,'' शिमिथ ने हंसते हुए कहा।

''बिल्कुल, बिल्कुल''' सरन ने अगली सीट पर शिमिथ के साथ बैठते हुए कहा।

कार जब शहर के वातावरण से बाहर निकली और सड़क पर दौड़ने लगी तो हर तरफ हरियाली ही हरियाली और फूल ही फूल नजर आने लगे। हवा में मदमस्त नशा था। सरन ने हंसते हुए कहा, ''आपने न ऊंघने वाली शर्त ठीक रखी है। इस मदमस्त वातावरण में अगर ड्राइवर ऊंघ जाए तो सोचिए, क्या हो!''

''सिर्फ ड्राइवर का ऊंघना ही खतरनाक नहीं। ड्राइवर के साथ बैठे हुए व्यक्ति का ऊंघना भी उतना ही खतरनाक है,'' शिमिथ बोला।

सरन बोला, ''हमारे यहां एक कहावत है—खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है। यह बात यहां बिल्कुल ठीक बैठती है।''

शिमिथ कहावत सुनकर बहुत हंसा, बोला, ''हां, हमारे यहां भी ऐसी कई कहानियां हैं। अब सुनाने लगूं तो खुद मुझ पर हंसी का जबरदस्त दौरा पड़ेगा। इसलिए बेहतर है कि फिर किसी वक्त। आप मिलेंगे ना, फिर कभी?'

सरन ने कहा, ''डिपेंड्स।''

थोड़ी देर बाद वह फिर शुरू हो गया। पूछा, ''आपके यहां 'नींबू निचोड़' भी होते हैं? अपने यहां तो ये बड़े रोचक लोग होते हैं। कहानी इनकी यूं है कि हर ऐसे व्यक्ति को जो बहुत कम देकर बहुत अधिक प्राप्त करने की कोशिश करे 'नींबू निचोड़' कहते हैं। एक सराय में एक आदमी रहता था। काम उसका यह कि जब भी कोई भला आदमी खाना खाने बैठता, वह जाकर उसके साथ बैठता, मीठी बातें करता और जेब से नींबू निकालकर उसके सालन में निचोड़ने लगता और नींबू की इतनी प्रशंसा करता कि उस भले व्यक्ति को उसे अपने खाने का साथी बनाना पड़ता।''

शिमिथ बोला, ''सराय पर याद आया। अभी रास्ते में एक वे साइड रेस्टोरेंट आएगा। ध्यान रखिए, बातों-बातों में उसे पास कर गए तो अगला वे साइड रेस्टोरेंट बहुत देर बाद आएगा और काफी लंबा सफर बिना पेट-पेट्रोल के तय करना पड़ेगा।''

सुंदर पंखों वाले रंग-बिरंगे पक्षियों का गोल, उनके सिर से गुजरा तो सरन बोला, ''देखिए, देखिए, कितने सुंदर पक्षी हैं।''

''आप कलाकार तो नहीं?'' शिमिथ ने पूछा।

"अगर सुंदर वस्तुओं का प्रेमी होना कलाकार होने का प्रमाण है, तो मैं अवश्य कलाकार हूं," सरन बोला।

"मैं देख रहा हूं, जब भी कोई सुंदर फूल, पक्षी या नदी-नाला आता है। आपकी बातों का क्रम टूट जाता है," शिमिथ बोला।

"आप ठीक कहते हैं, मिस्टर शिमिथ! सुंदर वस्तुओं को देखकर मेरे कदमों और नजरों का रुक जाना मेरी आदत रही है। मगर यह कितनी बड़ी त्रासदी है कि इंसान ही प्राकृतिक सौंदर्य का कातिल है।"

"आपकी बात की तान हिटलर के अत्याचार पर तो नहीं टूटेगी?" शिमिथ का व्यवहार बदलता महसूस होने लगा।

"आपने ऐसा क्यों सोचा?" सरन ने सवाल किया।

"साधारणतः जब भी सौंदर्य की बात होती है, सौंदर्य के विकृत करने वालों का वर्णन भी आता है और आजकल जिधर देखिए, बात उसी पर आकर टूटती है," शिमिथ बोला।

"हिटलर की बात नई है शायद, इसलिए लोग जब सौंदर्य के विकृत होने की बात करते हैं, तो उसका जिक्र आ ही जाता है," सरन ने कहा।

"यह ठीक है," शिमिथ बोला, "मगर अत्याचार की जब बात होगी तो क्या हम दूसरे उन लोगों को भूल जाएंगे जो आंधी और तूफान की तरह अपने देश से उठे और अपने घरों में बैठे शांतप्रिय लोगों पर छा गए? उदाहरण के लिए, सिंकदर महान को अपने घर में क्या कष्ट या कमी थी?"

"और अपने उन अत्याचारों को किसी ने धर्म का चोला पहना दिया और किसी ने अपनी हवस को देश की भलाई का। और अपने बनाए हुए इतिहास के पृष्ठों पर हीरो बन बैठे," सरन बोला।

"हमने हिटलर को कभी हीरो नहीं माना। जीत जाता तो दूसरे अत्याचारियों की तरह खुद ही अपने सिर पर महानता का ताज रख लेता। यह दूसरी बात है, मगर हमें उसके किए की हद से ज्यादा सजा मिल चुकी है। और सजा मिलने के बाद तो इंसान का पाप धुल जाना चाहिए। आपका क्या विचार है?"

"आप ठीक कहते हैं," सरन बोला, "मगर लोग अपने पाप को छिपाने के लिए दूसरे के पाप को बढ़ा-चढ़ाकर बयान करते हैं।"

"सजा हमें अभी तक मिल रही है, किताबें लिखी जा रही हैं, फिल्में बनाई जा रही हैं। हमारा देश विभाजित हो चुका है, मगर फिर भी देखिए, इतने कम समय में युद्ध के बाद जर्मनी ने इतनी प्रगति की है कि आज जर्मन मार्क संसार की एक बहुत बड़ी करंसी बनती जा रही है।"

"इसमें क्या संदेह है?" सरन बोला।

"सोचिए हमारा देश स्वतंत्र हो जाए तो विकास की किस ऊंचाई तक

पहुंचे,'' शिमिथ ने कहा।

''और दुनिया को फिर तीसरे युद्ध की भट्ठी में झोंक दे,'' सरन ने हंसते हुए कहा।

''हमारी प्रगति हमें हर बार युद्ध के दरवाजे पर ला खड़ा करती रही है, यह ठीक है, मगर अब ऐसा नहीं होगा। आज जर्मनी की नई पीढ़ी ही युद्ध से सबसे अधिक घृणा करती है।''

''मिस्टर शिमिथ, मैं संसार के जिस भाग से हूं उसने दुनिया के दो बड़े युद्धों को दूर से देखा है, मगर मैं जब जर्मनी पहुंचा तो मुझे तनिक भी यह आभास नहीं हुआ कि यह देश दुनिया के दो महान युद्धों के जबड़ों से बचकर निकला है,'' सरन ने कहा।

''आपकी यह बात मेरे देश की प्रशंसा करती है,'' शिमिथ बोला, ''मगर आइए, हम इस बारे में कोई और बात न करें। यह बड़ा कड़वा विषय है जिस पर हर जर्मन भावुक हो जाता है। शायद दोषी कोई और है और सजा उसे दी जा रही है।''

''ओके, मिस्टर शिमिथ! मेरा उद्देश्य आपका दिल दुखाना नहीं है। न जाने यह बात कैसे शुरू हो गई। आइए, इस अध्याय को बंद करें,'' सरन ने सड़क पर लगे उस बोर्ड की तरफ देखते हुए कहा, जो दो हजार मीटर आगे आने वाले रेस्तरां का मार्गदर्शन कर रहा था, ''लीजिए, तैयार हो जाइए, पेट पेट्रोल पंप आने वाला है।''

खा-पीकर जब वे बाहर निकले तो जाने कब एक छोटी सी बदली शिमिथ की कार को धो-धाकर साफ कर गई थी और सड़क पर सूखे और गीले की धारियां बनी हुई थीं। सरन बोला, ''मौसम के सौंदर्य और आपके साथ ने मेरी यात्रा अच्छी बना दी है, वर्ना आपको क्या बताऊं, इस यात्रा के दोनों किनारों की झोलियों में मेरे लिए दुख के सिवा और कुछ नहीं। आप कहेंगे, मैं शाइरी कर रहा हूं। शायद हमलोग हैं ही शाइर। दुख आता है, तो महीनों मस्तिष्क में उसकी जुगाली करते रहते हैं। जरा सा सुख मिल जाए तो आसमान से सिर टकराने वाली छलांगें लगाना शुरू कर देते हैं।''

''आपलोग जैसे भी हैं, कई बातों में हमसे अच्छे हैं,'' शिमिथ बोला, ''क्या यह कम प्रशंसनीय है कि आप इतनी भिन्न संस्कृतियों, रंगों, बोलियों, मौसमों और धर्मों के साथ भी मिलकर रहना जानते हैं? दुनिया में आपकी सभ्यता सबसे पुरानी है और इसमें दूसरी सभ्यताओं को अपने अंदर समा लेने की शक्ति है।''

''आप ठीक कहते हैं, मगर यही छोटे-छोटे मतभेद कभी-कभी हमें लड़ा भी देते हैं,'' सरन बोला।

''लड़ाई की बात मिस्टर सरन, आपके मुंह से अच्छी नहीं लगती। आपका

देश एक पूरा महाद्वीप है। अब उस महाद्वीप की छोटी-छोटी लड़ाइयों से हमारे यूरोप की लड़ाइयों की तुलना कीजिए तो आपको महसूस होगा कि आप कितने महान हैं," शिमिथ बोला।

"हमारे यहां कोई झगड़ा हो जाता है तो उचित सोचों वाले इंसान को बहुत दुख पहुंचता है," सरन बोला।

"आपके यहां ये झगड़े होते ही क्यों हैं? सीधी सी बात है, सोचिए तो जरा। स्पष्ट है, बूटा खत्म कर दो तो उसका फल पैदा ही नहीं होगा।"

सरन जोर से हंस पड़ा, "मुझे इस पर एक मुहावरा याद आ गया है," मुहावरे की टीका करते हुए सरन ने कहा, "वह इस तरह है–न रहे बांस न बजे बांसुरी।"

शिमिथ भी जोर से हंस पड़ा, " बांस से कोई बुरी चीज बनती हो तो उसका इलाज बांस को खत्म कर देना नहीं, बल्कि उसका उचित प्रयोग करना आवश्यक है।"

"आप ठीक कहते हैं। हर अच्छा प्रयत्न नेक फल अवश्य लाया करता है," सरन बोला।

"मिस्टर सरन! आप कह रहे थे, इस यात्रा की दोनों झोलियों में आपके लिए दुख के सिवा कुछ नहीं। क्या मैं एक मित्र के नाते आपका दुख जान सकता हूं?" शिमिथ पूछा।

"लाभ? मैं अपने दुखों को अपने तक ही रखना चाहता हूं।"

"तो फिर आपका दुख दूर कैसे होगा?" शिमिथ ने कहा।

सरन ने आकाश की तरफ उंगली उठा दी। शिमिथ हंस पड़ा, बोला, "आप लोग प्रैक्टिकल बहुत कम हैं। ऊपर वाले को और भी बहुत से काम हैं।"

"प्रैक्टिकल हूं, इसीलिए तो बेघर हुआ फिरता हूं," सरन ने कहा।

"बेघर होकर भी बहुत कुछ करना पड़ता है।"

"कर तो रहा हूं, वह नहीं जानता क्या?" सरन बोला।

"जानता है, मगर वह स्वयं तो आने से रहा। किसी न किसी इंसान के हाथों ही आपका काम करवाएगा ना! उदाहरण के लिए, मैं बार-बार पूछ रहा हूं कि आपकी समस्या क्या है?

"रोटी रोजी," सरन ने संक्षिप्त सा जवाब दिया।

"अच्छा, आप एक काम करें," शिमिथ ने सरन को अपना कार्ड पकड़ाते हुए कहा, "कल आप मेरे दफ्तर आ जाइएं।"

दूसरे दिन सरन शिमिथ के दफ्तर पहुंचा। बहुत बड़ा दफ्तर था। बहुत से लोग काम कर रहे थे। जैसे ही उसने स्वागत-कक्ष पर अपना नाम पता बताया और

रिसेप्शनिस्ट ने इंटरकॉम पर उसका नाम अंदर पहुंचाया, एक व्यक्ति दौड़ा हुआ बाहर आया और उसे अपने साथ अपने केबिन में ले गया। सरन के बैठने के पांच मिनट बाद ही उसने एक लिफाफा सरन के हाथ में पकड़ाते हुए कहा, "मिस्टर शिमिथ तो आज सुबह स्विट्ज़रलैंड चले गए, मगर मुझे आपके बारे में सब कुछ समझा गए हैं। आप यह पत्र लेकर पुलिस मुख्यालय चले जाएं। वहां आपको हमारे दफ्तर के नाम का वीजा दे दिया जाएगा।"

सरन पुलिस आफिस पहुंचा तो वहां उसे कहा गया कि वह जर्मनी से बाहर जाकर किसी दूसरे देश से वीजा के लिए आवेदन करे तो उसके आवेदन पर विचार किया जा सकेगा। निराश होकर वह वापस शिमिथ के दफ्तर पहुंचा और सचिव को सारी स्थितियों से अवगत कराया। वह बोला, "मिस्टर सरन, आप नहीं जानते कि मिस्टर शिमिथ यहां के कितने बड़े वकील हैं, उनके एक दिन की फीस डेढ़ हजार मार्क है। वीजा तो पुलिस के बाप को भी देना पड़ेगा, मगर अब आपका नियुक्ति-पत्र उनके अपने पैड पर होना चाहिए। यह कंपनी तो उनकी एक प्राइवेट बिजेनस फर्म है, मगर इसके लिए आपको एक सप्ताह इंतजार करना पड़ेगा। वे अगले मंगलवार को वापस आ जाएंगे। वे आपके काम में पूरी रुचि रखते हैं।"

और सप्ताह बाद वह हो गया जो नहीं होना चाहिए था। सरन का काम चाहे न होता—उसने सोचा, मगर काश, भगवान यह न करता। शिमिथ स्विट्ज़रलैंड से वापस आ रहे थे कि एक जगह तेजी से मोड़ काटते हुए कार उनके कंट्रोल से बाहर होकर एक खड्ड में जा गिरी। शिमिथ बहुत अधिक घायल हो गए। सरन जब मंगलवार को उनके दफ्तर पहुंचा तो उनके सचिव ने यह मनहूस खबर सुनाई। सरन ने बड़ी बेचैनी से कहा, "मैं मिस्टर शिमिथ को देखना चाहता हूं।"

सचिव बोला, "नहीं, डाक्टर ने उन्हें मिलने से मना कर दिया है। आप चाहें तो उनके ठीक होने तक नए पत्र का इंतजार कर सकते हैं, वर्ना इसी पत्र पर किसी दूसरे देश जाकर आवेदन करें। हम हर दशा में आपको अवश्य लेना चाहते हैं।"

सरन चुपचाप वापस लौट आया। अब उसके पास रहने का भी कोई ठिकाना नहीं था। पिछली रात उसने हाइम नंबर चार में बिताई थी। अब भी विवश होकर वह वहीं पहुंच गया। उसका दिल बहुत उदास था। रात को उसने आसिम को मात्र एक पंक्ति लिख दी—

आ जाओ, बहुत उदास हूं।

तीन दिन उसने जैसे-तैसे बिताए मगर रातों को उसे भयानक सपने सताते रहे। कभी उसके हाथ में आमों के मुरब्बे की प्लेट होती, वह चमचे से पहला ग्रास ही खाने लगता और प्लेट उसके हाथों से फिसलकर नीचे गिरती और टुकड़े-टुकड़े हो

जाती। कभी वह हवाओं में उड़ता फिरता होता, मगर फिर एकदम उसके पंख झड़ जाते और वह बड़ी तेजी से नीचे गिरने लगता। कभी कोई सफेद कपड़ों में सुसज्जित सफेद फरिश्ता (दूत) अंगूरों की भरी प्लेट उसकी तरफ बढ़ाता, मगर वह अंगूरों की परवाह न करते हुए उस फरिश्ते का हाथ थामने लगता तो फरिश्ता हवाओं में विलीन हो जाता। फिर सपनों का असीमित क्रम शुरू हो जाता और वे इस तरह आपस में गडमड हो जाते कि उलझे धागों की तरह उन्हें एक-दूसरे से अलग करना मुश्किल हो जाता। बेचैन होकर वह तीसरे दिन ही शिमिथ का हाल पूछने उनके दफ्तर की तरफ चल पड़ा। दूर एक गली के मोड़ पर एक लड़का अपने कुछ दोस्तों के साथ एक मोटा सा काला हथौड़ा लिए खड़ा था। सरन अपने विचारों में खोया जब उनके पास से निकला तो लड़के ने पूरे जोर से हथौड़ा उसके सिर पर जमा दिया। सरन एक पल के हजारवें भाग के लिए चकराया, मगर फिर संभला, उसे कुछ भी नहीं हुआ था। उसने सोचा शायद यह भी सपना ही होगा। वह आगे बढ़ा तो लड़के ने आवाज दी, "हाय!"

सरन ने मुड़कर देखा, लड़का हथौड़े को पांव के नीचे दबाए खड़ा था और हथौड़ा उसके पांव के नीचे ऐसे पड़ा था जैसे केला हाथी के पांव के नीचे आ गया हो। सरन समझ गया, काले स्पंज से बना ऐसा हथौड़ा उसने एक बार एक खिलौनों की दुकान पर देखा था। लड़के खिलखिलाकर हंस पड़े, मगर सरन की उदासी ने उन्हें जवाबी मुस्कान तक न दी, और वह आगे बढ़ गया।

शिमिथ के दफ्तर पहुंचकर वह फिर सचिव से मिला, बोला, "मिस्टर शिमिथ का हाल पूछने आया हूं।"

सचिव ने कहा, "आइ एम सॉरी मिस्टर सरन! उनका कल देहांत हो गया। हम अब आपको दूसरा पत्र नहीं दे सकेंगे, मगर जब भी आपके पत्र के संदर्भ में कोई पूछताछ हुई हमारा जवाब 'यस' होगा।"

क्षण भर के लिए सरन को चक्कर सा आया और वह पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गया। उसे लगा जैसे सचिव ने सचमुच एक बहुत बड़ा हथौड़ा उसके सिर पर दे मारा है। उसने सोचा और उसका दिल भर आया, क्या मैं मिस्टर शिमिथ के लिए इतना अभागा था! फिर अचानक ही उसे मिस्टर शिमिथ के शब्द याद आ गए, "बी प्रैक्टिकल।"

और वह आंसुओं को आंखों में दबाता बाहर निकल आया।

सरन का एक दिन बहुत ही बेचैन गुजरा। रात भर उसे नींद नहीं आई। थोड़ी देर के लिए भी आंख लगती तो उसके मन-मस्तिष्क पर सपनों की बौछार होने लगती और वह हड़बड़ा कर उठ बैठता। दूसरे दिन वह फ्रैंकफर्ट की सड़कों पर ऐसे ही इधर-उधर घूमता रहा। उसे पता ही नहीं चलता कि वह कहां जा रहा है और क्यों जा रहा है, भूख है या नहीं? अंतड़ियां सूख कर जब कांटों की तरह अंदर ही अंदर

चुभने लगतीं तो कहीं से कुछ भी खरीद कर चर-चुग लेता। एक जगह उसे भुने हुए चनों का पैकेट मिल गया, उसने वह खाया और कोक की पूरी बोतल पी डाली। फिर तो उसे ऐसे लगा जैसे पेट में भूचाल आ रहे हों या उसके अंदर कोई गोला फटने जा रहा हो या जैसे वह गर्भवती हो गया हो और पूरे महीने का बच्चा उसके अंदर उछल-कूद करता फिरता है, वह बेइरादा इधर-उधर चलता रहा फिर शुमाखर स्ट्रासे पर जा निकला। वहां से पुल पार करके सेक्शन हाउसन की तरफ बढ़ा, मगर इधर-उधर उस सारे क्षेत्र में उसके दुख और सुख की यादों के कण बिखरे पड़े थे, वह उन्हें आंखों से चुनता फिरा। कुछ कण बर्फ के छोटे टुकड़ों की तरह आंखों में पड़ते तो ठंडक महसूस होती, फिर कुछ कणों ने आंखों में चुभना शुरू किया, वह वापस आकर माइन के किनारे-किनारे लाइनों में खड़े पेड़ों की छतरियों के नीचे चलता पानी के बहाव को देखता हुआ बढ़ता गया, जैसे बहाब के साथ नाव की तरह बह रहा हो। वह पहला और दूसरा माइनज स्ट्रासे के बीच का पुल बेध्यानी में ही पार कर गया और अगला पुल फ्रीदन बुर्के जब पार करने लगा तो एक कार ने हार्न बजाकर उसे विचारों की दुनिया से बाहर खींच लिया। उसने आस-पास देखा, वह फिर हाइम नंबर चार के पास खड़ा था। दरवाजे पर ही उसे आसिम मिल गया। बोला, ''कहां मर गए थे? लिख देते हो तुरंत आ जाओ और खुद गायब हो जाते हो, जैसे तुम्हारे बाप का नौकर हूं। मुझे आए चार घंटे हो गए हैं और तुम्हारा कहीं ठिकाना ही नहीं और यह जगह कौन सी चुनी है ठहरने के लिए? दुर्गंध से नाक फटी जाती है।''

सरन खामोश रहा। धक्कों, भूख और उदासी ने उसका चेहरा आभाहीन कर दिया था। आसिम ने उसकी यह हालत देखी तो पूछा, ''कष्ट क्या है?''

सरन फिर भी खामोश रहा तो वह बोला, ''अब खुश हो जाओ, बहुत लंबी छुट्टी लेकर आया हूं। तुम्हें खूब सैर कराने का इरादा है।''

''मैं तो लंदन जाने की सोच रहा था,'' सरन बोला।

''लंदन भी चलेंगे, मगर लंदन मेरा देखा हुआ है। जर्मनी तेरा देखा हुआ है। इसलिए कहीं और चलेंगे,'' आसिम ने कहा।

''तेरे पास पैसे बहुत हो गए हैं!'' सरन अभी तक उदास था।

''यह उदासी का खोल चेहरे से उतार दो तो एक बात बताऊं,'' आसिम ने अपनी जेब थपथपा कर कहा, ''पैसों की यहां कोई कमी नहीं। बस रोनी सूरत न बनाओ तो सब ठीक कर दूंगा।''

''पैसे तो मेरे पास भी कुछ हो ही गए हैं, मगर मेरा तो यहां सारा सिलसिला ही खत्म होता नजर आ रहा है। एक नियुक्ति-पत्र मिला है, उसके लिए किसी दूसरे देश से आवेदन करने की आवश्यकता है,'' सरन से उसे सारी बात विस्तार से बता दी, ''इसीलिए सोच रहा था, पहले लंदन हो आऊं।''

"मैं समझा, मगर प्रिय, तेरा यह काम लंदन से भी नहीं हो सकेगा। तू किसी भी ऐसे देश से आवेदन नहीं कर सकता जब तक तेरी वहां किसी प्रकार के आवास की अनुमति न हो," आसिम बोला।

"तुझे कैसे पता है?"

"एक जमाने से वहां झख मार रहा हूं।" आसिम बोला।

"तो यह भी गया काम से," सरन बोला, "अब क्या करूं?"

"मगर भारत से तो आवेदन कर सकते हो, भारत जाओ," आसिम ने राय दी।

"और वह तुम्हारा सैर-सपाटे का प्रोग्राम?" सरन ने कहा।

"लंबी छुट्टी है और अब उस उदास घर से भी छुटकारा मिलने वाला है। मैंने मकान बदलने का प्रबंध कर लिया है, इसलिए अभी मैं वहां से निकल आया हूं, तुम जहां ले चलो," आसिम ने कहा, "वैसे भारत बहुत याद आ रहा है। तुम मुझे अपना देश नहीं दिखा सकते। हम तो परदेसी हो गए हैं। पासपोर्ट तक अंग्रेजी ले लिया है।"

सरन का मूड बदला और उसके होंठों पर मुस्कराहट की छोटी सी रेखा फैल गई। आसिम के कंधे पर जोर से एक धप मारते हुए बोला, "तुम मुसल्ले भारत रहते हो तो पाकिस्तान की तरफ देखते हो। वहां पहुंचते हो तो, 'मेरे मौला बुला ले मदीने मुझे,' गाने लगते हो या यूरोप की तरफ उड़ान भर लेते हो, मगर तुम्हारा अपना देश आंखें बिछाए, बांहें फैलाए तुम्हें हरदम वापस बुलाता है। चलो, तुम्हें कल ही वीजा दिलाता हूं।"

"और मैं तुम्हें इस नरक से आजाद कराता हूं। यह भी कोई रहने की जगह है?" आसिम बोला।

"भाई, मैं आजकल बेरोजगार हूं," सरन बोला।

"तभी तो बार-बार माया की झलक दिखा रहा हूं। तेरा एक पैसा खर्च नहीं होने दूंगा," आसिम बोला।

सरन का बैग लेकर दोनों हाइम नंबर चार से बाहर निकले। बेस्लर स्ट्रासे के कांटीनेंटल होटल में आसिम ने डबल बेड कमरा बुक कर लिया। सरन ने हंसते हुए कहा, "डबल-बेड मत ले, मुझसे खामखाह मार खा जाएगा।"

"अरे जा, तेरी तो अभी मसें भी नहीं भीगी, तू क्या मारेगा!" आसिम ने हंसते हुए जवाब दिया।

पास ही विल हेल्म लूश्नर स्ट्रासे पर भारतीय दूतावास था। दूसरे दिन आसिम वीजा के आवेदन के साथ पासपोर्ट दे दिया। क्लर्क बोला, "कल दोपहर दो बजे किसी समय आकर ले जाना, सब कुछ तैयार मिलेगा।"

आसरा औरियंट हैंडिल्ज के खान साहब सरन को जानते थे। उन्होंने

एमेस्टर्डम से नई दिल्ली के एअर इंडिया चार्टर्ड फ्लाइट जो कि नई-नई शुरू हुई थी, के सस्ते टिकटों का लंदन से फोन के द्वारा प्रबंध कर दिया। सरन हंसकर बोला, "मगर लंदन टिकट लेने कौन जाएगा?"

"हम जाएंगे," खान साहब बोले, आपको मंझधार में थोड़ी ही छोड़ेंगे। साहनी साहब कह रहे थे, आज ही पोस्ट कर देंगे। परसों आकर ले आइए।"

"फ्लाइट कब की है?" आसिम ने पूछा।

"अगले मंगलवार शाम पांच बजे। एमस्टर्डम से आपको फ्लाई करना है," खान बोला।

"सरन, हम ऐसा क्यों न करें," आसिम उठते हुए बोला, "दो दिन पहले वहां पहुंच जाएं। इसी बहाने हालैंड की भी सैर हो जाएगी।"

सरन भी कुर्सी छोड़ चुका था। एंड़ी बजाकर उसने सैल्यूट मारा, "सेठ, जैसा आदेश।"

"यह हिंदू पैसे को सैल्यूट मार रहा है," आसिम ने हंसते हुए खान से कहा, "सारा खर्चा मैं कर रहा हूं।"

पतूड़ी मल और पहलवान से सामान लेने के बाद चौथे दिन बस में वे हालैंड जा रहे थे। टूरिस्ट बस बहुत अच्छी थी और उसकी गाइड और भी अच्छी थी, नौजवान, सुंदर और खुशमिजाज। मुस्कराहट जैसे उसके होंठों को पल भर भी नहीं छोड़ती थी। आसिम ने लड़की से पूछा, "श्रीमती जी, आपका नाम?"

वह पहले तो चौंकी मगर फिर समझी, शायद इसे अंग्रेजी या जर्मन भाषा नहीं आती, मगर नाम और नेम इतने पास के शब्द हैं कि वह समझ गई कि वह उसका नाम पूछ रहा है। बोली, "आस्त्री।"

"अगर तुम राजी हो जाओ तो मेरा दोस्त तुम्हें स्त्री बना सकता है," आसिम ने कहा, "इनके यहां शादी के बाद लड़की का नाम बदल देते हैं।"

आसिम की कोई बात उसे समझ में न आ सकी। उसकी आंखें पटपटाई और उसने हथेली खोलकर आसमान की तरफ उठा दी, जैसे कहती हो, मैं तो कुछ भी नहीं जानती।

सरन अंग्रेजी में बोला, "ये जर्मन, अंग्रेजी, फ्रेंच—कोई भी यूरोपीय भाषा नहीं जानते, मगर अपनी भाषा में आपके सौंदर्य की प्रशंसा कर रहे हैं और कह रहे हैं कि आप जब रास्ते की चीजों के बारे में कुछ बताएं तो अंग्रेज़ी में भी बता दिया करें ताकि मैं उनके लिए अनुवाद कर सकूं।"

"उन्हें मेरी प्रशंसा के लिए धन्यवाद कहिए," वह बोली, "मैं कोशिश करूंगी कि संक्षेप में आपको अंग्रेजी में भी कुछ-कुछ बताती रहूं।"

बस को फ्रैंकफर्ट के क्षेत्र से निकलते-निकलते पौन घंटा लग गया। हाईवे पर आते ही उसने गति पकड़ ली और घने जंगलों की हरियालियों से गुजरने लगी।

बाईं तरफ राइन नदी उनके साथ दौड़ रही थी। एक जगह नदी ने ऐसा जबरदस्त मोड़ काटा जैसे कोई परेड करता हुआ सिपाही अचानक राइट अबाउट टर्न हो जाए। गाइड लड़की ने जर्मन भाषा में उस जगह के बारे में बहुत कुछ बताया, मगर जब अंग्रेजी में अनुवाद किया तो उसे बहुत ही संक्षिप्त कर दिया, "यह जो आप नदी का भयानक मोड़ देख रहे हैं, इस जगह ने बड़े-बड़े जहाजियों की जान ली है। नदी के खतरनाक मोड़ की वजह से नहीं, एक सुंदर लड़की लोरालइ के कारण, जो वहां उस पहाड़ी पर बैठकर बाल बिखराए गाना गाती थी। उसका सौंदर्य एक जादू था जो सिर चढ़कर बोलता था और गाने का नशा ऐसा मदमस्त, कि जब तक वे लोग होश में आते, डूब रहे होते।"

"मैं तो तुम्हें ही देखकर डूब रहा हूं," आसिम ने धीरे से कहा, "सरन, यार यह गाइड लड़की ही मेरे लिए लोरालइ बनती जा रही है। अब जाने तेरे साथ आगे जाता हूं या यहीं रास्ते में समाप्त हो जाता हूं।"

"दाईं तरफ ऊपर देखिए," लड़की ने सरन और आसिम की ओर ध्यान देकर कहा, "वह जो ऊपर दो पुराने महल हैं, दो भाइयों के थे। बीच में बहुत बड़ी मजबूत पथरीली दीवार थी। वास्तव में एक की पत्नी बहुत सुंदर थी..."

"सुसरी, मुझे तो लगता है, तू हम दो दोस्तों के बीच दीवार डलवाएगी," आसिम बोला, "सरन भाई, बॉय-बॉय, तुम जाओ, मैं तो यहीं उलझ गया।"

"...दूर उन पहाड़ियों में वह किला, दरअसल ये लोग लड़ते-भिड़ते ज्यादा थे, इसलिए..."

"तुम जैसी सुंदर औरतें जब तक दुनिया में मौजूद हैं, लड़ाइयां तो होती ही रहेंगी," अब सरन ने फिकरा कसा।

उन्होंने महसूस किया कि वह दस में से केवल तीन-चार चीजों के बारे में ही उन्हें बता सकती है, क्योंकि जर्मन भाषा में दूसरे टूरिस्टों को बताते-बताते वह जगह निकल जाती है। जब सामने कोई दृश्य ही न हो तो वह क्या बताए? बस ने जब हालैंड के क्षेत्र में प्रवेश किया तो आस-पास के वातावरण ने स्वयं ही बताना शुरू किया कि मैं उस देश से अलग देश में हूं, जो तुम अब तक देखते आए हो। खुली-खुली हरियाली और उसमें चरती हुई मजबूत गायें, चितकबरी जैसी उनकी खाल न हो, ब्लैक एंड व्हाइट में दुनिया के विभिन्न देशों के नक्शे हों। दूध और दही का देश, लस्सी, मक्खन और उत्तम प्रकार के पनीर का देश, कहीं-कहीं दूर खेतों में पुराने जमाने की पवन चक्कियां भी नजर आ जातीं जो कि हवा में पंख फैलाए उड़ती प्रतीत होती थीं।

सरन बोला, "लगता है, आगे मक्खनों से पली और गढ़ी हुई सुंदरियां मिलेंगी।"

"हां, जल्दी पहुंच, तेरे लिए उदास बैठी हैं," आसिम ने कहा।

सड़क के किनारे रंग-बिरंगे फूलों ने मुस्कराकर और लहरा लहराकर उनका स्वागत करना आरंभ किया। कुछ देर बाद गाइड बोली, "अब आप अमस्टर्डम में प्रवेश कर रहे हैं। बीस मिनट बाद आप एअर टर्मिनल पर होंगे। आगे आपकी अपनी इच्छा, जहां ठहरिए, जहां रहिए, जहां जाइए। खरीदने को फूल, किताबें, लेदर वर्क, जस्ते के बर्तन, पनीर, क्रिस्टल और सिल्वर, सिगार और लकड़ी के जूते और आपकी जेब कहे तो हीरे। कोइकन हॉफ बल्वा सीजन में आउटडोर फ्लावर नुमाइश देखना मत भूलिएगा। चिंता मत कीजिए, आपको कोई कठिनाई नहीं होगी। लोग जर्मन, फ्रांसीसी और अंग्रेजी खूब बोलते हैं। गुड लक एंड गुड डे!"

शाम हो चली थी। पहले तो उन्होंने आवास का प्रबंध करना उचित समझा। टर्मिनल पर ही पूछा, "पास का कोई उचित सा होटल और?"

"म्युजियम होटल," काउंटर क्लर्क ने कहा, "वहां बहुत कुछ आपको पास ही देखने को मिल जाएगा।"

कमरा लेकर सामान रखने के बाद वे फिर स्वागत कक्ष पर पहुंचे, "क्या देखें?"

रिसेप्शनिस्ट बोला, "समय कम है, इसलिए आज आप कोइकन हॉफ देख लें।"

जैसा उसने समझाया था वे बस लेकर कोइकन हॉफ पहुंचे। कई एकड़ जमीन को घेरे एक बहुत बड़ा बाग था। फूलों से रंग व सौंदर्य की एक दुनिया आबाद थी। हल्की-हल्की बूंदा-बांदी होने लगी थी। जब जरा बारिश ने जोर पकड़ा तो लोग ग्लास हाउस की तरफ भागे। सरन और आसिम भी भाग कर अंदर जा पहुंचे। अरे, असली जगह तो यही है देखने योग्य, जैसे बहुत बड़ी चीज का छोटा सा मॉडल बनाकर रख दिया हो, मगर उतना ही सुंदर और भव्य। अगर आपको रंग व सौंदर्य से प्रेम है तो यहां के फूल आपको घंटों जादू में रख सकते हैं। सरन और आसिम ने जब सारा हाउस छान मारा तो लगभग डेढ़ घंटा निकल चुका था। अंदर ही छोटा सा रेस्तरां था। वे वहां बैठकर बीयर पीने लगे। थोड़ी देर बाद आसिम बोला, "यार, अभी बाहर बहुत कुछ देखने को रह गया है।"

"बारिश नजर नहीं आती तुम्हें?" सरन ने कहा।

"तुम बूढ़े हो गए हो। तुम्हारा खून ठंडा पड़ गया है," आसिम ने व्यंग्य करते हुए कहा।

"बूढ़ा तेरा बाप होगा," सरन बोला, "मेरा बाप तो जवानी का चार्ज मुझे सौंप कर परलोक सिधार गया।"

उसने आसिम की बांह पकड़ी और बाहर निकल आया। बारिश ज्यादा थी। आसिम वापस ग्लास हाउस जाना चाहता था, मगर सरन उसे छोड़ता ही नहीं था। विवश होकर बहुत देर तक दोनों भीगते रहे। फिर अंदर आकर दोबारा पीने बैठ

गए। गर्मी चढ़ी और बेहोशी होश में लाई तो बस लेकर वापस होटल पहुंच गए। अभी वे ताजादम थे। रिसेप्शन पर पूछा, "और क्या देख सकते हैं?"

रिसेप्शनिस्ट ने घड़ी देखते हुए कहा, "यहीं पास से मोटर बोट चलती है। होटल से निकलिए, सड़क पार कीजिए, दाईं तरफ मोटर बोट खड़ी है। नहरों के इस शहर को आप ने मोटर बोट से देख लिया तो समझिए आपकी आधी सैर पूरी हो गई।"

नदियों के शहर में बड़े-बड़े शीशे की खिड़कियों वाली मोटर बोट गली-गली घूम रही थी, मगर सरन और आसिम उसे देखे जा रहे थे। वह पूरब की औरत पैंतीस-छत्तीस साल की होगी, मगर अब भी उसमें लड़कियों से अधिक आकर्षण था। आसिम बोला, "मैं सोच रहा हूं, मैंने इसे कहां देखा है।"

"और मैं भी यही सोच रहा हूं," सरन बोला, "अरे याद आया, हूबहू मोना लगती है। वही रंग-रूप और वही चेहरे की आकृति।"

"नईमा अब इसी उम्र की होती, उसकी एक आकृति मेरी आंखों में सुरक्षित है," आसिम किसी और दुनिया से बोल रहा था।

"सामने ही तो बैठी है," सरन बोला, "काश, कैमरा लाए होते।"

"काश, यह नईमा होती तो मेरी भटकन खत्म हो जाती," आसिम उदास हो गया, "पति भी साथ है।"

"कभी-कभी तो चेहरे एक-दूसरे से ऐसे मिल जाते हैं कि आदमी सोचता ही रह जाता है," सरन बोला।

बोट पुलों के नीचे से गुजरती, मोड़ काटती गली-गली घूम रही थी। गाइड कह रहा था, "वह जो मकान के ऊपर बड़ा सा हुक लगा हुआ है वह ऊपरी तलों पर रहने वालों का सामान रस्सी से खींचकर ऊपर पहुंचाने के लिए है। पुराने मकानों की सीढ़ियां इतनी तंग होती हैं कि उनमें से कुर्सी तक ऊपर ले जाना संभव नहीं, इसलिए जगह-जगह यह हुक ही खिड़कियों के रास्ते सामान अंदर पहुंचाते हैं।"

रात का खाना दि विलेज में खाकर वे अपने होटल पहुंच गए। सुबह का नाश्ता कमरे के किराए के साथ ही था। नाश्ते में मक्खन व पनीर वहां की विशेषता थी। बड़े मजे का नाश्ता कर और संतुष्ट होकर वे रिसेप्शन पर पहुंचे और सैर के विवरण प्राप्त किए। नक्शा हाथ में लिया, कैमरा कंधे से लटकाया और बाहर निकल आए। दिन बहुत साफ और सुंदर था। हवा में थोड़ी सी ठंडक थी, मगर अच्छी लगती थी। उन्हें बाहर ही एक अमेरिकन जोड़ा मिल गया। बातों-बातों में उनका साथ हो गया। वे पहले से ही अपना सारा प्रोग्राम चाक आउट किए हुए थे, इसलिए उन्हें उनके साथ बहुत सुविधा हो गई।

'शांति की कुंआरी' अपने दाहिने हाथ में जैतून की शाखा और बाएं में रॉड ऑफ मर्करी थामे शाही महल की ऊंचाइयों पर खड़ी डैम स्क्वायर से नीचे प्रेमी

जोड़ों को देख रही थी और सरन व आसिम उसे देख रहे हैं। उसके हाथों की दोनों चीजें शहर की शांति और व्यापार के चिह्न हैं।

पास ही विंसेंट वान घोग और उसके दो-तीन दोस्तों के कलेक्शन का म्यूजियम बन रहा है, वह अभी अपूर्ण है, इसलिए आप रिक्स म्युजियम ही देखिए। वैसे भी अगर आपने विंसेंट वान घोग के बारे में पढ़ रखा है और जानते हैं कि उसकी महान कला ने उसे आजीवन एक पैसा भी नहीं दिया और वह भाई की मदद से जिंदगी घसीटता रहा और जब वह अपनी प्रेमिका को और कुछ न दे सका तो उसके मजाक पर सचमुच अपना कान ही काट कर दे दिया। इर्विंग स्टोन का उसके जीवन पर आधारित उपन्यास 'लस्ट फॉर लाइफ' अगर आपने पढ़ा है तो यह म्युजियम शायद आप देखना पसंद न करें। मुर्दा-पूजन का लाभ? खामखाह आपका दिल दुखेगा। तो चलिए, रिक्स म्युजियम ही देख लेते हैं। वहां आपको रेंबरां की लगभग सभी कलेक्शन मिल जाएंगी। देखते जाइए और प्रशंसा करते जाइए। बड़े-बड़े हॉलों और कमरों की दीवारें एक-एक पेंटिंग के लिए छोटी पड़ती महसूस होंगी। 'द नाइट वाच' के सामने जा खड़े होइए जिसे रेंबरां ने उस समय के सिटी गार्ड्स के आर्डर पर बनाया था। रेंबरां तब सैंतीस वर्ष का था। यह बहुत अच्छी तस्वीर है, लाइट एंड शेड और रंगों का इतना सुंदर प्रयोग और हर चेहरे का अपना अलग एक्शन, जैसे दिल चेहरे पर खिंच आया हो। लाइट एंड शेड रेंबरां की कला की विशेषता है। देखते जाइए, देखते जाइए। दिल न भरे तो अभी और भी बहुत कुछ है। आगे जाइए, यहीं पर इतना समय लगा दिया तो आप और क्या देखेंगे? आप टूरिस्ट हैं, शहरी तो नहीं, इसलिए जल्दी, जरा जल्दी। आपके पास समय कम है।

आइए, आपका मूड जरा बदलें। न्यूड्स देखिए या फिर 'ब्राइडल कॅपल काल्ड द जेविश ब्राइड' को देखिए और कलाकार के कला की प्रशंसा कीजिए। लोग इस पेंटिग को 'द लवर्स' भी कहते हैं। सेल्फ पोर्ट्रेट और ग्रूप पोर्ट्रेट तो बहुत प्यारे हैं। समझ आती है कि ऐसी चीजों की चोरियां क्यों होती है। ऐसी-ऐसी मन-भावन पेंटिंग्स, अच्छे-अच्छों की पहुंच से बाहर की चीजें हैं। 'स्टेबल मास्टर्स' भी देख लीजिए। बस देखते जाइए और चलते जाइए। दो सौ से ऊपर कमरों के इस म्युजियम को कहां तक देख पाइएगा? कमरा नंबर 221 और 221-ए में रेंबरां के विशेष कारनामे आपको देखने को मिलेंगे। अगर आपने छोटी सी पुस्तिका दरवाजे पर ही दफ्तर से खरीद ली है तो वह आपको बहुत सहयोगी सिद्ध होगी, वर्ना आंखों से प्यास बुझाइए।

नीदरलैंड के दूसरे बड़े कलाकार जॉन वेरमीर की 'यंग वुमन रीडिंग लेटर' (पत्र पढ़ती हुई जवान औरत) देख लीजिए। यह आपको कमरा नबंर 226 में मिल जाएगी। फेरांस हॉल्स को दो कमरे 211 और 211-ए मिले हैं। उसकी 'द हैप्पी

रिटर्न' ही बहुत प्रसिद्ध और चमकीली पोर्ट्रेट है।

कमरा नंबर 224 में जैकबवान रूसडायल की लैंडस्केप भी अधिक आकर्षक हैं। कमरा नंबर 217 और 218 में जॉन स्टेन की बहुत सी पेंटिंग्स विशेष रूप से हास्य फेमिली पार्टियां देखने योग्य हैं। अल्बर्ट कॉप्स के लैंडस्केप, जैकब डीविट और बहुत से दूसरे।

नाइट वॉच के कमरे के बगल में फ्लेमिश स्कूल ऑफ पेंटिंग्स और दूसरे पेंटरों की पेंटिंग्स उनके देश के अनुसार क्रमबद्ध की गई हैं। यहां ब्रोए गेल जूनियर और सीनियर की रोबिंस और वानूडेक, बोए सिले और अनगिनत दूसरे। ए मिनियेचर शो हाउस जरूर देखिएगा। हालैंड के सत्रहवीं शताब्दी के धनवान वर्ग के घर का नक्शा आपकी आंखों में फिर जाएगा। चार फुट ऊंचे इस मॉडल में पूरे घर का दर्शन हो जाएगा। दूसरा कमरा राजसी प्रकार का बेडरूम, तीसरा सुंदर टाइलों से सजा किचन, चौथे में कपड़े धोती-सुखाती और संभालती नौकरानी पांचवें में मालिक और मालकिन अपनी बैठक में बातचीत में मगन। छठवें में अपने ड्राइंग रूम में पति-पत्नी चाय पर। चाइना क्ले की बनी छोटी-छोटी टाइलें और क्राकरी, नन्हीं-मुन्नी मेजें, कुर्सियां, पलंग, दरियां और घर का सारा सामान। इसे एमस्टर्डम के एक संपन्न परिवार ने अपने रहने-सहने के ढंग को जड़वत कर देने के लिए विशेष रूप से बनवाया था।

अगर समय कम है तो इतने बढ़िया और अनगिनत कलाकारों के महान काम को एक उड़ती हुई दृष्टि से देखने के अलावा और कोई चारा नहीं। रिक्स म्युजियम तो भरा पड़ा है, इसलिए आप जो कुछ देख सकते हैं देख लीजिए। यूं दिल बहला लीजिए कि आपने जो देखा है वही सबसे अच्छा है। एशियाई, इस्लामी आर्ट, अठारहवीं शताब्दी के नीदरलैंड का इतिहास या गुड़ियों का घर। रिक्स म्युजियम कला और सौंदर्य का घर है।

यहां आपको रेंबरां ने विशेष रूप से प्रभावित किया है। अब आपने रेंबरां हाउस न देखा तो फिर आपको अपने आप से शिकायत रहेगी। बस़ नंबर 5, रेंबरां 22 या 55 या फिर ट्रिक नंबर 9 लीजिए। इस घर ने रेंबरां की जिंदगी के उतार-चढ़ाव अर्थात अमीरी और गरीबी के दिन देखे हैं। यही उसने अपनी विश्व प्रसिद्ध पेंटिंग्स 'डॉक्टर डायमंस अंटो मॉय ऑवर' और 'द नाइट वाचमैन' बनाई थीं। सन् 1906 में उसका यह यादगार घर रिसर्च करके और उचित परिवर्तन के साथ दोबारा अपनी वास्तविक स्थिति में लाया गया जैसा कि उसके आवास के समय में था, क्योंकि बाद में उसमें काफी परिवर्तन होते रहे थे। उसके 350 ठप्पे छापे, प्रेस और काम आने वाली दूसरी समस्त वस्तुएं; उदाहरणार्थ, तांबे या धातु के पतरे पर खोदने और तेजाब छिड़ककर आकृति बनाने या प्रतिबिंब उतारने के सामान आदि अब वहां सुरक्षित कर लिए गए हैं। काश, हमारे यहां भी ऐसा होता कि

साहित्यकारों, कवियों और कलाकारों के घरों को सुरक्षित कर दिया जाता और शोध करके उन्हें उन्हीं पुरानी स्थितियों में लाया जाता जिनमें वे तब थे जब वे लोग उनमें रहते थे।

विश्व-प्रसिद्ध मादाम तुसाद आर्ट गैलरी अगर आपने लंदन में नहीं देखी तो उसकी एक शाखा यहां देख लीजिए । आपको बहुत कम कमी महसूस होगी। बेहतर यही है कि आप दोनों ही देखें। वह कमाल तो यह नश्वर, वह नश्वर तो यह कमाल। दोनों ही अपनी-अपनी जगह कला के श्रेष्ठ नमूने हैं।

दरवाजे पर उसे देखिए, इसे देखिए, फिर उसे देखिए, फिर इसे देखिए। दो समान रूप के जुड़वां भाइयों में भी पहचानने के लिए कोई न कोई चीज भिन्न दिखाई दे जाएगी, मगर यह तो एक ही व्यक्ति है। चेहरे का एक ही रंग, एक ही रूप। वह भी खड़ा है, यह भी खड़ा है। मगर वह खड़ा रहा सकता है, सदियों खड़ा रहेगा। यह थक जाता है, थक जाएगा, मर जाएगा। हजार स्टैंड-स्टिल खड़ा रहने का अभिनय करे, आंखें तो झपकेगा, सांस तो लेगा। वह मोम की मूर्ति है, यह जिंदा इंसान है। वह आर्ट है, यह आर्ट का रखवाला चौकीदार। वह अमर है यह नष्ट हो जाने वाला है। आइए, इस चौकीदार या गेटकीपर और इसकी मूर्ति जिसने हू-ब-हू वैसे ही कपड़े पहन रखे हैं जिनमें यह खुद सजा है, को छोड़कर आगे बढ़ें। इसी को देखते रह गए तो और बहुत कुछ देखने से रह जाएगा।

दरवाजे में घुसते ही एक बहुत बड़े लकड़ी के फट्टे पर आपको दुनिया भर के बड़े व्यक्तियों के बुत खड़े मिलेंगे। वही चेहरे, वही बाल, वही आवरण। महात्मा गांधी के हाथ में वही बांस का डंडा, आंखों पर वही ऐनक, कमर में वही धोती और कमर से लटकती घड़ी और पांव में वही सादा हिंदुस्तानी चप्पल। चर्चिल है, कैनेडी है, माओत्से तुंग है। दुनिया भर के सब बड़े-बड़े यहां मौजूद हैं, बढ़ते जाइए, देखते जाइए, रुके तो वे आपसे बातें करना शुरू कर देंगे। अपनी कुर्बानियों का हिसाब पूछेंगे। आप क्या जवाब देंगे? उन्हें लज्जित करने का फायदा? खुद लज्जित होने का लाभ?

बहुत बड़ा हॉल है, अनगिनत मूर्तियां हैं, मगर आप फोटो नहीं ले सकते। एक फोटोग्राफर ने शायद ठेका ले रखा है। वह क्यों अपने पेट पर आपकी लात खाने लगा? उसका आदमी आपकी फोटो लेता रहेगा, जहां आप चाहेंगे वहां भी लेगा, जहां वह चाहेगा बिना आपके नोट किए आपको किसी मूर्ति के साथ कैद कर लेगा जिसे आप बड़े ध्यान से देखते रहे होंगे।

यह सब मूर्तियां हैं, मोम के साथी, वर्ना मोम की दोस्ती तो बड़ी बेवफा दोस्ती है। सनम और बेवफाई के जो अर्थ अब तक आप सुनते रहे हैं या शब्द-कोश बताता रहा उनकी भी एक झलक देख लीजिए। यह माताहरि है। पहले विश्व युद्ध की बहुत बड़ी जर्मन जासूस। हसीन तितली जिसके पंखों के रंग बड़े-बड़ों के कंधों पर उतर

आते थे। इसे जेवरों का पहनावा पहनाया गया है। इसे ज्यादा मत देखिए। यह कत्ल करने वाली आपके दिल में उतर जाएगी और आप बिना पता लगे अपनी बेहोशी में कैमरे की फिल्म पर उसके साथ कैद हो जाएंगे।

कितने मोड़ हैं, कितने खाने हैं, क्या कुछ देखने को है, देखते जाइए, बढ़ते जाइए। आपको ये मोम के बेजान बुत नहीं देख रहे हैं, मगर आप तो उन्हें देख रहे हैं और हर कर्म जिंदा इंसान को थका भी देता है। घूमते-फिरते पिछले दरवाजे पर आइए। आपके देखने-दिखाने के हर अंदाज के प्रमाण दरवाजे के साथ ही फोटोग्राफर की दुकान पर आपको लगे मिलेंगे। आप देख रहे थे, उसका आदमी आपके फोटो उतार रहा था। अब आपको अपने फोटो पसंद आएं तो पैसे भुगतान कीजिए, फोटो लीजिए, कोई दबाव नहीं, कोई जबरदस्ती नहीं। आप नहीं लेंगे। आप ही की फोटो कोई और ले जाएगा, अर्थात अब आप बिकाऊ हो गए। मगर ऐसा नहीं होता, हर कोई अपना फोटो खरीद ही लेता है—कौन अपनी इतनी शानदार तस्वीरें छोड़ना पसंद करेगा?

अब किसी डायमंड फैक्ट्री को भी देख लीजिए। हीरा आपके हाथ कोई भी नहीं आएगा, न यह और न वह। वह लड़की जो खुद भी हीरे की कनी है और हीरों से बनी है, वही जो आपको हीरा बनने की सारी कहानी सुना रही है। बेहतर है सुनते जाइए, देखते जाइए, देखते जाइए, सुनते जाइए। पत्नी या प्रेमिका के साथ यहां मत आइएगा। खामखाह तलाक या छूट-छुटकारे तक नौबत पहुंच जाएगी या हिम्मत हो तो यहां से एलिजाबेथ टेलर की बांहों में बांहें डालकर बाहर आइए।

सुबह का नाश्ता करके दूसरे दिन सरन और आसिम ने सोचा—रहा-सहा जो भी कदमों-कदमों देखा जा सकता है, देख लिया जाए। वे डैमस्क्वायर से निकले। दाएं हाथ नेशनल मानुमेंट पर निगाहें दौड़ाईं। सामने ही 'बीहाइव' डिपार्टमेंटल स्टोर था। बाएं हाथ क्विज पैलेस और नया चर्च। वे बाएं हाथ चलते गए तो अमस्टर्डम की मुख्य शापिंग स्ट्रीट पर पहुंच गए। एक बहुत बड़े क्रासिंग से पहले वे दाईं तरफ एक छोटी सी गली में मुड़े, जो उन्हें पुराने आर्म्स हाउस ले गई। चलते-चलते वे फ्लावर मार्केट जा पहुंचे। आगे बढ़ते-मुड़ते वे रेंबरां की मूर्ति के पास जा खड़े हुए। यह जगह रात के जीवन का केंद्र है। स्क्वायर के साथ-साथ चलते एक पतली गली से गुजरते वे एम्स्टल ओरोकिन जा पहुंचे। एम्स्टल के पानियों ने अमेस्टर्डम को अपना नाम दिया है। वे बाईं ओर मुड़े और पानी के साथ-साथ चलते आगे बढ़ते गए। आगे बाईं तरफ बहुत सारी सुंदर दुकानों का क्रम था जिनमें शहर की उत्कृष्ट कलाकृतियां उपलब्ध थीं। यही रास्ता उन्हें वापस डैम स्क्वायर ले आया। रिसेप्शन क्लर्क के कागज पर बनाई रेखाओं के नक्शे ने उन्हें ठीक गाइड किया था। आप भारतीय हैं तो हालैंड के सौंदर्य में शायद आपके खून का भी कुछ अंश होगा। क्या आप यूरोप से भारत पहुंचने वाले पहले यात्री

वास्कोडिगामा को नहीं जानते?

वे थक चुके थे, भूखे भी थे और अपराह्न की एअर इंडिया की फ्लाइट का समय भी पास आता जा रहा था।

13

दिल्ली पहुंचे और कस्टम से छुट्टी मिलने के बाद सरन ने पूछा, "बोलो, अब क्या इरादे हैं?"

"एक अच्छा सा होटल और तुम्हारा साथ," आसिम बोला।

"मेरे साथ रहना है तो मेरे ही घर चलो," सरन बोला।

"मैं आधा दिल्ली वाला हूं, इसलिए विश्वास नहीं होता कि यह तुम कह रहे हो," आसिम बोला, "शायद तुम्हारे अंदर पंजाबियत अभी मरी नहीं।"

"आदमी तो तुम समझदार हो," सरन ने हंसते हुए कहा," मैं खुद सोच रहा हूं कि मैं क्या कह बैठा! अपना ठिकाना नहीं, दूसरों को निमंत्रण दे रहा हूं।"

"कोई बात नहीं प्रिय, पछताओ नहीं। मैं होटल में ही ठहरूंगा, मगर एक शर्त पर कि तुम्हारा नब्बे प्रतिशत समय मेरे साथ ही गुजरेगा।"

"देख लाले, पैसे वाले, दिल्ली तुम्हारी मुझसे अधिक देखी हुई है, इसलिए इसे खुद देखो और मुझे कुछ काम कर लेने दो," सरन बोला।

"तो ऐसा कहो कि छूट चाहते हो," आसिम बोला, "ओ.के. जहांपनाह, तुम्हारा दस प्रतिशत समय लेकर शेष सारा समय तुम्हें देते हैं। बच्चा जाओ, मौज करो, मगर..." उसने 'मगर' को लंबा खींचते हुए कहा, "यह छूट केवल दिल्ली तक सीमित है। दिल्ली से बाहर निकलते ही तुम फिर नब्बे प्रतिशत मेरे हो जाओगे।"

"धन्यवाद महाराज," सरन ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया, "जो आज्ञा।"

"चिरंजीव रहो," आसिम बोला और उसके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया।

टैक्सी लेकर दोनों जनपथ पर इंपीरियल होटल पहुंचे। आसिम ने एक कमरा बुक कर लिया और सरन सोचता हुआ कि कहां जाए, अपनी ससुराल जा खड़ा हुआ। वह इतने लंबे समय तक अनुपस्थित था और वे लोग उसके बारे में इस अवधि में अनभिज्ञ रहे और नाराज भी थे, मगर उसकी शानोशौकत और उसके जर्मनी में होने के बारे में सुनकर उनकी सारी शिकायतें जाती रहीं। जैसे वह रातोंरात धुल-धुलाकर और नया होकर उनके बराबर का इंसान बन गया हो। उषा का व्यवहार तो आश्चर्य की सीमा तक बदल गया। रात वह उसके कंधे पर सिर

रखकर बोली, "मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी।"

"यह वीजा और आवास मिल जाने पर निर्भर करता है," सरन ने उसे सारी बात समझाते हुए कहा।

"सीता जी रामचंद्र जी के साथ कौन सा वीजा और आवास देखकर वनवास गई थीं?" उषा बोली।

"बस, बस, रहने दो। भगवान के लिए उनकी महानता को अपने स्वार्थ के लिए प्रयोग न करो," सरन ने कहा, "और रातोंरात तुम सीता बन भी जाओ तो मैं उस महान हस्ती की झूठी अदाकारी नहीं कर सकता।"

"ओके, ओके, नाराज मत होओ," उषा ने मनाते हुए कहा, "मगर एक बात तो तय है कि अब मैं भी तुम्हारे साथ रहूंगी।"

"क्यों, अब तक भी तो रही हो मेरे बिना, अब क्या खास बात है?" सरन ने पूछा।

"खास बात ही तो है," वह बोली, "एक विशेष अवस्था के बाद औरत अवश्य अपने पति के साथ रहना पसंद करती है।"

"अब तुम पहेलियां बुझा रही हो," सरन बोला, "अब तक किसके साथ रहती रही थीं?" सरन ने व्यंग्य करते हुए कहा।

"अपनी झूठी शान के साथ," उसने सरन के व्यंग्य को नजरअंदाज करते हुए ठंडे स्वभाव से कहा, "इतने नादान तो नहीं हो। क्या यह भी नहीं जानते कि हर औरत में सृजन की भावना होती है, ममता की रुचि।"

"बहुत समय पड़ा है," सरन ने हाथ लहराकर लापरवाही से जवाब दिया।

"बहुत कम समय रह गया है," उषा बोली, "जरा सोचो, तुम्हें शौक नहीं?"

"देखा जाएगा," सरन ने लापरवाही से कहा और उसकी तरफ पीठ मोड़ ली। उसे अब खुद उषा की कोई परवाह नहीं थी और न ही किसी सुंदर याद का कोई क्षण उसके दिल पर अंकित था।

सरन ने जर्मन दूतावास में अपने कागजात जमा करवा दिए। उसे कहा गया कि पंद्रह-बीस दिन या एक माह तक लग जाएगा, उसका वीजा और कागजात आने में।

वह हर शाम नियमित रूप से आसिम के पास पहुंचता था। फिर दोनों घूमते रहते थे या शाम किसी रेस्तरां या नाचघर में जा बैठते थे। एक दिन आसिम बोला, "मैं जरा यू.पी. की तरफ जाता हूं, कुछ रिश्तेदारों से मिलना है। वापस आऊंगा तो रेवाड़ी इकट्ठे चलेंगे।"

"रेवाड़ी में क्या रखा है? वहां से मेरी कोई सुंदर याद संबद्ध नहीं," सरन बोला।

"मेरा दिल वहां शायद रेत के किसी टिब्बे में दबा पड़ा हो," आसिम ने

गंभीरता से कहा, "उसे तलाश करना है।"

"शायद तुम्हारा दिल तलाशने में बहुत ज्यादा रेत छानना पड़े, इसलिए मेरा विचार है कि पहले एक चक्कर बंबई का लगा लिया जाए। मुझे एलिफेंटा और अंजता-एलोरा की गुफाएं देखने का बहुत शौक है," सरन बोला।

"मैं तुम्हारा कहना मान लूंगा, मगर एक शर्त पर कि आगे तुम मेरे दिल के मामले का मजाक नहीं उड़ाओगे और मुझे पूरा सहयोग भी दोगे, वर्ना तुम्हारा रास्ता उधर और मेरा इधर," आसिम ने बड़े दृढ़ स्वर में कहा।

"लगता है, चोट बहुत गहरी है, खैर जो आदेश, सेवक हाजिर है," सरन ने सिर झुकाते हुए कहा, "मगर हां, भविष्य में इधर-उधर वाली बात न करना।"

तीसरे दिन दोनों एअर इंडिया की उड़ान से बंबई पहुंच गए। बंबई जब रात की बांहों में होती है, तो उसकी गोद में किसी भी बड़े यूरोपीय शहर से कम रंगीनियां और मस्तियां नहीं होतीं। पैसा पास हो तो बंबई ऐसा स्वर्ग है, जो बाहर के बड़े-बड़े अमीरों और शेखों को खींचते हुए अपने दामन में ले आती है। दो-तीन दिन तो वे आवारागर्दी करते रहे। आसिम ने नईमा के बारे में हर तरह से दिल्ली, लखनऊ, अलीगढ़ और आगरा तक पूरी-पूरी छानबीन और पूछताछ कर ली थी और बुरी तरह निराश हो चुका था। अब वह रेवाड़ी और जाटूसाना जाकर कुछ देर के लिए उस वातावरण में सांस लेना चाहता था, जिसमें उसके दिल में पहले-पहल प्रेम की पहली कोंपल फूटी थी। वक्त की गर्मी व सर्दी ने उस कोंपल का नामोनिशान तक मिटा दिया था। अब उसकी तलाश व्यर्थ थी, सिर्फ दिल ही बहलाया जा सकता था और इसके लिए उसे कोई जल्दी नहीं थी।

"बंबई आए और किसी फिल्म की शूटिंग न देखी तो समझिए कि हमारी सैर अधूरी ही रही," सरन ने कहा।

"हमें कौन किसी स्टूडियो में घुसने देगा?" आसिम बोला।

"कैसे नहीं घुसने देगा? वे अपनी प्रेमिकाओं की पतली कमर में बांहें डाले अपने घरों में बैठे हैं। हम सात समुंदर पार से उन्हें देखने आए हैं। उन्हें हमसे मिलना ही पड़ेगा," सरन बोला।

"बात तो ऐसे कर रहे हो जैसे विमल राय, शांता राम या राज कपूर के संबंधी हो," आसिम बोला।

"संबंध भी तलाश कर लूंगा कोई न कोई। तुम देखते जाओ," सरन बोला।

सरन ने डाइरेक्ट्री से आर.के. स्टूडियो का फोन-नंबर देखकर डायल घुमाया और पूछा, "कुड आइ स्पीक टू राज कपूर?"

उधर से किसी लड़की ने गुजराती में बोलना शुरू कर दिया। सरन बोला, "मैडम, यह गुजराती-मराठी छोड़िए। मैंने पंजाबी बोलनी शुरू कर दी तो आप दफ्तर छोड़कर भाग जाएंगी।"

"तुम क्या मंगता, अपन को नईं मालूम," वह बोली।

"हम राज कपूर से बात..."

"ना बाबा, अपन को नईं मालूम। काए को खाली-पीली लफड़ा करता तुम पंजाबी लोग,..." उसने रिसीवर रखना चाहा तो सरन जल्दी से बोला, "आं हां-हां, रिसीवर मत रखना। नंबर यह बिल्कुल ठीक है। कम से कम एक सौ पचास बार तो टेलीफोन करूंगा ही। सात समुंदर पार से आया हूं। ऐसे कैसे उनसे मिलना छोड़ दूंगा?" सरन बोला।

"तुम काहे को बोम मारता?" वह झुंझलाकर बोली।

"बोम नहीं मारता। उनसे बात करना मांगता। अच्छा तुम उनको बोलो, जब वे जर्मनी में 'संगम' बनाता और एक रेस्तरां में बैठता तो एक बीयर, एक कोला कैसे मांगता, अगर हम उसे जर्मन भाषा का संवाद न बताता। तुम 'संगम' देखा? जब राज कपूर बैरे से बोला—आईन माल बीयर उंड आईन माल कोल। तब राज कपूर हमको बोला था—जब 'बंबई आना तो हमसे जरूर मिलना।' तुम समझा कि हम अभी राज कपूर को टेलीग्राम मारता।"

"ओ.के. जस्ट वेट," लड़की ने कहा।

मजाक-मजाक में सरन को चार दिन में ही बंबइया ढंग आ गया था। उधर से कुछ देर खामोशी रही तो आसिम ने पूछा "यह सच है क्या?"

"अरे भई, तब तो मैं इंडिया में ही था। वास्तव में इन अभिनेताओं से अभिनय में ही बात करनी चाहिए।"

थोड़ी देर बाद उधर से आवाज आई, "यस प्लीज, राज हियर..."

सरन की आवाज में थरथराहट सी आ गई, "राज साहब जर्मनी में..."

"कल दो बजे आर. के. स्टूडियो आ सकते हैं आप? या जहां आप कहें मैं ड्राइवर भेज दूं," राज कपूर ने कहा।

"नहीं, बहुत-बहुत शुक्रिया। हम खुद ही टैक्सी से पहुंच जाएंगे।"

"यू आर वेलकम," कहकर राजकपूर ने फोन बंद कर दिया।

दूसरे दिन वे 'बॉबी' फिल्म की शूटिंग देख रहे थे। नई नायिका थी डिम्पल और नया नायक था राजकपूर का अपना छोटा लड़का ऋषि कपूर, जिसने 'मेरा नाम जोकर' में बचपन का रोल किया था।

यह मैदान मार के दूसरे दिन वे फैरी से एलिफेंटा जा पहुंचे। बहुत देर वे गुफाओं और उनमें पत्थरों की मूर्तियों को देखते फिरे। एक गुजराती लड़की भी उनके साथ-साथ गुफा-गुफा फिर रही थी, जब सरन ने प्रतिमा की कला की बहुत प्रशंसा की तो वह बोली, "लगता है, आप बाहर से आए हैं। अगर यह आपको इतना अच्छा लग रहा है तो औरंगाबाद अवश्य जाइए और अंजता-एलोरा गुफाएं देखिए।"

"एह केहंदी ऐ ते फेरते देखनाइ पएगा (ये कहती है तो फिर तो देखना

ही पड़ेगा)," आसिम ने कहा। सरन उसे पंजाबी बोलता देखकर चौंक उठा।

"कभी-कभी," आसिम ने कहा।

समुंदर का पानी बहुत चढ़ आया था और किनारे-किनारे के वे पेड़ जो कुछ देर पहले नजर आ रहे थे, अब बहुत ऊंचाई तक पानी में डूबे हुए थे। सरन ने कहा, "नहाने को दिल चाहता है।"

आसिम बोला, "कहो, डूबने को जी चाहता है।"

"न सिर्फ डूबन लइ बल्कि मरन लइ वी (न केवल डूबने के लिए बल्कि मरने के लिए भी)," सरन ने लड़की की तरफ देखते हुए पंजाबी में कहा और सचमुच कपड़े उतारने शुरू कर दिए।

उसने फैरीज के लिए बनाए गए प्लेटफॉर्म से पानी में छलांग लगा दी और तैरता हुआ दूर उन पेड़ों तक जा पहुंचा, दूर जहां कुछ मल्लाहों के लड़के भी तैर रहे थे। वह बहुत देर तक पेड़ों की शाखाओं के मध्य एक पक्षी की तरह उड़ता फिरा। धीरे-धीरे जब पानी में से पेड़ उगने लगे तो लड़के वापस प्लेटफार्म की तरफ मुड़ने लगे, मगर कुछ चंचल और मस्त लड़के लापरवाही से पक्षियों की तरह पेड़ों में इधर-उधर उड़ते रहे। उसने प्लेटफार्म की तरफ देखा। आसिम हाथ के इशारे से उसे वापस बुला रहा था। जब उसने उसकी परवाह तक न की तो वह चिल्लाकर बोला, "सरन, पानी उतर रहा है, समुंदर तुम्हें बहाकर ले जाएगा, वापस आ जाओ।"

सरन ने लड़कों की तरफ देखा। वे मस्त थे, वह भी मस्त रहा। थोड़ी देर बाद उतरा हुआ पानी उन्हें अपने साथ समुंदर की गहराइयों की तरफ खींचने लगा। सरन को लगा जैसे कोई बहुत बड़ा समुद्री जानवर उसे खींच कर पानी की गहराइयों की तरफ घसीट रहा है। उसने दूसरे लड़कों की तरफ देखा, वे पेड़ों के तनों से चिपक गए थे। सरन ने भी एक पेड़ के मजबूत तने को जोर से पकड़ लिया। वह समुद्री जानवर मात्र वापस जाते हुए पानी के बहाव का जबरदस्त रेला था जो उसे अपने साथ ले जाना चाहता था। जब वह तने पर टिककर थोड़ी देर को संभला तो उसने देखा, और लड़के भी मोटे-मोटे तनों से बंदरों की तरह चिपके हुए थे। शायद वे बचाव के इस ढंग से पहले से ही परिचित थे। उसने प्लेटफार्म की तरफ देखा। गुजराती लड़की आसिम के साथ खड़ी थी और उसके चेहरे पर सरन के लिए चिंता की रेखाएं स्पष्ट दिखाई दे रही थीं।

जब समुंदर उतर कर बहुत नीचे चला गया और नीचे गीली-गीली रेत नजर आने लगी तो सारे लड़के पेड़ों से नीचे उतरने लगे। सरन भी नीचे उतरकर रेत पर चलता हुआ उनके पास प्लेटफार्म पर आ गया। उसे प्लेटफार्म पर चढ़कर अपने पास खड़े देखते ही लड़की ने अपनी छाती पर हाथ रखकर चैन की सांस ली।

फैरी उन्हें वापस गेट वे ऑफ इंडिया ले आई। रास्ते में लड़की ने उन्हें

औरंगाबाद पहुंचने का आसान ढंग बता दिया था। उन्हें वातानुकूलित टूरिस्ट बस, होटल, गाईड, महाराष्ट्र सरकार का टूर बहुत पसंद आया। टैक्सी लेकर वे वहां पहुंचे। उसी रात एक बस रवाना हो रही थी। उन्होंने उसी बस से सीटें बुक करा लीं।

महाराष्ट्र सरकार की बस बहुत आरामदेह थी, मगर सड़कें बहुत खराब थीं। रात भर के खड़खड़ाते सफर ने उनकी हड्डियों को हिलाकर रख दिया था, मगर सुबह जब वे औरंगाबाद टूरिस्ट सेंटर पर उतरे, अपना कमरा संभाला और घंटा-डेढ़ घंटा आराम किया तो वे फिर से ताजादम होकर टूरिस्ट बस गाइड के साथ उन्हें आठ बजे अंजता-एलोरा ले जा रही थी।

गाइड उन्हें पहले दौलताबाद ले गया। यह एक बहुत बड़ा अद्‍भुत किला है। वहां तक पहुंचने की सड़कें जितनी खराब थीं, किला और उसकी तराश-खराश उतनी ही सुंदर थी, जैसे किसी ने एक बड़े पत्थर को मक्खन की टिकिया की तरह छुरी से काटकर बनाया हो, मगर एक खंभे पर एक बड़ी सी तोप, विजय की मीनार को देखकर उसे तनिक भी खुशी महसूस नहीं हुई। उल्टा किले का सारा आकर्षण ही उसके दिल से उतर गया जैसे किसी ने गरीब मजदूरों को डंडे मार-मार कर उनकी निर्माण कला का शोषण किया हो, वर्ना उन्हें अगर उनके इतनी श्रेष्ठ कला का पूरा पारिश्रमिक मिला होता तो उनके भव्य घरों के कम से कम खंडहर तो अब भी मौजूद होते।

अंजता की गुफाओं को पहले उन्हें एक 'विव प्वाइंट' नाम की जगह से दिखाया गया। पहाड़ धरती के ऊपर होते हैं, बहुत ऊंचे होते हैं। ये पहाड़ धरती के बहुत नीचे थे, जहां बाइस गुफाओं का क्रम नजर आता था। एक शेर का पीछा करता हुआ एक अंग्रेज शिकारी यहां तक आ पहुंचा था, मगर शेर ऐसे गायब हुआ जैसे उसे धरती खा गई हो। उसके हिंदुस्तानी साथियों ने उसे छलावा कहा, जादू का नाम दिया, मगर वह संतुष्ट नहीं हुआ। आखिर उसकी बहुत कोशिश और तलाश के बाद इन गुफाओं का पता चला। शेर इन्हीं में से किसी में गायब हुआ था। उसके बाद खुदाई का काम शुरू हुआ और लगभग बारह सौ साल तक अंधेरे में छिपी ये गुफाएं प्रकाश में आईं। टूरिस्ट कार उन्हें घुमाकर गुफाओं के सामने ले आई, जहां अद्‍भुत वस्तुओं का बाजार लगा था। गाइड ने कहा, "ये सब वापस आकर लेना।"

अंजता की गुफाओं को बनाने वालों पर किसी प्रकार का दबाव नहीं था। एक लगन, एक रुचि, एक श्रद्धा थी। बाहर तपती धूप थी, अंदर गुफाओं की पगडंडी पर उतरते ही पांव से थकावट को चूस लेने वाली और कदमों में फुर्ती भर देने वाली एक ठंडी मिठास आ जाती थी। कुछ गुफाओं में पत्थर की भव्य मूर्तियां भी थीं, और कुछ में दीवारों और छतों पर स्तरकारी भी थी।

तस्वीरें अगर सात फुट की दूरी से देखी जाएं तो अपनी पूरी सूरत व शक्ल

के साथ सामने आ जाती हैं, जिनमें जिंदगी की दिनचर्या, जैसे खाना पकाना, पानी भरना, क्रय-विक्रय, शिकार, जलसे-जलूस, लड़ते हुए हाथी, गाते हुए मर्द-औरतें, साज बजाते हुए लोग बड़ी सुंदरता और सफाई से देखे जा सकते हैं। पहनावे, अमीरी-गरीबी को बहुत स्पष्ट रूप से उजागर करते हैं। ड्राइंग्स इतनी जानदार हैं कि कला के छात्र को इससे श्रेष्ठ उदाहरण नहीं दिखाए जा सकते। इंसानी चेहरे अपने अंग और अपने हर व्यवहार को स्पष्ट रूप से दिखाते महसूस होते हैं। लड़ते हुए दरिंदे, उड़ते हुए परिंदे, खिलते हुए फूल जैसे सब कुछ आंखों के सामने हो रहा हो। गाय के गोबर और चावल की भूसी से तह जमाकर और रंगों से ऊपर पेंटिंग बनाकर अंजता के कलाकारों ने दुनिया भर से अपनी कला की श्रेष्ठता का लोहा मनवा लिया है।

गुफा नंबर एक में महात्मा बुद्ध का शांत चेहरा और उनका धर्मचक्र-परिवर्तन मुद्रा में बैठा होना देखने वालों के दिलों में कुछ क्षणों के लिए शांति की एक लहर दौड़ा देता है—बुद्धम् शरणम् गच्छामि।

नाच की यह मुद्रा पांचवीं शताब्दी की है। साजिंदों के ताल पर सुंदर परिधान में नाचती हुई इन अल्हड़ जवानियों ने समय के उस युग को अपनी मुद्राओं में कैद कर लिया है। तब जब औरतें शायद मॉडल नहीं बनती थीं, मगर उनके मॉडल कलाकारों के दिलों में बसते थे और वे उन्हें रंगों में कैद कर लेते थे, ऐसे, जैसे उस समय की सबसे सुंदर औरत रंगों के आलोक और सौंदर्य में कैद कर ली गई हो। बुद्धिस्तवा का मर्द और अजंता की राजकुमारी। इसी गुफा की सबसे अधिक सुंदरता है, देखिए और प्रशंसा कीजिए। भगवान की बनाई हुई इंसानी मूरत में कहीं न कहीं कोई कमी मिल ही जाएगी, मगर कलाकार ने भगवान की बनाई हुई हजारों नारियों के सौंदर्य को एक चौखटे में कैद कर दिया है और उसमें कोई कमी नहीं रहने दी।

काली राजकुमारी, मृतप्राय राजकुमारी इसी गुफा में देखने को मिलेगी। आप उन्हें देखे बिना आगे नहीं बढ़ सकते।

गुफा नंबर दो की छतें खूबसूरत पेंटिंग्स का श्रेष्ठ नमूना हैं, और गुफा नं. 16 की छतें पत्थर ही के थम और शहतीर, जिन्हें उड़ते हुए मर्द और औरत के जोड़ों और साजिंदों ने थाम रखा है, कुछ जैसे बोझ से दबे हुए, दूसरे गंभीर, कुछ आनंद लेते हुए या बेपरवाह। अच्छा लगता है वह जोड़ा जो मस्त मुद्रा में उड़ रहा है। शाही जोड़ा, प्रेम व आनंद में डूबा हुआ।

गुफा नंबर सत्रह। एक शाही जोड़ा, राजा और रानी, नौकर-चाकरों के साथ। दो औरतें खिड़की से झांकती हुई। गुफा के बाएं दरवाजे के पास देवताओं का राजा इंद्र बादलों में उड़ता हुआ, अपनी अप्सराओं और गंधर्वों से घिरा।

गुफा नंबर अठारह। आंखों में संतोष और शांति का हर्ष और हाथ में

भिक्षापात्र लिए हुए महात्मा बुद्ध की भव्य मूर्ति। वे अब कितने महान हो गए हैं, मगर कितने गंभीर हैं और शांत भी। वे अपने ही घर के द्वार पर भिक्षा लेने आए हैं। उनकी पत्नी यशोधरा और बेटा राहुल खुद उनसे भीख मांगते प्रतीत होते हैं।

गुफा नंबर उन्नीस। बहुत ही पुराने युग के ढंग पर बनी हुई यह गुफा उस समय का एक श्रेष्ठ नमूना प्रस्तुत करती है। हर दीवार पर महात्मा बुद्ध की विभिन्न मुद्राओं में मूर्तियां स्थापित हैं। इस गुफा की सबसे अधिक आकर्षक वस्तु घोड़े की टाप जैसी मेहराब है। बहुत बड़ी संख्या में नाग राजाओं की मूर्तियां इस गुफा में जगह-जगह दिखाई देती हैं। दूर बाईं तरफ नागराज अपनी नागरानी के साथ तख्त पर विराजमान हैं और नाग-सेविकाएं सेवा में तत्पर खड़ी हैं।

चैत्य का हॉल। प्राचीन आर्य परंपरा के अनुसार स्तूप बड़े-बड़े राजाओं के लिए बनाया जाता था, मगर महात्मा बुद्ध ने उसे एक नया अर्थ दिया जब उन्होंने कहा कि यह सम्मान पहुंचे हुए ऋषि-मुनियों और उनके चेलों को भी मिलना चाहिए।

गुफा नंबर सोलह का चैत्य हॉल, गुफा नंबर उन्नीस वाले से कई गुना बड़ा है। इस तरफ की सुंदरता बरामदे के खंभों के गिर जाने के कारण मद्धिम पड़ गई है और अंदर पेंटिंग्स भी बरबाद हो गई हैं। वैसे तो इस हॉल की सभी मूर्तियां महायान युग की यादगार हैं और महात्मा बुद्ध की बड़ी-बड़ी प्रतिमाएं बड़े ही निर्मलता से प्रस्तुत करती हैं और इस हॉल में बुद्ध की प्रतिमाएं कला को उच्च श्रेणी प्रदान करती हैं, मगर दो मूर्तियां बहुत ही आकर्षक और विशेष ध्यान चाहती हैं। एक महात्मा बुद्ध का महापरिनिर्वाण और दूसरी मार की प्रेरणा और धावा।

बाईं तरफ दरवाजे के पास ही लेटे हुए महात्मा बुद्ध की एक बहुत बड़ी मूर्ति है, जिसके नीचे उनके चेले और अनुयायी उनकी मृत्यु पर रो-पीट रहे हैं। ऊपर पहाड़ी दीवार पर राजा इंद्र और दूसरे देवता अपने आकाशीय साजों के साथ जैसे आकाश से उतर रहे हों। जैसे उस महान आत्मा की स्वर्ग-वापसी पर शुभागमन कह रहे हों। खुशियों के बधाई गीत दुख पर अधिक छाए प्रतीत होते हैं। इस समस्त कला का सर्वव्यापक प्रभाव जलाने व पिघलाने वाला ज्यादा है और दिल व आंख को वही प्रभावित करता है।

इसी दीवार पर 'मार' की उत्तेजना और धावा भी बड़े सुंदर ढंग से तराशा गया है। महात्मा बुद्ध को यहां बोधि पेड़ के नीचे ब्रह्म-स्पर्श मुद्रा में दिखाया गया है। बाईं तरफ 'मार' एक हाथी पर सवार अपनी समस्त निकृष्ट शक्तियों के साथ बुद्ध पर आक्रमण कर रहा है। लगता है जैसे वह अपने उद्देश्य में असफल रहा, सो दाईं तरफ वह पीछे हटता दिखाया गया है। प्रस्तुत दृश्य में 'मार' की सुंदर बेटियां अपने नृत्य और संगीत से उसे मोहित करने का प्रयत्न कर रही हैं। तीसरी

मूर्ति में राक्षस 'मार' का उदास चेहरा बताता है कि वह महात्मा बुद्ध को सचाई के रास्ते से अपनी सारी कोशिशों के बावजूद न हटा सका।

सरन यह सब देखता था और हैरान होता था। आसिम देखता था तो सोचता था। इतनी बड़ी कला और दृष्टि से ओझल, खबरों से दूर! बड़ा अन्याय है। बस, इन सारी कलाओं की पीठ पर किसी बादशाह का हाथ नहीं है ना। शायद इसीलिए यह कला के प्रेमियों का उचित ध्यान न प्राप्त कर सका। यह सब देख-देख कर दोनों की आंखें हैरानी से खुल गई थीं और जबानें बंद हो गई थीं। जब गाइड ने उन्हें टूरिस्ट होटल के बाहर ला खड़ा किया तो उनकी जबान को फिर से आवाज मिल गई। सरन बोला, "हैरान हूं कि बीसवीं शताब्दी के इस प्रगतिवादी युग में हमारी सड़कें इतनी खराब हैं कि लोहे की मोटरों के अंजर-पंजर हिल कर रह जाते हैं, हाड़-मांस का इंसान तो चीज ही क्या है। इनके मुकाबले में सदियों पुरानी की तराश इतनी सलोनी है कि सहसा उन कलाकारों के अपने काम के प्रति निश्छलता की प्रशंसा करनी पड़ती है।"

आसिम बोला, "अब भावनाएं मर गई हैं।"

"तुम ठीक कहते हो। उनके बनाने वाले सच्चे कलाकार थे। उन पर किसी का न दबाव था और न डंडा। मात्र दिल में लगन और श्रद्धा थी," सरन ने कहा।

खाना खाकर वे बाहर निकले तो एक स्टाल पर चित्रों के कार्ड देखने लगे। हर कार्ड बहुत सस्ता और परिपूर्ण था। ऐसा कि शायद उनका अपना कैमरा ऐसे अच्छे फोटो न उतार सकता।

थोड़ी देर बाद वे एलोरा की गुफाएं देखते फिर रहे थे। ईंट पर ईंट रखकर महल बनाना भी भला कोई कमाल हुआ? चट्टानों को काटना और उनके हॉल, कमरे, मेहराबें, खंभे, तल, सीढ़ियां बना डालना, बड़ी-बड़ी मूर्तियां, रथ, नालियां, फव्वारे, मंदिर बनाना, सिर्फ पत्थर-पत्थर—न कोई लोहा, न ही लकड़ी।

गुफा नबंर सोलह—कैलाश मंदिर, बहुत ही विशाल, बहुत ही भव्य, तराश-खराश ऐसी कि जैसे गीली मिट्टी से गढ़कर अभी-अभी कुम्हार ने सूखने के लिए रखा हो। वहां से चले तो औरगंजेब के मकबरे पर जा पहुंचे। उन्हें और कुछ गोरे सैलानियों को देखकर वहां बैठे मलंग और भिक्षु उनकी तरफ दौड़ पड़े और हाथ फैला-फैलाकर भीख मांगने लगे। एक श्वेत रंग यूरोपीय सैलानी ने एक रुपए का नोट उनकी तरफ फेंक दिया और नोट पर लपकते उन्हें देखते हुए और अपने साथियों की तरफ मुड़ते हुए उसने हंसकर अंग्रेजी में व्यंग्य कसा, "इतने बड़े बादशाह ने तुम्हारे लिए कुछ नहीं छोड़ा?"

जब सबने मकबरे के क्षेत्र में प्रवेश किया तो सफेद पत्थर का फर्श सूरज की गर्मी से गर्म लोहे की तरह तप रहा था। इस पर सेवक ने उनसे जूते बाहर उतरवा लिए तो आधे लोगों ने नंगे पांव अंदर जाने के बजाए लौट जाने को

वरीयता दी। एक ने जाते-जाते कह दिया, "अत्याचारी राजा था, कौन सा फरिश्ता या देवी देवता था कि जूते उतारे जाएं!" पढ़े-लिखे आर्ट टूरिज्म से प्रमाण-पत्र प्राप्त गाइड को सेवक ने बाहर खड़ा कर दिया और खुद ही गाइड का काम करने लगा। मगर उसे उर्दू और हिन्दी के एक मिले-जुले वाक्य, "औरंगजेब अपने गुरु से बहुत श्रद्धा रखता था, इसलिए उसने वसीयत की कि उसे औरंगाबाद में गुरु के चरणों में दफन किया जाए" के अलावा और कुछ नहीं आता था और उसी वाक्य को वह बार-बार दुहराए जा रहा था। जब वह एक ही वाक्य बीस बार दुहराकर अपनी गाइड की ड्यूटी खत्म कर चुका तो उसने भी भीख के लिए हाथ फैला दिए और सैलानी बाहर खिसकने लगे। बाहर फिर मलंगों और फकीरों ने उन्हें घेर लिया। सरन ने जेब में हाथ डाला, मगर वहां कुछ भी खुले पैसे न थे। जेब के एक कोने से एक सिक्का उसके हाथ लग गया। निकालकर देखा तो पचास केनी का जर्मन सिक्का था। उसके हाथ में चमकता हुआ सिक्का देखकर एक फकीर ने हाथ बढ़ाया, "बाबा दो, ऊपर वाले के नाम पर, बूढ़े फकीर लोग तुम्हें दुआ देंगे।" उसने बरामदे में बैठे फकीरों की ओर संकेत करके कहा।

"यह जर्मन सिक्का है," सरन बोला।

फकीर कुछ भी न समझ सका, बोला, "साहब दे दो, फकीर लोग दुआ देंगे," और हाथ बढ़ाए रखा।

सरन ने खिसियाकर कहा, "बाबा, यह खोटा सिक्का है।"

"हम चला लेंगे, आप दे दो। फकीर लोग दुआ देंगे।"

सरन ने चुपचाप सिक्का फकीर की हथेली पर रख दिया। वहां से निकले तो बस ने उन्हें बीबी के मकबरे पर पहुंचा दिया। मकबरा देखकर सब हैरान रह गए। ताजमहल तो आगरा में है। उस चमकते हुए हीरे को फीका करके कौन सा देव यहां उठा लाया है! आसिम दरवाजे पर ही रुककर कार्ड खरीदने लगा।

बस उन्हें शहर में पनचक्की पर ले आई। पानी बह रहा था, घरड़-घरड़ अब भी तेजी से चल रहा था। खजुराहो के कार्ड देखता हुआ आसिम बोला, "वहां चलें।"

"पत्नियों और प्रेमिकाओं के बिना वहां जाने और खून को पानी बनाने का फायदा ?" सरन ने कहा।

रात की बस से वे दूसरे दिन वापस बंबई पहुंच गए और उससे अगले दिन दोपहर की उड़ान से वापस दिल्ली। दिल्ली एयरपोर्ट पर सरन ने पूछा, "बोलो, घर जाऊं या तुम्हारे साथ चलूं?"

"घर जाओ," आसिम ने कहा, "मगर कल से तुम मेरे गुलाम होगे। जहां मैं कहूंगा, वहां चलोगे, जोड़ो हाथ और सलाम करो।"

"सत्ता तो ले ली है, मगर कमीने आजीवन सलाम भी करवाते रहोगे?" सरन

ने हाथ जोड़ते हुए कहा, "अच्छा बाबा, कल हाजिर हो जाऊंगा, कोई और आदेश?"

"तो जाओ, आज की छुट्टी," आसिम बोला।

"क्यों टैक्सी में लिफ्ट नहीं दोगे, बनिए," सरन ने कहा।

"इस शर्त पर कि जूते उतार कर बैठोगे," आसिम बोला।

"क्यों, कोई पवित्र स्थान है, तुम्हारी टैक्सी?" सरन ने कहा।

"नहीं, सोचता हूं, तुम्हारे जूते न घिस जाएं। तुम्हारा नुक्सान मैं नहीं चाहता," आसिम बोला।

"अंधे को अंधेरे में..." सरन ने टैक्सी का दरवाजा खोलकर आसिम के साथ बैठते हुए कहा।

दूसरे दिन शाम चार बजे सरन होटल पहुंचा तो आसिम तैयार खड़ा था, बोला, "समय से आए, तो रेवाड़ी चलेंगे, वन बी डी आर से।"

"अरे, तुम्हें तो गाड़ियों के नंबर तक याद हैं," सरन बोला, "रेवाड़ी में क्या रखा है?"

"अब तुमने फिर ऐसा सवाल किया तो एक लापा दूंगा," आसिम ने चपत दिखाते हुए कहा, "वहां मेरा दिल रखा है।"

रात रेवाड़ी के प्रथम श्रेणी प्रतीक्षालय में बिताने के बाद दूसरे दिन आसिम उसे बुकिंग ऑफिस दिखाने ले गया। फिर शहर में घुमाता फिरा। फिर रेलवे बंगलों में, आस-पास खेतों में, आक और सरकंडों के बूटों में और रेतों में फिराता रहा। पूरा दिन इधर-उधर भटकने के बाद शाम वे सिनेमा हॉल में पिक्चर देखने जा बैठे। गीता बाली, रहमान और सुरैया की फिल्म 'बड़ी बहन' चल रही थी। दूसरे दिन आसिम उसे साथ लेकर जाटूसाना पहुंच गया। वहां वह रेतों, जालों और सरकंडों में इतना खो गया कि वे वापसी की गाड़ी ही निकाल बैठे। स्टेशन स्टाफ सारा नया था। इसलिए अब वहां रात बिताने की समस्या थी। थोड़ी देर बाद जब रेवाड़ी से वन बी डी आर प्लेटफार्म में प्रवेश करती दिखाई दी तो सरन ने आसिम को बांह से खींचते हुए और दौड़ते हुए स्टेशन पर ला खड़ा किया, बोला, "कभी मैंने साथ वाले स्टेशन कोसली पर काम किया था। चलो, वहां चलते हैं। वहां सोने का प्रबंध भी हो जाएगा।"

कोसली पहुंचकर जब उसे पता चला कि बाबू बिहारी लाल अभी वही हैं तो वह उन्हें मिलने उनके क्वार्टर पर जा पहुंचा। उसे देखकर और यह जानकर कि वह विदेश चला गया था, वह बहुत खुश हुए और उसके साथ उसके दोस्त को देखकर उन्होंने माल कार्यालय का दरवाजा खुलवाकर उन्हें अंदर बिठाते हुए अंतरध्यान कांटे वाले से चाय और बिस्कुट लाने को कहा। सरन ने आसिम की तरफ आंख मारी और बाबू बिहारी लाल से कहा, "ये मेरे मित्र हैं श्री कैलाश।"

जब अंतरध्यान चाय और बिस्कुट मेज़ पर रखने लगा तो बाबू बिहारी लाल ने कहा, "ध्यान, जा, बीवी जी से कह दे, दो आदमी का खाना और बनेगा।"

रात जब खाना खाने दोनों बाबू बिहारी लाल के क्वार्टर पहुंचे और मोना दो थालियां उनके सामने लाई तो आसिम देखता ही रह गया। खाना खाकर जब दोनों माल कार्यालय पहुंचे जहां उनके सोने के लिए बिस्तर लगवाए गए थे, तो आसिम बोला, "याद है, अमेस्टर्डम में मैंने एक औरत को देखा था तो कहा था, नईमा है।"

"और मैंने कहा था, मोना है," सरन बोला।

"नईमा यही है," आसिम ने कहा।

"यह तो मोना है," सरन बोला।

"नईमा है। एक सौ एक प्रतिशत। मैं उसे लाखों में पहचान सकता हूं। मैं इसी की तलाश में जंगल-जंगल भटक रहा था।"

सरन को बाबू बिहारी लाल की सुनाई हुई सारी कहानी याद आ गई। वह बोला, "आसिम, आर यू श्योर?"

"हंड्रेड एंड वन पर्सेंट," आसिम बोला, "खुदा के लिए कुछ करो, वर्ना मैं मर जाऊंगा।"

"मगर वह तो सब कुछ भूल चुकी है," और सरन ने मोना की सारी कहानी सुना दी।।

"तब तो हमें और भी ज्यादा मेहनत करनी पड़ेगी," आसिम बोला।

दो दिन में ही सरन ने फिर से बाबू बिहारी लाल और उनके परिवार पर अपना विश्वास जमा लिया। उसने कहा, मेरे दोस्त को गांव का जीवन बहुत पंसद है, इसलिए वह (सरन) अपने दोस्त के जाने के बाद ही ड्यूटी ज्वाइन करने के बारे में सोचेगा। आसिम सारा समय बस सीधा-साधा बना रहा। वे लोग फिर से पहले की तरह शाम की सैर को जाने लगे। पहले दो-तीन दिन तो सरन उनके साथ-साथ चलता रहा, मगर बाद में वह और आसिम बाबू बिहारी लाल और उनकी पत्नी को पीछे छोड़कर मोना के साथ भारतीय शिक्षा पद्धति पर विचार-विमर्श करते उनसे बहुत आगे निकल गए। सरन, मोना और आसिम चाहे जवान अवस्था की सीमाओं से थोड़ा आगे जा चुके थे, मगर फिर भी बाबू बिहारी लाल और उसकी पत्नी उन्हें बच्चे ही समझते थे। बाबू बिहारी लाल के रिटायर होने में अब मात्र पांच महीने रह गए थे। उनके दिल में यह भी एक बात थी कि मोना अगर किसी ठिकाने लगती तो वे रुकावट क्यों बनें? सरन का दोस्त ही अगर उसका हाथ थाम ले तो क्या ही अच्छा हो! अगर वे लोग खुद इस संदर्भ में बात छेड़ें तो मान भी रह जाएगा और काम भी अच्छा होगा। सरन, आसिम और मोना अपनी बातों में व्यस्त उनसे काफी आगे निकल गए थे और पीछे बाबू बिहारी लाल और उनकी पत्नी में यही बात हो रही थी—कहीं मोना के बस जाने की चिंता की बात।

सरन ने मोना के साथ बीती हुई सारी विपदा की कहानी आसिम को सुना दी थी और समझा दिया था कि उसे थोड़ा संतोष और शांति से काम लेना होगा। ऐसा न हो कि किसी प्रकार की नई सूचना को मोना मानसिक रूप से इतनी जल्दी स्वीकार न कर सके और बात बिगड़ जाए या उसके दिल में संदेह की गांठ पड़ जाए। जब सरन और मोना के विचार-विमर्श में आसिम ने भी हिस्सा लेना शुरू कर दिया और बहस बहुत आगे बढ़ गई तो सरन ने मोना को पहला हल्का सा झटका देना आवश्यक समझा। बोला, "मोना, मैं तो बस यूं ही तुम्हारे साथ बहस कर लेता हूं, मिस्टर आसिम..." वह संभला। ऐसे जैसे उसके मुंह से कुछ विशेष महत्व न देते हुए जैसे कोई भी आसिम या कैलाश इस विषय पर उससे अच्छा बोल सकता है। बोला, "मेरा तात्पर्य है श्री कैलाश...लंदन में शिक्षा पर शोध करते रहे हैं। इनका ज्ञान इस विषय में मुझसे कई गुना अधिक है।"

आमने-सामने बैठकर बातें करते हुए एक-दूसरे की तरफ बीसों बार नजरें उठ जाती हैं। और आदमी एक-दूसरे को बहुत अच्छी तरह देख लेता है, मगर साथ-साथ राह चलते और बातें करते हुए आदमी कम ही एक-दूसरे को देख पाता है। आसिम-कैलाश, कैलाश-आसिम। सरन एक-दो बार पहले भी मोना के सामने बिल्कुल अनजाने में या शायद जान-बूझकर उसे आसिम के नाम से संबोधित कर चुका था। अब जब और परिचय में भी उसके मुंह से आसिम ही निकला तो मोना ने रुककर आसिम की तरफ ध्यान से देखा और जब दोनों की नजरें मिलीं तो उन नजरों के सितारों भरे आकाश पर पल भर के लिए दूर किसी कोने में पहचान की एक हल्की सी, धुंधली सी बदली उतर आई और मिट भी गई। ऐसे जैसे कुछ नहीं हुआ। कहीं भी कोई बादल नहीं घिरा था, बरसात नहीं हुई थी, जैसे यह क्षेत्र युगों से रूखा-सूखा और बंजर पड़ा था और यादों के इस रूखे-सूखे क्षेत्र में फिर नए सिरे से मेहनत की जरूरत थी। अपनी निश्छल दोस्ती के लिए सरन ने अपने आपको तैयार कर लिया था। इसके लिए बहुत संतोष और शांति की आवश्यकता थी और लगता था कि रास्ता तलाश करने में बहुत समय और मेहनत लगेगी, मगर बाबू बिहारी लाल के सहयोगी रवैये ने उसका उत्साह कई गुना बढ़ा दिया था। दूसरे दिन वह उनसे बोला, "बाबू जी...!"

वह पहले उन्हें 'बड़े बाबू जी' कहा करता था जिसमें उसके स्टेशन मास्टरी की चमक-दमक मिली होती थी और वह किसी हद तक उसके इस संबोधन से खुश भी होते थे। मगर अब उसने जान-बूझकर खाली 'बाबू जी' कहना शुरू किया जैसे रेलवे बाबुओं के बच्चे अपने बापों को सम्मान से इसी तरह बुलाते थे।

"बाबू जी! मैं, कैलाश, और मोना, अगर आप आज्ञा दें तो कल रेवाड़ी जाकर एक पिक्चर देख आएं।"

"वह तो ठीक है, मगर वहां रात कहां ठहरोगे?" बाबू बिहारी बाल के अंदर के बाप ने सवाल किया।

"मलिक गार्ड मेरा दोस्त है। उसके यहां या किसी होटल में," सरन बोला।

"नहीं, मोना को फर्स्ट क्लास लेडीज वेटिंग रूम में और खुद तुम दोनों जेंट्स वेटिंग रूम में ठहर जाना," बाबू बिहारी लाल ने कहा।

"हां, क्या फायदा? बाहर लोग हजार बातें करेंगे," श्रीमती बिहारी लाल ने कहा।

दूसरे दिन वन बी आर बी से दोनों साढ़े तीन बजे रेवाड़ी पहुंच गए। फिल्म का शो रात को नौ बजे शुरू होना था। आसिम ने सरन को समझा दिया था कि वह किस-किस तरह मोना अर्थात नईमा को उन सब जगहों पर घुमाएगा, जहां-जहां वह उसके साथ जाती रही थी। उसी कार्यक्रम के अनुसार वह उन्हें सैर कराने के बहाने रेलवे बंगलों की तरफ ले गया, फिर वे खेतों की तरफ निकल गए जहां हर तरफ खेतों में रेत उड़ती फिरती थी जैसे रंग-बिरंगे हीरों और मोतियों का चूरा हवाओं में उड़ता फिरता हो। आक के पौधों की अमियां गर्म लू के थपेड़ों से अपने पेटों से रेशम के लच्छे निकालकर वातावरण में इधर-उधर बिखेर रही थीं। उन्हें देखकर आसिम का बचपन जागा और वह उन्हें पकड़ने, बच्चों की तरह तालियां बजाता उनके पीछे दौड़ा तो मोना ने भी दौड़कर एक-दो लच्छे पकड़े और अपने साड़ी के पल्लू में छिपा-छिपाकर रखने लगी। फिर वे दिल्ली जाने वाली लाइन के साथ-साथ चलते हुए यार्ड के अंत के पास से गुजरती सड़क से निकलते एक समाधि की सीढ़ियां चढ़कर सीमेंट की छतरियों की छांव में हवादार और साफ-सुथरी प्लेट सी जगह पर जा बैठे। सरन ने माइयों के रेशमी लच्छे निकालकर सामने फैलाए और उनसे रस्सियां बटने लगा। उसकी देखा-देखी मोना ने भी रेशमी लच्छे अपने सामने फैला लिए और बच्चों की तरह टांगें फैलाकर फर्श पर बैठ गई और आसिम की तरह रस्सियां बनाने की कोशिश करने लगी। उसे पहले भी रस्सियां बनाना नहीं आता था और वह लच्छों को औरतों की चोटी की तरह गूंथ देती थी। जब हर तरह कोशिश करने के बाद वह आसिम की तरह रस्सी न बट सकी तो उसने लच्छियों को चोटियों की तरह गूंथना शुरू कर दिया। तब भी आसिम उसे रोककर रस्सी बटने का ढंग बताया करता था। अब भी उसने उसका हाथ रोककर उसे रस्सी बटना सिखाना शुरू किया। वह समझाने के लिए 'ऐसे ऐसे' कहता हुआ जब उसकी आंखों में देखता तो उसे लगता जैसे आकाश काले-काले बादलों से भर गया है और जल-थल एक होने वाला है, मगर दृश्य फिर बदल जाता। आकाश फिर साफ हो जाता।

शाम को स्टेशन पर फिर भोजनालय में खाना खाने के बाद वे रात का शो देखने सिनेमा पहुंच गए। 'बंबई टाकीज' की बनी मुनव्वर सुल्ताना और श्याम की

एक पुरानी फिल्म 'मजबूर' लगी हुई थी। कहानी का विषय एक मुस्लिम लड़के का एक हिंदू लड़की से प्यार और मजबूरी था।

रात वेटिंग रूम में बिताने के बाद ग्यारह बजे की गाड़ी से वे दूसरे दिन जाटूसाना पहुंच गए। गाड़ी पर प्लेटफार्म की दूसरी तरफ, गांव के बच्चे, लड़के, लड़कियां बेर और पीलू बेचते फिरते थे। उन्हें खरीदने के बहाने आसिम ने मोना और सरन को नीचे उतार लिया और गाड़ी छुड़वा दी। वे लोग गांव के अहीरों और जाटों के साथ पेड़ों के नीचे बैठकर बेर और पीलू खाते और गप्पें मारते रहे। सरन ने एक दूर बैठे ऊंट वाले को पैसे देकर उन्हें सैर कराने पर राजी कर लिया। ऊंट वाला आसिम और मोना के पास अपना ऊंट ले आया और उन्हें दूर-दूर तक घुमाता फिरा। वापस आकर जब वे ऊंट से उतरे तो पास ही कुछ लोग सरकंडों और झाड़ियों में आग लगाकर उनमें कठोर चनों की बालियां भून रहे थे। वे तीनों भी उनके पास जा बैठे और उनके निश्छल आमंत्रण पर उनके तराड़े के सहभागी बन गए। मोना ने जब तराड़ा खाते उन गांव के सीधे-सादे लोगों के चेहरों पर भुने हुए चने की कालिख देखी तो दूर कहीं उसके मस्तिष्क के आकाश पर यादों की बिजली लहरा गई, मगर फिर थोड़ी ही देर बाद स्लेट ऐसे साफ हो गई जैसे उस पर कभी कुछ लिखा ही नहीं गया था। लौहपत्र के उस स्लेट की तरह जिस पर सलेटी पत्थर का लेप किया होता है, मगर समय उससे सारे चिह्न व निशान छीन लेता है और वह कोई और लिखावट स्वीकार करने से इनकार कर देती है।

कुछ देर बाद आसिम उन्हें रेवाड़ी की तरफ जाने वाली लाइन से लगे हुए जालों के जंगलों में ले गया, जहां गांव के बच्चे पेड़ों पर बंदरों की तरह चढ़े, इधर-उधर उचकते, पीलू चुनते, खेलते और गाते फिरते थे। आसिम घने जंगलों में से घुमाता-फिराता उन्हें उसी पेड़ पर ले गया, जहां पीलू का एक पेड़ धरती की ओर झुकता और फिर उठता था। वहीं जहां वह और नईमा कभी आकर बैठा करते थे। कुछ पेड़ ऊंट के कूबड़ की तरह थे, जहां बच्चे बैठे टांगों को झुला-झुलाकर हिचकोले खा रहे थे और शोर मचा रहे थे जैसे किसी ऊंट या घोड़े पर सवार हों। बाहर दूर-दूर तक लू के झक्कड़ तपते हुए शीशे की चादरें इधर-उधर उड़ाए फिरते थे। कुछ देर के लिए मोना पर बचपन लौट आया और वह हिचकोले लेती हुई बच्चों की तरह खिलखिलाने और तालियां बजाने लगी, मगर कभी-कभी उसके चेहरे पर ऐसे उदासी उतर आती जैसे याद की सुंदर रंग बिरंगी गेंदें उसके मस्तिष्क से टकराती हों और गायब हो जाती हों।

कोसली जाने वाली वन बी डी बी में अभी एक घंटा बाकी था। आसिम कुछ देर और स्टेशन पर बिताना चाहता था। ऊंटों, तराड़ों, बेरों, पीलुओं, गांव के बेर और पीलू बेचते बच्चों, देहाती लोगों और उस वातावरण के साथ ताकि मोना की यादें फिर से अच्छी तरह ताजादम हो सकें।

वे लौट ही रहे थे कि अचानक मोना का पांव एक रेत के ढेर पर आ गया और ढेर जैसे कच्चा सा एक ही ढेला हो, फिसला तो सारा ढेर ही गिरने लगा। वहां शायद किसी नागिन का बिल था। जैसे-तैसे मोना को तो आसिम ने संभाल कर खींच लिया, मगर वहां रहने वाली नागिन मोना को अपने बच्चों की आक्रमणकारी समझकर उसकी तरफ लपकी। सरन उनसे पीछे था, इसलिए सबसे पहले नागिन पर सरन ही की निगाह पड़ी और इससे पहले कि वह मोना की टांग पर काट लेती, सरन ने अपना भारी बूट नागिन के सर पर रख दिया। हजार फड़फड़ाने के बावजूद जब नागिन सरन से बूट के दबाव से अपने आपको आजाद न करा सकी तो उसने सरन की टांग को अपनी पूंछ से लपेटना शुरू किया और उसकी टांग पर अपनी लपेट को कसती गई। सरन को लगा जैसे उसकी टांग सुन्न होती जा रही है और वह संतुलन खोता जा रहा है। दर्द से उसकी आंखें बंद सी होने लगीं। आसिम ने जिम कार्बेट की किसी शिकार की कहानी में ऐसी स्थिति के बारे में पढ़ा था। उसने तुरंत अपने बैग के पॉकेट से शेविंग ब्लेड निकाला और नागिन के शरीर पर तीन-चार कट लगा दिए। नागिन के शरीर ने धीरे-धीरे ढीला पड़कर सरन की टांग को छोड़ना शुरू कर दिया, मगर अधिक समय तक अपनी सुन्न टांग पर खड़े रहने और किसी प्रकार अपने शरीर को संभाले रखने पर मजबूर सरन अपने आपको और न संभाल सका और धड़ाम से जमीन पर गिर गया। उसका सर पास पड़े पत्थर से जा टकराया, जिससे उसके सिर पर चोट आ गई। मोना ने जल्दी से अपनी साड़ी का पल्लू फाड़कर और पट्टी बनाकर उसके सिर पर बांध दी। कुछ देर बाद वह होश में आया तो पूछा, "क्या हुआ था?"

"कुछ नहीं, वह देखो नागिन मरी पड़ी है। तुमने मोना को बचा दिया," आसिम ने उसे मरी हुई नागिन दिखाते हुए कहा।

"मगर मुझे सब कुछ जैसे भूलता जा रहा है," सरन ने सिर पर बंधी पट्टी पर हाथ लगाते हुए कहा।

"मुझे कुछ-कुछ याद आ रहा है," मोना अपने विचारों में डूबती हुई सी बोली।

"बाकी मदद मैं करूंगा। मगर आओ नईमा, सरन—यहां से भाग चलें। नाग को जैसे ही अपनी नागिन की मौत का ज्ञान होगा वह जरूर हमें तलाश करने निकलेगा। यह मैंने सुना है कि नाग वर्षों अपना बदला लेने के चक्कर में अपने दुश्मन को ढूंढता रहता है," आसिम बोला।

"हां, कहीं हवाई जहाज पर सवार होकर हमारे पीछे जर्मनी न पहुंच जाए," सरन का मूड अच्छा होने लगा।

वे लोग कोसली चार दिन और रहे। रोटी-पानी के लिए बड़े स्नेह और प्यार से सौ रुपए उन्होंने मिसेज बिहारी लाल को दे दिए। सरन ने इस बीच आसिम

को ही मोना के निकट रहने के अवसर उपलब्ध कराए और आसिम ने अकेले में न केवल उसे नईमा ही कहना, बल्कि रेवाड़ी और जादूसाना में दिखाए गए सारे स्थान के आस-पास अपनी और नईमा की जिंदगी की कहानी का ताना-बाना बुनना शुरू कर दिया। साथ-साथ वह बाबू बिहारी लाल और उनकी पत्नी पर भी अपना विश्वास जमाता गया। अब कहानी के शेष भाग दिखाने के लिए नईमा को दिल्ली ले जाना ज़रूरी था। आखिर इसके लिए भी अनुकूल वातावरण बनाया गया। स्वयं मोना भी और जानने के लिए तैयार और बेचैन थी, क्योंकि उसके दिल में मुहब्बत का सूखा पौधा फिर से हरा होने लगा था और उस पर एक ही फूल धीरे-धीरे अपना रंग पकड़ रहा था। एक फूल जो सामने था। दूसरे फूल जो मौत की गहराइयों में गिर गए थे और अब केवल यादों की दुनिया में ही नजर आ सकते थे—उसके मां-बाप और संबंधी।

पांचवें दिन सरन बाबू बिहारी लाल से बोला, "बाबू जी, हमलोग दिल्ली जाएंगे ताकि कैलाश जी के कुछ काम निपटा सकें।"

"मैं भी चलूंगी। बहुत समय से अपनी दिल्ली की पुरानी सहेलियों से नहीं मिली," मोना बोली।

"ठहरोगी कहां?" श्रीमती बिहारी लाल ने पूछा। उसके लिए रेवाड़ी और दिल्ली में बहुत अंतर था।

"किसी भी सहेली के पास, पंद्रह हैं," मोना ने कहा।

"उषा के पास ठहर जाना," श्रीमती बिहारी लाल ने कहा।

दिल्ली में वे हर जगह घूमे, जहां कभी नईमा, उसके माता-पिता और संबंधी रहते थे। अब वहां कोई भी उनकी जान-पहचान का आदमी नहीं था। कुछ पाकिस्तान चले गए थे, कुछ इधर-उधर दूसरे क्षेत्रों में बस गए थे। कुछ ने नई कालोनियों में नए डिजाइन के सुंदर मकान बनवा लिए थे। नौकरी के कारण नईमा और उसके माता-पिता अधिकतर दिल्ली से बाहर ही रहे थे, इसलिए उन्हें ज्यादा लोग नहीं जानते थे। उनमें से उसे अगर किसी ने देखा भी होगा तो तब जब वह नादान बच्ची थी। समय की धुंध ने मस्तिष्क की स्लेटें साफ कर दी थीं, और उन पर नए लेख लिख दिए थे। मगर गलियों की ईंटों तक ने उसे पहचान लिया था जहां वह कभी रही थी। उनके आस-पास बुनी हुई कहानी उसके मस्तिष्क के सामने फिर से उघड़ कर वहीं जा पहुंची थी जहां से वह शुरू हुई थी और उसे सब कुछ याद आता गया था, जीवन की एक-एक घटना, एक-एक क्षण, मगर अब जीवन की अनेक घटनाओं से मात्र एक ही घटना बची थी, आसिम का सामने होना और जीवित होना। एक साफ और उज्ज्वल दिन की तरह स्पष्ट वास्तविकता। शेष सब कुछ जैसे ताजा-ताजा सपना था, विकट अतीत का। आंखें

बंद करके मन के सिनेमा हॉल में अंधेरा करो और फिल्म चला लो। आंख खोलकर रोशनी में आओ तो पर्दे पर फीकी-फीकी तस्वीरें रह जाती थीं, जिन्हें पहचानना तक मुश्किल हो जाता। जब किसी बच्चे के मां-बाप गुम हो जाते हैं तो वह किसी भी प्यार करने वाले के गले में बांहें डाल देता है। मां-बाप को बुलाता है, मगर उसके गले से भी बांहें नहीं निकालता। यही दशा नईमा की थी। उसे बाबू बिहारी लाल के घर से असीम स्नेह मिला था, मगर उसके अतीत और भविष्य के सबसे निकट आसिम ही हो सकता था। यह उसकी मजबूरी भी थी और चाहत भी। काफी समय हुआ, यादों ने मस्तिष्क पर अपने पंजे ढीले कर दिए थे मगर दूर कहीं गहराइयों में आसिम की चाहत उसके दिल में बैठी रही थी। दिमागी चोट ने उसका रूप धुंधला जरूर दिया था, मगर मिटा नहीं सकी थी।

सारा दिन जगह-जगह घूमने और पुराने चिह्न तलाश करने के बाद उन्हें कहीं रात बिताने का प्रबंध करना था। सरन बोला, "मेरी पत्नी ने नया रूप बदला है। अब मैं आपलोगों को अपने यहां भी ले जा सकता हूं। पहले तो खुद मेरा अपना भी वहां जाना वर्जित था।"

नईमा बोली, "आप जहां भी ठहरें, आपकी खुशी। मैं तो उषा के यहां ठहरूंगी, पुरानी सहेली है। उसे पता लगा कि मैं आई हुई हूं और उसे मिलने नहीं पहुंची तो बहुत नाराज होगी।"

"तुम्हारी सहेली कहां रहती है?" सरन ने पूछा

"कश्मीरी गेट," नईमा ने कहा।

"तो ठीक है, टैक्सी लेते हैं। तुम्हें रास्ते में छोड़ते हुए हम आगे चले जाएंगे," सरन बोला।

"मगर भूलना नहीं," आसिम ने चेतावनी दी, "कल तुम्हारे पासपोर्ट के लिए शास्त्री भवन में आवेदन देना है।"

"सुबह दस बजे मैं वहां गेट पर मिलूंगी," नईमा ने कहा, फिर वह टैक्सी वाले को रास्ता बताने लगी।

जब टैक्सी रेलवे पुल से आगे निकली तो सरन चौंका, "नईमा, तुमने अपनी सहेली का नाम उषा बताया है न।"

"हां, क्यों?" नईमा ने कहा।

सरन ने उसकी प्रश्न भरी नजरों को अनदेखा करते हुए कहा, "उषा धींगड़ा?"

"हां," कहते हुए नईमा की आंखें फिर एक प्रश्न बन गईं।

"आगे मैं रास्ता बताऊंगा," सरन बोला।

जब वे घर पहुंचे तो सरन ने उषा से मिलाते हुए आसिम और नईमा से कहा, "इनसे मिलिए, मिसेज सरन।"

"अरे, मुझे तो कभी बताया ही नहीं उषा ने कि तुम्हीं इसके पतिदेव हो," नईमा ने कहा।

"मुझे भी यही शिकायत है कि उषा ने मुझे कभी महसूस ही नहीं होने दिया कि मैं इसका पतिदेव हूं," सरन ने हंसते हुए कहा, "ये अपने आपको उषा आहूजा के बजाय उषा धींगड़ा कहलाना अधिक पसंद करती हैं।"

"मजा उस प्यार में है जिसमें सुलह हो जाए, जंग होकर," आसिम बोला।

"मगर शहरेदिल जो उस जंग में बरबाद हुआ, उसे फिर से बसाने में बहुत समय लगेगा," सरन उदास हो गया।

"जंग बहुत बुरी चीज है, मगर युद्ध के बाद जो शहर दोबारा बसते हैं, बहुत अच्छे बसते हैं," नईमा ने दिलासा देते हुए कहा, "मैं गवाह हूं कि उषा इस शहर की सदैव शुभचिंतक रही है। हां, इसे नया और सुंदर रूप देने की इच्छुक भी।"

रजिस्ट्रार के आफिस से उन्हें दो दिन बाद की तारीख मिल गई और दो दिन बाद सरन और उषा की गवाही में बिना किसी अड़चन के मोना और आसिम शादी के बंधन में बंध गए। आसिम नईमा से उसके असली नाम से ही शादी करना चाहता था, मगर इसकी प्रक्रिया तनिक लंबी थी। चौथे दिन वे शास्त्री भवन पहुंच गए। रात को नईमा ने उषा को समझाया था कि वह डटी रहे, बल्कि अब उसे और अधिक चिपकने की आवश्यकता है। उसने उसे समझाया कि अबकी बार सरन को तुम खो बैठीं तो फिर दोबारा नहीं पा सकोगी और सरन अगर यूरोप की रंगीनियों में गुम हो गया तो फिर उसे सीधे रास्ते पर लाना कठिन होगा।

शास्त्री भवन पहुंचते ही नईमा को जैसे कुछ याद आ गया। उसने आसिम और सरन से कहा, "आपलोगों को कोई और काम करना हो तो कीजिए, पासपोर्ट बनवाने का काम मेरे जिम्मे रहा।"

"इतना आसान है क्या?" सरन बोला

"हां, जरा भी मुश्किल नहीं। मेरी एक सहेली यहां काम करती है। अच्छा यह बताइए," वह आसिम की तरफ मुड़ी, "पासपोर्ट पर अपना नाम नईमा लिखवाऊं या मोना?"

"नईमा ही ठीक रहता, मगर शायद यह हो नहीं सकेगा। आपके मैट्रिक के प्रमाणपत्र पर मोना देवी लिखा है न! जन्मतिथि तो वहीं से प्रमाणित होगी।"

"खैर, देखा जाएगा। आप जाइए, आपको बहुत से काम होंगे।"

"काम?"

"अभी से भूलने लगे," नईमा बोली, "देखिए, उषा के टिकट के लिए लंदन अपने दोस्त को ट्रंककाल कीजिए। शिमला के लिए कालका मेल से चार टिकटें खरीद कर सीटें बुक करा लीजिए। सप्ताह भर बाद की कराइए। मैं कुछ दिन

कोसली बाबू जी के पास जरूर बिताना चाहती हूं। उन्हें सारी स्थितियों से अवगत कराना जरूरी है। और शाम को चार बजे हम कनाट प्लेस में रीगल की पिक्चर गैलरी में मिल रहे हैं, शाम का शो देखेंगे। वहीं किसी अच्छे रेस्तरां में खाना खाएंगे और रात की गाड़ी से कोसली निकल जाएंगे। सरन जी, आप चिंता न कीजिएगा। उषा भी हमारे साथ चलेगी और आप अपनी नई सुहागरात कोसली में ही मनाएंगे। सुबह ही मैंने अंकल और आंटी से कह दिया था।''

''फिर उन्होंने क्या कहा?'' सरन ने पूछा

''कौन मां-बाप अपनी बेटी का घर बसता नहीं देखना चाहेंगे?'' नईमा ने कहा।

''मगर...''

''इन अगर-मगर ने बहुत घर उजाड़े हैं। बात कुछ भी नहीं होती और छोटे से मगर को बहुत बड़ा मगरमच्छ बना लिया जाता है, जो सारी घरेलू खुशियां मिनटों में निगल जाता है। अगर आसिम के दोस्त हैं तो मैं भी आप दोनों की दोस्त हूं। आपने बिछुड़े हुओं को फिर से मिला दिया है, क्या मैं इतना भी नहीं कर सकती कि आप दोनों के बीच तनिक सी रेखा जो तनी खड़ी है, उसे ही दूर कर दूं?''

रात दो बजे वे लोग कोसली जा पहुंचे। सरन के साथ एक नई लड़की उषा को देखकर बाबू बिहारी लाल और उनकी पत्नी पहले तो चौंके, क्योंकि वे पहले केवल उसके नाम से परिचित थे, उसे देखा न था। मगर मोना ने जब उन्हें बताया कि उषा सरन की पत्नी है, इसलिए उनके अलग कमरे का प्रबंध करना होगा तो बाबू बिहारी लाल ने उनके रात बिताने के लिए बिस्तर और चारपाई का अपने मालगोदाम के कमरे में लगवाने का प्रबंध करना शुरू कर दिया। आसिम संकेत से नईमा से कह रहा था कि अपने बारे में भी उन्हें बता दे ताकि उनके लिए भी अलग कमरे का प्रबंध हो सके। मगर नईमा ने उसे समझा दिया कि इतनी बड़ी बात इतनी आसानी से और इतनी जल्दी कह देना उचित न होगा। सुबह धीरे-धीरे सरन से कहलवाई जाएगी। नईमा मां के कहने पर रसोई में जाकर सबके लिए गर्म-गर्म दूध के गिलास भरने लगी तो मौका पाकर किसी बहाने से आसिम भी रसोई के दरवाजे में जा खड़ा हुआ 'प्लीज-प्लीज' कहता और हाथ जोड़ता अपने लिए भी प्रबंध करने का आग्रह करता रहा। उसकी बेचैनी पर नईमा को हंसी आ गई। उसने उंगली अपनी छाती पर रखी और अपने कमरे की ओर संकेत किया, फिर उंगली उसकी तरफ उठाकर दूसरे कमरे की तरफ उठा दी। फिर उसने अपने दोनों खुले हाथों को दरवाजे की तरफ जोड़ा और खोल दिया। आसिम समझ गया कि वह उसके साथ वाले कमरे में सोएगी और बीच का दरवाजा खुला रहेगा। आसिम के होंठों पर हल्की सी मुस्कराहट दौड़ गई और वह खुश-खुश अंदर सबके साथ जा बैठा।

दूसरे दिन सवेरे श्रीमती बिहारी लाल का व्यवहार बदला-बदला सा नजर आ रहा था। मोना ने रसोई में उसके गले में बांहें डालते हुए कहा, "मम्मी, क्या बात है, तुम चुप-चुप क्यों हो?"

श्रीमती बिहारी लाल बोली, "बिटिया..." और कुछ कहते-कहते रुक गई।

"कहो ना मम्मी, रुक क्यों गई, या मैं ही बता दूं," मोना ने मुस्कराकर कहा।

श्रीमती बिहारी लाल फिर भी गंभीर रही, बोली, "बिटिया, रात को कैलाश का तुम्हारे पास आना मुझे अच्छा नहीं लगा। सोचो, अगर तुम्हारे बाबूजी देख लेते तो क्या सोचते? तुम जहां चाहो शादी करो, हम मना नहीं करेंगे बल्कि खुश होंगे मगर यह छिप-छिप कर..." उनकी आवाज भर आई।

"ओह, मेरी भोली मम्मी, क्या तू समझती है कि मैं कोई ऐसा काम करूंगी जो तनिक भी तुम्हारे या बाबू जी के नाम को कलंकित करता हो?" मोना बोली।

"और रात को...?"

"मम्मी, अगर पति पत्नी के कमरे में जाए तो क्या पाप है?"

"यह क्या कह रही हो, बेटी?"

"ठीक कह रही हूं मम्मी, रात देर हो गई थी। मैंने सोचा, सुबह सब कुछ आपको और बाबू जी को बता दूंगी। कैलाश तो रात को ही सारी बात खोलना चाहते थे, मगर मैंने उन्हें मना कर दिया। सोचा, जाने आपको कैसा लगे और आपकी नींद खराब हो।"

"बेटी, तुम्हारी कोई बात हमें पहले बुरी लगी है, जो अब लगेगी! मगर यह हुआ कैसे?"

मोना ने सारी कहानी उसे सुना दी, मगर अतीत के बारे में वह खामोश रही। केवल इतना कहा कि कहानी आगे भी जाती है जो कैलाश जी आपको सुनाएंगे। नाश्ते के समय कैलाश और सरन ने सारी कहानी आदि से अंत तक उन्हें सुना दी। बाबू बिहारी लाल बहुत खुश हुए। बोले, "बेटा, सब अच्छा ही हुआ। मैं भी करता तो ऐसे ही चुपचाप मोना का विवाह कर देता। क्या करूं, अपना ही बेटा खोटा सिक्का निकला, मगर एक तरह से अच्छा ही हुआ कि अधिकारी को उसका अधिकार मिल गया। सच, मैं बहुत खुश हूं, और भगवान का आभारी भी। मोना, क्षमा करना बेटी, मुझे अब तुम्हें नईमा कहना चाहिए, मगर मोना जबान पर चढ़ा हुआ है, धीरे-धीरे ही उतरेगा। क्या तुमने कैलाश, मेरा तात्पर्य है आसिम को सब कुछ बता दिया है? बेटा, पति से कुछ नहीं छिपाना चाहिए। तुम्हारे साथ तो कुछ भी नहीं हुआ। भाग्य ने एक खेल खेलकर तुम्हें सूखे पंखों आजाद कर दिया।"

फिर उसने आसिम को सारी घटना सुना दी। आसिम बोला, "अंकल, यह तो कुछ भी नहीं, हीरा गंदगी में गिर जाए तो भी हीरा ही रहेगा। नईमा के इंतजार

में मैंने अभी तक शादी नहीं की। मेरा दिल कहता था कि कभी न कभी हम जरूर मिलेंगे और आप बड़े हैं, जानते हैं कि जुदाई और मिलन के बीच जो अवधि होती है वह जरूर इंसान के चेहरे पर अपनी खरोंचें डाल जाता है। और कुछ नहीं तो उम्र की रेखाओं से कौन बच सका है? अगर हमें एक-दूसरे से प्रेम है और स्वीकार करने की हिम्मत है तो छोटी-छोटी बातों को अनदेखा करके सचाई की आंखों में आंखें डालनी ही होंगी।''

उन्होंने बड़ों को अपना कार्यक्रम विस्तार से बताया। विदेश जाने से पहले शिमला की सैर के बारे में भी। कार्यक्रम के अनुसार छठे दिन वे शिमला पहुंच गए। पैराडाइज होटल सचमुच बहुत सुंदर था। एक तरफ रात में शहर की रंग-बिरंगी रोशनियां खिड़कियों से झांकती थीं और दूसरी ओर पहाड़ों की रहस्यमयी खामोशी और तारों भरी रातें दिल को लुभाती थीं। दिन भर हंगामे, सैलानियों का कोलाहल और बच्चों की किलकारियां, फूलों की पत्तियों की तरह वातावरण में उड़ती फिरती प्रतीत होती थीं। दोनों जोड़े चाहे जवानी मस्तानी के घेरे से बाहर आ चुके थे, मगर फिर भी वे दिन और रात के एक-एक क्षण का आनंद लूट रहे थे।

शिमला जो कभी अंग्रेजी सरकार की गर्मियों की राजधानी रहा था, अब भी अपने अंदर उतना ही सौंदर्य रखता था। अंतर था तो केवल इतना कि अब वहां गोरी-गोरी नंगी पिंडलियों वाली मेमें नजर नहीं आती थीं जिन्हें देखते हुए भारतीय नौजवानों का खून, बदले की भावना से नहीं क्योंकि शिमला का वातावरण प्रतिशोध की भावना के लिए उपयुक्त नहीं था, जोशेजवानी से खौलने लगता था। असल में शिमला की हवाएं खून को और ढंग से बिलोती और साफ करती थीं। शिमला अब भी वैसा ही था जैसा उसे किपलिंग की दृष्टि ने देखा था। पांव पसार कर एक अनोखे अर्धवृत्त वाली घाटी में लेटा हुआ। उसके छोटे-छोटे लकड़ी के लाल छतों वाले छोटे-छोटे बंगलों, किलों जैसे दफ्तरों, ऊंचे-ऊंचे टिन की छतों वाले मकानों ने अपनी पुरानी परंपरा नहीं छोड़ी थी।

रिज पर स्कैंडिल पाइंट पर खड़े हुए सरन ने कहा, ''महाराजा पटियाला ठीक ही छोटी गोरी-गोरी को यहां लाया होगा। यदि किसी औरत का पति उसकी तरफ ध्यान न देता हुआ संन्यास लेने के बारे में सोचता हो तो किसी बहाने से उसे यहां ले आना चाहिए। अगर फिर भी उस दुर्भाग्यशालिनी की रातें सुनसान रहें तो उसे समझ लेना चाहिए कि उसके पति को इलाज की आवश्यकता है।''

आसिम बोला, ''महाराजा पटियाला ने तो शिमला से देश-निकाला होने के बाद वैसा ही दूसरा सुंदर शहर बसा लिया। हम-तुम तो मात्र कुछ ही दिन आनंद उठा सकते हैं। वैसे उषा ने तुम्हें यहां लाकर बुद्धिमानी का प्रमाण दिया है। मुझे तो लगता है, नईमा को उसी ने शिमला चलने की सलाह दी होगी।''

''मुझे उषा ने इधर आने की सलाह दी है या नहीं, मगर मेरी एक सलाह

जरूर मानिए—कल जाखू चलिए, वहां हनुमान मंदिर है। कहते हैं, बहुत सुंदर है,'' नईमा ने कहा।

दूसरे दिन वे जाखू पहुंचे। उन्होंने हनुमान देवता के चरणों में प्रणाम किया। सरन बोला, ''हनुमान तो आजीवन ब्रह्मचारी रहे। मैं तो हनुमान-भक्त होने के कारण विवश होकर एक ही पर संतोष कर लूंगा मगर आसिम तुम्हें क्या बंदिश है? तुम्हें तो चार करने की आज्ञा है। तुम इस देवता को क्यों प्रणाम कर रहे हो?''

उषा बोली, ''हनुमान देवता बस इतना लिहाज करते हैं कि अपने भक्तों को केवल एक पर ही संतोष करने देते हैं। उसके बाद सारे दरवाजे बंद कर देते हैं।''

आसिम बोला, ''एक तरह से ठीक ही है। ये देवी-देवता, पीर-पैगंबर जरा-जरा सी बात पर खुश हो जाते हैं, तो अल्लाह मियां की सेवा में बड़ी तगड़ी सिफारिश कर देते हैं। फिर नीली छतरी वाला एक ही में हजारों के गुण भर कर अपने नेक भक्तों को राजी रखता है। सोचिए तो वैसे भी खुदा इतनी बड़ी दुनिया का कहां हिसाब-किताब रख पाता होगा! इन्हीं लोगों पर आश्रित होगा।''

सामने पहाड़ी पर बहुत से बंदर इधर-उधर उछलते-कूदते फिरते थे। इनमें से कुछ सैलानियों के बहुत पास आ जाते थे और उनके हाथों से खाने की चीजें ले जाते थे और दूर बैठकर अपने-अपने गले की पोटलियां भरते जाते थे। पास ही एक मोटा पहलवाननुमा बंदर अपनी पूंछ ऊपर उठाए और उसे तिरछा किए उनकी अगवानी कर रहा था। जब वह खाने की किसी वस्तु के लिए आपस में झगड़ पड़ते तो वह घुड़ककर उन्हें एक-दूसरे से अलग कर देता। सात-आठ बंदरियां अपने नन्हें-मुन्ने बच्चों को छाती से लगाए उसके पास बैठी थीं जैसे कोई मोटा-ताजा पला हुआ हब्शी बादशाह अपनी पत्नियों और बच्चों से घिरा बैठा हो। सरन कल से बड़ी जॉली मूड में था। बंदर को बंदरियों के साथ देखकर बोला, ''साले, शर्म कर, देवता के चरणों में रहकर भी विवाह पर विवाह किए जाता है।''

आसिम भी मूड में आ गया, ''साले की दुम देखो। एक इसी की अलग सबसे ऊंची उठी हुई है। अल्लाह मियां ने सर पर फुंदना नहीं दिया तो दुम मा डंडा प्रदान कर दिया।''

सरन बोला, ''शेर-मर्द की मूंछ ऊंची होती है और लीडर बंदर की पूंछ ऊंची होती है।'' सब खिलखिलाकर हंस पड़े।

शिमला के उत्तर-पश्चिम की तरफ चार किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ी नाले के किनारे जंगली पेड़ों और हरे-भरे दृश्यों से परिपूर्ण एक वादी थी जिसके बारे में काउंटर क्लर्क ने बहुत प्रशंसा के पुल बांधे थे। तीसरे दिन वहां दिन बिताने का कार्यक्रम बनाया गया। काफी मात्रा में फल का जूस, कोका कोला की बोतलें, बिस्कुट के डिब्बे और होटल से आलू-गोभी के परांठे और डिब्बे में दही लेकर साथ

रख लिया गया। दिन भर दोनों जोड़े दरी बिछाकर ताश खेलते रहे, छोटे से ट्रांजिस्टर पर फिल्मी गाने सुनते रहे और फिल्मी अभिनेता और अभिनेत्रियों की तरह पेड़ों के आस-पास दौड़ते और एक दूसरे को पकड़ते फिरे। सरन ने उषा से मजाक में कहा, "अब दौड़ भाग ले, फिर तुझे इन बंदरियों की तरह नन्हें-मुन्ने को गोद में लिए अंदर बैठे रहना होगा।"

उषा ने पहले दिन उससे मां बनने के शौक की बात की थी। वह सरन का संकेत समझ गई। मुस्कराकर और शरमाकर बोली, "औरत इसके बिना स्वयं को जिंदगी भर अपूर्ण ही महसूस करती रहती है।"

"ठीक है, मगर जवानी के वह बहुमूल्य वर्ष जो तुमने बर्बाद कर दिए, उनका हिसाब कौन देगा?" सरन की आवाज में उदासी साफ झलक आई थी।

"उसे मेरा झूठा घमंड कहकर तुम अनदेखा नहीं कर सकते?"

"मगर तुम्हारा यह झूठा घमंड मुझे बहुत महंगा पड़ा। गया समय फिर हाथ नहीं आता।" सरन अब भी उदास था।

दूसरी तरफ हंसी का एक बहुत बड़ा तूफान सा उठा तो सरन और उषा सब कुछ भूलकर उधर आकर्षित हो गए। यहां भी एक लीडर बंदर दूसरे सारे बंदर-बंदरियों को आगे लगाए, हांकता हुआ साथ वाली पहाड़ी पर लिए जा रहा था। कोई दूसरा बंदर क्षण भर के लिए रुकता या मुड़कर पीछे देखता तो लीडर बंदर उसे क्रोधित दृष्टि से देखता या आवश्यक महसूस करता तो सख्त घुड़की देकर आगे लगा लेता। सरन उषा का हाथ पकड़े आगे आ गया था। उसका मूड बदल कर ठीक हो गया था। बोला, "यार, मुझे तो यह कोई बहुत बड़ा गुंडा मालूम होता है।"

"बाअदब बामुलाहिजा, होशियार! शहंशाहेआलम कहो। सुन लिया तो जिंदा गड़वा देगा जालिम," आसिम हंसकर बोला।

सरन फिर भावुक हो गया, बोला, "मैं तो इसे फिर भी भरे दरबार में गुंडा ही कहूंगा और तुम्हारे उन नवाबों, सरकारों, सरदारों, जमींदारों, साहिबों, राजाओं, व्यापारियों और बादशाहों को भी, जो बड़ी-बड़ी तलवारें लगाए फिरते हैं कि हमसे डरो। बड़ी-बड़ी मूंछें रख लेते हैं कि हमसे भयभीत होओ। बुरी तरह खा-खाकर हाथी जैसा शरीर बना लेते हैं कि हमें सलाम करो। वे अच्छा खाएं, अच्छा पीएं, अच्छा पहनें तो हमें उनका सम्मान करना पड़ता है। भई, तुम अच्छा खाते-पीते या पहनते हो तो हम पर कौन सा एहसान करते हो? एहसान तो किसान या मजदूर करता है जो सौ कमाता है तो एक अपने लिए रखकर बाकी सब कुछ बांट देता है। कभी-कभी तो अपना एक समय का खाना भी उसे नसीब नहीं होता। बैल, गधे, घोड़े को मेहनत करने के बाद खाना मिलना निश्चित है, मगर इंसान ही एक ऐसा जानवर है कि वह केवल मेहनत-मजदूरी से पेट नहीं पाल सकता, उसे खुशामद भी करनी पड़ती है और अपने स्वर्ग रूपी भारत का बाबा आदम ही निराला है। मां

जरूर सगी है, मगर भाई-बंद सब सौतेले हैं। कोई आधा अंग्रेज है, कोई आधा मुगल और कोई कुछ। और भी हजारों तरह के दुमछल्ले लगाए फिरते हैं। कोई यह नहीं कहता कि मैं भारतीय पहले हूं, बाकी सब कुछ बाद में या बाकी कुछ भी नहीं। जरूरत ही क्या है? आप घर बैठे हैं, आराम से खेतों में काम कर रहे हैं, दड़ादड़-दड़ादड़ घोड़े दौड़ाते ये लोग आ जाते हैं। ये कौन हैं? अमुक महाराजा का अश्वमेध घोड़ा दौड़ा रहा है, ये सब उसके पिछलगुवे हैं। अभी कल ही तो आपने अपने जवान बेटों के खून से अपने खेतों को सींचा है, अभी भी उन्हें चैन नसीब नहीं हुआ। ये कौन हैं? ये सिकंदर महान हैं। भई, अपने घर में क्या कष्ट था, मलेरिया के एक मच्छर का मुकाबला तो कर नहीं सकते और तड़ाक से दम तोड़ देते हो, और दुनिया विजय करने चले हो! क्या अपने घरों में आराम से बैठे लोग तुम्हें अच्छे नहीं लगते? न तुम्हें खुद आराम है, न मजदूर-किसान को आराम से अपना काम करने देते हो। हमें समझाओ कि तुम में या चोर-उचक्के और डाकू में क्या अंतर है। ये चंगेज खां हैं, ये बाबर हैं, ये डूप्ले हैं, ये क्लाइव हैं। कोई तलवार की नोक पर अपने धर्म का प्रचार करने निकला है। सरासर झूठ, मात्र अनुचित लाभ लेने और अपने ही सीधे लोगों को उल्लू बनाने का ढोंग। कोई इंसानी खोपड़ियों का खेल खेलने चला है, किसी को हिंदुस्तानी चाय और मसाले पसंद हैं, कोई उस पर, कोई इस पर आरोप धर-कर कुर्सी हथियाना चाहता है। हर एक के पास शब्दों के नकली फूल हैं, वादों के झूठे सब्ज-बाग हैं। किस्सा मात्र कुर्सी प्राप्त करने का है। सिरों की फसल इतनी अधिक है कि काटते-काटते तलवारें टूट जाती हैं तो शब्दों की छुरियां अपना काम शुरू कर देती हैं और शब्दों का वार कभी खाली नहीं जाता। शब्द बिकते हैं, जितनी बड़ी काट उतनी बड़ी कीमत। आप हत्यारे हैं, लुटेरे हैं, गुंडे हैं, बदमाश हैं। शब्द बेचने वाले आपको हीरो बना देते हैं। आपकी प्रशंसा में धरती-आकाश एक करके आपको कहां का कहां पहुंचा देते हैं!"

"आज बहुत गर्म हो रहे हो," आसिम ने कहा।

"दिल-जलों का यही अंदाजेबयां होता है," सरन बोला।

"तुम्हें क्या कष्ट है?"

"सच कहते हो, मुझे क्या कष्ट है। वीजा आया और मैं उड़ा, मगर सब तो नहीं उड़ सकते। उड़ भी जाएं तो क्या, दूसरे पेड़ों के वासी उन्हें स्वीकार करते और अपनी टहनियों पर घोंसला बनाने देते हैं? साले चोंचें मार-मारकर बुद्धि फेर देते हैं।"

"तुम ठीक कहते हो, कितने आसिम और सरन जैसे सौभाग्यशाली हैं?" आसिम बोला।

"भगोड़ा सौभाग्यशाली नहीं होता, मजबूर होता है," सरन बोला, "अपने देश

में मरता है कि गरीब होता है। बाहर मरता है कि गरीबुलवतन (परदेशी) होता है।''

दो दिन फिर शहर में बिताने के बाद उनके दिलों में फिर कहीं बाहर जाने की इच्छा जागी। फिर वहीं काउंटर क्लर्क उनके आड़े आया और वे उत्तर-पश्चिम की तरफ चार किलोमीटर दूर एक पहाड़ी नाले के किनारे हरे-भरे पेड़ों और फूलों से घिरी एक सुंदर वादी में पहुंच गए। ताजमहल के पत्थर अपनी तराश-खराश से सुंदर सही मगर इस वादी के उल्टे-सीधे, टेढ़े-मेढ़े, गोल-अंडाकार और विचित्र रूपों और रंगों के पत्थर उन्हें बहुत ही सुंदर लगे। पारदर्शी पानी के शीशे में पड़े वे किसी शो केस में सजे डेकोरेशन पीस लगते थे।

''ईश्वर का संसार कितना सुंदर है और इंसान की दुनिया कितनी कुरूप!'' सरन बोला।

''अजंता, एलोरा, ताजमहल, खजुराहो और दक्षिण के मंदिरों की वास्तुकला के बारे में तुम्हारा क्या विचार है?'' आसिम ने सवाल किया।

''मैं तो उन्हें भी ईश्वर ही का संसार कहूंगा, क्योंकि कलाकार के दिल में अगर निश्छलता, सचाई और मुहब्बत की ज्योति न हो तो उसके हाथ सृजनात्मक काम कर ही नहीं सकते और निश्छलता, सचाई और मुहब्बत ही का नाम ईश्वर है,'' सरन बोला।

''यार, तुम दार्शनिक होते जा रहे हो। चित भी मेरी, पट भी मेरी।''

''नहीं, मैं वास्तविकता बयान कर रहा हूं। मेरी सीधी सोचें हर बात से कोई परिणाम प्राप्त कर लेती हैं और मैं जो देखता हूं कह देता हूं,'' सरन बोला।

दूसरे दिन सात किलोमीटर दूर चाराविक कॉल्स की सुंदर वादी ने सरन को और भी भावुक बना दिया। अगर आसिम, नईमा और उषा उसे वापस अपनी दुनिया की तरफ न ले आते तो वह वहीं कहीं संन्यासी बनकर धूनी रमाकर बैठ जाता। जाने प्राकृतिक सुंदरता दुनिया से उसका मन क्यों उचाट कर देती थी? नईमा के समझाने पर उषा दिन-प्रतिदिन अपने मेकअप में तेजी लाती जा रही थी। पहाड़ों का सौंदर्य सरन को मोह-माया के जाल के दूर ले जाता था। इसलिए उसे वापस दुनिया के आकर्षण की तरफ खींचने के लिए औरत को अपने समस्त शस्त्रों का प्रयोग करना आवश्यक था। मेनका अपना जाल फेंक रही थी और विश्वामित्र मुनि दिन-प्रतिदिन फड़फड़ाने के बावजूद उलझते जा रहे थे।

समरहिल और प्रासप्रेक्ट हिल की बहुत दूर ऊपर तक गई ऊंचाइयां खतरनाक सीमा तक एक तरफ को झुकी हुई और ऊपर गिरती हुई सी प्रतीत होती वादियां देखने योग्य थीं। सरन प्राकृतिक सौंदर्य पर न केवल मोहित होता था, बल्कि भावुक होकर दुनिया छोड़ने और संन्यासी बन जाने की बातें करने लगता था। उषा के स्वार्थी व्यवहार और लंबी जुदाई के बाद इतने सामीप्य ने उसे मनोवैज्ञानिक रूप

से अंदर से हिलाकर रख दिया था और उसे उसका प्रेम और सामीप्य सब मात्र अभिनय प्रतीत होता था और उसका मस्तिष्क संसार के अस्थायित्व पर विचार करने लगता था। वैसे भी उषा के पास अब जाती जवानी के अंतिम कुछ साल रह गए थे जो रेत की तरह उसके हाथों से फिसलते जा रहे थे और सरन को, अब उन्हें पकड़ने या संभालने की कोई इच्छा नहीं थी। जब उसे तेज भूख थी, उसे तरसाया गया था। जब पेट भर चुका, भूख मिट चुकी, मस्तिष्क थक चुका तो उसके सामने ढेर लगाने की कोशिश की जा रही थी। उसे यह सब मजाक लगता था। मोना के लिए उसके दिल में कभी प्यार का जरा सा शोला भड़का था, जब वह खुद ही उसके बहुत पास आ गई थी। अब वही मोना, नईमा बनकर उसके सामने दूसरी दुनिया बसाए बैठी थी। उसे मोना और आसिम के मिलाप पर हार्दिक प्रसन्नता हुई थी, मगर अपने साथ प्रकृति के इस खेल पर उसे धक्का सा जरूर लगा था।

वे शिमला में दस दिन और रहे। कभी-कभी किसी दिन किसी तरफ निकल जाते। पहाड़ों की गोद में सौंदर्य की क्या कमी! समय बहुत अच्छा बीत रहा था। बस, सरन भावुक हो जाता तो बड़े संतोष से उसे बर्दाश्त करना पड़ता था। वह ज्ञान-ध्यान के ऐसे-ऐसे मोती खोलता था कि बस देखते ही बने, मगर फिर भी उसे नियंत्रण में रखना आवश्यक था और इसका ढंग नईमा को खूब आता था। वह हर बार उषा के मस्तिष्क में कोई नई विधि डाल देती थी जिससे मस्त हाथी फिर से वश में हो जाता था।

वे शिमला से वापस आए तो दिल्ली में सारे काम हाथ जोड़े उनकी सेवा में तैयार खड़े थे। सरन का वर्किंग वीजा और उषा व नईमा के लिए दो एअर टिकट आ चुके थे। जब बड़े काम हो चुके हों तो छोटे-छोटे काम वैसे ही निपट जाते हैं। चौथे दिन वे हवाई घोड़े पर सवार रूई के गालों जैसे सफेद-सफेद बादलों से बहुत ऊपर जहां आकाश झुक-झुककर उनके माथे चूमता प्रतीत होता था, उड़े जा रहे थे। बातें करते-करते वे थक-हार कर अपनी-अपनी दुनिया की शरण में चले गए थे। नईमा उदास भी थी और खुश भी। बिल्कुल एक नई दुल्हन की तरह जो एक सुंदर संसार, बाबुल का घर छोड़ रही होती है और दूसरी नई दुनिया में प्रवेश कर रही होती है। नई दुनिया, जिसके सपने हर लड़की पैदा होते ही देखना शुरू कर देती है। उषा खुश थी कि जिस सपनों के राजकुमार की तलाश में उसने सरन की उपेक्षा की थी, सरन वही राजकुमार बनकर हवाई घोड़े पर सवार होकर उसे किसी नई और सुंदर दुनिया की तरफ उड़ाए लिए जा रहा है। एअर सर्विस उसे और भी पागल किए दे रही थी जैसे एक युग के बाद वह दुनिया के सर्वश्रेष्ठ रेस्तरां में बैठी हो। आसिम खुश था कि उसे वह सारा मिल गया था जिसकी उसे जिंदगी भर तलाश रही थी। लंदन के महानगर ने उसके साथ विचित्र खेल खेले थे, मगर

किस्मत उसे साफ बचा ले गई थी और उसे वापस स्नेह और प्यार की गोद में डाल दिया था, मगर सरन फिर भी उदास था। उसके हाथ में बौद्ध भिक्षु चमन लाल की लिखी 'जिप्सीज फारगार्टेन चिल्ड्रेन ऑफ इंडिया' थी। चमन लाल कभी हिंदुस्तान के स्वतंत्रता संग्राम का सिपाही रहा था, अब वह केवल यात्री बनकर रह गया था, सैलानी, जो सदियों पहले हिंदुस्तान की धरती से उखड़े, भूले-भटके बच्चों को खोजता फिरता था। सुबह के भूले ये बच्चे मिल भी जाते थे, अपनी धरती मां के लिए उदास भी हो जाते थे, मगर क्या वे शाम को वापस मां की गोद की तरफ लौटते थे? नहीं, परिंदे उड़ जाते हैं तो उन्हें नए पिंजरे गिरफ्तार करके पंख काटकर अपने अंदर कैद कर लेते हैं। फिर वे अपनी मां को केवल याद कर सकते हैं, उसकी तरफ लौट नहीं सकते।

पहले समय के निकले हुए लोग मजबूर, पीड़ित और गुलाम थे। उनकी कमर पर तलवारों और भालों की नोक पर मौत चिपकी हुई चुभ रही थी और वे आगे ही आगे जिंदगी की तरफ दौड़ रहे थे, मगर क्या हम भी मजबूर हैं? हां, कोई मजबूरी तो होगी, वर्ना अपना घर छोड़ना किसे अच्छा लगता है? घर की आधी भी मिलती जाएं तो बाहर की पूरी की तरफ कोई आंख उठाकर देखे भी क्यों? सरन सोचे जा रहा था।